

सूचीपत्र

अथ प्रथम प्रश्न	पृष्ठ पंक्ति	वत्सर स्वामी	पृष्ठ पंक्ति	अधि मास	पृष्ठ पंक्ति	प्रतिपदाद्युनिगिद्धा	पृष्ठ पंक्ति
मङ्गला चरण	१, २	वत्सर स्वामी	६	४	८	प्रतिपदाद्युनिगिद्धा	१३
सम्बन्ध	२	वत्सर भेद	६	७	११	समायां विधेययोगः	१३
प्रयोजन	२	अयन विचारः	६	८	५	व्यतीपातयोगः	११
वियय	२	अयन फल	६	११	५	अष्टेष्टिय महोदयो	११
अधिकारी	२	ऋतवः	७	२	५	गजच्छाया योगः	१३
चरण प्रश्ना	२	ऋतु पतयः	७	३	८	कयिला यष्टी	१३
शरत् धातु प्रश्न	२	मास ज्ञानं	७	५	१०	पुनर्वती पातः	१३
नक्षत्र सूची	२	मासानां नामानि	७	६	१०	नो विन्दहादशी योगः	१३
प्रकरण सूची	३	मास संज्ञा	७	८	७	चारुणी महावारुणी	१३
सम्बत्सर क्कान	३	मास भेद	७	११	१२	युगाद्योगान्वार्यः	१३
बह्नि सन्वत्सलान	३	भेदानां फलानि	७	२	१३	अथ तृतीया प्रश्न	१३
वत्सर फल	६	पक्ष विचारः	८	६	१३	वार विचारः	१३

सूचीपत्र

वारकृत्यं	२	नक्षत्राणां सख्याः	२४	१०	योगानां शुभाशुभफलं	३१	६ भद्राकर्माणि	३४	८
वारदीयादीनी	१०	ध्रुवादि संज्ञा	२४	११	अथ बली प्रश्ना	३१	भद्रायां दोषा पवादः	३४	१०
तैलान्धयोगे शुभाशुभं	१०	नक्षत्र मुख कृत्ये	२४	१२	अथ करालां ज्ञानं	३१	भद्रा विषये विशेषः	३४	२
तैलान्धयोगे दोषा पवादः	१०	पञ्चको	२४	१३	करालां स्वामिनः	३१	अथ सप्तमी प्रश्ना	३४	२
वारहोरा	१०	अन्धादि संज्ञा	२४	१४	कराल कृत्यं	३१	तारा विचारः	३४	१०
अथ चतुर्थी प्रश्ना	१०	नक्षत्र चारु	२४	१५	भद्रायां विशेषः	३१	राश्याः	३४	११
नक्षत्राणि	१०	चतुर्थी ज्ञानं	२४	१६	भद्रायां विभाग फलौ	३१	नक्षत्राणां चरणाः	३४	८
नक्षत्रेभ्यः	१०	गत रात्रि ज्ञानं	२४	१७	भद्रा वास्तु	३१	चंद्रस्य शुभाशुभफलं	३४	८
शुभाशुभ नक्षत्राणि	१०	दिवा रात्री मुखर्तः	२४	१८	स्थान फलं	३१	चंद्रस्य विशेषः	३४	८
नक्षत्राणां कृत्यं	१०	वारपुल्लेन लाज्य शु	२४	१९	वारयोगे न भद्रा फलं	३१	शुद्धा पक्षे विशेषः	३४	८
पुण्य प्रश्ना	१०	अथ पञ्चमी प्रश्ना	२४	२०	भद्राया दिग्गुलं	३१	तारा वलं	३४	८
नक्षत्राणां स्वस्थे	१०	योग ज्ञानं	२४	२१	भद्रायां सुखं	३१	दुष्ट तारा सुखं	३४	८

सूचीपत्र

क्र.सं.	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति
कार्यविशेषे ग्रहदले	४०	१	४२	५	४२	५	४२	५	४२	५
चंद्रवले विशेषः	४०	४	४२	८	४२	८	४२	८	४२	८
नादस्ये स्वर्ग	४०	६	४२	१०	४२	१०	४२	१०	४२	१०
अथाष्टमीप्रभा	४०	१०	४२	१४	४२	१४	४२	१४	४२	१४
प्रभाशुभं	४१	२	४२	१६	४२	१६	४२	१६	४२	१६
पर्वर्णिनी	४१	४	४२	१८	४२	१८	४२	१८	४२	१८
तात्कालिकीतिथिः	४१	६	४२	२०	४२	२०	४२	२०	४२	२०
कार्यं परत्वेन	४१	८	४२	२२	४२	२२	४२	२२	४२	२२
हरथयोगः	४१	१०	४२	२४	४२	२४	४२	२४	४२	२४
विययोगः	४१	१२	४२	२६	४२	२६	४२	२६	४२	२६
हुताशनयोगः	४२	२	४२	२८	४२	२८	४२	२८	४२	२८
यमघण्ट	४२	४	४२	३०	४२	३०	४२	३०	४२	३०

सूची पत्र

[illegible]

पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति
७८	८	७८	८	७८	८	७८	८	७८	८
मार्ग	राजां एमस्तु कर्म	७८	८	७८	८	७८	८	७८	८
सुगन्धभोगः	नखस्तक्रिया	७८	८	७८	८	७८	८	७८	८
खद्वारम्भः चक्रं च	क्षौरविधौ निषेधः	७८	८	७८	८	७८	८	७८	८
पदुर्कसित्तास्मौ	क्षौरिष्टुभवावर्ष	७८	८	७८	८	७८	८	७८	८
भूयाघहने	क्षौरिकिं चिद्विशेषः	७८	८	७८	८	७८	८	७८	८
खमयुग्मभूया	विद्यास्मः	७८	८	७८	८	७८	८	७८	८
पात्रभोजनचक्रं	गणितारम्भः	७८	८	७८	८	७८	८	७८	८
रसस्तु कर्म	व्याकरणारम्भः	७८	८	७८	८	७८	८	७८	८
क्षुरकृत्ये वारफलं	न्यायारम्भः	७८	८	७८	८	७८	८	७८	८
क्षौरेत्याज्यप्रिययः	धर्मशास्त्रपुरा-	७८	८	७८	८	७८	८	७८	८
क्षौरे निघर्त्ताः	णास्मः	७८	८	७८	८	७८	८	७८	८
क्षौरे निघेभापवादः	वैद्यविद्या गारुडी-	७८	८	७८	८	७८	८	७८	८

सूत्रपात्रसिंहा-

सनादिः

अश्वगजारोहणं

अश्वचक्रं

गजकृत्यं

सिविकारोहं

पल्ल्याणस्मः

अश्वविशेषकं

रथकृत्यं

शत्रूणां सन्धिः

मद्यारम्भः

माहकवस्तुभस्मं

सूचीपत्रम्

पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	पृष्ठ सं.	
-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	-----------	--

दीपनक्रम	पट्टांक	पट्टांक	पट्टांक	पट्टांक	पट्टांक	पट्टांक	पट्टांक	पट्टांक	पट्टांक
चलदा चक्रम	८४	२	लोपध करणत	८६	८	अन्न श्रुतिः	८८	४	१०१
स्याली चक्रम	८५	४	सेवाच	८६	८	रोगोत्पत्तौनेष्टयोगः	८८	४	१०१
रुहकादिमुहूर्त	८६	५	रसोत्सादनम्	८७	१	उच्चारणपद्वेदोप-	८८	४	१०२
कोल्हूचक्रम	८७	१०	रससेवनम्	८७	३	ज्ञानं प्रश्रुत्यमात्र	८८	४	१०२
पर्मक्रिया	८८	११	वातरोगे तैललेपनं	८७	४	वारपरत्वनदोप-	८८	४	१०२
श्रुतिकैशिकं क-	८९	५	रक्तमोक्षणं वमन	८७	५	विचारः	८८	३	१०२
होमलेसाहुनिपत्तं	९०	८	विरक्तौ	८७	५	दोषज्ञानायापरः	८८	३	१०२
होमे बन्धि वारः	९१	८	लोहसाहः	८७	८	क्रमः	८८	२	१०२
गन्धदीप्ता	९२	११	रोगेन मृदात्कार	८७	८	सर्पदंशेन ययोगः	८८	३	१०२
गन्धयंत्रोपाएनादि	९३	५	दिन संख्या	८७	१०	रोगविमुक्त रोगानम्	८८	५	१०२
धीरसाधनम्	९४	७	रोगोत्पत्तौनेष्टक	८७	३	रक्तमोक्षणं लानं	८८	८	१०२
	९५	८	रोगोत्पत्तौनेष्टक	८७	३	रोगमुक्तस्य वहिर्ग-	८८	८	१०२

सूचीपत्र

सं.सं.	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति
कुंभकार चक्रम्	१०३	१	१०५	१०	कलत्रम्	१०६	१०	१०६	१०६	१०६
काष्ठसिल्यकृत्यम्	१०३	३	१०६	२	तर्कविचविंशोप	१०६	३	१०६	१०६	१०६
स्वर्णकारकृत्यम्	१०३	५	१०६	३	पक्षाः	१०६	३	१०६	१०६	१०६
चर्मकारकृत्यम्	१०३	६	१०६	४	संक्रान्तेर्विहिनानि	१०६	४	१०६	१०६	१०६
लोहास्मरणीनांकृत्यम्	१०३	८	१०६	५	संक्रान्तिप्रकरणम्	१०६	५	१०६	१०६	१०६
नापितकृत्यम्	१०३	८	१०७	२६	वह्याणि	१०७	२६	१०७	१०७	१०७
आभीरजनकृत्यम्	१०३	८	१०७	२७	मह्याणि	१०७	२७	१०७	१०७	१०७
चौरकृत्यम्	१०४	१	१०८	२	विलेपनानि	१०८	२	१०८	१०८	१०८
प्रेतदहः	१०४	३	१०८	१०	जातयः	१०८	१०	१०८	१०८	१०८
सम्प्रादित्थितानां	१०५	६	१०८	२०	पुण्याणि	१०८	२०	१०८	१०८	१०८
चलावली	१०५	८	१०८	२०	आभरणानि	१०८	२०	१०८	१०८	१०८
दूत्येकादशेभ्यः	१०५	८	१०८	२०	माणा	१०८	२०	१०८	१०८	१०८

सूची पत्र

वच्य	पंक्ति	वच्य	पंक्ति	वच्य	पंक्ति	वच्य	पंक्ति
गर्भाधानम्	२२४	८	अभुक्तसूत्रम्	२२८	२	एतेदुष्टकालाः	२३४
पुंनसन्त्राणि	२२४	१०	मूलजननेपादफलं	२२८	४	गृहाराजनेनैवा-	२३४
जन्ममंसीन्नेनि-	२२४	३	मूलदक्षम्	२२८	१	स्य भावफलम्	२३४
यिहं - - - -	२२४	६	कन्याजननेगविमा-	२२८	८	तनोःफलम्	२३४
पुंसवनसीमंतः	२२४	१०	गः - - -	२२८	८	धनस्य	२३४
मासेष्वरः	२२४	१०	श्लेयाफलं कन्यासु	२३०	२	सहजस्य -	२३४
संस्कारविशेषः	२२४	११	तयोः	२३०	५	सुहृत्स्थानस्य	२३४
विस्तु पूजा	२२६	३	श्लेयादक्षः	२३०	८	सुनस्य	२३४
सती गृहप्रवेशः	२२६	४	श्लेयापादफलं	२३०	८	रिपोःस्थानस्य	२३४
जातकर्म्म	२२६	६	ज्येष्ठापादफलं	२३२	१०	जायास्थानस्य	२३४
नामकरणम्	२२६	८	तिथिगंडम्	२३३	१	मृत्युस्थानस्य	२३४
जननसमयेदुष्टकालः	२२६	८	एतेपांसनम्	२३३	१	धर्म्मस्थानस्य	२३४
	२२६	२	त्रिदोयः	२३३	१	धर्म्मस्थानस्य	२३४
	२३६	३					
	२३६	४					
	२३६	५					
	२३६	६					
	२३६	७					
	२३६	८					
	२३६	९					
	२३६	१०					
	२३६	११					
	२३६	१२					
	२३६	१३					
	२३६	१४					
	२३६	१५					
	२३६	१६					
	२३६	१७					
	२३६	१८					
	२३६	१९					
	२३६	२०					
	२३६	२१					
	२३६	२२					
	२३६	२३					
	२३६	२४					
	२३६	२५					
	२३६	२६					
	२३६	२७					
	२३६	२८					
	२३६	२९					
	२३६	३०					
	२३६	३१					
	२३६	३२					
	२३६	३३					
	२३६	३४					
	२३६	३५					
	२३६	३६					
	२३६	३७					
	२३६	३८					
	२३६	३९					
	२३६	४०					
	२३६	४१					
	२३६	४२					
	२३६	४३					
	२३६	४४					
	२३६	४५					
	२३६	४६					
	२३६	४७					
	२३६	४८					
	२३६	४९					
	२३६	५०					
	२३६	५१					
	२३६	५२					
	२३६	५३					
	२३६	५४					
	२३६	५५					
	२३६	५६					
	२३६	५७					
	२३६	५८					
	२३६	५९					
	२३६	६०					
	२३६	६१					
	२३६	६२					
	२३६	६३					
	२३६	६४					
	२३६	६५					
	२३६	६६					
	२३६	६७					
	२३६	६८					
	२३६	६९					
	२३६	७०					
	२३६	७१					
	२३६	७२					
	२३६	७३					
	२३६	७४					
	२३६	७५					
	२३६	७६					
	२३६	७७					
	२३६	७८					
	२३६	७९					
	२३६	८०					
	२३६	८१					
	२३६	८२					
	२३६	८३					
	२३६	८४					
	२३६	८५					
	२३६	८६					
	२३६	८७					
	२३६	८८					
	२३६	८९					
	२३६	९०					
	२३६	९१					
	२३६	९२					
	२३६	९३					
	२३६	९४					
	२३६	९५					
	२३६	९६					
	२३६	९७					
	२३६	९८					
	२३६	९९					
	२३६	१००					

सूचीपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति
निःक्रमणम्	१५२	१०	सौरैजन्मलग्नम्	१५०	१०	प्रतिवेदनसन्नाशि	१५०	४	१५०	५	१५०
कटिस्त्रयं भूयुषवे	१५३	४	शस्त्रं	१५०	१०	साधारणो न सन्	१५०	४	१५०	५	१५०
शानम्	१५३	४	सौरैजन्मलग्नम्	१५०	१०	विशेषः	१५०	४	१५०	५	१५०
शान्नाशानम्	१५३	४	मातुः रजो दोषः	१५०	१०	अतिनिषिद्धः	१५०	४	१५०	५	१५०
तांबूलभक्षणम्	१५३	४	अथाक्षरा रमः	१५०	१०	अथानाध्यायः	१५०	४	१५०	५	१५०
कर्णविधेः	१५३	४	अथोपनयनम्	१५०	१०	प्रदोयस्त्वत्पम्	१५०	४	१५०	५	१५०
अब्जमुहूर्तम्	१५३	४	वर्णप्रणः	१५०	१०	गलगुहः	१५०	४	१५०	५	१५०
चूडाकर्म	१५३	४	वेदेष्टाः	१५०	१०	लग्नवलस्	१५०	४	१५०	५	१५०
शुक्लोद्वास्तमानं	१५३	४	गुर्वार्हिवलम्	१५०	१०	केंद्रस्य खेटफलं	१५०	४	१५०	५	१५०
गुल्ह्यास्तमानम्	१५३	४	उपनयने मातृशु	१५०	१०	व्रतयोगः	१५०	४	१५०	५	१५०
दंडोर्वालिच्छलं	१५३	४	दिः	१५०	१०	चैत्रप्राशस्त्यम्	१५०	४	१५०	५	१५०
केतुद्वयम्	१५३	४	तिथयः	१५०	१०	मातुः रजो दोषे वि	१५०	४	१५०	५	१५०

सूची पत्र

[illegible]

विषय	पृष्ठ	पंक्ति	सतस्यचक्रम्	पृष्ठ	पंक्ति	चक्रम्	तिथिविविधनाडीचक्रं	पृष्ठ	पंक्ति	संख्याप्रदाग्रहाः	पृष्ठ	पंक्ति
विज्ञानविचारन- सूत्राणि	१८०	७	अथोपग्रहदोषः	१८३	४	चक्रम्	तिथिविविधनाडीचक्रं	१८३	८	संख्याप्रदाग्रहाः	१८३	७
दशमहादोषाः	१८०	११	क्रांतिराम्यदोषः	१८३	४	नारविषनाडीचक्रं	नारविषनाडीचक्रं	१८३	५	दिनज्ञानम्	१८३	८
लजा - - - -	१८१	३	सप्तदोषः -	१८३	८	विषनाडीदोषाप-	विषनाडीदोषाप-	१८३	८	दसकालास्त्रिमानं	१८३	११
पातः - - - -	१८१	८	अथेदोषदोषाः	१८३	११	वादः - - - -	वादः - - - -	१८३	८	यनं - - - -	१८३	११
युतिदोषः - - -	१८२	२	दशदोषापवादः	१८३	६	ग्रहदृष्टिः - - -	ग्रहदृष्टिः - - -	१८३	३	सप्तलगादिकृत्वा	१८३	६
वेधः - - - -	१८२	५	यमपंदयोगः	१८८	३	लग्नशुद्धिः - - -	लग्नशुद्धिः - - -	१८३	३	लक्षणम् -	१८३	८
यामिनः	१८३	६	कर्त्तरीदोषः	१८८	८	पवंधादित्याज्यल-	पवंधादित्याज्यल-	१८३	३	प्रगस्तयोगः	१८३	८
सुधपंचकम्	१८३	१०	महाकर्त्तरी - -	१८८	१०	मानि - -	मानि - -	१८३	१	नेष्टयोगः	१८३	३
सहस्रान्नपंचकं	१८४	३	दोषापवादः -	१८८	११	होलाष्टकम्	होलाष्टकम्	१८३	४	गोपूतिकज्ञानम्	१८३	११
एकांगिण दोषः	१८४	१०	अथापरोदोषः -	१८८	३	शुभनवांशाः	शुभनवांशाः	१८३	२	ग्रहवसातज्ञानं	१८३	३
सतस्योदाहरणं	१८५	१	मस्तनविषनाडी	१८८	३	भागदाग्रहाः	भागदाग्रहाः	१८३	४	राज्याखड्ग विग्रहः	१८३	६
								१८३	४	हीनजान्तीगांवि०	१८३	८

	पृष्ठ	पंक्ति		पृष्ठ	पंक्ति		पृष्ठ	पंक्ति		पृष्ठ	पंक्ति
शुद्धयुनविवाहः	१२८	२	शुक्लदोषापवादः	२०२	७	अभियेकमुहूर्तम्	२०६	१	तारनिध्यादिशुद्धिः	२१०	१
विवाहंगकार्यम्	१२८	२	गोत्रपत्न्ये शुक्लदो-			युवराजाभियेकः	२०७	२	तिथीनां फलम्	२१०	३
तैललेपनेदिनसंख्या	१२८	७	षापवादः	२०३	१	मुन्नाभावेऽन्यस्या			श्रुतवारः	२१०	२८
वेदिकाभिर्भाषाम्	१२८	८	द्वेष्टेणहविचारः	२०३	२	भियेकः	२०७	३	उत्तम मध्यमाधम		
मंडपोद्वासनम्	२००	१	विशेषः	२०४	१०	रत्नचिह्नधारणम्	२०७	४	नक्षत्राणि	२१२	१
वृत्तिपंचदशी			वृत्तिश्रीद्योतुषी			वृत्तिप्रस्थादशी			नक्षत्राणां त्याज्य		
प्रभासमाप्ता	२००	११	प्रभा पूर्णा	२०५	३	प्रभा पूर्णा	२०७	७	घट्यः	२१२	४
राश्याधूपवेष्ट			अथास्याधानम्	२०५	३	अथयात्राप्रकरणम्	२०७	८	मन्त्रांतरम्	२१२	७
करणम्	२०१	१	अग्न्याधानमुहूर्त	२०५	४	अथप्रश्नलभान्			विजययात्रा	२१२	२८
वधूपवेशनमुहूर्त	२०१	२	वृत्ति सप्तदशी			यान्त्राविचारः	२०७	२८	दिक्छलम्	२१२	३
द्विरागमनमुहूर्त	२०१	१०	प्रभा पूर्णा	२०६	१	संक्रांतियात्रा	२०८	२	विदिक्छलम्	२१२	४
दीपोत्सवेद्योषापवादः	२०२	६	अथाभियेकः	२०६	२	विशेषः	२०८	४	दिक्छलयरिहाम्	२१२	७

सूची पत्र

पृष्ठ	पंक्ति		पृष्ठ	पंक्ति		पृष्ठ	पंक्ति		पृष्ठ	पंक्ति	
नत्कालयोगिनी	२२६	५	शुक्रदोषापवादः	२२६	२	दिगासयः	२३१	५	संज्ञा	२३३	२०
कालपाशो	२२६	६	शुक्रास्त्रादिदोषः	२२६	५	दिगीशः	२३१	८	हृद्दशमावफलं	२३६	१
यामार्द्धराहुः	२२७	२	बुधोऽपिसन्मुख	२२६	८	ललाटीस्पष्टम्	२३१	११	योगप्रशंसायात्राया	२३६	१
मुहूर्त्तौत्तमकराहुः	२२७	४	स्त्याज्यः	२२६	८	कालंप्राशस्त्यं स-	२३१	१०	प्राथयोगयात्रा	२३६	५
राहोफलम्	२२७	६	शुक्रदोषाभावः सा-	२२६	८	र्वीभावे	२३२	१०	समरयात्रा	२५१	१
परिघदंडः	२२७	८	मान्येन	२२६	८	सजीवनिर्जीवयात्रा	२३३	३	प्राथायादिगतल	२५३	१
आनयकैपरिघोऽ	२२७	११	तीर्थयात्रायां दोषा	२२६	११	यान्नाम	२३३	८	प्रशंसा	२५३	१
स्रघनं	२२७	११	भावः	२२६	११	यात्रावाहनम्	२३३	८	मध्याह्ने विप्रैक-	२५३	६
वक्रगृहस्य वारादि	२२७	११	गुरुशुक्रवृथास्ते	२२६	११	फलं च	२३३	८	छायावलयात्रा	२५३	२
स्त्याज्यं	२२८	४	विवेकः	२३०	२	यान्नादशा	२३३	८	विजदशान्याप्रा-	२५३	८
अपनानुकूलम्	२२८	६	लभविचारश्च नु	२३०	२	श्रेयानिष्टगृहाः	२३५	४	प्रास्त्यं	२५३	८
त्रिविधः शुक्रः	२२८	११	आग्निशुभलभानि	२३०	५	लग्नाद्वावादीनां	२३५	४	नत्कालपंचांगम्	२५४	१०

सूची पत्र

पृष्ठ संक्रि	पृष्ठ संक्रि	पृष्ठ संक्रि	पृष्ठ संक्रि	पृष्ठ संक्रि	पृष्ठ संक्रि	पृष्ठ संक्रि	पृष्ठ संक्रि
उत्पात गजुनानि	२५१	२	सतेया चक्रम्	२५२	८	अथ अग्नि द्विषटी	२५३
चितीलाहादिभुम्	२५२	५	स्वरविचारः	२५३	२	योडप्रभुहूर्तना-	२५४
उत्तवादि प्राप्ती -	२५३	७	स्वरेयनिधिविचारः	२५४	४	मानि - - -	२५५
अकाल गजुनि -	२५४	८	वारस्वरोदयः	२५५	८	मुहूर्तकार्यम्	२५६
भावप्रसन्नोद्यनगजुनि	२५५	११	स्वरस्वरोदयः	२५६	८	मुहूर्तार्थम्	२५७
एकस्मिन्दिने निर्गो-	२५६	१२	प्रातः - - -	२५७	१	गुरोर्द्वयम्	२५८
मंत्रवेद्यो - - -	२५७	४	चंद्रस्वरकृत्यम्	२५८	३	रेखाज्ञानम्	२५९
यात्राविधिः - -	२५८	८	सूर्यस्वरकृत्यम्	२५९	७	द्विषटीमुहूर्तचक्रं	२६०
नक्षत्ररोहदम् -	२५९	१०	बृहन्नाडीस्वरकृत्यं	२६०	१	यात्राविधिः - -	२६१
दिग्दोहदम् -	२६०	५	स्वरपरत्वे तत्त्वोदयः	२६१	८	प्रस्थाने प्रतिनिधिः	२६२
गारदोहदम् -	२६१	६	तत्त्वानां प्रन्वारः	२६२	१०	प्रस्थितस्य गमन	२६३
तिथिदोहदम् -	२६२	१	युद्धे विशेषः	२६३	३	विधिः - - -	२६४

सूची पत्र

पृष्ठ पंक्ति	पृष्ठ पंक्ति	पृष्ठ पंक्ति	पृष्ठ पंक्ति	पृष्ठ पंक्ति	पृष्ठ पंक्ति	पृष्ठ पंक्ति	पृष्ठ पंक्ति	पृष्ठ पंक्ति	पृष्ठ पंक्ति	पृष्ठ पंक्ति	पृष्ठ पंक्ति
दुःशकुनाः --	२२६	६	त्याज्यहोयाणा	२२६	६	नामरणिप्राधा-	२२७	३	मूलधनं दृढी	२२७	२१
महापशकुनानि	२२७	७	संग्रहः --	२२७	२	न्यम् --	२२७	३	कारणं --	२२७	२१
दुस्सकुन त्यागः	२२७	१	द्युतशकुनम्	२२७	२	रश्मीनां ग्रामवा-	२२७	३	समभूयोदिक	२२७	२१
दक्षिणभागेष्पुमा	२२७	८	द्युतेस्वरत्नम्	२२७	७	सेफलम् --	२२७	३	प्रोधनं --	२२७	२०
तेव्यपि विशेषः --	२२७	१	यात्रानिद्वितीय	२२७	२	ग्रामचक्रम् --	२२७	३	गृहस्यायाः	२२७	२०
शुनश्चेष्टाशकुनं	२२७	४	हप्रवेशः --	२२७	२	वर्गमैत्री --	२२७	३	आयानां प्रयो-	२२७	२०
प्रवेशे शकुनः --	२२७	८	प्रवेशे किंचिन्नि	२२७	२	काकिणी --	२२७	३	जनम् --	२२७	२०
शयशकुनानां काल	२२७	८	वेधः --	२२७	४	दिक्परक राशिः	२२७	३	आरंभे निषेधः	२२७	२०
विशेषे नैवल्य	२२७	८	लग्नचलम्	२२७	८	दशा विचारः --	२२७	३	क्षेत्रफलानयनं	२२७	२०
माह --	२२७	८	द्वत्येकोनविंशति	२२७	८	दशाफलम् --	२२७	३	दृष्टक्षेत्रोधनं	२२७	२०
चामीशुभाशुभ	२२७	८	काग्रभासमाप्ता	२२७	१	भूमि विचारः --	२२७	३	दीर्घविस्तृतिज्ञा	२२७	२०
शकुनम् --	२२७	१	शयवास्तुप्रकारां	२२७	२	ग्रहलक्षणम् --	२२७	३	मे --	२२७	२०

सूची पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति					
रूपम् - - - -	३०६	४	गृहसमीपेऽन्यथा	३१२	१	देवालयमहाधारं	३१३	२	जलज्ञानम्	३१५	५
सुरस्योच्चता	३०६	६	हफलम् - - -	३१२	१	मः - - - -	३१३	२	कूपेनिर्भरविचारः	३१५	८
नेत्रोच्चता	३०६	७	गृहगणयोग्यभूतम् - ३१२	४	३१२	जैन्यालयप्रपाद	३१३	४	कूपचक्रम् चतुर्ध्व	३१५	८
गृहगोविधविचारः	३०६	१०	गृहस्वतित्तिदिशि च	३१२	७	रीणा मारंभः -	३१३	४	नेवारचक्रम् -	३१६	३
विधापवादः - -	३०६	११	सा रोपः - - -	३१२	७	कूपस्वनचन्द्रदेशः	३१३	५	दृष्टिकारंभः सु-	३१६	३
नेधफलम् - - -	३०६	१२	गृहगणयोग्यभूतम्	३१२	७	जलाशयारंभः -	३१३	७	धालेपः - - -	३१६	५
अंशगणज्ञानम् - -	३०६	१३	घृष्टाः - - -	३१२	८	कूपारंभेवारफलं	३१३	१०	दृष्टिकाचक्रम्	३१६	७
सुवविचारः	३०६	१४	रागोपे सर्ववृक्षा	३१२	१०	रोहिण्युष्मात्कूप	३१३	१०	दृष्टिकायामग्निर	३१६	८
पौंड्रगृहनिर्मा-	३०६	१५	नियिष्टः - - -	३१२	१०	चक्रम् - - - -	३१३	१०	दानं - - - -	३१६	८
रामम् - - - -	३११	१	पुरगमप्राकार	३१२	१०	भौमभात्कूपचक्रं	३१३	१०	तडागचक्रम्	३१६	११
चित्रारंभः	३११	६	दीनानिर्मोणम्	३१२	१०	सूर्यभात्कूपचक्रं	३१३	१०	दूतिविंशतिप्र	३१६	११
तुल्यीस्थापनम्	३११	८	त्रसाधनम् -	३१२	१०	एतद्भात्कूपचक्रम्	३१३	१०	भासमाप्ता	३१७	६ २

	पट्ट	पंक्ति		सूचीपत्र	पट्ट	पंक्ति		पट्ट	पंक्ति		पट्ट	पंक्ति
ग्रहप्रवेशप्रारंभः	३१७	७	वेशेनिषेधः	३२१	१०	विशेषः	३२३	८	३२६	३	स्वानफलम्	३२६
जीर्णग्रहप्रवेशः	३२८	५	वास्तुपूजनम्	३२२	१	चारफलम्	३२३	११	३३०	३	कारकफलम्	३३०
नक्षत्रफलम्	३२८	६	नवदुर्गप्रवेशः	३२२	३	देवविशेषेऽयन			३२७	१०	कारकस्पर्शफलम्	३२७
चारफलम्	३२८	१०	जितशत्रु पुर प्रवे			फलम्	३२४	२	३२४	२	कारकस्पर्शेऽयन	३२४
प्रवेशेऽप्यन्यः	३२९	३	शः	३२२	४	ग्रहशुद्धिः	३२४	५	३२४	१	भारवः	३२४
सप्तमवलम्	३२९	४	इतिश्रीएकवि			द्विद्विंशतिः					कारकमैथुनफ	
चामरविचारः	३२९	१०	प्रतिप्रभास्तु			प्रभासमाप्ता	३२४	६	३२४	३	लम्	३२४
प्रवेशेऽनिययः	३२९	४	समाप्ता	३२२	७	अथमिथप्रकरणे	३२४	८	३२४	८	पिंगलाफलम्	३२४
कलशचक्रम्	३२९	७	प्रतिप्राकरणम्	३२२	७	शंगसुराफलम्	३२४	८	३२४	९	उल्लूकविचारः	३२४
प्रवेशेऽविधिः	३२९	११	देवताविशेषेऽयन			पक्षीपतनफलम्	३२४	१	३२४	७	स्वस्थारिष्टज्ञान	३२४
प्रवेशेऽविधिः	३२९	७	सप्त विशेषः	३२३	१	खंजनहस्तिफलम्	३२७	१	३२७	१	संग्रामेऽयुभवि	३२७
चारपूजाविनाप्र	३२९		देवविशेषेऽयन			छिन्नाफलम्	३२८	२	३२८	७	नं	३२८

सूचीपत्र	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति
मुद्रैः अथ लक्षणम्	३३३	८	३३३	४	अन्येऽप्युत्पाताः	३३६	६	युगानामगाणाम्
अथ पुरुषप्रकारः	३३३	१०	३३३	८	उत्पातयोगोपापवादः	३३७	२	गतकालिमानं
स्वप्नदर्शनम्	३३४	८	३३४	२	उत्पातानामुपहारः	३३७	४	धर्मानयनम्
शुभफलदोः स्वप्नाः	३३४	११	३३४	५	इत्युत्पाताः	३३७	८	व्यापनयनार्थं
अशुभ स्वप्नाः	३३६	८	३३४	८	महर्घिकांडम्	३३७	८	ध्रुवांकाः
स्वप्नफलदायकवस्त्रा	३३६	५	३३४	१	वर्षराजादिविचारः	३३७	८	राकात्सुभिः सङ्गा
दुष्टस्वप्नप्रणतिः	३३६	६	३३४	१	विशेषोपापनयनम्	३३८	१	नम्
अथोत्पाताः	३३६	१०	३३५	५	शुभाधानयनम्	३३८	४	संवत्सरत्सुभिः
उत्पातानां संग्रहः	३३७	१	३३५	५	अन्यत्वायनम्	३३८	७	ज्ञानम्
उत्पातज्ञानायनम्	३३७	१	३३५	७	शलग्राह्यायनम्	३३८	१०	अपरः प्रकारः
बुद्धिमं दुष्टानि	३३७	३	३३५	८	पुनःकरणभाषा	३३८	१	राजादीनां फलं
कौतवः	३३७	६	३३६	२	उद्भिदादि	३३८	३	दीपमालायांगष्ट

सूची पत्र

योग फलम्	पृष्ठ	पंक्ति	प्रतिपाद्यो गहोदय	पृष्ठ	पंक्ति	समर्पमहर्षी संज्ञा	पृष्ठ	पंक्ति	हान्द्रुष्टिः	पृष्ठ	पंक्ति
ज्येष्ठ प्रतिपदादियोगः	३५२	५	फलं ---	३५६	२	तितः ---	३६०	२	अपरचगर्मज्ञानं	३६२	१
आषाढ द्वितीयादियोगः	३५२	८	नक्षत्रस्थगहान्म	३५६	८	हृदादौ पत्रपुयफ-	३६०	७	दृष्टि ज्ञानं च ---	३६२	५
शनिचार फलम्	३५२	१०	हर्षज्ञानं ---	३५६	८	लाघौः ---	३६०	७	अपरक्रमः ---	३६२	७
वृश्चिके चक्रं शनेर्ज्ञाना	३५२	४	एकमासे पंचवार	३५६	८	धान्यनिःपतिज्ञा	३६०	११	ज्येष्ठयुक्ताष्ट-	३६२	११
य ---	३५२	४	फलं ---	३५६	८	नम् ---	३६०	११	म्यादिदिनिचनु-	३६२	११
गृहचारवर्णान्महर्षी	३५२	४	चंद्रशृंगो ज्ञानिफ-	३५६	८	इति समर्पज्ञानम्	३६०	११	दृष्टे वायुफलम्	३६२	११
दिः ---	३५२	४	लम् ---	३५६	८	अथ दृष्टिज्ञानम्	३६०	११	स्वात्पादियुष्ट्ये	३६२	११
आषाढी पूर्णा विचारः	३५२	५	प्रतिमासं संक्रांति	३५६	४	मेघगर्भ निचारः	३६०	५	आवर्णदावना	३६२	२
प्रतिमासे दर्शफलम्	३५२	५	तो महर्षी ---	३५६	४	गर्भलिखणम्	३६०	५	दृष्टिः ---	३६२	२
सर्ववस्तूनां महर्षी	३५२	१०	ग्रेष्मशरादधान्य	३५६	७	गर्भहिना दृष्टिज्ञानं	३६०	८	आषाढ शुक्ल द्वि-	३६२	८
ज्ञानं ---	३५२	१०	निःपत्तिः ---	३५६	७	प्रकारे तरेण गर्भा	३६०	८	तीयादिनिचनुष्ट	३६२	८

सूचीयन											
पृष्ठ	पंक्ति		पृष्ठ	पंक्ति		पृष्ठ	पंक्ति		पृष्ठ	पंक्ति	
यफलम्	३६३	३	ज्ञानम्	३६८	१	उपश्रुतिनन्त्राः	३७२	१०	सामुद्रिकपरिक्षा	३७७	८
आवणशुक्लपंचमी	३६३	३	आर्द्धदिनसूत्रः	३६८	१	उपश्रुतिवासः	३७३	६	स्त्रीरंगविशेषः	३७८	१०
फलम्	३६३	३	प्रवेशशुक्लीनपुंस	३६८	१	स्वयंप्रसादिकाकु-	३७३	६	स्त्रीरंगप्रभञ्चि-	३७८	१०
सूर्यस्वरेत्वाहिमे	३६३	३	कज्ञानम्	३६८	१	नाः	३७३	६	नहानि	३७८	१०
सुखद्विफलम्	३६३	३	सूर्यस्वचंद्रदक्षिणे	३६८	१	अंगनिद्याग्रन्थः	३७३	६	सानान्यतःप्रशुभ	३७८	१०
संक्रांतौवृष्टिफलं	३६३	३	वृष्टिज्ञानम्	३६८	१	सर्वग्रन्थनिर्णयः	३७३	६	लक्षणं	३७८	१०
काकनीडफलम्	३६३	३	आढकाप्रमाणम्	३६८	१	नक्षत्रग्रन्थः	३७३	६	स्त्रीपुंसोत्पद्य	३७८	१०
डिडिभांडफलम्	३६३	३	रविनक्षत्रवाहनं	३६८	१	गुराग्रन्थः	३७३	६	व्यापारः	३७८	१०
रोहिणीचक्रम्	३६३	३	सद्योवृष्टिज्ञानं	३६८	१	आगतुकग्रन्थः	३७३	६	इतित्रयोविंश	३७८	१०
सप्तनाडीचक्रम्	३६३	३	याकाले	३६८	१	गर्भिणीग्रन्थः	३७३	६	तिप्रभापूरणा	३७८	१०
नाडीस्थग्रहफलं	३६३	३	इतिवृष्टिकांडाः	३६८	१	नष्टपशुलाग्नः	३७३	६	अथतिथिनिर्णय	३७८	१०
ग्रहयोगवशाद्वृष्टि	३६३	३	उपश्रुतिशुक्लीनां	३६८	१	श्रुतः	३७३	६	यत्रकलागम्	३७८	१०

विधिलक्षणम्	प्रश्नः	पट्टः	पङ्क्तिः	प्रतिपाद्यः	पट्टः	पङ्क्तिः	प्रतिपाद्यः	पट्टः	पङ्क्तिः	प्रतिपाद्यः	पट्टः	पङ्क्तिः
विधिलक्षणम्	२१	३८६	२	हविर्गन्तुम्	३८६	२	प्रतिपाद्यः	३८६	४	सूत्रादिनिर्णयः	३८६	२
प्रत्ययनिर्णयः	२२	३८७	३	नक्षत्रनिर्णयः	३८७	३	अनेलिख्येधः	३८७	५	स्त्रोऽधिकारः	३८७	४
निरुतधर्माः	२३	३८८	४	शयाचितव्रतनिर्णयः	३८८	४	व्रते प्रशस्तम्	३८८	६	व्रतकर्तृव्रतः	३८८	६
तिथयः	२४	३८९	५	स्त्रियः	३८९	५	ग्रहीतव्रतत्यागः	३८९	७	निधिः	३८९	६
गव्योद्विष्टितालः	२५	३९०	६	व्रतपरिभाषातन्त्रः	३९०	६	यः	३९०	९	कान्येप्रतिनिधिः	३९०	७
रूपः	२६	३९१	७	धिकारिणः	३९१	७	अशक्तवियये	३९१	१०	निधेयः	३९१	८
वैधनिर्यायः	२७	३९२	८	स्त्रीणां व्रतः	३९२	८	शक्तवियये	३९२	११	व्रतसन्निपातेनि	३९२	९
पटीनिर्यायः	२८	३९३	९	कारः	३९३	९	उपवासाशक्तौ	३९३	१२	स्त्रियः	३९३	१०
एकभक्तव्रतनिर्णयः	२९	३९४	१०	स्त्रीकर्तृकैः पितृ	३९४	१०	स्त्रीव्रते विप्रोयः	३९४	१३	इतिपरिभाषा	३९४	११
यः	३०	३९५	११	नैव्यता व्रतसंक	३९५	११	विधवाव्रतेन	३९५	१४	विद्युत्तिथिनि	३९५	१२
नक्तव्रतनिर्णयः	३१	३९६	१२	त्यः	३९६	१२	व्रतघ्नानि	३९६	१५	स्त्रियः	३९६	१३
सौरनक्तम्	३२	३९७	१३	व्रतकर्तृनिर्णयः	३९७	१३	व्रतधर्माः	३९७	१६	स्त्रियः	३९७	१४

पूज्यता माह	पट्ट	पक्षि	पट्ट	पक्षि	पट्ट	पक्षि	पट्ट	पक्षि	पट्ट	पक्षि	पट्ट	पक्षि
पूज्यता माह	४०४	२	चैत्र शुक्ल द्वितीया	४०४	५	चैत्र शुक्ल चतुर्थी	४१५	२	धरती निर्यायः	४१६	१२	१२
अथ प्रतिपत्तिरस्य	४०४	६	आवण हल द्वितीया	४०६	७	ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी	४१५	३	आपाद शुक्ल पक्षी	४१६	११	११
चैत्र शुक्ल प्रतिपत्ति	४०५	६	कार्तिक शुक्ल द्वितीया	४०६	१०	आवण हल चतुर्थी	४१५	५	आद्र शुक्ल पक्षी	४१६	१०	१०
संनारंभः	४०५	६	तृतीया निर्यायः	४१०	११	आद्र शुक्ल चतुर्थी	४१५	६	हल पक्षी	४१६	१०	१०
चैत्र शुक्ल प्रतिपत्ति	४०५	११	चैत्र शुक्ल तृतीया	४११	७	चंद्रार्द्रा निर्यायः	४१५	८	आश्विन शुक्ल पक्षी	४१६	१०	१०
वत्सरंभः	४०५	११	वैशाख शुक्ल अक्षय तृतीया	४११	८	माघ शुक्ल चतुर्थी	४१६	१०	कार्तिक शुक्ल पक्षी	४१६	१०	१०
ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपत्ति	४०६	३	ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया	४१३	५	चैत्र शुक्ल पंचमी	४१५	७	आषाढ शुक्ल पक्षी	४१६	१०	१०
निद्रा हरंभः	४०६	३	आद्र शुक्ल तृतीया	४१३	५	आवण शुक्ल पंचमी	४१५	७	सूर्य पूजा	४१६	१०	१०
आश्विन शुक्ल प्रतिपत्ति	४०६	४	हरिनालिका	४१४	१	आद्र शुक्ल पंचमी	४१५	७	चैत्र शुक्ल संज्ञमी	४१६	१०	१०
परिनिवारांभः	४०६	४	माघ शुक्ल तृतीया	४१४	८	आश्विन शुक्ल पंचमी	४१५	७	सूर्य पूजा	४१६	१०	१०
कार्तिक शुक्ल प्रतिपत्ति	४०६	४	माघ शुक्ल तृतीया	४१४	८	आश्विन शुक्ल पंचमी	४१५	७	वैशाख शुक्ल संज्ञमी	४१६	१०	१०
नृद्वितीया निर्यायः	४०६	४	अथ चतुर्थी	४१४	१०	माघ शुक्ल पंचमी	४१५	७	व्यांगंगा पूजा	४१६	१०	१०

[illegible]

पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति	पृष्ठ	पंक्ति
चैत्रशुक्लदशमी	४६३	२०	चैत्रशुक्लचतुर्दशी	४६६	२०	वैशाखपूर्णिमा	४७८	३	अमावीस्यानिर्गो-	४८८	७
आषाढशुक्लदशमी	४६३	२१	वैशाखशुक्लचतुर्दशी	४७७	२१	ज्येष्ठपूर्णिमा-	४७८	६	ज्येष्ठमायांवदसवि-	४८८	९
श्रावणशुक्लदशमी	४६६	२	ज्येष्ठशुक्लचतुर्दशी	४७१	२	आषाढपूर्णिमा	४७८	८	भाद्रमायांकुशमह-	४८०	२
भाद्रशुक्लदशमी	४६६	६	भाद्रशुक्लचतुर्दशी	४७१	४	श्रावणीपूर्णिमा	४७८	८	कार्तिकशमादीपमा-	४८१	४
कार्तिकदशमी	४६६	७	कार्तिकशुक्लचतुर्दशी	४७२	४	उपाकर्म-	४७८	१०	साचीअमावास्या	४८१	११
माघशुक्लदशमी	४६६	८	कार्तिकशुक्लचतुर्दशी	४७४	५	भाद्रीपूर्णा	४८२	५	अश्विवाहोदययोग-	४८३	४
पयः--	४६७	७	मार्गशुक्लचतुर्दशी	४७४	८	आश्विनपूर्णा	४८२	८	आश्विमा निर्गोयः	४८४	६
चैत्रशुक्लत्रयोदशी	४६७	२१	माघशुक्लचतुर्दशी	४७४	८	कार्तिकीपूर्णा	४८३	२	मलमासेवर्षनिर्गो-	४८५	५
भाद्रशुक्लत्रयोदशी	४६७	२०	शिवरात्रिपालाविषये	४७५	८	मार्गशीर्षीपूर्णा-	४८४	११	महारात्रिनिर्गोयः	४८७	१
कार्तिकशुक्लत्रयोदशी	४६८	२	अथपूर्णिमानिर्गोयः	४७५	६	पौषीपूर्णा	४८५	४	महारायोगविषये	४८८	२
अथचतुर्दशी-	४६८	८	चैत्रपूर्णिमा	४७७	८	साचीपूर्णा	४८५	५	इति श्रीसंगमहृदि		
						फाल्गुनीपूर्णाहेला	४८५	११	गेमरिण सूची-	४८८	१०

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ ॐ गुरु चरण कमले भ्यो नमः ॥ अथ संपद्य श्रितो
 मणि प्रारंभः ॥ श्रीचण्डी प्रवेत वर्णाभां वाग्दानं चतुरंगं धिवा म् ॥ गणेश सहितं वंदे व
 न्दनीय पदां वुजाम् ॥ १ ॥ श्री ज्योतिषं सुभांस्वतं जगद्धेतुं जगन्मयम् ॥ तं नौमिनमनी
 यं श्रीं गुरु भूर्ति न्दिवा करम् ॥ २ ॥ अस्य शास्त्रस्य संबंधो वेदांग मिति धातुतः ॥ त-
 स्मा ज्ञगदिता येदं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥ ३ ॥ गहरा ग्रह संक्रांति यक्षाध्ययन कर्म-
 णाम् ॥ प्रयोजनं व्रतो दाह क्षियाणां काल निश्चयः ॥ ४ ॥ सिद्धांतं संहिता होरा रूपं स्कं-
 धत्रयात्मकम् ॥ वेदस्य निस्सर्गं चक्षु ज्योतिषं प्रशास्त्रं मकलमयम् ॥ ५ ॥ चिन्तनं तन्त्रि-
 लं कर्म श्रीतं स्मार्त्तं न सिद्ध्यति ॥ अत एव द्विजे रेतदध्ये तत्वं प्रयत्नतः ॥ ६ ॥ वेदादि
 यज्ञार्थं नान्यथाः कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः ॥ तस्यादिं काल विधानं शास्त्रं यो ज्यो
 तियं वेदं संवेदयद्वा ॥ ७ ॥ यथा शिरसा मयूराणां नागानां मणयो यथा ॥ तद्वद्देवांगं प्रा-
 णाणां ज्योतिषं मूर्ध्नि स्थितम् ॥ ८ ॥ विद्याह वै ब्राह्मण साजगाम नोपायमात्रे वधिष्ठे ह मस्मि

अस्मै काया नृज वेहिताय न मां नृया अवीर्यं वती यथा स्याम् ॥ ४८ ॥ नैतद्व्यं दुर्विनीता
 य जातु ज्ञानं गुप्तं तद्वि सम्यक् फलाय ॥ अस्याने हि स्थाप्य सानैव वाचां देवी को यान्ति
 दहेत्तं चिराय ॥ १० ॥ खेहा ह्योमाच्च मोहाच्च यो विप्रोऽ ज्ञान तोऽपि दा ॥ अद्भाराणां सुप-
 रंशं तु दद्यात्स नरक म्भजेत् ॥ ११ ॥ एवं निधम्य श्रुति नेत्रे प्राणस्त्रि स्वरूप सन्तुः रदन्तु द-
 र्शने वै ॥ निहन्य प्रोपं कलुषं जनानां षडब्जं धर्म्मं मुखास्य दं स्यात् ॥ १२ ॥ दृष्ट-
 दिन कृत पापं हन्ति सिद्धान्त वेत्ता त्रि दिन जनित दोषं तत्र वैशिष्ट्य एव ॥ करण भ-
 गण वेत्ता हंत्य होरात्र दोषं जनयति च न महस्तत्र नक्षत्र सूची ॥ १३ ॥ अवि हित्वैव
 य प्रपणस्यं देव ज्ञत्वं प्रपद्यते ॥ संपत्ति दूषकः पाषो दोषो नक्षत्र सूचकः ॥ १४ ॥
 तिथ्युत्पत्तिं न जानाति ग्रहाणां नैव साधनम् ॥ परवाक्येन वर्तन्ते ते वै नक्षत्र सूच-
 काः ॥ १५ ॥ नक्षत्र सूचको हिष्ट मुप वासं करोति यः ॥ सत्रजत्यं धना मिश्रं हा-
 र्जं मृक्ष विडं विना ॥ १६ ॥ नक्षत्र जीविनं पापं भिषजं शुल्क जीविनम् ॥ ताहक्यौ

राणि का दींश्च वाङ्मात्रेणापि नाच्चेयेत् ॥ १७ ॥ देव द्वैष्टास्त्र तत्व द्वौ सुहृत्तौ ऽन्वि-
 ष्यते यदि ॥ समुहर्त्तः सप्तन्वेष्टो नान्यैर्न सन्न सूचकैः ॥ १८ ॥ ज्योतिश्चक्रे तुलो-
 कस्य सर्वलोकं शुभाशुभम् ॥ ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमां गतिम् ॥ १९ ॥
 ॥ शुभ क्षण क्रियास्म जनिता पर्व सम्भवाः ॥ सम्पद सर्व लोकानां ज्योतिस्त-
 त्र प्रयोजनम् ॥ २० ॥ सुपरीक्षितं विलग्नं धर्मार्थं सुखाय दंपत्योः ॥ अपरीक्षितं
 विलग्नं न हि देयं पंडितेन देव विवा ॥ २१ ॥ स्वभावा देव कालोयं शुभाशुभ सम-
 न्वितः ॥ अनादि निधन सर्वो न निर्देष्टो न निर्गुणः ॥ २२ ॥ तस्मान्निर्देष्टव्य
 कालार्थं मुहूर्त्तमधि गच्छताम् ॥ काल प्रशुभो गुणैर्युक्तो बलवद्भिः प्रशुभ प्रदः
 ॥ २३ ॥ वषिष्ठ गार्गी गिरसा मत्र्या दीनाम्मतं तथा ॥ रैभ्य कपयप रामाणां स्मरहा-
 ज बराहयोः ॥ २४ ॥ गणेश श्रीपति मतं ज्ञात्वा सिद्धांत सम्भवम् ॥ बाल बोधा-
 य क्रियते मुहूर्त्तानां शिरोमणिः ॥ २५ ॥ द्विवेदिवं प्राकक्षार भानुना पितृव दोमया ३

यथा शास्त्रं च सरस्य प्रसादे नैव सङ्ग्रहः ॥ २६ ॥ ऋतो मूर्त्तस्य च तिथेः नारजस्तन
 योस्तथा ॥ योगस्य करणख्यस्य ताग्याश्च यथा क्रमात् ॥ २७ ॥ शुभाशुभस्य
 त्याज्यस्य मुहूर्त्तानां तथैव च ॥ संक्रांते गोचिन्त्यैव संस्कारे द्वाहयोस्तथा ॥ २८ ॥
 बधू प्रवेष्टानस्याग्न्याधानराज्याभिषेकयोः ॥ यात्रायाश्चैव वालोश्च प्रवेष्टास्य
 प्रतिष्ठिते ॥ २९ ॥ मिश्राणां च तिथीनां च निर्णयं च यथार्थतः ॥ एवं प्रकारा-
 न्यत्र तत्त्वसंख्या न्यनुक्रमात् ॥ ३० ॥ अथ कलां गत्वेन संवत्सारश्च नर्तुं दासादीनां
 ज्ञानम् आदौ संवत्सरपरिज्ञानम् ॥ प्रकृतेर्कालार्कसुतः कृत्वा पञ्चगव्यैर्ह-
 तः ॥ श्रेष्ठाः संवत्सराब्देयाः प्रभवाद्यावुधैः क्रमात् ॥ ३१ ॥ स एव पंचगिनि कुम्भि-
 र्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि ॥ रेवाया उत्तरे तीरे संवन्ता म्नाति विश्रुतः ॥ ३२ ॥ अथ
 संवत्सरनामानि प्रभवो २ विभवः २ युक्तः ३ प्रमोदोऽथ ४ प्रजायतिः ५
 अंगिरः ६ श्रीमुखो ७ भावो ८ युवा ९ धाता १० तथेश्वरः ११ ॥ ३३ ॥ बहुधान्यः १२ ॥

प्रमाथीच १३ त्रिक्रमो १४ त्रयमस्तथा १५ चित्रभानुः १६ सुभानुश्च १७ तार-
 गाः १८ पार्थिवो १९ व्ययः २० ॥ ३४ ॥ ब्रह्मणो विंशति स्तत्र सृष्टिरेव प्रजा
 पतेः॥ सर्वं जित् १ सर्वं धारीच २ विरोधी ३ विकृतिस्तथा ४ ॥ ३५ ॥ स्वरो ५ न-
 न्द्रज नामाच ६ विजयश्च ७ जयस्तथा ८ मन्मथो ९ दुर्भुरव १० ध्यानो नै-
 मलं ११ विलंबको १२ ॥ ३६ ॥ विकारी १३ सर्वरीचान्यः १४ लवश्च १५ द्यु-
 भक्तस्तथा १६ शोभनश्च १७ तथाक्रोधी १८ विप्रवावसु १९ भवोपरः २० ॥
 ३७ ॥ विह्वोरेतेच विंशत्या पालना नत्र जायते लवंगः १ कीलकः २ सोम्यः ३
 तथा साधारणोपरः ४ ॥ ३८ ॥ विरोध कृत्समाख्यातः ५ परिधावी ६ प्रमाद्यपि
 ७ ॥ ३९ ॥ आनंदो दण्डसश्चाथ ८ नलश्च १० पिंगलस्तथा ११ कालः १२ सिद्धार्थ
 १३ रौद्रेच १४ दुर्मति १५ दुन्दुभिस्तथा १६ ॥ ४० ॥ अपरोरुधिरौद्वारी १७ रक्षाक्ष
 १८ क्रोधन १९ स्तथा क्षय २० कृहत्सरश्चान्यो रुद्रस्याभीचविंशतिः ॥ ४१ ॥ दत्तरावदि ५

शिव्याता नाम तुल्य फल प्रदाः ॥ ४१ ॥ अथ संवत्सराणां फलम् ॥ प्रभवा द्विगुणं
 कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं चकारयेत् ॥ सह सितु हे द्वागं प्रोषं द्वेयं शुभाः शुभम् ॥ ४२ ॥
 एकं चत्वारिदुर्भिक्षं पचद्वाभ्यां सुभिक्षकम् ॥ त्रिषष्टेतु समं द्वेयं प्रून्ये पीडा न संशयः
 ॥ ४३ ॥ अथ संवत्सराणां त्वामिनः ॥ युगं भवेद्दत्तरपंच केन युगानि च द्वादश
 वर्षयथ्या ॥ भवंति तेया मधि देवताश्च क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः ॥ ४४ ॥
 विसृजीवः शक्नो दहनस्त्वथ अहिर्बुध्न्यः पितरः ॥ विप्रवे देवाश्चन्द्रज्वलनौ नास-
 त्यनामानौ च भगः ॥ ४५ ॥ अथ संवत्सराणां भेदाः ॥ संवत्सरः प्रथमकः परिवत्स
 रोन्यस्तस्मादिडाग्विदित पूर्व पदाद्भवेसुः ॥ एवं युगेषु सकलेषु तदीयं नाथा वन्द्य
 कींशीतगु विरंचि शिवाः क्रमेण ॥ ४६ ॥ अथायनं विचारः ॥ शिशिरपूर्वमृतु त्रय मुत्तरं
 ह्ययन माहुरहश्च तदा परम् ॥ भवति दक्षिणमन्य क्रतु त्रयं निगदितारजनी म
 रुतां हिता ॥ ४७ ॥ अथायनफलम् ॥ गृह प्रवेशा त्रिदश प्रतिष्ठा विवाह चैल

व्रत बन्ध दीक्षाः॥ सौम्यायने कर्म शुभ त्विधेयं यद्गृहीतं तत्त्वन्तु दक्षिणे च ॥ ४८ ॥
 अथर्तवः ॥ मृगादि राशि इय भानु भोगात् षडर्तवस्त्युः शिपिरो बसंतः॥ ग्रीष्म
 श्रवर्षाच्च प्रारब्धतद्द्वे संतनामा कथितश्च षष्ठः ॥ ४९ ॥ अथर्तुपतयः ॥ मारुतो
 ऽग्निश्च स्वर्गेशो विष्टु देवाः प्रजापतिः सौम्यश्च षट् ऋतूनां हि पतयः परिकी
 र्तिताः ॥ ५० ॥ अथ मास परिज्ञानं ॥ पूर्व राशिं परित्यज्य उत्तरं याति भास्करः
 ॥ साराशिः संक्र मारब्धा स्यान्मास त्वय न हार्यने ॥ ५१ ॥ अथ मासानां नामानि
 ॥ मासश्चैत्रो ऽथ वैशाखो ज्येष्ठ आषाढ संज्ञकः ॥ ततस्तु आचलो भाद्र पदो ऽ
 थाश्विन संज्ञकः ॥ ५२ ॥ कार्तिको मार्ग शीर्षश्च यौवो माघो ऽथ काल्युनः ॥
 अथ मासानां संज्ञाः ॥ मधु स्तथा माघव संज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाथन भोन-
 भस्यः ॥ तथेष ऊर्जश्च सहा सहस्य स्तप स्तपस्यश्च यथा क्रमेण ॥ ५३ ॥ अथ
 मास पूर्वतुर्विधः ॥ चांद्रः शीतः सावनिकः मासत्रेति दशर्णवधिं मासमुच्यति

राख्याता नाम तुल्य फल प्रदाः ॥ ४१ ॥ अथ संवत्सराणां फलम् ॥ प्रभवा ह्यगुणा
 कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं चकार येत् ॥ सप्त भिक्षु हे द्वागं प्रोषं क्षेत्रं शुभाः शुभम् ॥ ४२ ॥
 एकं चत्वारिदुर्भिक्षं पचद्वाभ्यां सुभिक्षकम् ॥ त्रियष्टेतु समं क्षेत्रं प्रून्ये पीडा न संशयः
 ॥ ४३ ॥ अथ संवत्सराणां स्वामिनः ॥ युगं भवेद्दत्तरं पंच केन युगानि च द्वादश
 वर्षं वक्ष्या ॥ भवंति तेषां मधि देवता अक्रमेण वक्ष्यामि मुनि प्रणीताः ॥ ४४ ॥
 विसृजीवः शृङ्गो दहनस्त्वथ अहिर्बुध्न्यः पितरः ॥ विप्रै देवाश्चन्द्रज्वलनौ नास-
 त्य नामानौ च भगाः ॥ ४५ ॥ अथ संवत्सराणां भेदाः ॥ संवत्सरः पथमकः परिवत्स
 रो न्यस्तस्मादिहान्विदित पूर्व पदाद्भवेद्युः ॥ एवं युगेषु सकलेषु तदीय नाथा वक्ष्य
 कींशीतगु विरंचि शिवाः क्रमेण ॥ ४६ ॥ अथायनं विचारः ॥ शिष्टिर्पूर्वमृतु त्रय मुत्तरं
 ह्ययन मादुरहश्च तदा परम् ॥ भवति दक्षिणामन्य क्रतु त्रयं निर्गादि तारजनी म
 रुतां हि सा ॥ ४७ ॥ अथायनफलम् ॥ गृह प्रवेशा त्रि दश प्रतिष्ठा विवाह चैव

व्रत बन्ध दीदृशः॥ सौग्यायने दर्म शुभ त्विधेयं यद्गर्हितं तत्त्वन्तु दक्षिणेच ॥ ४८ ॥
 अथर्तवः ॥ सृगादि राशि ह्य भातु भोगात् षडर्तवस्युः शिष्टिरो वसंतः ॥ ग्रीष्म
 अर्धचि प्रारब्धतद्वहे मंत नामा कथित अषष्ठः ॥ ४९ ॥ अथर्तु पतयः ॥ मारुतो
 ऽग्नि पृच स्वर्गेशो विप्रुवे देवाः प्रजापतिः सौम्यपृच षट् ऋतूनां हि पंतयः परिक्ता
 र्त्तिताः ॥ ५० ॥ अथमासपरिज्ञानं ॥ पूर्व राशिं परित्यज्य उत्तरं याति भास्करः
 ॥ साराशिः संक्र मारव्या स्यान्मास त्वयन हायने ॥ ५१ ॥ अथ मासानां नामानि
 ॥ मास ऋत्रो ऽथ वैशाखो ज्येष्ठ आषाढ संज्ञकः ॥ ततस्तु आवरणे भाद्र पदो ऽ
 थाश्विन संज्ञकः ॥ ५२ ॥ कार्तिको मार्ग प्रीर्षपृच पौषो माघो ऽथ काल्युनः ॥
 अथ मासानां संज्ञाः ॥ मधु स्तथा माधव संज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाथन भोन-
 भस्यः ॥ तथेष कर्जश्च सहा सहस्य स्तप त्तपस्यश्च यथा क्रमेण ॥ ५३ ॥ अथ
 मास पृचर्तुर्विधः ॥ चांद्रः प्रेगेरः सावनिकः नासत्रेति दशर्गवधि मास मुञ्जति

चांद्रं सौरं तथा भास्करं गति भोगात् त्रिंशद्दिनं सावन सप्त मास्यं नाक्षत्रमि-
 दो भर्गराश्रयाच्च ॥ ५४ ॥ सासानां फलम् ॥ सौरं कार्त्तिकं विवाहादि ग्रह चारा-
 दिकं तथा ॥ व्रत यज्ञादिकं चांद्रं मासं परिराज्यः क्वचित् ॥ ५५ ॥ चांद्रस्तु द्विविधो मा-
 से दृश्यतिः पूर्णिमातिमः ॥ देवार्थं योर्गं सास्यंतः दर्शतः पितृ कर्मणि ॥ ५६ ॥
 सावने गर्भं वृद्धादि नक्षत्रे मेघ गर्भनिम् ॥ प्रोक्त कार्त्तिके त्विमासा विज्ञेयाः को विदे-
 स्सदा ॥ ५७ ॥ अथ पञ्चविचाः ॥ पूर्वा परं मासं हलं द्विपक्षौ पूर्वा परौ तौ सितनील संज्ञौ
 ॥ पूर्वस्तु देवस्त्व परश्च पैत्र्यः केचित्तु कुलसित पंचमीतः ॥ ५८ ॥ आदि शुक्लः प्रवक्त-
 त्वः केचित्कुलोपि मास के ॥ अथ अधिक मास ॥ प्राक् वैशाखे वैशाखे के वैशाखे वैशाखे वैशाखे
 भोजिते ॥ प्रेये वनिह मधौ च साधव ध्रुवे अथेष्टेऽदौ चाष्टके ॥ आवादे नृपतौ न भञ्च
 प्रारं के आद्रे च विज्यां सके नेत्रे चाश्विन के अधि मास सुदितं प्रेयेऽन्य के स्यान्महि ॥
 अथ क्षय मासः ॥ ६० ॥ असं क्रान्ति मासोधि मासः स्फुरं स्याद्वि संक्रान्ति मासः क्षया

ख्यः कदाचित् ॥ क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्तदा वर्ष मध्येऽपि मासद्वयं च ॥ ६१ ॥
 गतोऽप्यद्विने दैमिने प्राक् काले तिथी यो भविष्यत् यथा ग्राह्य सूर्यः ॥ गजाद्विने भू-
 मिस्तथा प्रायशो यं कुर्वेदं वर्षैः क्वचिद्भेदं कुंभिश्च ॥ ६२ ॥ हि वेदि कुल संभूत सस्य क-
 त संग्रहे ॥ शिरो मल्लो समासेषा प्रथमेयं प्रभा शुभा ॥ ६३ ॥ इति श्री संग्रह शिरो मल्लोऽ-
 यनादि प्रकाशनम्प्रथम प्रभा ॥ १ ॥ अथ तिथि प्रकरणम् ॥ प्रति पञ्च द्वितीया च तृतीया
 तदनंतरम् ॥ चतुर्थी पंचमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी ततः ॥ १ ॥ नवमी दशमी चैवैकादशी ह-
 दशी ततः ॥ त्रयोदशी ततो द्वाया ततः प्रेक्ता चतुर्दशी ॥ २ ॥ पौर्णिमा शुक्ल पक्षे तु कृत्स्न
 पक्षे त्वमास्मृता ॥ अथ तिथि पतयः ॥ तिथी प्रावद्भिर्को गोरी गणे ग्रेण इहिरुहो रविः ॥ ३ ॥
 ॥ शिवो रुर्गति को विश्वे हरिः कामः शिवः प्रशो ॥ अमावास्या तिथे रीशः पितरः पर-
 कीर्तिताः ॥ ४ ॥ नन्दा भद्रा जया ऋता पूर्णाश्च प्रति पन्मुखाः ॥ वरुणाद्याश्च क्रमाद्द्वया
 त्तथैवैकादशी मुखः ॥ ५ ॥ असन्मध्यं शुभं शुक्ले तिथीनां पंचकं क्रमात् ॥ कृत्स्नपक्षे

प्रभुसंमध्यं नैष्टुं क्षेयं शुभे सदा ॥ ६ ॥ अथ नवरादिषु कृत्यम् ॥ गीतं नृत्यं तथा क्षत्रं चित्रोत्सव
 गृहादिकं ॥ वस्त्रालंकारं शिल्पादि नन्दा स्वेत च्छुभं स्मृतम् ॥ ७ ॥ विवाहो वनयात्रा च
 भूषा शिल्प्य कलादिकम् ॥ गजा प्रवरथ कृत्यं च भद्रातिथिषु सिद्धिदम् ॥ ८ ॥ सैन्य
 संग्राम शस्त्रादि यात्रोत्सव गृहादिकम् ॥ भेषज्यं चैव वारिण्यं सिद्धे त्सर्वज्ञया सुच ॥
 ९ ॥ शत्रूणां वध वंधादि विषय शस्त्राग्नि योजनम् ॥ कर्तव्यं तच्च ऋक्तायां नैव सन्मं
 गलं क्वचित् ॥ १० ॥ व्रत बंध विवाहादि यात्रा राजाभिषेचनम् ॥ प्राति कं योद्धि कं
 कर्म सिद्धे त्स्वर्गा स्वमांविना ॥ ११ ॥ विवाहो वनयात्रा च प्रतिष्ठा वास्तु कर्म च ॥
 कुर्व्यां चोलादिकं कृत्स्नं प्रोक्ते प्रति पत्तिथौ ॥ १२ ॥ राज्य कार्य्यं विवाहादि मंगल
 वास्तु भूषणं ॥ व्रत वंधं प्रतिष्ठा च द्वितीयायां तिथौ स्मृताः ॥ १३ ॥ अन्न प्राशन
 सं गीत विद्या शरी मंत शिल्प कं ॥ द्वितीया प्रोक्त मखिलं तृतीयायां प्रशस्यते ॥ १४ ॥
 शत्रूणां वध वंधादि विषय शस्त्रादि योजनं ॥ कर्तव्यं तच्च पुण्यां तु नैव सन्मंगलं क्वचित् ॥ १०

॥ १५ ॥ शुभ कर्म्मणि सर्वाणि स्थिराणि च चरणि च ॥ अरण दानं विनायाति सुसि-
द्धिं पंचमी तिथौ ॥ १६ ॥ दंत काष्ठं गमं म्यं गे त्यत्का यो पितृभ्यः कर्म च ॥ रणे वास्तु वि-
भूषणं वक्ष्या सिद्धति मंगलम् ॥ १७ ॥ गज कृत्यं विवाहादि संगीतं वस्त्र भूषणम् ॥
यात्रा प्रवेश संग्रामाः सिध्येच्च सप्तमी तिथौ ॥ १८ ॥ नृत्यं स्त्री रत्न भूषादि संग्रामः श-
स्त्र धारणम् ॥ वास्तु पितृभ्यादिकं कार्यं मष्टम्यां सिद्धि माप्नुयात् ॥ १९ ॥ विग्रहः
कल होद्युत मद्य माखेट कस्तथा ॥ विवाग्नि शस्त्र कृत्यं च न वस्यां सिद्धि माप्नुयात्
॥ २० ॥ विवाहादि शुभं सर्वं भूषा यात्रा प्रवेश नम् ॥ गजा प्रव न्दप कार्याणि सिद्ध-
न्ति दशमी तिथौ ॥ २१ ॥ व्रतबंधो विवाहादि रण विशल्यं सुरोत्सवः ॥ गमा गमौ वि-
भूषादि एका दस्यां प्रशस्यते ॥ २२ ॥ चरस्थिराणि कार्याणि विवाह व्रत बंधनम्
॥ द्वादश्यां तत्सं कुर्वीत तैलं यात्रादिकं त्यजेत् ॥ २३ ॥ यात्रा प्रवेश संग्राम वस्त्र भूष-
ण मंगलम् ॥ व्रतबंधं विनान्यत्र शुभा शुक्ल त्रयोदशी ॥ २४ ॥ विष बंधाग्नि शस्त्रा ॥ २५

शि रो प्रकुप्यादुष्टकर्मच ॥ चतुर्दश्या शुभं कर्म क्षौर यात्रां च वर्जयेत् ॥ २५ ॥ मा-
 २ गल्यं शूषणं शूल्यं प्रतिश्रायज्ञं कर्म च ॥ संग्रामो गृह कृत्यं च पौर्णमास्यां प्रसिद्धति-
 ॥ २६ ॥ अग्न्या धानं महादानं पितृ यात्रा दिकं च यत् ॥ प्रोक्तं कर्म प्रकर्तव्यं दर्शना-
 न्या शुभा क्रिया ॥ २७ ॥ इति तिथीनोक्त्यम् ॥ सामान्यतः प्रशुभास्तिथयः ॥ द्वितीया पं-
 चमी चैव तृतीया सप्तमी तथा ॥ दशम्येकादशी कृष्णा प्रतिपच्च त्रयोदशी ॥ २८ ॥ पू-
 र्णिमा स्तिथयोऽप्येताः सर्वे कार्य्ये शुभा वहाः ॥ अन्यास्तु तिथयो नैवाः प्रोक्त कृत्येषु
 मताः ॥ २९ ॥ कृष्णा चतुर्दशी शुक्ला प्रतिपद्दर्श संज्ञका ॥ एताः शुभेषु कार्य्ये-
 शु वर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥ ३० ॥ चतुर्थी धर्मसर्द्धवस्त्वेकैवादशी १२ प्राक् १४
 संमिताः ॥ तिथयः पक्षरंध्राख्या स्याज्या त्सर्वेषु कर्मसु ॥ ३१ ॥ एतास्तु वसु ऽनंते
 देन्द्र १४ तत्त्व २४ दिक् १० प्रारं ५ संमिताः ॥ हेयास्त्युगदिमाना इयः क्रमा च्छेयास्तु
 प्रोमनाः ॥ ३२ ॥ अथ दंतधावने निषिद्धाः ॥ अमायां च तथा वक्ष्यामेकादश्यां रेभिर्दिने

प्रति पशु दिते ऽर्के च न कुर्यादित धावनम् ॥ ३३ ॥ ग्रामलक स्नाने निषेधः ॥ दशमी मप्तमी र-
 श्च द्वितीया नवमी दिने ॥ त्रयोदश्या तथा नैव स्नाया दामलकैर्नरैः ॥ ३४ ॥ अथोक्त का-
 र्ये निषिद्धाः ॥ क्षौरे चतुर्दशी चैव षष्ठी तैले पले ऽष्टमी ॥ दशौ स्त्री सेवने जह्या ज्ञानी नोद्दि-
 र्ध जी वितम् ॥ ३५ ॥ अथ प्रति पशुदियुनिषिद्धाः ॥ त्यजेत्प्रति पशुद्या सुकुल्योऽङ्गं दहत्य फल-
 म् ॥ लवने मूलकं चैव यनसं तैले सेवनम् ॥ ३६ ॥ धात्री फलं नारिकेलं फलतुल्याः पलो-
 लकम् ॥ निःपावान्नं मसूरं श्वदन्ताकं माक्षिकं क्रमात् ॥ ३७ ॥ अमायां सुरतं चैव पूलि-
 मायां सुरेदरम् ॥ अमायां विशेष योग माहापर्वकं शातातपः ॥ ३८ ॥ अमावास्या भवेद्द्वारे
 यदा भूमि सुतस्य वै ॥ जाह्नवी स्नान मात्रेण गो सहस्र फलं लभेत् ॥ ३९ ॥ अमावासो म-
 वारेण रवि वारेण सप्तमी ॥ चतुर्थी भौम वारेण विधुवत्सदृशं फलम् ॥ सिनी वाली कुहूवापि
 यदि सोम दिने भवेत् ॥ ४० ॥ गो सहस्र फलं दद्यात्स्नानं चेन्मोनि नाच्छतम् ॥ अत्रैवासायां
 व्यती पात योगः ॥ अवराणांश्च धनिष्ठाद्रा नाग देवैर्न मस्तकैः ॥ यद्यमा रवि वारेण व्यती

पातः सञ्च्यते ॥ ४१ ॥ अथाहोदययोगः ॥ माघे मासि रवौ दर्शो व्यती पाते अवाञ्चिते ॥ अर्द्धो-
 दयाभिधो योगः सूर्य्यपर्वशताधिकः ॥ ४२ ॥ अथ मुक्तो दिवा योगः किञ्चिन्मूनं महोद-
 यः ॥ अथ गजच्छाया ॥ पितृ पक्षे त्रयोदश्यां हस्ते ऽर्के ऽङ्गे मघां गते ॥ गजच्छायाभिधो यो-
 गः आर्द्धे ऽक्षय्य फल प्रदः ॥ ४३ ॥ अथ कपिला षष्ठी ॥ आश्विने कलस पक्षे च षड्वां भौमो-
 ऽथ रोहिणी ॥ व्यती पातस्तदा षष्ठी कपिला नंत पुरयदा ॥ ४४ ॥ अथ व्यतीपातः ॥
 पंचाननस्यो गुरुभूमिपुत्रौ मेषे रविस्स्याद्यदि शुक्लपक्षे ॥ मासाभिधाना करभेण युक्ता
 तिथिर्व्यतीपात इतीह योगः ॥ ४५ ॥ अथ गोविंदद्वादशी योगः ॥ यदा चापे जीवो भवति घ-
 टराशौ दिनमणिस्तथा तारा नाथस्त्व भवन् गतः ॥ फाल्गुन श्रिते यदा र्को द्वादस्या म-
 दिति भयुतः शोभनयुतस्तदा गोविंदरात्र्यं हरि दिव समस्मिन्नुचितले ॥ ४६ ॥ अ-
 थ वारुणी योगः ॥ वारुणेन समायुक्ता मधौ कक्षा त्रयोदशी गंगायां यदि लग्नयेत सूर्य्य
 ग्रह धत्ते सममा ॥ ४७ ॥ शनिवार समायुक्ता सामहावारुणी स्मृता ॥ शुभयोग सममा

युक्ता शनौ घात भिषा यदि ॥ ४८ ॥ महा महेति विख्याता त्रिकोटि कुल मुद्धरेत् ॥ अ-
 थ प्रसंगाद्युगादिमन्वादि तिथयः ॥ नवमी कार्तिके शुक्ला वैशाखे च तृतीयका ॥ त्रयोद-
 प्याश्विने कृष्णा तथा दर्शश्च फाल्गुणे ॥ ४९ ॥ कार्तिकेऽभूत्कतारंभे स्त्रितारंभस्तु-
 माधवे ॥ फाल्गुणे द्वापरांभः चारंभश्चाश्विने कलेः ॥ ५० ॥ क्रमाच्छंभुर्हरिर्व-
 धापितरस्तत्र देवताः ॥ तिलान् लवणा सौवर्णे गांश्च दद्याद्युगादिषु ॥ ५१ ॥ एतायु-
 गा दयः पुण्याः शुभे वज्र्या मनीषिभिः ॥ तत्राय्य ह्य तृतीया तु सर्वं कार्यं युगोभना
 ॥ ५२ ॥ आश्विने नवमी शुक्ला माघ मासे तु सप्तमी ॥ भाद्रे चैत्रे तृतीया च कार्तिके
 द्वादशी तथा ॥ ५३ ॥ आषाढे दशमी प्रोक्ता ज्येष्ठ मासे तु पौर्णिमा ॥ आषाढी फाल्गु-
 नी चैत्री कार्तिकी पौर्णिमा तथा ॥ ५४ ॥ भाद्रे कृष्णाष्टमी प्रोक्ता पौषे त्वेकादशी सिता
 ॥ अमा भाद्रपदे मासि मन्वाद्यास्तिथयस्त्विमाः ॥ ५५ ॥ अत्र मासास्तुराकांताः वि-
 द्येयाः परि कीर्तिताः ॥ हिवे दिक्कुलसंभूत संयूकृत संग्रहे ॥ शिरोमणौ समाधेया -

द्वितीयेयं प्रभा शुभा ॥ इति श्री संग्रह शिरो मणो तिथि कथनं नाम द्वितीया प्रभा ॥
 २ ॥ अथवारप्रकरणम् ॥ आदित्य प्रचंद्रो भौमो बुध प्रचाथ हह स्पतिः ॥ शुक्र प्रग्र-
 ने प्रचर प्रचेते वासराः परिकीर्तिताः ॥ १ ॥ शिवो दुर्गा शुद्धो विष्णु ब्रह्मेन्द्र काल सं-
 ज्ञकाः ॥ सूर्यो दीनां क्रमा देते स्वाभिनः परिकीर्तिताः ॥ २ ॥ गुरु प्रचंद्रो बुधः शुक्र-
 शुभा वाराः शुभे स्मृताः ॥ कूरास्तु कूर कृत्येषु ग्राह्या भौमाक्षे सूर्यजाः ॥ ३ ॥ सूर्य-
 प्रचर स्थिर प्रचंद्रो भौम प्रचोगो बुध स्समः ॥ लघु जीवो मृदुः शुक्रः प्रगि स्तीक्ष्णा
 स्समीरितः ॥ ४ ॥ अथ वार कृत्यम् ॥ राज्याभिषेको त्वयानसेवा गो बन्धि संत्रोष-
 धाशस्त्र कर्म्म ॥ सुवर्ष तावोरिणिक चर्म काष्ठ संग्राम पर्यादि रवौ चिद ध्यात् ॥ ५
 ॥ प्रांखा ज्ञ मुक्ता रजतेस्तु भोज्य स्त्री वृक्ष कष्ट्यां बु विभूषणाद्याः ॥ गौतं क्रतु क्षी-
 र विकार प्रंगी पुष्याम्बर रंभरा मिन्दु वार ॥ ६ ॥ भेदा नृतं स्तेय विवाग्नि शास्त्र
 वध्या भिधाना ह वश त्वदं भान् ॥ सेनानि वैशा कर धातु हेम प्रचाल रत्नानि ह ॥ ७ ॥

संश्रिजे विदध्यात् ॥ ७ ॥ नैऋत्यपुरयाध्ययनं कलाश्रुच शिल्प्यादि सेवा लिपिलेख
 नानि ॥ धातुक्रियाकांचनयुक्तिं संधित्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः ॥ ८ ॥ धर्म
 क्रिया पौष्टिक यज्ञ विद्या मांगल्य हेमां वरवे प्रसयात्राः ॥ रथाश्व भैषज्य विभूषणा-
 दि कार्थ्यं विदध्यात्सुरमंत्रिवारे ॥ ९ ॥ स्त्री गीत प्रथ्या मणिरत्न गंधवस्त्रोत्सवालं
 करणादि कर्म ॥ भूषणयोगो कोष्ठाच्छ्रियक्रियाश्च सिद्धंति शुक्रस्य दिने समस्ताः
 ॥ १० ॥ लोहायससी सत्रपुष्टास्त्रकाण पापानृतस्ते यवियार्क विद्यं ॥ गृह प्रवेश द्विपवं
 ध दीक्षा स्थिरं च कर्माकं सुतेहि कुर्यात् ॥ ११ ॥ पतंगसूना दिव साधिपत्यनि प्रा-
 प्य हृश्चैव तु तिम्म भानोः ॥ रात्रि हूयं चैक दिने च सोमे प्रोष ग्रहाणा मुदय प्रवृत्तिः
 ॥ १२ ॥ अथ देवा दोष माह ॥ नवार दोषाः प्रभवंति रात्रौ देवेज्य दैत्येज्य दिवा करणा
 म् ॥ दिवा प्राणं कार्क्षेज भूसुतानां सर्वत्र निचो बुधवार दोषः ॥ १३ ॥ अथ तैलाम्ने
 शुभाशुभं ॥ रवि स्नायं कांतिं वितरति प्राणी भूमि तनयो मृतिं लक्ष्मी सोम्यः सुरपति

गुरुर्विन्ति हरणाश्च ॥ विपत्तिं देत्यानां गुरु रखिलभोगानु गमनं नृणां तैलाभ्यंगात्स पदिकुरुते
१८ सूर्यतनयः ॥ १४ ॥ रवौ भौमे व्यतीपाते संक्रांतौ वैधृतावपि ॥ यक्ष्मघटस्थोऽप्यत्र विद्यमान
तैलाभ्यंगो नयवर्त्तुः ॥ १५ ॥ लघुघोषायापवादः ॥ तैलाभ्यंगो न दोषश्च प्रत्यहं क्रियते चयः ॥
उत्सवे वात रोगे वायं च वाचनि केऽपि वा ॥ १६ ॥ भागवर्गे गोमयं भौमे मृदं दूर्वां हृहस्पती ॥
१७ ॥ रवौ पुण्यं निषायाथ तैलाभ्यंगो न दोष इत् ॥ मंत्रितं कथितं तैलं सार्वथं पुण्यवाति-
तम् ॥ द्रव्यांतरसुतं वापि नैव दुष्येत्कनञ्चन ॥ १८ ॥

१ मध्वरैखातो योजनैः पाद चर्जितैः ॥ तावत्पलैर्युतो नास्त्युत्तिथयः पर पूर्वतः ॥ २४ ॥
 तदिनाहर्निरं पलै रूनाधिके दिनार्द्धतः ॥ ऊर्द्धञ्चाथः क्रमा द्वार प्रवेष्टु स्तपनोद
 यात् ॥ २० ॥ वारा रम्भाङ्गता नाड्यो द्विजाः पञ्च विभाजिताः ॥ लघ्वी के गत होराः स्यु
 र्वीसरे प्रणदितः क्रमात् ॥ २१ ॥ रविष्णुको बुधशुक्र प्रशनि ज्जीव स्ततः कुजः ॥ सप्त
 क्रमानु विब्ज्याः काला होरे पूर्वराग्रहाः ॥ २२ ॥ यस्मिन्वारो तु यत्कृत्यं पूर्वाचार्यै रुद्ध्य

द्रुतम् ॥ तत्कृत्यं तस्य खेटस्य दोरायां खलु सिद्ध्यति ॥ २३ ॥ खेटस्यो पचयस्यस्य चोरे
 कार्यं शुभावहम् ॥ तदेवापचयस्य स्थायत्वे नापि न सिद्ध्यति ॥ २४ ॥ द्विवेदिकुलसंभू-
 तस्य कृत संयुह ॥ शिरोमणौ सन्नासि चातृतीये यं प्रभा शुभा ॥ २५ ॥ इति श्री संग्रह-
 शिरोमणौ वारकथनं नाम तृतीया प्रभा ॥ ३ ॥ अथ नक्षत्रप्रकरणम् ॥ अश्विनी भरणी
 चैव कुत्सिका रोहिणी मृगः ॥ आर्द्रपुनर्वसुः पुष्यस्ततः प्रलेखा मघा ततः ॥ १ ॥ पूर्वाफाल्गु-
 णिका तस्मादुत्तरा फाल्गुणी ततः ॥ हस्तचित्रा तथा स्वाती विषाखा तदनंतरम् ॥ २ ॥
 अनुराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते ॥ पूर्वाषाढोत्तराषाढस्त्वभिजित् अवरास्ततः ॥
 ३ ॥ धनिष्ठा प्रतताराख्यं पूर्वभाद्रपदा ततः ॥ उत्तरभाद्रपदश्चैवैवत्येतानि भानि च
 ॥ ४ ॥ अथ नक्षत्राणि ॥ अश्विनी दक्ष देवत्यो भरणी यमदेवता ॥ आग्नेयी कृत्तिका प्रोक्ता
 विधाता रोहिणी प्रवरः ॥ ५ ॥ मृगश्रिर्गर्ग्य प्रवरश्चंद्रस्तथैवार्द्रप्रवरः शिवः ॥ अदितिस्तु
 पुनर्वसोः पतिः पुष्यस्य वाक्यतिः ॥ ६ ॥ प्रलेखाधिपतिस्सर्पो मघेषुः पितरस्मृतः ॥ १५

शिः भगश्च पूर्वा फाल्गुन्याः ऊफायाः पतिरर्थ्यमाः ॥ ७ ॥ हस्तस्याधिपतिस्सूर्यस्त्याद्या
 २० चित्राभिधस्यच ॥ स्वातेश्च देवतं बासु विशार्धेद्राग्नि देवतम् ॥ ८ ॥ अनुराधे श्वरे
 मित्रो ज्येष्ठाया ऋह उच्यते ॥ मूलस्य देवतं रक्षः पूर्वाषाढे श्वरे जलम् ॥ ९ ॥ आषाढादे-
 वतं विश्वे विधि प्रचाभिजितोऽधिपः ॥ अवराणाधिपतिर्विशुर्धनिष्ठा वसुदेवता ॥ १० ॥
 चरुणा प्रशत तारायाः पूमेग्रः कथितोऽजपात् ॥ अहिर्बुध्न्यस्तथो भायाः पूयोक्तोरेव
 ती पतिः ॥ ११ ॥ अथ सामान्यतरशुभाशुभनक्षत्राणि ॥ रोहिण्यश्विनमृगाः पुष्यो हस्तचि-
 त्तोत्तराश्रयम् ॥ रेवती अवराणाश्चैव धनिष्ठा च पुनर्वसूः ॥ १२ ॥ अनुराधा तथा स्वातीशु-
 भान्येतानि भानिच ॥ सर्वाणि शुभकार्याणि सिद्धे देतेषु चोद्भु ॥ १३ ॥ पूर्वार्ध
 विशाखाच ज्येष्ठादर्ध मूलमेवच ॥ शत तार भिधेय्वेव हृत्यं साधारणं स्मृतम् ॥ १४
 ॥ अरणी कृत्तिका चैव मघाश्लेषातथैवच ॥ अतुंगं दुष्ट कार्यं च प्रोक्तं मेयु विधीयते
 ॥ १५ ॥ यात्रौषध विभूषाश्च विद्याशिल्प कलादिकम् ॥ गजकार्यं विवाहो गं मांग- २०

ल्यं चाश्विने चरेत् ॥ १६ ॥ साहसं दारुणं शत्रुनाशनं विय बंधनम् ॥ भरणं कूपक-
 व्याद्यमग्निं दारुणं चरेत् ॥ १७ ॥ कृत्ति कायां सदा कुर्यात्साह साग्निं परिग्रहम्
 रियोर्वध विवादं च लोहं मरणोश्च कर्म्मसु ॥ १८ ॥ रोहिण्यां मष्टकां कुर्याद्विवाहं धन-
 संग्रहम् ॥ आसाव सन्नो कृत्यं मागल्यं भूयणादिकम् ॥ १९ ॥ विवाहो वनजायना-
 म्ना शीर्षे च शोभनम् ॥ सुर संस्थापनं वास्तु क्षेत्रां रमादि सिद्धति ॥ २० ॥ आर्द्रयो-
 विग्रहं कुर्याद्वंधनं छेदनं वधम् ॥ विष संधानं विद्यादि दारुणो ज्ञातने तथा ॥ २१ ॥
 श्रान्तिकं पौष्टिकं यात्रा भूया वास्तु व्रतादिकम् ॥ बाहनं कृपि विद्याच पुनर्वसौ विधीय-
 ते ॥ २२ ॥ चरस्थगणं कार्याणि श्रान्तिकं पौष्टिकं कोत्सवम् ॥ विवाहं वर्जयित्वा न्यत्स-
 मस्तं पुष्य भे चरेत् ॥ २३ ॥ ज्येष्ठायां चरे पौर्णमासीं वाणिज्यं साहसं तथा ॥ विषसर्पा-
 दि कृत्यं च स्तेयादिकं मुपा चरेत् ॥ २४ ॥ मघायां पैतृकं कार्त्तिकं कात्यादि रोपणम् ॥
 जलाश्रयं विवाहं च कुर्यादुद्धादि साहसम् ॥ २५ ॥ बंधनं दारुणं शिल्पं कापदी रणा

कृतानि शुष्ये ॥ ४४ ॥ गृहेण विद्वोष्य शुभान्वितोऽपि विरुद्ध तारोऽपि विलोम गोपि ॥
 करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं स्विहाय पाणि गृह्णाण न्तु पुष्यः ॥ ४५ ॥ अथ नक्षत्राणां
 स्वस्वम् ॥ तुरगमुख सदृशं योनिरूपं ध्रुवमम प्राकट सम मथैण स्योत संतो न्तु-
 ल्यम् ॥ मणि गृह्ण चक्रं भाति प्रणलोपमम् प्रपन्न सदृश मन्य ज्ञात्र पर्यंक रू-
 पम् ॥ ४६ ॥ हस्ताकारमतश्च मीति कसमंचान्यत् प्रवालोपमं धि प्रनं तोरण व-
 त्स्थितं चलनिभं सत्कुण्डलाभं परम् ॥ कुथ्यत्केशरिवि क्रमेण सदृशं प्राय्या समा-
 नं परंचान्य दंति विला सब त्स्थित मतः त्रैकोणकं व्याक्तिमतम् ॥ ४७ ॥ त्रिविक्रमा
 भंच सदंग रूपं दृतं ततो न्य दलय द्याभं ॥ पर्यंक रूपं मुरजानु कारे द्यत्येव मप्रव्या-
 दिच चक्र रूपम् ॥ ४८ ॥ अथ नक्षत्राणां संख्या ॥ वन्ति त्रि ऋत्विषु गुणेंदु छतारिन
 भूत वाणा श्विनेत्र प्रार भूकु युगाब्धि रामाः ॥ रुद्राब्धि राम गुण वेद प्रत द्वि युगम
 दंता बुधै निर्गदिताः क्रम शोभ ताराः ॥ ४९ ॥ अथ नक्षत्राणां संख्या ॥ भ्रवं स्थिर

संक्षिप्तमिति ख्यातं रोहिणी चोत्तरात्रयं ॥ तत्रा एव गुरुग्रामा भिले काद्याः स्थिरक्रियाः
 २५ ॥ ५० ॥ मृगश्रिचत्रा नुराधाचरेवती मृगश्रिचत्रा नुराधाचरेवती मृगश्रिचत्रा नुराधाचरेवती मृगश्रिचत्रा
 ल्यमंवरम् ॥ ५१ ॥ पुष्या श्रिवन्य भिजिहस्तं लघुक्षिप्रमुक्ताहतम् ॥ तत्र भूमे
 अध ज्ञानं शिल्प कंच तथा रतिः ॥ ५२ ॥ ज्येष्ठा र्द्रा मूल मण्डले पाती क्षां दारुणा सु-
 च्यते ॥ तत्र भेदो वंधो वंधो मंत्र भूतादि साधनम् ॥ ५३ ॥ अत्र रागादि त्रिभंखातीषु
 नर्वसु चरंचलम् ॥ तस्मिन्वाजिगजा रमा कर मोक्ष गमा दिकम् ॥ ५४ ॥ भरणी
 च मघा पूर्वा क्रूर सुगुरुमुक्ताहतम् ॥ विष शस्त्राग्नि घातादि तत्रोच्छेद विनाशन-
 म् ॥ ५५ ॥ विषाणा कृतिका प्राब्दे मिमंशं साधारणं स्मृतम् ॥ नीलात्सर्गाग्नि का-
 र्थ्यं च मिमंशं तत्र च सिद्धाति ॥ ५६ ॥ अथ नक्षत्र मुखतत्कृत्यं च ॥ मूला प्लेवा मघा पूर्वा वि-
 षाणा भरणी हयम् ॥ अधो मुखानि भान्यत्र कर्म सिद्धे दधो मुखम् ॥ ५७ ॥ एषु
 वापी तडा गादि कूप भूमि तरणा निच ॥ देवा गारस्य खननं निधान खननं तथा ॥

कर्मचिं ॥ पूर्वाफाल्गुनिकायां तु चित्रकर्मोद्दि साधयेत् ॥ ३६ ॥ विवाहोद्भूतबंधप्रवस्थि-
 रं कर्म विभूषणं ॥ उत्तराफाल्गुनि मे स्याद्दुहारेऽथ प्रवेशने ॥ ३७ ॥ यात्रा विद्या विवाहा-
 दिविभूषां वरसौवधम् ॥ गृहहारं प्रप्रतिष्ठां च विद्वद्वाङ्मत्तमेऽरिवलम् ॥ ३८ ॥ प्रांतिकं
 प्रौढिकं शिल्पं वास्तुभूषां वरादिकम् ॥ ज्ञतबंधं स्थिरं कार्यं चित्रायां कथिकर्मच ॥
 ३९ ॥ सुरसंघविधानं च संग्रहां वरभूषणम् ॥ बीजा रोपं च संग्रहं प्राल्पार्थं स्वातिरोच-
 रित ॥ ३० ॥ वास्तु संग्रहणं सूषां शिल्पं चित्रप्रहारकम् ॥ रथकार्यं विप्रावायां कुर्व्यवि-
 षथ सेवनम् ॥ ३१ ॥ पाणिग्रहं ज्ञतं यात्रांगजाप्रवावरभूषणम् ॥ चरं स्थिरं शुभं कुर्व्य-
 दनुराधाभिधेऽरिवलं ॥ रिश्लणं हनने मेदे प्रहारे लोहकर्मणि ॥ शिल्पे खेह विधौ
 चित्रे ज्येष्ठा श्रेष्ठा समीरिता ॥ मूलमे मवना राम संग्रामाः संधि विग्रहे ॥ वापी कूप तडागा
 द्याविधेयाः कृषयोऽपि च ॥ ३४ ॥ वापी कूपार्दिकं कृत्यं विग्रहं बंध मोक्षणम् ॥ कू-
 रकार्यं दुम क्षेपं पूर्वाषाढाभिधे चरेत् ॥ ३५ ॥ स्थापनं मंडलं वास्तुनिर्वेशश्च प्र-२२

उदके रिश्लणं कर्मणि ॥ यात्रांगजा प्रवावरभूषणं च ॥

विष्णुनम् ॥ वीजा रोपं विभूषाद्यं उत्तरा षाढ मे चरेत् ॥ ३९ ॥ देवता स्थापनं गेहं चो-
 ष्टिकं शिला कर्मच ॥ मांगल्यो पनयं चित्रं प्राति कं अत्रो चरेत् ॥ ४० ॥ चैलेचो
 ॥ राजा प्रवरथ नौकानां शैव्य सुक्ता फल स्वजांम् ॥ वास्तु संग्राम प्रस्त्राणां कार्यं त-
 च्छत मे चरेत् ॥ ४१ ॥ पूर्वाभाद्र पदे श्रित्यं साहसं छेदनं कृषिः ॥ विक्रयं महिषो
 प्राणां जल यंत्रादिकं शुभम् ॥ ४२ ॥ विवाहो व्रत वंधनं देवता स्थापनं ग्रहम् ॥
 वास्तु कर्माभिधानं च उत्तर भाद्र पदे भवेत् ॥ ४३ ॥ गेहं देवालयं भूषा विवाहं द्र-
 तं ॥ पर कष्टं निखिलं निहंति युष्यो न खलु निहंति परस्तु युष्य देवं ॥ अथ युष्य प्रशं-
 रेऽथ मे पि युष्ये विहितं सृष्टिं सर्वेव कर्म सिद्धिम् ॥ ४४ ॥ सिंहो यथा सर्व चतुष्य-
 दानां तथैव युष्यो बल वानुद्धनो ॥ चंद्रं विरुद्धं यथ गोचरेषि सिद्ध्यति कार्यो रिता

कृतानि शुभ्ये ॥ ४४ ॥ गृहेण विद्वेष्य शुभान्वितोऽपि विरुद्ध तारोऽपि विलोम गोपि ॥
 करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहणं नु पुष्यः ॥ ४५ ॥ अथ नक्षत्राणां
 स्वस्वम् ॥ तुरगमुखसदृशं योनिरूपं धुराभम् प्राकट समसथैण स्यात्तमंगे न तु-
 ल्यम् ॥ मणिग्रहं प्रचक्रं भाति प्रणलोपमं धूपनं सदृशं मन्यच्चान्नपर्वकं रू-
 पम् ॥ ४६ ॥ हस्ताकारमतश्च मीनिकसमं चान्यत् प्रवालोपमं धिप्रं तोरणव-
 त्स्थितं वलिनिभं सत्कुण्डलाभं परम् ॥ कुथ्यत्केशरिविक्रमेण सदृशं प्राच्या समा-
 नं परं चान्यदंति विलासवत्स्थितमतः त्रैकोणकं च्यक्तिमत् ॥ ४७ ॥ त्रिविक्रमा-
 भं च सदंगरूपं दंतं ततो न्यक्षल्यद्वयाभं ॥ यथैकरूपं मुरजानु कारीयत्थैव मश्या-
 देवचक्ररूपम् ॥ ४८ ॥ अथ नक्षत्राणां संख्या ॥ वन्दित्रिंशत्त्रिंशद्गुरोर्दुहताग्नि-
 भूतवाणां प्रिल्वनेत्रप्रभूकुचुगाधिरामाः ॥ रुद्राधिरामगुणवेदप्रतद्विभुस-
 रंतावुधैर्निगदिताः क्रमशोऽभताराः ॥ ४९ ॥ अथ नक्षत्राणां संख्या ॥ भवं स्थिर

मिति ख्यातं रोहिणी चोत्तरात्रये ॥ तत्रा एव गृहग्रामा थिले काद्याः स्थिर क्रियाः
 ॥ ५० ॥ मृगशिरश्चो नुराधा च रेवती मृतु मेनका ॥ तत्र गीतं रतं कुर्याद्भूया मांग-
 ल्य संवरम् ॥ ५१ ॥ पुष्या शिवन्य मिजिद्रस्तं लघुक्षिप्र सुवाहतम् ॥ तत्र भूयो
 षध ज्ञानं धिल्य कंच तथा रतिः ॥ ५२ ॥ ज्येष्ठा र्द्रा मूल मज्जे पाती क्षणं वारुणा बु-
 च्यते ॥ तत्र भेदो वधो वंधो मंत्र भूतादि साधनम् ॥ ५३ ॥ अवर्णादि त्रिभंखाती ९
 नर्वसु चरंचलम् ॥ तस्मिन्वाजिगजा रमा कर मोक्ष गमा दिकम् ॥ ५४ ॥ भरणी
 च मघा पूर्वा कूर सुग सुवाहतम् ॥ बिष शरखाग्नि घातादि तत्रोच्छेद विनाशन-
 म् ॥ ५५ ॥ विषाखा कृत्तिका प्राक्क्षैर्मि श्रं साधारणं स्पृतम् ॥ नीलात्सर्गाधिक्यका-
 र्ग्यं च मिश्रं तत्र च सिद्धाति ॥ ५६ ॥ अयनक्षत्र मुंलतत्त्वंच ॥ मूला प्लेया मघा पूर्वा वि-
 शाखा भरणी हयम् ॥ अधो मुखानि भान्यत्र कर्म सिद्धि दधो मुखम् ॥ ५७ ॥ एषु
 वापी तडा गादि कूप भूमि तरुण निच ॥ देवा गारस्य खननं निधान खननं तथा ॥

मं. ॥ ५८ ॥ गगितं ज्योतिषा रंभखनी विल प्रवेशनम् ॥ कुर्व्यो न्यो गता न्येव काव्या-
 रं. ॥ ५९ ॥ रोहिण्या द्वा तथा पुर्व्यो धनिष्ठा चोत्तरा ॥ अथम् ॥ वारुणा
 अचरां चैव नवचोर्द्वि सुखा स्तथा ॥ ६० ॥ प्रासादश्च ध्वज च्छत्राकार गृहतोर-
 राम् ॥ नृपा भिवेक प्पारास उच्छ्राय स्तूर्द्ध्वक के ॥ ६१ ॥ रेवती चात्विनी चित्रा
 स्वाती हस्त पुनर्वसू ॥ अनुराधा मृगो ज्येष्ठा एतास्तिर्य्यङ्मुखाः स्मृताः ॥ ६२ ॥ गजे-
 ष्ठा श्रव वली वर्द्धमनं सहिषस्य च ॥ वीजानां वसनं कुर्व्या ह्यनना गमना दिकम् ॥
 ६३ ॥ चक्र यंत्र रथा दीनां नौका दीनां प्रवाहनम् ॥ पार्श्वयो र्यानि कार्य्यणि कुर्व्या
 देयुच तान्यपि ॥ ६४ ॥ अथ पंचकम् ॥ धनिष्ठादूर्तरं पंच स्वर्ध्वेषु त्यजे बुधः ॥ याम्य
 दिग्गमनं श्रद्धा पूरणं गृह्णी पनम् ॥ ६५ ॥ स्तंभो छांयं प्रेत दाहं तृण काष्ठादि संग्र-
 हम् ॥ भवेत्यं च गुणं चान्न जातं लब्धं मृता गतम् ॥ ६६ ॥ अथ नक्षत्राणा मंधारिमंज-
 ॥ अंधकं तदनु मं च लोचन मध्य लोचन मतः सुलोचनम् ॥ रोहिणी प्रभृति मं च तुल्यं सा

भिजिच्च गणायै तुनः पुनः ॥ ६७ ॥ अथके पूर्वतो वस्तु मंदके दक्षिणे तथा ॥ पश्चिमे म-
 ध्ये नेत्रे च उत्तरे तु सुलोचने ॥ ६८ ॥ अंधे सद्यः प्राप्यते वस्तु नष्टं कष्टात्प्राप्यं मंवेनेत्रे च
 तद्वत् ॥ दूरात्प्राप्यं मध्यनेत्रे न लभ्यं न श्रोतव्यं नैव लभ्यं सुनेत्रे ॥ ६९ ॥ अथ नक्षत्रद-
 र्शनं तत्र त्रिंशत् नक्षत्रं तत्राक्षौ नक्षत्रचारः ॥ पूर्वाषाढं हयं मूलाऽनुराधा द्वाभ्यां मृगः करः ॥ ज्ये-
 ष्ठा पुनर्वसु श्रैयां तारा दक्षिणा गाः सदा ॥ ७० ॥ रोहिणी कृत्तिका ध्रुवो रेवती श्रवणा त्रयम-
 सुख्यं अश्लेषा चैतानि मध्यचारीणि भानि हि ॥ ७१ ॥ अश्विनी हितं यं स्वाती विशाखा
 फाल्गुणी हयं ॥ मघा भाद्र पादा युग्ममेता न्युत्तर गानि च ॥ ७२ ॥ अथ नभो मध्यभात् उदय
 र्क्षज्ञानं ॥ विशाखा दित्रये पूर्वाषाढाऽश्लेषा र्क्षं भेयदा ॥ रोहिणी भनभो मध्ये तवास्या-
 चाष्ट मीरयः ॥ ७३ ॥ नवमर्क्षो द्यौ मूले मृगे चांवर मध्यगे ॥ श्रेय मध्यगते व्योम्नि स-
 त्तमर्क्षो द्यौ भवेत् ॥ ७४ ॥ अथ रविभात् मध्यभात् उदयभात् गत एतन्निज्ञानम् ॥ रवि भाद्
 स्त भं व्ये कं मध्य भं वाष्ट हीन कम् ॥ उद्यमद् तिथि १५ हीनं वानख २० ह्यं नक्षत्र भाजितम्

॥ ७५ ॥ लब्ध एति गन्ता नादयः श्रेया लब्धा पलायिन् ॥ जपत्वा ॥ अल्ल भाद कं भलिष्ठया २५
 ह्रीं सध्य अतोष्ठभिः ॥ ७६ ॥ उव्यर्द्ध निथावे कं विंशति श्रं ग्रहे भजित् ॥ लब्धा घण्ट्या
 दि का द्वेया श्रेया रात्रि स्फुटा यवा ॥ ७७ ॥ सप्ताष्ट नवहीनं च स्वस्वीदय प्रना एतः ॥ म-
 ध्यमेतु विश्वे पोचं क्षेयो युक्त्या विच क्षणैः ॥ ७८ ॥ अथ दिवा रात्रौ सुहृत्तः ॥ शिवो हि हि-
 त्रितैरेव श्रंभो विष्टव वेध सः ॥ विधि रिद्रोष शक्राग्नी रक्षोऽग्नी शौर्यमा भगः ॥ ७९
 ॥ मुहूर्ते प्राज्ञे प्रोक्ता दिवा पंच दशः क्रमात् ॥ सुहृत्तौ रजनौ प्रंभु रजै कचरणत्रयः
 ॥ ८० ॥ दत्तात्यं चाविति जीवा विश्व कौ तप्ता मारुतौ ॥ दिन मानस्य तिथ्यं शो रात्रे
 रपि सुहृत्तकाः ॥ ८१ ॥ नक्षत्र नाथ तुल्ये स्मिन् कार्यं कुर्था त्वभो दितं ॥ दिन स-
 ज्ये ऽभि जित्वांक्षे दोष संघेद्यु सत्त्वपि ॥ सर्वं कुर्था च्छुभं कर्म याम्य दिग्गमने वि-
 ना ॥ ८२ ॥ अथ रत्यादि वारैत्याज्य सुहृत्तः ॥ श्रयमा भानु महारे चंद्रे हि विधि राक्षसौ
 ॥ पित्राग्नी कुज वारितु चंद्रपुत्रे तथा भिजित् ॥ ८३ ॥ पित्राज्ञौ भृगो वीर राक्ष-

१	नक्षत्रा	शुभा	स्वामी	तीर्थदुःसु	मृदु	मैत्र	लंघा	मृदंग	११
२	रेवती	कामदा	पद्मा	तीर्थदुःसु	मृदु	मैत्र	लंघा	मृदंग	२
३	अश्लेषा	लक्ष्मी	तीर्थदुःसु	ऊर्ध्व	भव	स्थिर	दिव्या	मृदंग	२
४	मृगशिरा	मृत्युद	मृगशिरा	मृदु	उग्र	कूर	मृदंग	मृदंग	२
५	शतभिषा	कल्याण	वरुण	ऊर्ध्व	चर	चल	चिरा	मृदंग	१००
६	धनिष्ठा	शुभद	वसु	ऊर्ध्व	चर	चल	लंघा	मृदंग	४
७	श्रवणा	शुभद	विष्णु	ऊर्ध्व	चर	चल	दिव्या	मृदंग	३
८	जमिजित	सिद्धि	ब्रह्मा	०	लघु	क्षिप्र	मृदंग	मृदंग	३
९	अश्लेषा	वृद्धि	विश्वदेव	ऊर्ध्व	भव	स्थिर	चिरा	मृदंग	३
१०	पूर्वाषाढ	हानिमद	उदक	लघु	उग्र	कूर	लंघा	मृदंग	४
११	मूल	शरणाश	राक्षस	लघु	तीक्ष्ण	दक्ष	दिव्या	मृदंग	११
१२	ज्येष्ठा	शयनाश	द्वंद्व	तीर्थदुःसु	तीक्ष्ण	दक्ष	मृदंग	मृदंग	३
१३	अश्लेषा	सर्वसिद्धि	मित्र	तीर्थदुःसु	मृदु	मैत्र	चिरा	मृदंग	४
१४	विशाखा	अशुभ	द्वंद्व	लघु	मित्र	साध	लंघा	मृदंग	४
१५	स्वाती	अशुभ	वायु	तीर्थदुःसु	चर	चल	दिव्या	मृदंग	९
१६	चित्रा	शुभद	स्वया	तीर्थदुःसु	मृदु	मैत्र	मृदंग	मृदंग	९
१७	हस्त	लक्ष्मी	रवि	तीर्थदुःसु	लघु	क्षिप्र	चिरा	मृदंग	५
१८	अश्लेषा	विद्याप्रद	लघु	ऊर्ध्व	भव	स्थिर	लंघा	मृदंग	२
१९	पूर्वाषाढ	मृत्युद	भग	लघु	उग्र	कूर	मृदंग	मृदंग	५
२०	मघा	नाशक	पितर	लघु	उग्र	कूर	मृदंग	मृदंग	५
२१	ज्येष्ठा	शोक	सर्व	लघु	तीक्ष्ण	दक्ष	मृदंग	मृदंग	५
२२	पुष्य	शुभ	गुरु	ऊर्ध्व	लघु	क्षिप्र	लंघा	मृदंग	३
२३	अश्लेषा	मध्यम	अश्वि	लघु	चर	चल	मृदंग	मृदंग	४
२४	पूर्वाषाढ	शुभ	शिव	ऊर्ध्व	तीक्ष्ण	दक्ष	मृदंग	मृदंग	९
२५	मृगशिरा	शुभ	चंद्र	तीर्थदुःसु	मृदु	मैत्र	मृदंग	मृदंग	३
२६	शरणाश	सिद्धि	ब्रह्मा	ऊर्ध्व	भव	स्थिर	लंघा	मृदंग	५
२७	लक्ष्मी	अशुभ	अग्नि	लघु	मित्र	साध	मृदंग	मृदंग	६
२८	भरणी	अशुभ	धम	लघु	उग्र	कूर	मृदंग	मृदंग	३
२९	अश्विनी	शुभ	अश्विनी	लघु	क्षिप्र	मृदंग	मृदंग	मृदंग	३

॥ ७५ ॥ त्वय एति गता नादयः श्रेया लब्धा पलानि च ॥ जयन्ता ॥ अल्लभादकं भंतिष्ठया १५
 दीनं मध्य भतोष्ठभिः ॥ ७६ ॥ उदयदर्शनिया वै कं विंशति भं ग्रहे भजित् ॥ लब्धा घण्ट्या
 दि का ज्ञेया श्रेया गति स्फुटा यवा ॥ ७७ ॥ सप्तष्टनवहीनंच स्वस्वीदय अनायातः ॥ म-
 ध्यमेव विशे योचं ज्ञेयो युक्त्या विचक्ष्णोः ॥ ७८ ॥ अथ दिवा रत्नो मुहूर्ताः ॥ अत्रि वीहिभि-
 त्रितैरेव श्वंभो विष्व वेधसः ॥ विधि रिद्धिश्च शक्राग्नी रक्षोऽधी शौर्यमाभगः ॥ ७९ ॥
 ॥ मुहूर्तं प्राज्ञे प्रोक्ता दिवा पंच दशः क्रमात् ॥ सुहृत्ती रजनौ ग्रंभु र्ले कचरण अत्रयः
 ॥ ८० ॥ दत्तात्यं चादिति जीवा विष्व कौ तप्त भार्ता ॥ दिनमानस्य तिथ्यं शो रान्ने
 रयि मुहूर्तकाः ॥ ८१ ॥ नक्षत्र नाथ तुल्ये स्मिन् कार्यं कुर्यात्स्वभो दितं ॥ दिन स
 ध्ये ऽभिहितं द्यौय संघेद्यु सत्त्वपि ॥ सर्वं कुर्याच्छुभं कर्म याम्य दिगमनं वि-
 ना ॥ ८२ ॥ अथ रत्यादि वारत्याज्य मुहूर्ताः ॥ अर्यमा भानु मङ्गरे चंद्रे हि विधि राक्षसो
 ॥ पित्राग्नी कुज वारितु चंद्र सुत्रे तथा भिजित् ॥ ८३ ॥ पितृ ब्राह्मो भृगो वीरे राक्ष-

अथ योग प्रकरणम् ॥ वाक्योक्तो नस्त्र प्रवणा चान्द्र मेव च ॥ गरायेतद्युतिं कुर्थाद्योगस्या
दृष्टा प्रीयतः ॥ १ ॥ विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ॥ अतिगण्डः
सुकर्मान् च धृतिः प्रल्लस्तथैव च ॥ २ ॥ गंडो वृद्धिर्भुवश्चैव व्याघातो हर्षणास्त-
था ॥ वज्रसिद्धी व्यतीपातो वरियान् परिघः शिवः ॥ ३ ॥ सिद्धिः साध्यः शुभः शु-
क्लो ब्रह्मेन्द्रो वैधृतिः क्रमात् ॥ सप्त विंशतिर्योगास्तु कुपुर्नाम समं फलम् ॥ ४ ॥
विरुद्धं संज्ञा दूहयेच्च योगास्तेषां मनिष्ठः खलु पादजायः ॥ सर्वैर्धृतिस्तु यतिपा-
तनामा सर्वोप्यनिष्ठः परिघस्य चार्द्धम् ॥ ५ ॥ तिलस्तु योगो प्रथमे च वज्रव्या-
घातसंज्ञेन च पंचशूले ॥ गंडेति गंडे च षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनी-
याः ॥ ६ ॥ द्विवेदि कुलसंभूतसरयूकृतसंग्रहे ॥ शिरोमणौ समाप्तेषां पंचमी-
ये प्रभाशुभा ॥ ७ ॥ द्वाविंशी संग्रहशिरोमणौ योगकथनं नाम पंचमी प्रभा ॥
पू ॥ अथ करणं प्रकरणम् ॥ गताश्च तिथयो निम्नाः द्वाभ्यां शुक्ला दितः क्रमात् ॥ एकोनप्रस

साम्बु गुण दिने ॥ रौद्र सार्थी ग्रने रन्दि दमे त्याज्या मुहूर्त काः ॥ ८४ ॥ द्विवेदि कुल संभूत

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	द्विवा मुहूर्तः
शिव	सर्प	मित्र	पितर	वसु	अंबु	विष्वे	विधि	वेधा	द्वेद	दंडगर्ग	रक्षस	वरुण	सूर्य	भग	देवताः
शार्ङ्ग	प्लेया	शत्रु	मघा	धनिष्ठा	पूर्वा	उत्तरा	भि- जित	रेहि- ली	ज्येष्ठा	विशा- का	मूल	एतभि- प	उत्तरा फाल्गुनी	पूर्वाशा ल्युनी	नक्षत्राणि
रुद्र	अजक	रेहि तुभ्य	पूर्वा	दल	यम	अग्नि	मल्ला	चंद्र	षादिति	गुरु	विषु	सूर्य	तवा	दायु	रात्रि मुहूर्तः
शार्ङ्ग	भद्र	उत्तर भाद्र	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृति	रेहिणी	मृग	पुनर्वसु	पुष्य	अवशा	हस्त	चित्रा	स्वानी	नक्षत्राणि

अथ रव्यादि वारे त्याज्य मुहूर्तः ॥

अर्जुन	वज्रा	राक्षस	पितृ	अग्नि	अभि	रक्षस	पितृ	वज्रा	पितृ	सूर्य	मुहूर्तानि	सूर्य	वृत्त संग्रहे ॥ शिरो मर्गे ॥ समा- प्रेया चतुर्थीयं प्रभा शुभा ॥ ८५ ॥ दक्षिणी संग्रह शिरो मर्गे नक्षत्र कथनं नाम चतुर्थी प्रभा ॥ ८॥
उत्तराशा ल्युनी	वज्रा	राक्षस	पितृ	अग्नि	अभि	रक्षस	पितृ	वज्रा	पितृ	सूर्य	मुहूर्तानि	सूर्य	वृत्त संग्रहे ॥ शिरो मर्गे ॥ समा- प्रेया चतुर्थीयं प्रभा शुभा ॥ ८५ ॥ दक्षिणी संग्रह शिरो मर्गे नक्षत्र कथनं नाम चतुर्थी प्रभा ॥ ८॥
दि २४	दि. २५	दि. २६	दि. २७	दि. २८	दि. २९	दि. ३०	दि. ३१	दि. ३२	दि. ३३	दि. ३४	दि. ३५	दि. ३६	दि. ३७
२	चं	मं	तुं	वृं	सुं	शं	वां	वां	वां	वां	वां	वां	वां

अथ योग प्रकरणम् ॥ वाक्यतेर्लङ्क नक्षत्रे प्रवणाच्चान्द्रमेव च ॥ गणयेत्तद्युतिं कुर्व्याद्योगस्या
 दृष्ट प्रोक्तः ॥ १ ॥ विष्णुभः प्रीति राशुष्मान् सौभाग्यः प्रोभनस्तथा ॥ अतिगण्डः
 सुकर्मन्विधतिः शूलस्तथैव च ॥ २ ॥ गंडो वृद्धिर्भुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्त-
 था ॥ वज्रसिद्धी व्यतीयातो वरियान् परिघः शिवः ॥ ३ ॥ सिद्धिः साध्यः शुभः शु-
 क्तो ब्रह्मेन्द्रो वैधतिः क्रमात् ॥ सप्त विंशति योगास्तु कुर्पुर्नाम समं फलम् ॥ ४ ॥
 विरुद्धं संज्ञां दृष्टयेत् योगास्ते वा मनिष्टः खलु पादजायः ॥ सवैधतिस्तु व्यतिपा-
 तनामा सर्वेऽप्यनिष्टः परिघस्य चार्द्धम् ॥ ५ ॥ तिलस्तु योगो प्रथमे च वज्रव्या-
 धात संज्ञेन व पंच शूले ॥ गंडेति गंडे च षडेव नाड्यः शुभे शुकार्ये शु विवर्जनी-
 याः ॥ ६ ॥ द्विवेदि कुल संभूत सरयू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाप्तौ पा पंचमी-
 ये प्रभा शुभा ॥ ७ ॥ वृत्तिश्री संग्रह शिरो मणौ योग कथनं नाम पंचमी प्रभा ॥
 ५ ॥ अथ करणं प्रकरणम् ॥ गताश्च तिथयो निम्नाः द्वाभ्यां शुक्ला दितः क्रमात् ॥ एकोनशत

हृत्केयाः करणं स्याद्दवादिकम् ॥ ९ ॥ ववादयं बालव कोल वा ख्यंतं तो भवेत्तैतिल
 नाम धेयम् ॥ गणभिधानं वरिणं च विष्टि रित्याहुरार्याः करणानि सप्त ॥ ८ ॥ अंते क-
 णा चतुर्दशां शकु निर्दृशं भारयोः ॥ गेयं चतुर्व्यं नागं किं स्तुभं प्रतिपदले ॥ ३ ॥
 अथ करणानां त्वाभिः ॥ इन्द्रो बह्नामित्र नामार्थ्य माभूः श्रीः कीनाष्ट श्रेति तिष्ठ्य धनाथा
 ॥ कल्लु क्षाख्यौ सर्प वायु संधे वये चत्वार स्ते स्थिराणां चतुर्णां ॥ ४ ॥ यौष्टिक स्थिरशु-
 भानि ववाख्ये बालवे द्विज हिता न्यपि कुर्यात् ॥ कोल वे प्रमद मित्र विधानं नै तिले शुभ
 गता अय कर्म ॥ ५ ॥ गोर च बीजा अय कर्षणां निवारिण्य के स्थे र्थ वरिण कृत्रियाश्च
 ॥ न सिद्धि माया ति कृतं च विस्त्रां विधारि घातादिषु तत्र सिद्धिः ॥ ६ ॥ गंत्रो वधानि श-
 कु नौ तु स यौष्टिकानि गो विप्र राज्य पितृ कर्म च तुष्य दे पिं ॥ सो भाग्य दारण युति भव
 कर्म नागे किं स्तु घ्नानि निखिलं शुभ कर्म कार्यम् ॥ ७ ॥ अथ भद्रायां विशेषः ॥ ए-
 का दश्यां चतुर्थ्यां च शुक्ले पक्षे घोरदले ॥ अष्टम्यां पूर्वमायां च भद्रा पूर्वदले स्मृता ॥

८ ॥ तृतीयायां दशम्यां च कृत्स्ने पक्षे परे दले ॥ सप्तम्यां च चतुर्दश्यां भद्रा पूर्वदले भ-
वेत् ॥ ८ ॥ अथ भद्रायाः भागविभागः फलं च ॥ नाड्यसु पंचवदने च गले तथे का वक्षो
दशैक सहितं निहितं च तप्तः ॥ नाम्यां कटौयह य पुच्छ लता सु तिस्रो विष्टेर्वुधे रभि-
हिलो गवि भाग एव ॥ ९० ॥ स्थानफलम् ॥ सुखे कार्यध्वस्ति भवति मरणं चाथ गलके
धना हानिर्वक्षस्यथ कटि तटे बुद्धि विलयः ॥ कलिर्नाभौ देशे विजय मय पुच्छे च
जगदुः ॥ शरीरे भद्रायाः पुष्पमिति फलं पूर्वमुनयः ॥ ९१ ॥ अथ भद्रावासः ॥ मीने मे
यालि कर्के प्राणि निनि चसति स्वर्ग संस्थापि विष्टिः ॥ कन्यायां तौलि संस्थे धन मिथु-
न गते नाग लोके निवासः ॥ ९२ ॥ कुंभे सिंहं हये वामकर सुगते राज ते मृत्यु लोके ॥
भद्रा चंद्र प्रभावाहि मकर तनया नो शुभा लौकिके स्यात् ॥ ९३ ॥ स्थान फलम् ॥ स्वर्गे
भद्रा भवेत्सौख्यं पातालैश्च धनागमः ॥ मृत्यु लोके यदा भद्रा कार्यं सिद्धिस्तदा न-
हि ॥ ९४ ॥ अथ वाणानां फलम् ॥ मीमे मुक्ते च कल्याणी शनौ चैव बुद्धिश्च की ॥ गुप्ते पुण्य

वती द्वेया चान्य वारिषु भद्रका ॥ १५ ॥ कार्थ्येऽत्यावश्य के विष्टे मंत्रमात्रं परित्यजे-
त् ॥ अथ गद्याः दिङ्मुखम् ॥ प्राक्का १४ छ ८ मुनि ७ तिथ्य १५ छि ४ दि १० पुद्गा ११ गि ३
सिते तिथौ प्रथमादिषु यामेव विस्तु पूर्वार्धितः क्रमात् ॥ १६ ॥

३	७	१०	१४	
८	३	६	१	
६	८	१०	१४	

कले प्रतएद्यंत पंचघटी भद्रा मुखम् ॥

४	८	१२	१५	१९
५	२	७	४	१०
५	१०	३	८	१३

विष्टे मंत्रुखे विजानीया च्छुभं दृष्टेऽग्रतोऽशुभम् ॥ अथ भद्रा पुच्छन्
चतुर्थ्यां चाष्टमे यामे प्रथमे चाष्टमी दिने ॥ एका दश्या तथा वष्टे पौर्णमास्यां तृतीयके
॥ १७ ॥ एवं घटी त्रयं पुच्छं कल पक्षे त्वथो न्यते ॥ १८ ॥ सप्तमे स्यात्तृतीयाया
स्तप्तम्यास्तु द्वितीयके ॥ दशम्यां पंचमे यामे चतुर्दश्यां चतुर्थके ॥ १९ ॥ विष्टेऽपुच्छे
जयो यद्वै कार्यं मन्यच्च शोभनम् ॥ अथ भद्रा कर्माणि ॥ बध बंध विद्या ग्न्यप्सु छेदने चा-
तनादिकम् ॥ तुरंगमहिषो द्यादि कर्म विष्ट्यां तु सिद्ध्यति ॥ २० ॥ अथ भद्रायां शेषापवादः
॥ तिथेः पूर्वार्द्धे जा एतौ दिने भद्रा परार्द्धजा ॥ भद्रा होथो न तन स्यात् कार्थ्येऽत्या-

वश्य के सन्ति ॥ २२ ॥ वैश्यतो व्याति पाता रव्ये विष्ट्या भोसे च वासरे ॥ तथैव द्रुष्टता
 रासु मध्यान्ना त्परत प्रपुभः ॥ २३ ॥ अथ भद्र विषये कस्य चिन्मते विशेषः ॥ प्रुले तु द्वाष्ट्य
 की भद्रा कल पक्षे भुजं गमा ॥ सादिना सृष्टिणी रात्रौ दृष्टि की त्य परे जगुः ॥ २३ ॥ सु-
 खं त्याज्यं तु सृष्टिण्या वृष्टि च क्याः पुच्छ मेव च ॥ खरास्याः प्रसवे दुर्गा पूजने दान कर्म-
 णि ॥ २४ ॥ दाह घातादि के भद्रा प्रस्ता नान्यत्र शोभना भूदैत्येन्द्रैः समरे मरेत्युवि-
 जिते ज्वीशः क्रुधा दृष्टवान् ॥ २५ ॥ स्वात्कायात्किल निर्गता खर सुखी लो गूलि-
 नी च त्रिपात् ॥ विष्टि सप्त भुजा मृगेन्द्र गल का क्षा मोदरी प्रेत गा दैत्यघ्नी मुद्दिता
 सुगैरु कणा प्रांते नियुक्ता तुला ॥ २६ ॥ द्विवैदिकुल संभूत सरयू कृत संग्रहे ॥ त्रिणि-
 मांते समाक्षे वा यक्षी यं हि प्रमा प्रुभा ॥ २७ ॥ द्वातिघ्नी संग्रह घिरो मणो करण क-
 थने नाम यक्षी प्रभा ॥ २८ ॥ अथ तारा प्रकरणम् ॥ सपाद क्ष्म हृद्यं भोगे मेया दीना अनु-
 क्रमात् ॥ अश्वि भाद्रव तीया वद्वा शि भोगो न वंघिकः ॥ १ ॥ अथ एशयः ॥ अश्विनी

भरणे धिसे कृत्तिका प्रथमां धिकम् ॥ मेघस्स्यात्कृत्तिका पादत्रितयं रोहिणी तथा ॥ २
 ॥ त्वम मीमृग पूर्वार्द्धं तद्वर्द्धं च तथार्द्धभम् ॥ पादत्रयं पुनर्वसुः सरणि स्मिन्धुना दि-
 धः ॥ ३ ॥ तत्त्वयोऽग्निस्तथा पुच्छो ह्यश्लेषा कर्कटा भिधः ॥ मया पूर्वोत्तराद्योऽग्निः
 सिंहस्तच्चरणात्रयम् ॥ ४ ॥ हस्तचित्राभपूर्वाङ्गे कन्याचित्रोत्तरं दलम् ॥ स्वाति
 मंचविश्रयायाश्चरणात्रितयं तुला ॥ ५ ॥ तत्त्वयोध्य नुराधारव्येज्येष्ठा भंष्टश्चिकः
 स्मृतः ॥ मूलं पूर्वोत्तराद्याद्वा प्रागंघ्रिः कथितो धनुः ॥ ६ ॥ उत्तरांघ्रित्रयं कर्णे ध-
 निष्ठा प्रथमं दलम् ॥ मकरारव्यो धनिष्ठा त्रिदलं च प्रातः तारका ॥ ७ ॥ पूर्वा पाद-
 त्रयं कुम्भस्तदंशश्चरणास्तथा ॥ ऊर्मा भंरेवनी चैव मीनराशिः प्रकीर्त्तिताः ॥ ८ ॥
 अथावकहृदचक्रानुसारेण नक्षत्रचरणानां वर्णाः ॥ अश्विनी तु चुचे चोला लिखूलेलो भर-
 रायपि ॥ कृत्तिका स्यादूर्ध्वं रोहिण्या वा विबुस्मृता ॥ ९ ॥ चैवो ककि मृगश्या-
 र्द्धी कूष्मांडा छा प्रकीर्त्तिता ॥ केको हहि पुनर्भस्याद्दुर्हो हा च पुष्यभम् ॥ १० ॥ अश्ले

पातु डिदुहेडो सागी मूमे मघा ह्वयम् ॥ सोढा दीटू तु पूर्वाख्या मुफा देहो पयि स्थता
 ॥ ११ ॥ प्रीक्तः पूयण दोहस्तः पेपोरितु चित्रका ॥ स्मरेरोता तथा स्वातीति तूते तोवि-
 षाधिका ॥ १२ ॥ अनुराधा ननी नूने ज्येष्ठा नोया यियुर्मता ॥ तथा येयो अभी मूलं
 पूर्वाषाढा शुधाफटा ॥ १३ ॥ भे भोज्युत्तराषाढा जृजे जोषा तथा भिजित् ॥ रि-
 खूखेखो प्रवो द्वेयः गगी गूगे धनिष्ठिका ॥ १४ ॥ गोसा सिसू घाता खंच प्रभा-
 सेसा ददी सता ॥ ऊभा दूधा ऊजा द्वेया देहो चचिचरेवती ॥ १५ ॥ अयचद्रस्य पुभा सु-
 अफलम् ॥ स्वजन्म राशि मारस्य चंद्र राशि स्थितं फलम् ॥ चंद्रे जन्म स्थिते शुद्धिः
 द्वितीये नो सुख भवेत् ॥ १६ ॥ तृतीये धन लाभः चतुर्थे रोग संभवः ॥ पंचमेका-
 र्यं नाशः षष्ठे द्रव्या गमो महान् ॥ १७ ॥ सप्तमे भूप सन्मानं त्वष्ट मे सरणं भवत्
 ॥ नवमे च भयं क्षीयं दशमे कार्यं संपदः ॥ १८ ॥ एका दृष्टौ ऽर्थलाभश्च द्वादशौ विवि-
 दः पदः ॥ अथ शुक्ल पक्षे विशेषः ॥ द्वितीयः पंचमः प्रचन्द्रे नवमो ऽपीज्य वच्छुभः ॥ शुक्ल

पक्षे विशेषो ऽयं तुल्यमन्यतयो अयोः ॥ २० ॥ चन्द्रस्यैव वलः शुक्ले न तु तारा विधा-
 नता ॥ सति कानि वलो येते स्वातं ग्रंथं च योयितः ॥ २१ ॥ कक्षा पक्षे तु तारायाः वल-
 ग्रहं सदा यतः ॥ क्षीणे च प्रोयिते कानि गार्हस्यं गेहिनी चरेत् ॥ २२ ॥ अथ तारा वल-
 म् ॥ जन्ममादिनाभं यावत्ताराक्षेत्रे न वोद्धते ॥ जन्म संपदि पक्षे मयाप सिद्ध च-
 धाः क्रमात् ॥ २३ ॥ मित्राति मित्र संज्ञं च नाम तुल्य फला प्रचताः ॥ द्विप्रचतुः बद्ध-
 नवाष्टम्य स्तारः श्रेष्ठ तमाभताः ॥ २४ ॥ जन्मारब्धा मध्यमाक्षेत्रे नेष्टा स्त्वन्याः
 प्रकान्तिताः ॥ अथावश्यं के तारणां त्याज्यं शः ॥ तारा पूर्णाः त्यज्ये दद्या वर्त पंचत्रि सप्त-
 काः ॥ २५ ॥ द्वितीये चैव तत्यादः तुल्यं कायास्तृतीयकाः ॥ तृतीये तु द्युम्ना स्सर्वाः
 कार्ये त्याग्यं के स्मृताः ॥ २६ ॥ अथ बुधतारा सुदानम् ॥ सप्तम्यां तारकायां च दद्या-
 त्स्वर्णं तिलानपि ॥ गुडं तृतीय तारयां पंचम्यां लवणं तथा ॥ २७ ॥ दोषा यनुत्तयेता-
 सां दद्याच्छाकं त्रिजन्म सु ॥ अथ चन्द्रावस्था ॥ निष्णा करस्य यावस्था नर एधि सम-

विता ॥ नरा राणा च राज्ञीया प्रवासायर्कं प्रोयिता ॥ २८ ॥ वयिष्टं गतमं भुक्तघटी
 भुक्तं भुक्तम ॥ प्रराभिहृत्यतोऽर्कं प्रोयेऽवस्थाः क्लिप्ता द्विधोः ॥ २९ ॥ अ-
 र्भार्थः ॥ अग्निनी भारभ्य गतभा निपद्यता हं गुराणा निवर्तमान नक्षत्र भुक्तघटी युता
 निता नि पुनर्युगे प्रत्युर्भिराहूता निशराभि इत पंच च त्वारि प्रा ताभाज्या निद्य
 स्वभ्रमागतं गता वस्था स्ताः प्रोयं वर्तमाना वस्थाया तत्र लब्धा कस्यापि ह्यदशगधि
 वी ह्यपशभिर्भागे प्रोयं प्रवासावस्था चंद्रस्य गताः स्युः ताः ॥ अवस्था मेय राशेः
 पुनः प्रवासादि संज्ञाः त्वप राशे नव्या संज्ञा सर्वमिषुनादि ह्यदश राशिवु सृतादि सं-
 ज्ञा राणा वित्तो ह्यपश वस्थाः क्लमेरा भवं तीत्यर्थः ॥ ३० ॥ प्रवासोऽथ विनाशश्च
 परां जाय हास्य के ॥ रतिः क्रीडा तथा सुप्ता भुक्ता चाथ जरा भिधा ॥ कल्पिता सुस्थिराव-
 रणा ह्यपशे ताविधो ह्यस्ताः ॥ ३१ ॥ ता संमानं सपदि कादश नाडी सितं भवेत् ॥
 मेवावितः प्रवासाद्याः नाम तुल्य फल प्रदः ॥ ३२ ॥ मेघ राशे प्रवासाद्यानाया ॥

ग्राह्यमर्थो ॥ यथाद्या निधुने चैवं ज्ञानाद्वाद्य एतत् ॥ ३२ ॥ अथ काव्यं विधिः ॥ ३३ ॥
 म ॥ उदाहरे नीत्सवे जीवः सूर्यो मूपात् दर्शने ॥ संग्राने घरणी सुने ॥ विद्याभ्यासे पुनोत्तरे ॥
 ॥ ३३ ॥ यात्रायां भार्गवः प्रीतो दीक्षायां च प्रानै प्रचरः ॥ चंद्रमाः सर्वकार्येषु प्रधरलो
 ग्दत्तं जुधैः ॥ ३४ ॥ अथ चंद्रवले विशेषः ॥ शुभं चंद्रोऽप्यसत् पापात्सप्तनः पापमुक्त्तया
 ॥ पापमध्यगनः क्षीरो नीचगणश्च वृगिः ॥ ३५ ॥ अशुभोऽपि शुभं प्रचंद्रो गुरुणा
 लोकितो युतः ॥ स्वर्शे चरणप्रशुभां धोवा त्वाधिनित्रांशकेऽथवा ॥ ३६ ॥ अथावदेतान-
 न् ॥ नंदनोश्च तिथौ पुष्टे वोरत्वं सकांचनम् ॥ ग्राह्यो कनकं योगे करणे धान्यमेव च ॥
 ३७ ॥ जलं रोप्य युतं चंद्रे तारायां सैधवतया ॥ नाह्यां हेमनृपो दद्यात्कार्येऽत्यावश्यके-
 सति ॥ ३८ ॥ द्वितीदिकुलसंभूत सरसूकृत संग्रहे ॥ शिरो मलो समाक्षेया सप्तमीयं प्रभा-
 शुभा ॥ ४० ॥ द्विती पी संग्रह शिरो मलो तार कथनं नाम सप्तमी प्रभा ॥ ४१ ॥ अथ शुभा-
 शुभं नकारणम् ॥ द्विती सेवनं पर्व सुपक्ष मध्ये पलं च वृद्धी बुच सर्व तैलम् ॥ चरणं विना प्रण-

य चतुर्दशी शुक्ल कृत्वा स्याद् सङ्कत दासु ॥ १ ॥ व्यती पतिच संक्रांता वेका दश्या च प-
 र्वसु ॥ अर्द्धे भौम दिने विषया नाभ्यं गंन च वै धत्ते ॥ २ ॥ पर्वाणि ॥ चतुर्विंशत्यष्टमी
 कृत्वा अमा वास्या च पूरिमा ॥ पुण्यानि यंच पर्वाणि संक्रांति दिनि पस्य च ॥ ३ ॥
 अत्र तिथि स्तात्कालिकी ॥ स्नाने वाभ्यं जने चैव संत धावन भैथुने ॥ तिथि स्तात्कालि-
 की ग्राह्या तथा मरणा जन्मनोः ॥ ४ ॥ त्रयोदश्या द्वितीयायां सप्तम्या च विशेषतः
 ॥ प्रह्व विदस त्रिधा स्नानं नाचरेयुः कदाचन ॥ ५ ॥ काम दुर्गति कर विनये द्वे-
 र्के दिने बुच ॥ सङ्क दाम ल क स्नानं संपत्सुत्र विना श्रानम् ॥ ६ ॥ सप्तम्यं च द्वा नवमी
 यु देह श्री संतती रामल कै नरस्थ ॥ स्नानं निहं त्यं त्य दिने तु धत्ते तिलै म्भिष्यं पुण्यं क-
 रं सदैव ॥ ७ ॥ अथ दग्धयोगः ॥ एकोदशी चेन्नु वारे हविंशी चार्क वासरे ॥ षष्ठी ह-
 हसते वीरे तृतीया बुध वासरे ॥ ८ ॥ अष्टमी शुक्र वारे च नवमी शनि वासरे ॥ पंच-
 मी भौम वारे च दग्ध योगाः प्रकीर्तिताः ॥ ९ ॥ अथ विवियोगः ॥ षष्ठी शशां केनवमी च

श्रुक्ते बुधे द्वितीया तपने अनुष्ठी ॥ जीवेऽष्टमी सौरिकुजे न्हि सप्तमी योगा विग्रह्या
 तुल नाशनास्स्युः ॥ १० ॥ अधहुता ज्ञानयोगः ॥ सप्त यजुगादि तिथयः लेम वारादि
 निर्धुताः ॥ अग्नि जिह्वा सप्त योगाः संवाले व्यतिदाहिताः ॥ ११ ॥ अथ यम वंदः ॥
 मद्या विप्राया आर्द्रा च शुलं मुखं च कृत्तिका ॥ रोहिणी हस्त इत्युक्ता यस्य वंताः क्रमा
 द्रवेः ॥ १२ ॥ एवामपवादः ॥ दिवा मृत्यु प्रदः पाप दोषा स्त्वे तेन रात्रियु ॥ शुभ
 कार्ये प्रसूतो च सर्वदा परि वर्जयेत् ॥ १३ ॥ ज्ञानमयक कृत्ये ॥ यम घटे त्यजे दक्षीणः
 लो हृदय नाडिकाः ॥ अन्येषां पाप योगानां मध्याह्ना त्यक्तं प्रशुभं म् ॥ १४ ॥
 अथ चैत्रादि मासे तिथि ग्रह्याः ॥ असृमीनवमी चैत्रे पक्षयो रुमयो रपि ॥ माधवे द्वादशी
 त्याज्या पक्षयो रुमयो रपि ॥ १५ ॥ ज्येष्ठे त्रयोदशी निंद्या शिते क्लेशे चतुर्दशी
 ॥ आर्द्राते क्लेश पक्षस्य षष्ठी शुक्ले पु सप्तमी ॥ १६ ॥ द्वितीया च तृतीया च प्राव-
 रो शित कुलयोः ॥ प्रथमा च द्वितीया च नभस्ये मासि निंदिते ॥ १७ ॥ दशम्ये

कादशी निन्दा मासीधे शुक्ल कलशोः ॥ ऊर्ज्जे चतुर्दशी शुक्ला कलस पक्षे तु पंचमी
 ॥ १८ ॥ सप्तमी चाष्टमी मौम्ये पक्षयो रुमयोरपि ॥ पौषे पक्ष द्वये चैव चतुर्थी पंचमी न
 या ॥ १९ ॥ माघे तु पंचमी वक्षी शुक्ले कलसे यथाक्रमम् ॥ तृतीया च चतुर्थी च फा-
 ल्गुने सित कलशयोः ॥ २० ॥ तिथयो मासशून्याख्या वंश वित्त विना प्रकाः ॥ अत्र
 शु श्राद्धं प्रकुर्वीत नैव सन्मंगलं क्वचित् ॥ २१ ॥ अथ नक्षत्र दोषः ॥ द्वितीयया चतु-
 राया न्युत्तरा च तृतीयया ॥ पंचमी च मघा युक्ता चित्रा स्वात्यो खयो दृशी ॥ २२ ॥ प्र-
 तिपद्युत्तरा यादा नवम्या कृत्तिका यदि ॥ सप्तम्या हस्त मूले च धर्या ब्राह्मे भवेद्यदि
 ॥ २३ ॥ पूवा याद पक्षाष्टम्या एका दश्या च रोहिणी ॥ द्वादश्या च यदा म्लेघा त्रयो-
 दश्या अथा यदि ॥ २४ ॥ एतु कार्ये कृते चेत्स्यात्परमा सान्भरणं फलम् ॥ अथ से-
 वादि मासे मूल्य नक्षत्राणि ॥ अश्विनी रोहिणी चैत्रे मृगशिरा परिकीर्तिते ॥ चित्रा स्वाती
 च वैशाखे ज्येष्ठे विश्वेज्य नारके ॥ २५ ॥ भगवासव वाया देवावरो हरि विप्रवमे ॥

॥ नभस्ये वास्तरां त्यर्द्धमजपादप्रवयुज्यपि ॥ ३६ ॥ कार्तिके पितृव्रह्मर्क्षे सो-
 म्येचित्रा द्विदैवते ॥ यौये दस्रक राद्वा स्यु माघे मूलं च विष्णु भम् ॥ ३७ ॥ तपस्ये-
 श्नाक्र भरणी मून्यभान्याङ्गराजाः ॥ एषु यन्तु कृतं कर्म धने स्सह विनश्यति ॥
 ३८ ॥ अथ चैत्रादि नामे य प्रत्ये राशयः ॥ चत मन्स्य द्या युग्य मेप कन्या स्स दृश्चकाः ॥
 तुला चापकुली राख्याः मृगसिंहा प्रच राशयः ॥ ३९ ॥ चैत्रा दो मास मून्या ख्यावे-
 प्रा वित्त विना प्राणाः ॥ अथ विपमतिथि सु दग्ध लग्नानि ॥ मृग सिंहे तृतीयायां प्रथमा
 यां तुला राशौ ॥ पंचम्यां बुध राशौ द्वी सप्तम्यां चाप चंद्र मे ॥ ४० ॥ नवम्यां सिंह की-
 टाख्यावेका दश्यां गुरो र्गृहे ॥ द्वाय मीनी नौ त्रयो दश्यां दग्ध सृज्जास्त्वमी ग्रहाः ॥
 ॥ ॥ दग्ध सप्त नि यत्कर्म कृतं सर्वम्य राशयति ॥ ४१ ॥ अथैते यां दुष्ट योगानां आवपुन-
 क कृत्ये परिहारम् ॥ केन्द्रे चैव त्रिकोरोच शुभे सु पचयेऽपि वा ॥ एकोऽपि चतुर्वोश्चा-
 पि मून्यतिष्ठु नाराकः ॥ ४२ ॥ तिथयो मास मून्याश्च मून्य लग्नानि यान्यपि

॥ मध्य देशे विवर्ज्यानि नदूध्याणी तरेद्युतु ॥ ३३ ॥ पंग्वंध कारा लग्नानि मास
 शुन्या प्रचरणयः ॥ गौड - मालवयोस्त्याज्या अन्य देशे न गहिताः ॥ ३४ ॥ वजीयेत्स
 र्व कार्येषु हस्तार्क स्थंचमी तिथौ ॥ भौमाब्धिनीच सप्तम्या व्यक्या चंद्रैदवं तथा ॥
 ॥ ३५ ॥ बुधानुराधामष्टम्या दशम्या भृगुरेवतीम् ॥ नवम्या गुरुपुष्यं चैकादश्या श
 नि रोहिणीम् ॥ ३६ ॥ ग्रहप्रवेशे यात्रायां विवाहेच यथा क्रमम् ॥ भौमेऽश्विनी
 शनी ब्राह्मं गुरौ पुष्यं विवर्जयेत् ॥ ३७ ॥ हस्ते रवीशश धरेण मृगेज्जमांग भौमेऽ
 श्विनी बुधदिनेच तथा नुराध ॥ पुष्ये गुरौ भृगु सुतेऽपिच पौलधिदंभ्य रोहिण्यथार्कत
 नयेऽमृतसिद्धि योगाः ॥ ३८ ॥ यदि विष्टिव्यनी पातो दिनं वाय्य शुभं भवेत् ॥ ह
 न्यतेऽमृत योगेन भास्करेण तमोयथाऽर्द्धाया नंददि योगः ॥ ज्ञानंदः काल दंडप्रच धू
 म्नाक्षोऽथ प्रजापतिः ॥ सौम्यो ध्वांक्षो ध्वजश्चापि श्रीवत्सो वज्र सुदौरे ॥ ४० ॥
 सत्रं नित्रं क्रमेणैव मानसः पद्म लुंव को ॥ उत्पात मृत्यु काराख्याः सिद्धिश्चैव शु- ४५

आसुतो ॥ ४१ ॥ सुशलंच गदाख्यश्च मातं गोरक्ष सप्रचरः ॥ स्थिरः प्रबद्धमानश्च
 नाम तुल्य फलाश्रमी ॥ ४२ ॥ भानुवारिः शिवं नक्षत्रात्सा भिजि त्के प्रत्न सर्वभैः ॥
 भवंति क्रमशो योगाः ज्येष्ठा विंशति संख्यकाः ॥ ४३ ॥ मृगादारभ्य रात्री प्रो ज्ज्ने-
 पातः कुज वासरे ॥ हस्ताहुध्रेऽनुराधायाः गुरु वारि तथैवच ॥ ४४ ॥ उत्तराषाढ ते
 प्रभुने प्रात तारादि तः शनौ ॥ अथैतेषु कियद्दुष्टयोगाः त्याज्याः ॥ ध्वाभेन्द्रायुध सुदरेषु
 चटिका स्त्याज्यास्तु पंचादितः पंचलुंवकयो प्रच तत्त जडिता धूम्रे सदे कापुनः ॥
 देकारे सुशला द्वयेऽपिच गदे सहे वति स्त प्रचरे मृत्यु त्यात करक्ष सांदिन गता स्ताः
 काल दंडे तथा ॥ ४५ ॥ अथ दोषा यवाद भूतार वियोगाः ॥ सूर्याच्चतुर्थे दशमेच पथे विष्व
 र्क्ष के विंशति मे न वक्षे ॥ भवंति यज्ञानु सहस्रयोगाः कुत्रो ग विध्वंस करः प्रदिष्टः
 ॥ ४६ ॥ सिद्धियोगः ॥ ज्येष्ठा वक्षि मघा विषाण बसवो भैत्रं यमाख्य रवौ सोमे सैव वि-
 प्राय सुख्य यवना श्रित्रा त्वयाढा ह्यम ॥ भौमे विष्व जलेश मित्र नमवः प्राग्भाद्र

सर्वो शिवः प्राली रेवति पूर्वयोनि भरणी वसुधित मूला बुधे ॥ ४७ ॥ जीविसूत्र
 मघाद्र्याम्य वरुणाः पूषा शशी रोहिणी शुक्रे स्वाति भुजंग देवत मघा पुष्यो नरा-
 रोहिणी ॥ सौरा वर्यम मूल हस्त वरुणा पादा हूयं रेवती चित्रा विसु मघाश्च सर्व
 समये त्याज्या अयोग दमे ॥ ४८ ॥ अथ सिद्धियोगः ॥ सूर्येऽर्क मूलोत्तर पुष्य दासं च
 न्दे श्रुति ब्राह्म प्रशीज्य सैत्रम् ॥ भौमे व्यहि बुधश्च कृशानु सार्यं ज्ञे ब्राह्म मैत्रा कर्क क-
 शानु चांद्रम् ॥ ४९ ॥ जीवेन्त्य मैत्रा ष्व्य द्विती ज्य धि स्रं शुक्रं त्य मैत्रा ष्व्य द्विती प्र-
 वोभम् ॥ शनौ श्रुति ब्राह्म समीर भानि सर्वार्थ सिद्धौ कथितानि पूर्वैः ॥ ५० ॥ द्विशा-
 तो या ह्यश्रवात्पौष भाच्च ब्राह्मात्पुष्या हर्य मर्क्षा च तुर्भेः ॥ स्याद्रुत्यातो मृत्यु कारो
 च सिद्धि वारेऽर्कश्चै तत्फलं नाम तुल्यम् ॥ ५१ ॥ क्रुयोगा स्तिथि वारे त्या स्तिथि
 भौत्या भवा रजाः ॥ हून वंग ख से खे व वज्या स्थितय जास्तथा ॥ ५२ ॥ अथ चान-
 क्षत्रोन्न सिद्धियोगः ॥ मूलं सर्के श्रवश्चंद्रे भौमे चोत्तरा आद्रपात् ॥ कर्त्तिका बुधवारे

तु गुरु वारे पुनर्वसुः ॥ प्रधा शुक्रे शनौ त्वाती सिद्धियोग उदाहृतः ॥ ५३ ॥ अथ तिथि
 वारेत्याहुः योगाः ॥ द्वादश्य के विधौ यक्षी भौमे सप्ताष्टमी बुधे ॥ दशे शुक्रे शनौ रुद्रो गु-
 रो नव हुता शनौ ॥ ५४ ॥ द्वादश्य के विधौ रुद्रे भौमे पंच बुधेऽग्नयः ॥ गुरौ व-
 क्ष्यष्टमी शुक्रे दग्धा रव्यो नवंमी शनौ ॥ ५५ ॥ चतुर्थ्य के विधौ यक्षी द्वितीया द्वे-
 ऽष्टमी गुरौ ॥ नव शुक्रे विंशारवश्च सप्तमी कुज मंदयोः ॥ ५६ ॥ शनौ यक्षी भौमे
 सप्ताष्टमी जीवे बुधे नव ॥ कुजे दश विधौ रुद्राः कर्क चो द्वादशी रवौ ॥ ५७ ॥ प्रति
 पत् द्वे रवौ सप्त संवर्त्तो योग दर्शितः ॥ दग्धा वीन् तिथि वारेत्यान्त्यजेत योगान्
 प्रभु मे सदा ॥ ५८ ॥ अथ नक्षत्रा द्विहितेऽपित्वाज्य स्थितिः ॥ द्वितीया मनु राधायां मघायां
 पंचमी तिथिम् ॥ त्यजेत्पक्षी च रोहिण्यां पूर्व भाद्र पदे ऽर्द्धमीम् ॥ ५९ ॥ अथ न्युयोगः ॥
 अनु राधा रवौ सोमे उत्तराषाढ संभवम् ॥ बुधे ऽश्विनी मृगौ जीवे शुक्रे ज्येष्ठा शनौ
 करः ॥ ६० ॥ भौमे शत मिया चार्थे मृत्यु योगो ऽर्थ नाशकः ॥ अथ दग्धा तिथि योगः ॥

भरण्यर्केविधौ चित्रा जीवे चोत्तर फाल्गुणौ ॥ भौमे चैवोत्तरा यादा धनिष्ठा बुधवास
 रे ॥ ६२ ॥ शुक्ले ज्येष्ठा त्यसं संदेत्यजे देत द्विदग्धभम् ॥ अथ त्रिविधगंडांतं ॥ नक्षत्र
 तिथिराशीनां गंडांतं त्रिविधं त्यजेत् ॥ ६३ ॥ नव पंच चतुर्व्यं ते द्वेकार्द्व घटिका
 मतम् ॥ तावन्मितं ततोऽग्राणां आदा वयि परित्यजेत् ॥ ६४ ॥ ज्येष्ठा मूलस्यो
 संधौ रेवत्यश्चि भयोस्तथा ॥ वृश्चिकाख्यधनुः संधौ लग्नस्यैकघटीमतम् ॥ ६५
 ॥ आद्यार्द्वयामः ॥ अर्द्वयामाः परित्याज्या वेदसप्तद्विपंचमाः ॥ अथ त्रिजयसंख्या
 काः क्रमशोरविवासरत् ॥ ६६ ॥ अथ कुलिककंटककालवलयमघंताख्याः त्याज्यमुह
 र्ताः ॥ मन्वर्कदशनागर्तुवेदनेत्रमिताः क्षणाः ॥ कुलिकाख्या रेवो रक्रमतः
 कंटका बुधात् ॥ ६७ ॥ गुरोस्तु कालवलाख्या शुक्राक्षे यमघंटकाः ॥ त्यजेदे
 तान् शुभकार्थ्ये निशीथेतुगुहर्तकान् ॥ ६८ ॥ अथ द्वादशक्षणाः ॥ क्षणाः चतुर्दशः
 सूर्ये नवद्वादश कोविधौ ॥ सप्तमो निशि भौमे न्हितूर्य प्रचाथ बुधेऽष्टमः ॥ ६९ ॥

षष्ठ द्वादश को जीवे चतुर्थी नवमे भूगौ ॥ शनो चाद्य द्वितीयोच त्याज्या दुष्ट क्षणा

अथ दुष्ट क्षणा चक्रम्

दिवा कुलिका दीनां चक्रम्

रात्रौ कुलिका दीनां चक्रम्

स	च	म	तु	व	शु	श	सू	च	म	तु	व	शु	श	र	चं	मं	तु	व	शु	श
१४	६	७	८	९	१०	१	११	१२	१०	८	६	४	२	१३	११	९	७	५	३	१
+	१२	४	+	१२	६	२	६	४	२	१४	१२	१०	८	५	३	१	१३	११	९	७

द्विमे ॥ ७० ॥ रवौ षट् ६

दश १० सप्ता ७ छ ८ मनु १४

संख्या सुहूर्त्त काः ॥ चंद्रेऽधि ४ वसु ८ षट् ६ द्वि १३ मनु १४ खेदा ६ क १२
 संमिताः ॥ ७१ ॥ भौमे द्वि २ त्रि ३ चतुः ४ षट् ६ दश १० संख्या क्षणाः स्मृ
 ताः ॥ बुधे वेदा ४ अथि २ वस्वर्क मनु १४ दिक् १० प्रमिताः क्षणाः ॥ ७२ ॥
 जीवे भूपा १६ ध्रि २ तिथ्यं १५ गर्द मनु १४ सूर्या १२ मिता ऋते ॥ शुक्रपंचां

५ कं ८ षट् ८ वेद ४ दिग १० क् १२ मनु १४ संमिताः ॥ ७३ ॥ मं १२ नेत्र २
 रुद्रा ११ स्र ८ दशग १० दित्य १२ मुहूर्त काः ॥ त्याज्या पंच दशगं घ्राद्यावुधै रुक्ता
 रयादिबारे एतौ मुहूर्ती त्याज्याः ॥

स	च	म	तु	व	सु	श
६	४	२	४	१६	५	१
१०	८	३	२	२	८	२
७	६	४	८	१५	६	११
८	१३	६	८	६	४	८
१४	१४	१०	१४	१४	१०	१०
+	८	+	१०	१२	१२	१२
+	१२	+	+	+	१४	+

क्षणा ज्ञेये ॥ ७४ ॥ अथ देश भेदेन त्याज्य दोषाः ॥ विंध्य-
 हे माद्रि मध्येतु मगधेय मघंठकः ॥ अंगेंधे मत्स्य देशे
 वा दोष कुन्ने तरन्नसः ॥ काप्रमीरे कुलिक सत्याज्य स्त्व-
 र्द्वयाम स्तु सर्वतः ॥ ७५ ॥ अथ संक्रांतौ त्याज्य कालः ॥
 अपर्णे विषवे त्याज्यं पूर्वं मध्य पदं दिने ॥ श्रेय संक्रम
 रो पूर्वं पश्चा त्योदृश नाडिकाः ॥ ७६ ॥ अथ तिथि क्षय दृ-
 ष्टि क्षेयः ॥ तिथीनां त्रितयं वारं संक स्पृशति यत्र वै ॥ अ-
 व संत द्विनं द्वयं शुभ कर्म सुसं त्यजेत् ॥ ७७ ॥ वारा
 एणं त्रितयं यत्र तिथिरे का स्पृशेद्यज्ञ ॥ त्रिषु स्पृशेति

एवातान ग्राहं मंगलादिषु ॥ ७८ ॥ अथ त्रिपुष्कर यमल योगः ॥ राव रावज भाग्य पा०
 भद्रायां विद्यम पाद मृदं चेत् ॥ त्रै पुष्कर राख्य योगः त्रिगुण फलो द्विगुण भेजुगल
 म् ॥ ७९ ॥ अथार्थः ॥ अष्टातिथौ यदा रवि भौम शनि वारे कृत्तिका पुनर्वसू ॥ विशाखा उत्तरा
 फाल्गुणा पूर्व भाद्र पदा उत्तरा याद ॥ एतदृक्षं भवति तदा त्रिपुष्करः यदा पूर्वोक्तति
 थौ वारे मृग शिरः चित्रा धनिष्ठा तदा द्विपुष्करः ॥ तत्फलम् ॥ तत्र दृष्टे मृते नये शुभे वा
 य्य शुभे पिवा ॥ त्रिगुणं द्विगुणं सर्वं जायते क्रमशः फलम् ॥ ८० ॥ नारदः ॥ तद्यात्त
 दोष प्रांत्यर्थं गोत्रयं मूल्यमेव वा ॥ द्विपुष्करे चयं दद्यान्त दोष स्तृक्ष मानत्रतः ॥
 ८१ ॥ अथ ख्यादि वारे पुनः प्रशुभाशुभ योगः ॥ रवौ हस्ते ऽश्विनी मूलं धनिष्ठा चोत्तरा
 त्रयम् ॥ सुख्य त्पथा वमी चैव सिद्धि योगाद्वे सताः ॥ ८२ ॥ विशारवा भरणी स्त
 र्थं मचा ज्येष्ठा ऽनु राधिका ॥ सप्तमी द्वादशी तद्वद्वि रुद्धा च चतुर्दशी ॥ ८३ ॥ चं
 द्रे च अवराः सुख्यो ऽनुराधा रोहिणी मृगः ॥ दशमी नवमी वाथ सिद्धि योग प्रशुभा

वहः ॥ ८४ ॥ पूर्वाषाढोत्तराषाढौ स्वाती चित्रा विशाखयोः ॥ सोमे चैकादशीषष्ठी
 वर्जनीया त्रयोदशी ॥ ८५ ॥ भौमे ज्येष्ठाश्विनी मूलमृग शीर्षस्त्रयोदशी ॥ तृतीया
 चाष्टमी षष्ठी सिद्धिदाकीर्तितावुधैः ॥ ८६ ॥ उत्तराषाढं चार्द्रं धनिष्ठा त्रितयं तथा ॥ द्वि-
 तीया दशमी भौमे वर्जनीया प्रयत्नतः ॥ ८७ ॥ बुधे पुष्योऽनुराधा च कान्तिका
 रोहिणी मृगः ॥ द्वितीया सप्तमी चैव द्वादशी च शुभमवा ॥ ८८ ॥ धनिष्ठा भरणी मू-
 लमश्विनी रेवती बुधे ॥ तृतीया प्रतिपद्दपि विरुद्धा नवमी स्मृता ॥ ८९ ॥ गुरोः पु-
 ष्योऽनुराधा च विशाखाश्विपुनर्वसू ॥ रेवती दशमी चैव पूर्णिमा शुभदा स्मृता ॥
 ९० ॥ जीवेयश्च मीनेया चतुर्थी शततारका ॥ कृत्तिकादिचतुष्कंच तथा चोत्तर-
 फाल्गुनी ॥ ९१ ॥ मृगशिरा चित्रा शिवनी पूर्वा रेवती च पुनर्वसू ॥ अवराः प्रतिपत्ष-
 ष्ठी सिद्धा चैकादशी तथा ॥ ९२ ॥ भार्गवे रोहिणीज्येष्ठा पुष्यो ज्येष्ठा मघा तथा ॥
 द्वितीया सप्तमी चैव विरुद्धा सर्वकर्मसु ॥ ९३ ॥ शनौ स्वाती श्रवं पूर्वाफाल्गुनी च त-

आमृगः ॥ चतुर्थी नवमी चापि तिथिः सिद्धा चतुर्दशी ॥ ६४ ॥ पूर्वाषाढौ चरायादा चि-
 न्नाहस्तोऽथरेवन्ती ॥ उत्तरा फाल्गुनी यक्षी निधिद्धा सप्तमी श्रवणौ ॥ ६५ ॥ द्विद्वेदि कुल सं-
 भूत सरयू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाप्तेषा ऽप्रखमी ये प्रभाश्रुभा ॥ ६६ ॥ वृत्ति
 श्रीसंग्रह शिरो मणौ शुभाश्रुभ कथनं नामाष्टमी प्रभा ॥ ६७ ॥ अथ त्याज्य प्रकरणम् ॥
 तिथि नक्षत्र वाराणां द्रुष्ट योगा न्यस्यम् ॥ अती पातादिदुर्योगान् विष्टीदशी के संक्रमा-
 न् ॥ १ ॥ जन्म क्षीतिथि मासांश्च तिथ्यर्द्धमेव मन्दिनम् ॥ गंडांतं त्रि विधं द्रुष्टं क्षीणेषु
 पाप कर्त्तरी ॥ २ ॥ पाप होराखले चोरा माई कुलिकादि कान् ॥ जन्म राशि विलम्बा
 भ्या मष्टमे लग्नमेव च ॥ ३ ॥ दिन मेकंतु मासां ते ऋक्षांते घटिका द्वयम् ॥ घटिके
 कंच तिथ्यंते लग्नांते घटिका द्वयम् ॥ ४ ॥ विषाख्य नाडिका भानां यात मेकार्गलंतथा
 ॥ दग्धाहं क्रांति साम्यं च लग्ने शं रिपुचल्युगम् ॥ ५ ॥ विनाई चरजन्य र्धे संधौ तु-
 पला विंशतिः ॥ रोगोत्पत्त्या च रिद्यानि सूत कं मातु र्गर्त वम् ॥ ६ ॥ जन्मे श्रास्त्रं मनो

भंगं शुभे द्वेतानि संत्यजेत् ॥ एमः ॥ सर्वस्मिन्विधुपापयुक्तचुलवावर्द्धनिप्रणहो
 र्धदीन्यं ग्रहैकुनवांशकं ग्रहणतः पूर्वदिनानां त्रयम् ॥ उत्पातग्रहतोऽद्यहो प्रचशुभ
 हो त्याते प्रचद्रुष्टं दिनं य रामा संग्रह भिन्नं त्यज शुभे यौद्धं तयो त्यात भम् ॥ ७ ॥
 अस्मार्थः ॥ सर्वस्मिन् दति सर्वस्मिन् शुभे कार्ये सतानि वै नि प्रचयेन त्यज परिह
 रेत्यर्थः ॥ विधुना पापे नवापापैः क्षीणं हर्कं मही सुतार्क तनये की युजो युक्तो तनु ल
 वो लग्नलग्नपनवांशौ त्याज्यौ ॥ पूर्णः क्षीणोऽपि वाचंद्रो लग्ने सर्वत्र गार्हितः ॥ इति
 कस्योक्तः ॥ पापेन्द्रु लग्न गौ वांश गतौ वर्ज्यो शुभे सदे निच ॥ निप्रणहो र्द्धे रात्र्य
 र्द्धे दिनाद्धे च घटी त्र्यंशं विंशति पत्नानि दश पूर्वं दश पश्चाच्च परि हर ॥ उक्तं च ॥ मू
 र्तः कालो निवसति मङ्ग निशनां च दिन बले यस्माद्दश पूर्वं परस्वस्मा द्वर्ज्यो निच प
 लानि ॥ कुनवांश कं पाप ग्रहन वांश कं परि हर ॥ अथ ग्रहणतः पूर्वदिनानां त्रयं परि
 हर ॥ उत्पातग्रहतः उत्पाताः दिव्य भौमां तरिक्षाः ॥ यस्मिन् दिने भवन्ति ततोऽद्य

हांश्च सप्त दिनानि वर्ज्यानि ॥ ग्रहो ग्रहणं तस्मादपि सप्त दिनानि वर्ज्यानि ॥ उक्तं च ॥
 चंद्र सूर्यो परागेयु अहं पूर्वं शुभे त्यजेत् ॥ स साहसं शुभं पश्चात् स्तुतं ग्रहणं सूत
 कम् ॥ निविधो त्यात तश्चोर्द्धं सिद्धिं कां सुखं वर्धने ॥ सप्त रात्रं न कुर्वीति यात्री द्वाहा
 दि मंगल मिति ॥ अंगिरा अपि ॥ सर्वे रासे तु सप्ताहं सद् ग्रसे दिन त्रयम् ॥ त्रिहोका गुलतो
 ग्रामे दिन मेकं चिर्वर्जयेत् ॥ चण्डिः ॥ सर्वे रासे दिना न्य हो सर्वे कार्ये विवर्जयेत् ॥ घ
 णानि त्रिभागोन अर्द्ध रासे चतुर्दिनम् ॥ चतुर्थीशे त्रिरात्रं स्यात् ग्रहणे चंद्र सूर्ये
 ॥ अत्र कार्यं स्या वश्यक त्वे परिहारे ज्योतिर्निवर्धे ॥ पंच दिना निवर्धियु स्त्रिदि

कोऽपि कस्वेकम् ॥ यवना चार्थस्य च सप्तं पंच सुहृत्तां निदूययति राहुः ॥

त्रेधो नित्येनै भिति कादि कृत्याति रिक्त विषयः ॥ गुरुः ॥ नित्येनै भित्ति के का
 होम क्रिया सुच ॥ उपा कर्मणि चोत्सर्गे ग्रह वेधो न विद्यते ॥ इति शुभ दोषात्
 दिन मिति ॥ शुभ दोषात् वाराह संहितायाम् ॥ चंडा प्रणि मही कं प संध्यानिर्घाति

निश्वनाः ॥ परिवेष रजो धूम रक्ताकं स्तमनो दयाः ॥ दुर्लभं ध्यान्नरस रत्नेह मधुपुष्य
 फलोद्गमाः ॥ गी पक्षि मदच्छिप्रश्च शुभा यमधु माधवे ॥ इत्यादयः ऋतु परत्वे नो-
 क्ताः यद्दिने एते भवन्ति तद्दिनमेव त्यज ॥ अथ ग्रह भिन्नानं ग्रहे भौमादि भिभिन्नं भेदि-
 तं तथा यौद्धं ग्रह योर्युद्धं यस्मिन्दिने नक्षत्रे युद्धं यातम् ॥ तथोत्पातयम् ॥ यस्मि-
 न्दक्षे दिव्यां तरिस् भौमा स्त्रि विधोत्पाताः संभूताः ॥ एतानि ग्रह भिन्न यौद्ध उत्पात न-
 क्षत्राणि यरमा संत्यज ॥ भेद स्तार खेद यो यन्न वास्या दिति दिवाह वृद्भा वने ॥ ना-
 रदः ॥ ग्रहणोत्पात भंत्योज्यं मंगलेषु ऋतु त्रयम् ॥ इति ॥ ननु नक्षत्र संधौ जायमाने
 ग्रहणो किं नक्षत्रं दूषये दित्यत आह ॥ शर्द्धः धः ॥ यस्मिन्विधुं राहु रि नं च धिस्ते र ह्ला-
 ति तत्त्याज्य मृतु त्रयं स्यात् ॥ पाणि ग्रहेषु मरणं विधत्ते द्वयो भयो इति ह्यनेव ज्ञात्वात् ॥
 अन्यच्च ॥ पक्षांतराण ग्रहण छयं स्याद्यत्वा तदा तद्ग्रहणो यमं भम् ॥ पक्षादि शुद्धं भवति-
 द्वितीयं पाणि ग्रहे शुद्ध्यति आग पक्षादिति ॥ ७ ॥ नेष्टं ग्रह क्षं सकलार्द्ध पाप यसि कमात्

किं गुरोर्दु सा सान् ॥ पूर्वं परस्तादुभयोस्त्रिघस्ताग्रस्तेऽस्तगेवाभ्युदितेऽर्द्धं रवंहे ॥ ८ ॥
 अत्रार्थः ॥ नेष्टमिति ग्रहर्षे ग्रहणा नक्षत्रं क्रमात्संपूर्णाद्धी चतुर्थी रागा से सानि षट् न्येकना-
 सा नेष्टम् ॥ ग्रहः ॥ सर्वगासेषु षणमासान्धी न्मासांस्तु दले ग्रहे ॥ आपाव ग्रहणे धिहो मा-
 नेकम् विवर्जयेत् ॥ अथ क्रमात्ग्रस्तेऽस्तगे ग्रहणार्द्धं ग्रसे उभयोः प्राक् पश्चाच्च-
 धात्रा नेष्टाः ॥ तथा ॥ अर्द्धं रवंहे ग्रस्ता स्त ग्रस्ती दययोरभावेऽपि ॥ अर्द्धं ग्रसे उभयोः
 पश्चाच्च त्रिनिघस्तां नेष्टाः ॥ गुरुः ॥ ग्रस्तास्ते त्रिदिनं पूर्वं पश्चाद्गुस्तो दये तथा ॥ रवं-
 ॥ त्रिनिदिनं निष्प्रेषे सप्त सप्त च ॥ कर्णः ॥ ग्रस्ता दये परो देवो ग्रस्तास्तेऽर्द्धां कृश-
 योः ॥ शुनि शर्द्धित् भयं तत् रवंडी रवंड व्यवस्थयो रिति ॥ ८ ॥ जन्मर्क्षमास ति-
 थयो व्यतिपात भद्रा वै धृत्य मापित् दिनानि तिथि क्षयर्क्षे ॥ न्यूनाधिमास कुलिक्र-
 र्द्ध पात विंशुं भवज्ज घटिका त्रय मेव तदर्थम् ॥ ९ ॥ जन्म क्षेति ॥ जन्म नक्षत्र ज-
 र्द्ध मास जन्म तिथयः पुनर्कर्म सुचर्ज्याः ॥ अयं निषेध ज्ञाप्य गर्भस्थेव ॥ नारदः ॥

न जन्म मासि जन्म क्षीं न जन्म दिवसे प्रिया ॥ आद्य गर्भ सुत स्वाय दुहितुर्न कारुण-
हः ॥ जन्म मासः सविज्ञेयो वर्जितः सर्व दम्न सु ॥ वस्तुतस्तु ॥ यत्र शुक्लादिचांद्र मासि
चैत्रादौ जन्मा भूत् ॥ सचांद्रो मासो जन्म मासः त्याज्यः ॥ इंद्राग्नी यत्र दूयेते मासा
दिः संप्रकीर्तितः ॥ अग्नीषो मी सृती मध्ये समासः पितृ सोमकः हरीतोक्त मासलक्ष-
णम् ॥ व्याती पाता दयश्च वर्ज्याः ॥ पितृ दिन म्माता पित्रो मर्माण दिनम् ॥ आद्वदिन मि-
त्यर्थः ॥ तिथि क्षयद्वी तिथि क्षयो वृद्धिश्च तल्लक्षण माहवशिष्टः ॥ स्युस्तिस्त्रस्तिथि
यो वारे एक स्मिन्नवसा तिथिः ॥ तिथि वार त्रये चैका त्रिद्युस्पृक् द्वेऽपि निंदिते ॥ न्यूनमा-
सः ॥ अधिक मासश्च वर्ज्यः संक्रमद्वय सहितः क्षय मासः ॥ असंक्रांतोऽधिक मासः ॥
कुलिच्छाई ग्रहौ ॥ पातो महापातः विकुम्भयोगा वज्रयोगयो राधं घटिका त्रयं वर्ज्यं ॥
एवं प्रकारेण कैश्चित् इज्य योगेन व घटिका वर्ज्या ब्रह्मसूत्रम् ॥ यथा ॥ विष्णुं भा घघदित्रयं
च नवकं व्याघातवज्रोद्भवे ॥ इति द्युत प्रते तथा व्याघाते वज्रकेंका इति गणेशज्योति

॥ ८ ॥ विदुक्तिरपे निरस्ता ॥ चिच्छुंभवज्जयोस्तिन्नः षड् गङ्गाति गङ्गयोः व्याधातेनव प्रह्लेतुपं
 ६० चनाड्यो विगर्हिताः ॥ इतिकथ्यप्रोक्तेः ॥ परि घस्यार्द्धं वर्ज्यम् मूल स्याद्याः पंच गङ्गाति गङ्ग-
 यो राधाः पट्यट् चटिकाः व्याधाते चादिगाः नव घटिकाः वर्ज्याः ॥ ८५ ॥ वेदांगाष्ट नवा-
 केन्द्र पक्षरंघ्र तिथौ त्यजेत् ॥ वस्त्रं क मनु तत्वा द्वाभार नाही पराः शुभाः ॥ ९० ॥ वाय्वा-
 राम तडाग कूप अवना रंघ्र प्रतिष्ठा अतारंभोत्सर्ग वधू अवे श्नन महा दानानि सोमाष्टके
 ॥ गो दाना ग्रयण प्रपा प्रथम को पा कर्म वेद अंत नीलो द्वाह मघाति पन्म शिशु संस्कार-
 रान्सुस्थायपनम् ॥ ९१ ॥ वाय्वा एलेति ॥ वापी दीर्घिका आराम उप वनम् ॥ तडागः पुष्क-
 रिणी ॥ कूपः अतिद्धः एतेवामारंभ प्रतिष्ठा ॥ आरंभं निष्कर्माणं प्रतिष्ठा उत्सर्गः ॥ तत्र गृह प्र-
 तिष्ठा गृह प्रवेशो द्वेयः क्षताना मनंत व्रतादीना भारंभः गृहणम् ॥ उत्सर्ग उत्थापनम्
 महा दानानि तुला पुरुषा दीनि सोमः ॥ सोमचागः ॥ अष्टका द्वादशम् ॥ गोदानं के अंत सत्त्व
 कर्म ॥ आययणं नवान्नेष्टिः ॥ प्रपा जल शाला ॥ प्रथम को पा कर्म प्रथमारस्यमाणं प्राव-

रणी कर्म वेद व्रतं महा नाभ्यादि त्रयम् ॥ सह्य नाम्नी उपनिय व्रतम् ॥ वेद व्रतं च नीलो-
 दहः ॥ काम्य दृषोत्सर्गः ॥ अति यन्न शिशु संस्कारः अतिपन्नाः अतिक्रांताः जातकर्मा
 दयः शिशूनां संस्कारः देव स्थापनम् ॥ ११ ॥ दीक्षा मौजि विवाह मुंडनम पूर्वन्देव तीर्थे क्ष-
 रणं संन्या साग्नि परिग्रहे नृपति संदर्शने भिये को गमम् ॥ चातुर्मास्य सप्ता द्वाती अवरायो
 र्वेधं परीक्षां त्यजेद्ब्रह्म स्त शिशु त्वद्वय सितयो न्यूना धि मासे तथा ॥ १२ ॥ अत्र मूलपच-
 नानि श्रुता तपः ॥ अस्तं गते गुरौ प्रुक्ते चाले वृद्धे मलि म्लुचे ॥ उद्यापन सुपांरं व्रतानां नैवं
 कारयेत् ॥ ऋक्षो नृपः ॥ वापी दूष तडाग याग गमनं क्षीरं अति द्या व्रतं विद्या मंदिरं कर्णवेध-
 न महा दानं वनं सेवनम् ॥ तीर्थ स्नान विवाह देव भवनं मंत्रादि देवे क्षणं दूरे सौवजि जी वि-
 द्युः परि हरे दस्तं गते भार्गवे ॥ १४ ॥ उप नयनं गोदानं पाणि ग्रहणं अवेष्टा गमनानि ॥ अ-
 स्तमितेषु न कुर्थात्सुर गुरु सगु पुत्र चंद्रेऽथु ॥ १५ ॥ अस्तमयादि फल आह वाद रायणः ॥ शु-
 रो रस्ते पतिं हन्या च्छुक्रास्ते चैव कन्यकाम् ॥ चन्द्रे नष्टे उभौ हन्या तस्या हस्तं विवर्जयेत् ॥ १६ ॥

॥ १६ ॥ बालभावे स्त्रियं हन्याद्वृद्धभावे नरं तथा ॥ तस्माद्बाल्ये च वार्द्ध्ये च विवाहं नै-
 व कारयेत् ॥ १७ ॥ अधिमासे वर्ज्यानि गृहस्य परि शिष्टे ॥ सोमयागादि कर्मणि नित्य-
 न्यपि मलिम्लुचे ॥ तथैवाग्रयणधानं चानुष्मास्यादि कान्यपि ॥ १८ ॥ महालयाद्य-
 का प्राङ्दिपा कर्माद्यपि कर्त्तव्यम् ॥ त्यक्तमास विशेषारव्य विहितं वर्जयेन्मले ॥ १९ ॥
 गर्गवृहस्पती ॥ अग्न्याधानां प्रातिक्षान्धं यज्ज दानं ज्ञता निच ॥ वैद्वजत दृषोत्सर्गं चूडाकरण-
 मेव च ॥ मांगल्यं मासि वैकं च मलमासे विवर्जयेत् ॥ मरीचिः ॥ २० ॥ गृहप्रवेश-
 गीदानं स्थानां अथ महोत्सवम् ॥ न कुर्व्यान्मलमासे तु संसर्गं हस्यतो ॥ २१ ॥
 ॥ वशिष्ठः ॥ वापी कूपं तद्वागादि प्रातिष्ठ्या यद्वा कर्म च ॥ न कुर्व्यान्मलमासे तु संसर्गं हस्यतो
 तथा ॥ २२ ॥ यदा क्षयमासो भवति तदा क्षयमास एव पूर्वोत्तरावपि मासौ मलः तत्र ह-
 र्कः संसर्गः द्वितीयो हस्यतिः । गार्ग्यः । बाले वा यदि वा वृद्धे शुक्रे वासं गते सुरे ॥ मल-
 मास इवैतानि वर्जयेद्देवदर्शनम् ॥ २३ ॥ अपूर्वं देवतां ह्यष्टा शुचः स्पृर्नष्टं मार्गवे ॥

मल मासे त्व नावृत्त तीर्थ यात्रां विवर्जयेत् ॥ २४ ॥ अनाहता अपूर्व तीर्थ यात्रा ॥ अत्र नि-
यत कालानि सीमंत नाम करणा दीनि ॥ पूर्वोदस्तादिसत्वे ऽपि स्व स्वकाल एव कार्य्याणि
॥ २५ ॥ गुरुः ॥ मास प्रयुक्त कार्य्येषु मूढत्वं गुरु शुक्रयोः ॥ न दोष कुन्मले शासे शुर्वीदि-
त्यादि कं तथा ॥ २६ ॥ अन्यत्रापि ॥ सीमंत यात कादीनि प्राशनां तानि यानि वै ॥ न दोषो
मल नासस्य सौहृदस्य गुरु शुक्रयोः ॥ २७ ॥ वशिष्ठः ॥ अतीत काला न्य रिल्लानितानि
कार्य्याणि सौम्यायन गे दिने प्रे ॥ सिते गुरौ वाप्यतिदृश्यमाने तदुक्त पंचांग दिनेष्य-
रंवडे ॥ देवी पुराणे ॥ सिंह संस्थे गुरौ यत्नात्सर्वारंभा न्निवर्जयेत् ॥ पुन आह कल आरिण
हन्या च्छी घ्नं न संशयः ॥ २८ ॥ कार को व्रजते नाशं संतानं मृयते ऽचिरात् ॥ देवा एन
तद्भागानि प्रयोद्यान गृह्णाणि च ॥ २९ ॥ विवाह यद्वोपनय चूडादि च न सिद्ध्यति ॥ य-
द्या सिंह स्थितो जीव स्त धैव मकर स्थितः ॥ ३० ॥ अप्रथमपि निषेधो नियत कालमनो न
संपहः ॥ वशिष्ठः ॥ नीच राशि गतो जीवः प्रशस्तः सर्व कर्म सु ॥ नीचे नीचां प्र क-

स्त्याज्योयस्सादेशेषु नीचता ॥ ३२ ॥ विशेषासां द्रव्ये मोक्तः ॥ सवास्थी यदा जीवा वर्जयेत्
चसांश्रुत् ॥ प्रेषेद्यपि च भागेषु विवाह एषो अनो मतः ॥ ३३ ॥ तोवरा नन्दः ॥ अति चरे
सप्त दिनं वक्त्रे द्वादश मेव च ॥ नीचस्थितेऽपि वाशीशे सासमेकं विवर्जयेत् ॥ ३४ ॥ ज्योति
निवधे ॥ हरिनी चारि भागेषु व्रतो द्वाहादिमंगलम् ॥ ननिषिद्धं यदि त्वोच्चैस्वमेवासं-
स्थितो गुरुः ॥ ३५ ॥ मघांत्यक्ता यदा गच्छेत्काल्युनी च बृहस्पतिः ॥ पुत्रिणी धनिनी-
कन्या सौभाग्यं सुरव मस्तुते ॥ ३६ ॥ क्वचिद् पूर्वतीर्ष्यान्नायां मौढ्यादि वीषो नास्ति ॥ गो-
दा वयं गीगायां च श्रीशेले गृह्णा ह्वये ॥ सुरा सुराणां गुर्वीश्व मौढ्य दोषो न विद्यते ॥ ३७
दधुपराणे निस्पृही सेतो ॥ गयायां सर्व कालेषु पिंडं दद्याद्दिधानतः ॥ अधिमासे जन्म दिने-
त्ते च गुरु शुक्रयोः ॥ ३८ ॥ नत्यक्तव्यं गया श्राद्धं सिंहस्थे च बृहस्पती ॥ अधिमासे सिं-
ह गुरावस्ते च गुरु शुक्रयोः ॥ ३९ ॥ तीर्थयात्रा न कर्त्तव्या गयां गोदावरीं विना ॥ वात्स्यव-
क्राति चारणे सुरा वसिगुर्वाद्यस्त बह्वर्जम् ॥ यात्री गृह प्रतिष्ठां च गृह चूडा व्रता दिकम् ॥ ४०

वर्जयेत्तत्तद्वैव जीवे वक्राति चारणे ॥ ४० ॥ अस्यापवादो राजमार्त्तगृहे ॥ वक्राति चार
 ने जीवे वर्जयेत्तदनंतरम् ॥ व्रतो द्वाहादिचूडायाश्चष्टिविश्रिति वासरम् ॥ अथदीपिकायाम्
 त्रिकोणजाया धनलाभग्रहौ वक्राति चारेण गुरुः प्रयातः ॥ यदा तदा प्राह शुभं विलगने
 पिवाहं पाणि ग्रहणं वशिष्ठः ॥ ४१ ॥ गुर्वदित्येऽपि सर्वं शुभकर्म धर्ज्यम् ॥ शौनकः ॥ एक राशि
 गतौ सूर्ये जीवो स्यातां यदा पुनः ॥ व्रत बंधविवाहादि शुभ कल्पो खिलं त्यजेत् ॥ ४२ ॥
 विश्वप्रथमपक्षेऽपि यस्मिन्मक्षेतिथिं ह्यनाशः न गौ दशदिनः पक्षः सोऽतिनिघ्नः ॥ उक्तं च ॥
 पक्षस्य मध्ये द्वितियाप्येतां तदा भवेद्गौरव कालयोगः ॥ पक्षे विनष्टे सकलं विगटमि
 त्याहुराचार्य्यवरस्त न स्ताः ॥ ४४ ॥ तथा ॥ त्रयोदश दिने पक्षे तदा संहरते जगत् ॥ अ
 पि वर्धं तद्वक्षेण कालयोगः त्रयीर्त्तितः ॥ ४५ ॥ तस्मिन्मक्षे शुभकर्म धर्ज्यं चंद्रे खरः ॥ अ
 द्वा दश दिने पक्षे विवाहादि न कारयेत् ॥ गर्वादि सुनयः प्राहुः कृते नृत्तु तदा स वेत् ॥
 उपमग्नं परिरायनं वेला रंमादिपुण्य कल्पोऽपि ॥ यात्रादि सयं पक्षे कुर्वीत न जिजी

विष्णुः पुरुषः ॥ ४७ ॥ अस्मिन्मूषादिकमपित्याज्यम् ॥ राजमार्तदः ॥ यान्त्रो चूडो वि-
 शाहं श्रुतिविवरविधिं शंखसमप्रवेशः प्राशा दोद्यानहस्यं सुरनरभवना रंभविधा
 विधेनोमौजीवधं प्रतिष्ठां मणिकनकरत्नाधारणं कुर्वते ये मृत्युः सिंहस्थिते ज्ये गुरू
 हिन करयोरेक राशि स्थयो अत्र ॥ ४८ ॥ सिंहस्थे गुरो सत्यपि सिंहश्रीस न्यं प्रान्नयो
 दप्रशंशे ॥ ४९ ॥ भ्योऽनं तं सन्न्यं शमं शन्नयम् ॥ पंचमो नवांशः सिंहश्रीः तत्र गुरो सति
 विवाहो नैष्टः ॥ सिंह राशौ तु सिंहश्री यदाभवति वाक्पतिः ॥ सर्वदेशे स्वयं त्याज्यो दे-
 पत्यो निधनप्रदः ॥ इति राजमार्तदः ॥ सिंहपि भगदेवत्ये गुरोयुन्नयती भवेत् ॥ अत्यंत
 प्रमुग्धा साध्वी धनधान्यसमृद्धिदा ॥ ४९ ॥ अथ देशभेदात् लक्षः ॥ गोदावत्युत्तरे
 तीरे यावद्भगीरथी ततम् ॥ नेष्टस्तत्र विवाहादि सिंहस्थे ज्ये सदाबुधैः ॥ ५० ॥ वशि-
 षः ॥ भागीरथ्युत्तरे कूले गौतम्या दक्षिणे तथा ॥ विवाहो व्रतबंधो वा सिंहस्थे ज्ये न दु-
 र्यति ॥ ५१ ॥ अत्र विवाहव्रतबंधान्यतमशुभकस्मीणि निषिद्धान्येव ज्योतिर्निबंधे ॥ संग-

लानीह कुर्वीत सिंहस्यो वाक् पतिर्यदा ॥ भानौ भोग गते सम्यगित्याहु एषो न काश्यः ॥
 ५२ ॥ कुत्रापि मकरस्योऽपि न वर्ज्यः लक्षः ॥ नर्मदा पूर्वं भागेतु श्रेणस्यो न्नर दक्षिणे ॥ गंड
 क्याः पश्चिमे भागे मकरस्यो न दोष भाक् ॥ ५३ ॥ अन्यस्य ॥ आगधे मोड देशे न सिंधु देशे
 च कौंक्षणे ॥ व्रतं चूडां विवाहं च वर्जये न्मकरे गुरौ ॥ ५४ ॥ लुप्तवत्सरेऽपि शुभकृत्ये निबंधः ॥
 गति चारगतो जीव सं राशिं नेति चेतुनः ॥ लुप्तः संवत्सरो ज्ञेयो गदित सार्व कर्म सु ॥ ५५ ॥
 शुभः ॥ मेघे हृषे भाये कुंभे यद्यनी चारणे गुरुः ॥ न तत्र काल लोप स्यादित्याहु भगवान्य
 मः ॥ ५६ ॥ दश मासो न्नर दोषः च्यवनः ॥ मासा न्दशे कादश वा प्रयुज्य राशे यदा राशि मुपैति
 जीवः ॥ भुक्तेन पूर्वच पुन स्तथापि न लुप्त संवत्सर ग्राह्यः ॥ ५७ ॥ देश भेदेन परीक्षारः ॥ लु-
 प्त संवत्सरो रे वा नर्मदा सुर निम्नगा ॥ भागी रथी तयोर्नद्यो रंतरेऽति निधिदुदः ॥ ५८ ॥
 पुक्तं च ॥ लुप्ताब्द दोषोऽत्रि मतेन मध्ये सीमोद्भवाया स्सुर निम्नगायाः ॥ दक्षिणार्द्रः ॥ सम-
 दृष्टिः गुरो प्रशुक्ले तन्मासे तु प्रयत्नतः ॥ विवाहादि न कुर्वीत नर्मदा तीर उत्तरे ॥ ५९ ॥ द्विवे

॥ दिक्कल संभूत सरसूक्त संग्रहे ॥ शिरो मणौ सन्नाहैषा नवमीय त्रभा शुभा ॥ ६० ॥ वृत्तिन्नी संग्र-
 हे ॥ शिरो मणौ यज्य कथनं नाम नवमी प्रभा ॥ ६१ ॥ अथ लग्नप्रकरणम् ॥ मेयो हयोऽथ मि-
 थुनं कर्कः सिंहोऽथ कन्यका ॥ तुलाथ वृश्चिको धन्वी मकरः कुंभ मीन कौ ॥ १ ॥ राश-
 यस्तु क्रमादेते पुंलिङ्गौ दूरसंज्ञ कौ ॥ द्वेयः चर स्थिर ऽथैव विस्व भावः क्रमास्तुनः ॥ २ ॥
 प्रक्षोद्या धतुर्मयो मकरे हय कर्कले ॥ चमयो द्यवत्वाग्नीन स्वतोऽन्ये मस्त को व्याः ॥ ३ ॥
 मेयो हयो धनुर्गुमे कर्क न कौनि शावलः ॥ दिवा दत्तास्तु तेभ्योऽन्ये स्वस्व काले वला भिक्काः
 ॥ ४ ॥ अथ राशित्वाग्निनः ॥ मेप वृश्चिक चो भौमिः वुधो मिथुन कन्ययोः ॥ तुला हय भनो प्रयु-
 क्तः कर्क दस्यतु चंद्रमाः ॥ ५ ॥ सिंह स्यापि पीत सूर्य्य ग्रहनिर्मकर कुंभयोः ॥ स्याग्नीन धनु-
 यो जीव ऽथैते राशी प्रवर मताः ॥ ६ ॥ अथ यद्देवानि ॥ मेयो हय स्तथा नक्रः कन्या कर्कौ भ-
 यस्तुला ॥ सूर्या दीनां क्रमादेते कथिता उच्च राशयः ॥ ७ ॥ परमोच्चो ग्रहः सूर्य्यादिशो रामग-
 जाप्तिनः ॥ वाण चंद्र ग्रहः शरैल दृष्टः रक्षाश्च मिताः क्रमात् ॥ ८ ॥ अथ नीचम् ॥ सूर्या

दीनां जगृर्नीचं सोच्च भाद्यच्च सप्तमम् ॥ एहेस्तु कान्यका रोहं मिथुन त्वेच्च भं स्मृतम् ॥
 १६ ॥ अथ मूलत्रिकोणम् ॥ सिंहो ह्ययम मे रवारयं कान्या धन्वि तुला घटाः ॥ रव्या दीनो क्रमान्मू-
 ला त्रिकोणा राशयः स्मृताः ॥ १० ॥ अयनेपादि लग्न कुल्यानि ॥ आक रोधातु कर्म्मणि भूनिपा-
 लाभिषेचनम् ॥ निरोध स्नाह सं चैते मेय लग्ने प्रसिद्धाति ॥ ११ ॥ क्षेत्र कूपादिकं दानं कुमा-
 री वरणे ऋचम् ॥ गृह प्रवेश उद्ग्रह सिद्धि वेत ह्युद्ये ॥ १२ ॥ कला विधूया विज्ञानं यत्काव्यं ह्यय
 भो वितम् ॥ तत्सर्वं मिथुने प्रोक्तं हो राशालाविचक्षणैः ॥ १३ ॥ वारि वंधन मोक्षं च पौष्टिकं
 चर कर्म्म च ॥ दार्पणं कूप तद्वा गादीन् कर्कटे कथितं बुधैः ॥ १४ ॥ राज सेवा कृषिः परंपर
 योगो वणिक्पथः ॥ सिद्धे सिद्धाति तत्सर्वं मेघ लग्नादि च यत् ॥ १५ ॥ भूषणं धित्य विद्या-
 नं ज्ञीयधं पौष्टिकं तथा ॥ चर स्थिर च यत्कृत्यं कान्या लग्ने प्रसिद्धाति ॥ १६ ॥ यागित्यं क-
 र्पणं सेवा यात्रा भांड तुला अयम् ॥ तुला लग्ने सप्ताख्याता मुनिभि स्तत्त्व वेदिभिः ॥ १७
 ॥ राज सेवा भिये जौन्य साहसं दारुणं तथा ॥ उग्रं चौर्यं स्थिरं कर्म्म कर्त्तव्यं तत्सह स्तये ॥

॥ २८ ॥ अतः शैलिक्रान्ता वाहनागिण परिग्रहे भृगुर्हस्ते चरं कर्म कथितं पूर्व मूर्तिभिः ॥
१२९ ॥ दासी चतुः ददौ द्यादि जन्म लो वंध मोक्षणम् ॥ तथा क्षेत्रा प्रबंध यात्रा परलो भक्तने
नये ॥ ३० ॥ चीजोद्दि संगही लोकचर्मा वारिरमादिक्त्वं ॥ पशु कर्म्म बुकार्यंच कुंभलब्धे
प्रतीर्षितम् ॥ ३१ ॥ उद्याह श्वाभिये कश्च विद्या लं करणा दिक्कू ॥ द्विग गमं न्हवि प्रचा-
न्नप्राप्नं भीनु नाश्रितम् ॥ ३२ ॥ मेधादिकेतु शुद्धे सुययोक्तं कर्म सिद्धाति ॥ पापेदि
तसुते ज्वेषु हूरं सिंहैश्च नेतरम् ॥ ३३ ॥ अथ लग्न युक्ति प्रमाणम् ॥ तिक्तो र्मेने च मेने
च पंती पूर्णि चतुः पलाः ॥ चतस्रश्च वृथे कुंभे पलाऽशीतास्व षोडश ॥ ३४ ॥ सकरे
मित्युने पंच घटिकाच चतुः पलाः ॥ पंच कर्के च चापे च शशि वेदाः पलाः स्थिताः ॥ ३५
॥ घटिका पंच सिंहः स्त्री शशि वेदाः पलाः स्थिताः ॥ कन्यायांच तुले पंच पलाश्चन्द्रा
स्तथा ग्नयः ॥ ३६ ॥ अथ यद्वर्गाः ॥ बड्वर्गौ ग्रह होराख्ये द्वेः काणोऽष्ट नजांशकः ॥ हा-
दशां प्रास्तथा त्रिंगंशश्च सुभजः सुभः ॥ ३७ ॥ त्रिशद्भागाल्म के लग्नं होरा तस्याद्ध

संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	मेयाः	कर्काः	तुलाः	मकराः
नांशः	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०	१६१	४८	७३	९०
	२०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०	००	५	१२	११	६

द्वादशांशः स्वरक्षितो ज्ञेयाः

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
५	७	१०	१३	१५	१७	२०	२३	२५	२७	३०	३०
३०	०	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

विषम राशौ विंशंशद् मे सम राशौ त्रिंशंशद् मे

स्वामि	मं	रा	व	तु	शु	पु	वु	च	श	म	त्वामि
नांशः	५	५	८	७	५	५	७	८	५	५	नांशः

रोमंद भौमा रांश्च

यथा क्रमात् ॥ अथ जन्मादि भाव संज्ञा ॥

तनु र्थेनं २ सहोत्पारव्यं ३ सुहृत् ४ पुत्रो

भरि ६ शोयितः ७ ॥ निधनं ८ धर्म ९ क

स्मि १० य ११ व्यया १२ भावास्तनोः क्र-

मात् ॥ ३२ ॥ केंद्रं परां फरं चापौलि-

मं लग्ना तुनः पुनः ॥ नवमं पंच मस्थानं

त्रिकोणं स्थानमित्यपि ॥ ३३ ॥ त्रिदशोकादंशं यत्तु त्रिकोणं चोपचयाद्भयम् ॥ यामि-
 त्रं सप्तमं धूतं चिद्वं च मदनाद्भयम् ॥ ३४ ॥ रिपुं तु द्वादशं ज्ञेयं दुष्टित्वं कं स्यात्तृतीयकम्
 ॥ चतुरस्रं तुरीयाद्यं संख्यं रं च सथाद्यमम् ॥ ३५ ॥ अथ वर्गोत्तमनवांशः ॥ आद्यप्रचरे नवांश
 स्यात्त्रिदशोरेणोतु पंचमाः ॥ नवमोहिः स्वभावारव्ये शुभो वर्गेऽन्तिमस्त्वयम् ॥ ३६ ॥ अ-
 यसाधारणा शुभकार्ये लग्नग्रहवत्त्वम् ॥ सर्वेषु शुभकार्येषु नेष्टाः खेदाः व्यथाद्यगाः ॥ लग्ने
 पापा रिपौ सौम्याः पापाः केंद्रत्रिकोणगाः ॥ ३७ ॥ सौम्याः केंद्रत्रिकोणस्थाः पापा
 स्तु त्रिखंडाय गाः ॥ ते सर्वे लाभागाः खेदाः श्रेष्ठा स्तु शुभकर्मणि ॥ ३८ ॥ भावः
 स्वपतिना सौम्ये दृष्टो युक्तेष्वलाधिकः ॥ पूर्णं फलं निजं धत्ते व्यस्तं पापैर्युते क्षितः ॥ ३९
 ॥ लग्ने यद्गुणं संशुद्धे प्रोक्तं स्थानस्थिते ग्रहे ॥ शुभर्धेति धि वारेषु कार्थ्याः सर्वाः शुभाः
 क्रियाः ॥ ४० ॥ द्विवेदि कुलसंभूतसरयूकृतसंग्रहे ॥ शिरोमणौ समाप्तैवा दशमीयं प्र-
 भाशुभा ॥ ४१ ॥ इति श्री संग्रहशिरोमणौ लग्नकथने नाम दशमी प्रश्ना ॥ १० ॥

नय गृहार्चनं प्रकरणात् ॥ अथ नूतन वस्त्रा लंकारादि धारणम् ॥ हस्तादि पंचके पुख्ये धनिष्ठा रेवती
 द्वये ॥ अतरे च पुनर्वसोः रोहिण्यां च शुभे तिथौ ॥ १ ॥ बुधे शुक्ले ज्य वारेषु नूतनां वस्त्रा
 रणम् ॥ मी चर्णे रत्ना रंतादि प्रवालानां धृति प्रशुभा ॥ २ ॥ प्रागुक्त विह्वल वारे च स्वर्णी -
 या भरणा दिक्म् ॥ रक्तं वासो बुधैः पूज्यं भौम भास्कर योरपि ॥ ३ ॥ शुभगायाः विशेषः ॥ रो
 हेणी गुरु पुनर्वसू तरे या विभर्ति नव वस्त्रं सूत्रणम् ॥ सान योयि दद्व लंघते यतिं स्वानया -
 धगति नान् एतपि या ॥ ४ ॥ अथात्रवार फलम् ॥ जीर्णं मर्कटं विधुश्चाद्र्भीमशूरे कं बुधो
 धनम् ॥ गुरुर्ज्ञानं प्रिया वाप्ति भर्गवे मलिनं शनौ ॥ ५ ॥ कुर्वन्ते वासरत्वे ते नूतनोत्तर
 धधारणात् ॥ अथर्क्षफलम् ॥ वस्त्रं साहि ग्या श्विज्यां भरण्यां तद्वि नाशनम् ॥ छत्तिकाग्नि
 भयं कुट्या रोहिण्यां सर्व संपदः ॥ ६ ॥ नृगे दूयकं भीति स्याद्दार्द्र्या निधनं भवेत् ॥ पुन -
 र्वसौ तथा पुख्ये धन धर्म महोत्सवाः ॥ ७ ॥ अश्लेषायां भवेच्छोको मघायां मरणं प्रवम्
 ॥ एवो भयं नु पूषाया सुत्तरायां धना गमः ॥ ८ ॥ कर्म सिद्धि तु हस्त र्क्षेत्राया मिष्ट सं -

पदः ॥ मिथु भोजन दा स्वाती विशाखा नंद दायिनी ॥ ७९ ॥ मित्राक्षिरनु राधा यो ज्येष्ठायां
 वासतो हतिः ॥ जलक्षु तिष्ठ मूलर्क्षे पूर्वायास्तु ति रोमदा ॥ १० ॥ मिथ्यान्म दो चरा बाढा
 अवरो नयनोतकृत् ॥ धान्या गमी धनिष्ठायां चिब मीति प्रज्ञताभिधि ॥ ११ ॥ पूर्वाभा-
 द्रेजला द्वीति रुचराया धना गमः ॥ रत्ना वासिस्तु रेवत्या भवे दुस्त्र स्वधारणात् ॥ १२
 ॥ अथवत्ना भराणा दि धारणे स्त्रीणां विशेषः ॥ अश्लेषन्यांच धनिष्ठायां रेवत्यां कर पंचके ॥
 सुवर्ण रत्न दंतादि वस्त्राणां धारणं स्त्रियः ॥ १३ ॥ अथ चूरी चक्रम् ॥ यावद्भास्कर सुक्ति
 भाति दिव से धिलानि संख्या तथा ॥ वन्ति ३ भूत ५ गुणा ३ अभि ४ सप्त ७ नयनं २
 पृथ्वी १ करे २ लुः १ क्रमात् ॥ ॥ सूर्या रो कविसेल्य राहु रविजाः जीवः प्रश्री के-
 तवः ॥ क्रूरे ५ स च शुभे शुभः अ कथितं चक्रे करे भूषणे ॥ सूर्यभात् चूरी चक्रम् ॥

॥ १४ ॥ अथ कज्जला दर्शक्यम् ॥ चित्रा चतुष्टये प्रिव-
 न्या धनिष्ठारेवती मृगे ॥ सुक्रे ५ केन्ति प्राने स्त्रीणां सूर्य

३	५	३	४	७	२	१	२	१
सू	म	शु	बु	रा	श	ह	चं	के

शिर्षांजनयोर्दृतिः ॥ १५ ॥ अथन्मस्त्र विकृतौ फलम् ॥ वास सो नवधा भागो चतुः कोणयुदेव-
 ताः ॥ मध्य त्र्यंश स्थितं रक्षो नराः पार्श्वं दशं शूयोः ॥ १६ ॥ दग्धे जीर्णो नवे वस्त्रे लि-
 ते वा कर्दमादिभिः ॥ सर्वं प्रति ध्वसत् चैव शयनाशन पादुके ॥ १७ ॥ कज्जलक-
 र्दम गो मय लिप्ते वाससि दग्ध वति स्फुटिते च ॥ चिंत्य मिदं नवधा विहिते तन्निष्ठ मनि-
 ष्ठ फलं च सुधीभिः ॥ १८ ॥ शंख चक्रां वुज च्छत्र ध्वज तोरणां सन्निभा ॥ श्रीवत्सल-
 र्वतो भद्रं नंचा चर्त गृहोपमा ॥ १९ ॥ वर्द्धमान स्वस्ति का भस्मग कूर्म मया कृतिः ॥
 छेदा कृति र्दैत्य भागोऽप्यायुरर्थं प्रदानुरागम् ॥ २० ॥ खरोद्रो ह्रूक का काटि जंबू कश्यप-
 को पमाः ॥ त्रिकोण सूर्या कृतयो देव भागेष्य शोभनाः ॥ २१ ॥ निर्दितं वसनं दद्या हि-
 जेभ्यः स्वर्णं संयुतम् ॥ आश्रियो वाचनं कृत्वा त्वन्य द्वात्रं च धारयेत् ॥ २२ ॥ अथ मुह-
 र्त्तं विनापि वस्त्रधारणम् ॥ विप्रा क्षया तथो द्वाहे राज्ञा प्रीत्या र्पितं चयत् ॥ निक्षेपि धिक्लि-
 चा रादौ वस्त्रं धार्यं जगुर्बुधाः ॥ २३ ॥ अथ वस्त्र विशेष विशेषः ॥ युक्त वस्त्रोक्त नीधाय्यं र-

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ विशुद्धे कर्तुं पीतं सभोसे रक्तं वरम् ॥ २५ ॥ अथ कलनीलम् ॥
 पुनर्वसू धनिष्ठारख्ये ऽश्विमे हस्ताच्चतुष्टये ॥ पूर्वोत्तरे शनौ सूर्ये कलनीलां वरं शुभम्
 ॥ २६ ॥ अथ दुकूलम् ॥ जीवे ऽर्के ऽञ्जे बुधे शुक्रे वरुणोक्ते षष्ठ्या न्विते ॥ स्थिरे ऽगे सङ्ग्रहे व्यु-
 क्ते यदुकूलस्य धारणम् ॥ २७ ॥ अथ कोशेयम् ॥ अश्विनी रेवती हस्ते रोहिण्या अवरा त्रये
 ॥ पूर्वोत्तरे पुनर्वसोः स्वाती पुष्ये मघाभिधे ॥ २८ ॥ रेवौ चन्द्रे गुरो धार्यं कोशेय वसनं जनेः
 ॥ अथ ऐमजं वरम् ॥ नील वरुणोदिते धिसे रेवती पुष्ययो रपि ॥ शुक्रे शनौ श्वरे ऽर्के च धार-
 ये ऐमजं वरम् ॥ २९ ॥ अथ सतलकं चक्र धारणम् ॥ पुष्योत्तरानुरा धात्ये धनिष्ठा श्वि कर त्रये ॥
 रोहिण्या गुरु शुक्राब्जे देहे दुर्ग धृतिः शुभा ॥ ३० ॥ अथ स्वर्ण रत्नं तनु मय वस्त्र परिधानम् ॥
 सुवर्णं तनु संभिन्नं धारणं च रेवौ कुजे ॥ रज तंतं द्वि श्रुक्ते ऽब्जे वस्त्र धारणा भे शुभम् ॥ ३१
 ॥ अथ वस्त्रनिर्मीलणम् ॥ रोहिणी रेवती चित्रा नुराधाष्टग भोत्तरे ॥ शनिं हित्वा विदध्यानु तनु-
 मिः पटसाधनम् ॥ ३२ ॥ अथ कुशुमाक्षौ वस्त्र रत्नम् ॥ पुनर्वसू ह्ये हस्ता तंच के अवरा ह-

३८ ॥ अश्विमेऽर्कं कवीज्या रेवास संग्रजनं सुभम् ॥ ३३ ॥ अथ सत्वी कर्मा ॥ मृगश्चित्रानु
 राधाश्विपुण्यांतं रेवती करः ॥ ज्येष्ठा सद्वा सरा स्तार्काः श्रूची कर्म्मणि सस्पृताः ॥ ३४ ॥
 अथ वसुधा लनम् ॥ पुनर्वसु ह्येऽश्विन्या धनिष्ठा हस्त पंचके ॥ हित्वा कर्किं बुधान् रि-
 त्तो षष्ठी प्रादुर्दिनं तथा ॥ ३५ ॥ व्रतं पर्वच वज्राणि क्षालयेद्भज कादिना ॥ ३५ ॥ अथो
 पानत्परि धानं चर्म छत्यं च ॥ चित्रा पूर्वानुराधा ज्येष्ठा श्लेषा मघा मृगो ॥ विशाखा कृत्ति
 का मूले रेवत्यां ज्ञार्किं सूर्ययोः ॥ ३६ ॥ उपानत्परि धानं च चर्म कर्म्मणि सस्पृते ॥ अथ
 वितान तूलिकोपधानादि निष्कर्माणम् ॥ कुर्याद्दूस्त्रो दिते धिले तूलिका उप धान कम् ॥ विताना
 धं च वध्नीयान् ऊर्ध्वमूर्ध्वमुखोद्भु ॥ अथ वस्त्र मय गेह निर्माणम् ॥ श्रुति त्रयेऽश्विनी पुष्ये
 ऽनुराधा रोहिणी मृगो ॥ हस्त त्रये पुनर्भेऽन्ये ज्येष्ठी पट वैष्णव सत् ॥ ३७ ॥ अथ सुगंध मो-
 गः ॥ श्रुति त्रयेऽश्विनी पुष्ये पूर्व्यायाद्या नुराधयोः ॥ हस्त त्रये पुनर्भेऽन्ये मृग मनेन पु-
 भे हनि ॥ ४० ॥ चंद नागरु कस्तूरी पुष्पाणि भारंगं शुभम् ॥ अथ शय्या रंभः ॥

ॐ रोहिणी चोन्नरा द्वेया हस्तपुष्य पुनर्वसु ॥ अनुराधा श्रद्धनी श्रुता खट्वा निर्मणी कर्मणि
 ॥ ४२ ॥ शुभे योगे शुभे वारे विषया त्वहं को नः ॥ मन्त्रके रात्रा ह्येया अन्तामाविष्ट
 वैधृती ॥ ४३ ॥ पितृ पक्षे विशेषेण यत्ना नो परि वर्जयेत् ॥ आवणो चैव योगेन आद्रे मा
 न्य शुभे हनि ॥ ४४ ॥ वर्जयेद्भोगं भवेत् खट्वा निर्मणी कर्मणि ॥ सूर्य क्षति चतुर्दश
 देयं धिस्तु मस्तके ॥ ४५ ॥ कोणयो रष्ट नक्षत्रं श्रुताया नष्ट संख्य कम् ॥ खट्वा मध्ये त्रि-
 कं चैव वेद संख्यां च पादयोः ॥ ४६ ॥ दूयं खट्वा फलं चक्रे वारं ह्ये च आधितम् ॥ मस्तके
 च शुभं ज्ञेयं कोणयो रष्ट मस्तुदम् ॥ ४७ ॥ श्रुताष्टकं शुभं प्रोक्तं त्रिकं मध्ये सुखप्रद
 म् ॥ यादेषु वेद नक्षत्रं हानि मस्तु भय प्रदम् ॥ ४८ ॥ सूर्य भा दिन भं गणयं खट्वा चक्रे
 विशेषतः ॥ अथ पटुकाश नादि आरंभः ॥ नेत्रेन्दु पुष्य यम भादिति वज्रि चित्रा हस्तोत्तरात्रय
 हरीज्य विधात भानि ॥ एते व्यती वश्य नाशन पादुकानां संभोग कार्थ मुदितं मुनिभि-
 र्गुणभादे ॥ ४९ ॥ अथ भूषाघटनम् ॥ त्रिपुष्कराभिधे योगे अन्तरेखती ह्ये ॥ शुक्तित्रये मंगे

ये पुनर्वस्वऽनुराधयोः ॥ हस्तत्रयेऽथ रोहिण्यां भूषा कार्या शुभे हनि ॥ ५० ॥ अथ रत्न
 युक् भूषाघटनम् ॥ कृत्तिकादित्रये हस्तपंचके रेवती द्वये ॥ श्रुतित्रये पुनर्वस्वोः पुष्यभेचो-
 त्तरात्रये ॥ ५१ ॥ कुजेऽर्के रत्नयुक् भूषा घटनं शुभ वासरे ॥ अथ लेख्य अथ वज्र युक्त भूषण
 निम्नारम् ॥ रत्न युक् भूषणोक्तर्धे विष्णवां कृत्तिकां विना ॥ ५२ ॥ पुनैऽल्ले भूषणैरेष्य
 च जं सुक्ता मयं हि सन् ॥ अथ पात्र भोजनम् ॥ अथातः संभवद्यामि यदुक्तं प्रगति यामले ॥ सू-
 र्यभाचंद्रपर्यन्तं गणनीयं सदा बुधैः ॥ ५३ ॥ दिक्षु दिक्षु हयं न्यस्य मध्ये कादशयो ज-
 पेत् ॥ वर्तुला कारचक्रस्य भोक्तु पात्रस्य निर्णयः ॥ ५४ ॥ बंधनं सौख्यं हानिस्त्याज्या-
 भं सौख्यं च मृत्युदम् ॥ पुत्रा युश्लोक दृष्टी च पूर्वादि क्रमतो भवेत् ॥ ५५ ॥ अरक्तानष्टे-
 नु यष्टी च विलोस्तुतं विवर्जयेत् ॥ रोहिणी युगले हस्त त्रितये रेवती द्वये ॥ ५६ ॥ अव-
 ण त्रितये पुष्ये पुनर्वस्व नुराधयोः ॥ अतरेषु पुनैऽल्ले वारे चामृतयोगके ॥ ५७ ॥
 सौवर्णैरेष्य पात्रेषु भोजनादि शुभ प्रदम् ॥ अथ शमश्रुकर्म ॥ अवरणा त्रितये हस्त त्रितये रे-

वती ह्ये ॥ ज्येष्ठायां रुग शीर्षे च पुनर्वसु द्वये तथा ॥ ५८ ॥ क्षुरकर्म बुधैः प्रोक्तं त्यक्त्वा भौ-
 म शनिं रविम् ॥ अनुराधा शुक्रां चैव क्वासिकां रोहिणीं मघां ॥ ५९ ॥ अथ क्षुरकृत्ये वारफल-
 म् ॥ भानु र्मर्मांशानिः सप्त भौमो ऽष्टौ नाश्रये त्सुखम् ॥ वड्ये होधनः पंच मासान्सप्तनि-
 शा पतिः ॥ ६० ॥ पुनः स्वैकादश क्षेमं क्षौरैः त्रानां पतिं दध्ना ॥ अथ क्षौरैः त्याज्य तिथिः ॥ अ-
 र्धमी प्रति पत्पक्षी ऋक्ता पर्वारिणः संत्यजेत् ॥ चतुर्दशी त्वमावास्या क्षौरैः त्याज्या तु सर्वदा ॥
 ६१ ॥ निर्धनक्षत्राणां दुष्ट फलम् ॥ पंच कृत्यो मघायां यः पट् छत्वं कृत्तिका स्वपि ॥ त्रिवारं
 त्रानुराधायां रोहिण्या मष्ट वारकम् ॥ ६२ ॥ उत्तरा फाल्गुनी संक्षे चतुर्थे क्षौरमाचरे-
 त् ॥ सवेध सास मानो ऽपि यावदब्दं न जीवति ॥ ६३ ॥ अथ क्षौर निषेधे ऽपि तत् पवादः ॥ आ-
 न्न याविग्र राज्ञो दीप्याधाने बंध मोक्षणे ॥ वृताशौ चैव दीक्षायां मुंडनं शस्त्र मेध्वपि ॥
 ६४ ॥ मुंडनं चोपवासश्च सर्व तीर्थे ध्वयं विधिः ॥ वर्जयित्वा कुरु क्षेत्रं नैमिषं पुष्करं गयाम् ॥
 ६५ ॥ अथ राज्ञां प्रसशु कर्म ॥ क्षौरमस्यो द्यै राज्ञः पंचमे पंचमे हनि ॥ प्रसशु कर्म त-

नाख्यातं निविद्ध तारकानचेत् ॥ ६९ ॥ अथ नख दंत कृत्यं ॥ अक्षे सु क्षौर सन्धीहं येसु
 पेषु मनीषिभिः ॥ तेषु तेषु च कर्तव्या नख दंतदि काक्रिया ॥ ६७ ॥ अथ क्षौर विधौ नियेधः
 ॥ भुक्ताभ्यक्तो ब्रती यात्रा रणोद्योगी कृताह्निकः ॥ उत्कटा चरणौ रात्रौ संध्यौ रश्म्यौ रपि
 ॥ ६८ ॥ शुभेषु नर्वमेषु चान्हि क्षुर कर्म न कारयेत् ॥ प्राक् ब्रत स्नान को राजा योगी न्द्रो
 ग भिरिती पतिः ॥ ६९ ॥ सजीव त्वित कक्षेते मुंड्याः प्राक् कथिता अपि ॥ ७० ॥ क्षौर शुभ वा-
 त्पम् ॥ केशवं चानर्त्तपुरं पाटलपुत्रं पुरी महि क्ष्वम् ॥ दिति मदिति च स्मरतां क्षौर विधौ
 भवति कल्याणम् ॥ ७१ ॥ अथ क्षौर किंचिद्विधेयः ॥ गंगायां भास्कर क्षेत्रे माना पित्रो मृते ह-
 नि ॥ आधाने सोम याने च षट्सु क्षौरं विधीयते ॥ ७२ ॥ राज कार्यं नियुक्तानां नतानी रू-
 प जीविनाम् ॥ रसश्रु रोम नख क्षे दे नास्ति काल विशेष नम् ॥ ७३ ॥ अथ विधारंभः ॥ मृ-
 गादि पंचके भूले हस्तादि त्रितये ऽपि वने ॥ अवरात्रय पूर्वा सु विधारंभः प्रशस्यते ॥ ७४
 ॥ रवौ शुक्ले बुधे जीवे वारे लग्न वले शुभे ॥ दशम्यादि त्रिके षष्ठी तृतीया पंचमी शुच ॥ ७५ ॥

॥ त्रिधा रमा गुरा शुक्रं बुधे सर्वार्थं सिद्धिदः ॥ मध्यो ऽर्को जाड्यं कृत्तिकां भौसाकी मृत्युदो स्मृ-
 ती ॥ ७६ ॥ अथ गणिता रमः ॥ शत द्वये ऽनु राधा र्क्षे रोहिणी रेवती करे ॥ पुष्ये जीवे बुधे कुर्व्या
 त्पारंभं गणिता दिव्यु ॥ ७७ ॥ अथ व्याकरणा रमः ॥ रोहिण्यां पंचके हस्ता त्पुनर्भे जग मे ऽ
 श्विभे ॥ पुष्ये शुक्रे ज्य चिह्नरे शब्द शास्त्रं पठेत्सुधीः ॥ ७८ ॥ अथ न्याय शास्त्राद्या रमः ॥ अतु-
 रे रोहिणी पुष्ये पुनर्भे श्रवणो करे ॥ अश्विन्यां शत भे स्वातो न्याय शास्त्रादिकं पठेत् ॥ ७९ ॥
 ॥ अथ धर्म शास्त्र पुराणा रमः ॥ हस्तादि पंचके पुष्ये रेवती हितये मृगे ॥ अथ त्रये शुभा रंभो ध-
 र्म शास्त्र पुराणयोः ॥ ८० ॥ अथ वैद्य विद्या गारुही विद्या रमः ॥ हस्त त्रये ऽनु राधायां पुनर्भे श्रव-
 ण त्रये ॥ मूले चैवाश्विनी पुष्ये ज्येष्ठा ज्ञेवा र्क्षे मृगे ॥ ८१ ॥ अथ जैन विद्या रमः ॥ श्रुति-
 त्रये मघा पूर्वा नुराधा रेवती त्रये ॥ पुनर्भे स्वातिभे सूर्ये शुक्रे जैना गमं पठेत् ॥ ८२ ॥ अथ
 लिंगां च्छेदन मुहूर्तम् ॥ नराश्व वृष भा सीनां लिंगां च्छेदनं स्मृतम् ॥ अर्का रे ज्योत्य पुष्या की
 स्वती तु श्रुति वासवैः ॥ ८३ ॥ लिंगां च्छेदो नरस्या र्क्ष वर्गे ऋक्ता ह्य मार्का यमहीन घन्ते ॥

शरित्या कौं पील पुष्या कं दक्षं श्रोत्रे नु अविद्या प्रदिष्टा ॥ ८४ ॥ अथ नष्ट तारीयः ॥ दृढतया तपे
 वा रुसी विश्व संख्या तया द्वा दशो ऽथ त्रयो विंशतिश्च ॥ तथैवाष्ट विंशतरो या निषिद्धा स-
 द्या व नै रक्षाल विद्धिः प्रदिष्टा ॥ ८५ ॥ अथ पात्सी विद्यारंभः ॥ ज्येष्ठा ज्येष्ठा मया पूर्वा रेव-
 ती भरणी द्युये ॥ विशाखा र्ज्जेत्तरा बाहा शत भे पाप वासीरे ॥ ८६ ॥ लग्ने स्थिरे च चन्द्रे-
 च दारली नारंवी पठेत् ॥ अथ लिप्यारंभः ॥ शुभे तिथौ शुभे वारे रेवती युगले तथा ॥ ८७ ॥
 अवरो चानुराधायां तथै वा द्वा र्दिसु त्रिषु ॥ हस्तादि नितये कुर्ष्या स्त्रिखनारंभनं सुधीः ॥
 ८८ ॥ अथ रत्न परीक्षा ॥ पुन र्भे शत हस्त र्क्षेत्रे श्रवे ज्येष्ठे परीक्षणम् ॥ रत्नानां मलमी भूतं हित्वा
 भौमं ग्रहै र्प्रचरम् ॥ ८९ ॥ अथ शिल्प कर्म्म रंभः ॥ हस्त त्रये श्रवात् ज्येष्ठं श्रुतरे रोहिणी मृ-
 ने ॥ रेवत्या मश्विनी पुष्ये पुनर्वसु नुराधयोः ॥ ९० ॥ शक्ते विधौ शुभे वारे शिल्प विद्यां स-
 माचरेत् ॥ अथ राज दर्शनम् ॥ श्रुतरे श्रवणं हृष्टे मृगे पुष्या नुराधयोः ॥ ९१ ॥ रोहिण्या रेव-
 ती युगमे चित्रा हस्ते शुभे हनि ॥ बलि न्यर्के ऽर्क वारे ऽपि राज दर्शन मी सितम् ॥ ९२ ॥ अथ-

राजसेवा ॥ हस्तद्वयेऽनुराधायोरैवतीशुगलेखगे ॥ पुष्ये बुधे गुरोः शुक्रे सानिधौ रविवासरे ॥
 ८३ ॥ योनि रश्मिप्रयोर्भेज्यां स्वाग्नीसेव्योऽनुजीविभिः ॥ अथ दास दासीसंग्रहः ॥ उत्तरासु-
 चरोहिण्यां दास दास्यादि संग्रहः ॥ ८४ ॥ अथ क्षत्रचामरसिंहा सनादि कृत्यम् ॥ चामर क्षत्र
 दोलादिदीर्घसिंहा सनादिकम् ॥ पट्टाभिषेकके सर्वे विदध्याच्छो भने हनि ॥ ८५ ॥
 अथ शुद्धकृत्यम् ॥ मृदु भव छिन्नचरेषु भेषु योनि प्रशस्ते शनि चंद्रवर्ज्ये ॥ वारिथ्यौ पू-
 र्णजयाक्लयेचमुद्रा प्रतिष्ठा शुभदानरणम् ॥ ८६ ॥ गुर्वस्तेवा शितास्तेवा मुद्राणां
 यद्दने क्वचित् ॥ क्रूरग्रहक्षीप्रालग्नेन कार्थ्यं भूतिमिहता ॥ ८७ ॥ अथाश्वारोहणम् गजा-
 नां च ॥ पुष्यश्रविष्ठाश्विनिसौम्यभेषु पौष्णानला वित्यकराक्लयेषु ॥ सवारुणा क्षीेषु बुध-
 स्मृतानि सवारिण कार्थ्याणि तुरंगमानाम् ॥ ८८ ॥ अथाश्वारोहणे चक्रम् ॥ अश्वकारं लि-
 खेच्चक्रं साभिजिज्ञानि विन्यसेत् ॥ स्कंधेतु सूर्यं भात्यं च पृथे च दश भाति च ॥ ८९ ॥ पु-
 ष्ये द्वे स्या पयेत्राज्ञश्चतुः पादे चतुष्टयम् ॥ उदरे विन्यसेत्यं च मुखे द्वे तुरगस्य च ॥ ९० ॥

सं. ॥ अर्थलाभो मुखे सस्यक् वाजी नश्यति चोदरे ॥ १ ॥ स्वेरणे भंगः पुच्छे पत्नी विनश्य-
 ति ॥ २ ॥ अर्थसिद्धिर्भवेत्यष्टे स्तूपे स्तूपं पतिर्भवेत् ॥ ३ ॥ अथ गज कृत्यम् ॥ हस्तात्रये सौम्य ह-
 रित्रये च पौस्त द्वये पुष्य पुनर्वसौ च ॥ मीने च सर्वाण्यपि कुंजरानां कर्माणि प्रसूतान्यस्मि-
 लानि यानि ॥ ४ ॥ अथ प्रविकारे हण कृत्यं च ॥ उत्तरे रेवती युगे त्रिभे हस्ता त्रिभे प्रवात् ॥ पु-
 नर्वसो स्तथा पुष्ये ॥ नुरधा त्रितये मृगे ॥ ५ ॥ रोहिण्यां शिवि कायास्तु सस्रग्ने घट्टने शुभम्
 ॥ शुभत्रारे शुभे लग्ने शुभांशे शोभने दिने ॥ ६ ॥ अंकुशां करणं योग्यं ग्रने लग्ने ग्रने
 दिने ॥ अथ पल्याण निम्माणम् ॥ अवरो प्रतमे हस्ते पुष्ये मूले मृगे ॥ शिवसे ॥ पुनर्वसो गजा
 श्वो ह् पल्याण करणं शुभम् ॥ ७ ॥ वर्जयित्वा कुजे नरुक्ता मध्व काथ्यं शुभा वहम् ॥
 अथाश्वस्य विशेष कृत्यम् ॥ चोलीके खुर कृत्यादि शिक्ता विद्योक्त भादिषु ग्रास घत्सादिकं त्वन्य
 शनोक्तं क्षीं गज वाजिनाम् ॥ ८ ॥ अथ ख कृत्यम् ॥ पुष्यो पुनर्वसू ज्येष्ठा नुरधा रेवती द्वये ॥
 अवराणादि त्रिभे हस्त त्रितये रोहिणी मृगे ॥ ९ ॥ सार्धं सौम्य दिने सौम्य विलगने ख कर्मसत्

॥ अथ संधिः प्राच्युत्तमः ॥ लघुरथा मया पुण्ये तिष्ठ्य ईतैतिला मिधे ॥ लगने शृद्धिर्गोऽष्टम्यां
 द्वादश्यां संधि रिख्यते ॥ ८ ॥ अथ मया रंभः ॥ मूलाद्वा शत भेज्ये स्या पूर्वा रंभेया मघा सुन्व
 ॥ भरण्यां कूर्वा च मघ कर्मे रितं बुधैः ॥ ९ ॥ अथ मादक वस्तु भक्षणम् ॥ आर्द्रा रंभेयाम
 घा पूर्वा ज्येष्ठा मूल शता मिधे ॥ भरण्यां सुदिने मंदे त्व प्रतीचान्मादकं मधु ॥ १० ॥ अथ न-
 वांग नो भोगः ॥ प्रथमाभिगम प्रणस्ता नव वध्या शुभे हनि ॥ गर्भाधानोक्त नक्षत्रे शस्ते
 ज्योत्स्ना करे निधि ॥ ११ ॥ अथ गीतं चत्वारंभः ॥ रेवत्या मनु राधाया धनिष्ठा हितये करे ॥
 रोहिणी युगले पुण्ये व्युत्तरे गीत नर्तनम् ॥ १२ ॥ अथ नट क्रिया ॥ मृगा दर्शो हिणी पुण्ये पुन
 र्भे अवंरा त्रये ॥ चित्रा त्रयोत्तर मूले कृत्यं सन्तत्य जीविनाम् ॥ १३ ॥ अथ वृक्ष लतादि रोप-
 णम् ॥ हस्त चित्रोत्तर मूलेऽनु राधा रेवती ह्ये ॥ विशाल्वारोहिणी पुण्ये व्यारा मो सि मंगे-
 श्वरान् ॥ १४ ॥ सूर्य भादिन पर्यंतं राम रामाक्षि युगमभं ॥ एम भूवाण षट् युगम चक्रे पाद
 परे परो ॥ १५ ॥ अंत च्छुभ मस हानि शुभं दुःखं रिपो भयं ॥ शुभं सौख्यं क्रमात् ज्ञेयं

फल मुक्तं विचक्षणेः ॥ १६ ॥ तिथि वार समा युक्तं सूर्य्य भादिन मं युतम् ॥ नवभिश्च हरे
 द्भागं श्रेयां केन फलं दिशेत् ॥ १७ ॥ एकै श्रेरे चतुः केच त केच फल मादिशेत् ॥ व-
 सो यष्ट ह्ये लाभं सप्त मे नव मे मृतिः ॥ १८ ॥ अथ नौका घट्टनम् ॥ अश्विकरेज्य सुधानिधि पू-
 र्वाभिन् धना न्युत मे शुभ लग्ने ॥ ताक योग तिथीन्नु विशुद्धौ नो गमनं शुभ दं शुभ वारे ॥
 १९ ॥ अथ सामान्यतः पशु कृत्यं रक्षा च ॥ त्यक्ता खट्वी समा रिक्ता रोहिणी सुत्तग त्रयम् ॥ चित्रा-
 ख्यं श्रवणं भौमं पशूनां सर्व कर्म च ॥ २० ॥ प्रवेशा निर्गमौ चापि न त्याज्यं निजयो निभम-
 ॥ पूर्वा त्रये धनि देन्द्र पौले सौम्य विप्रा बयोः ॥ अश्लेया या मथा श्विन्या यात्रा सिद्धि श्व-
 तुः पदम् ॥ २१ ॥ अथ चरही चक्रम् ॥ व्यानं विल्लीतं संगुणं प्रभुना साक्षरै र्युतम् ॥ अष्ट
 भिस्तु हरे र्द्भागं श्रेयां के फल मादि शेत् ॥ २२ ॥ पशुरोर्हानिः पशुरो र्नाशः पशु लाभः पशु
 क्षयः ॥ पशु रोगः पशुरो र्हीद्विः पशु भेदः पशुरो र्बहु ॥ २३ ॥ अथोष्ट महियादि कृत्यम् ॥ धनिष्ठा हि
 नये पूर्वा यादा तिर्य्यङ्मुखो दुष्टु ॥ अजा वि महि धौष्टा राणं कृत्यं चाश्व तरी शुभा ॥ २४ ॥

॥ अथ द्वाचारिकृत्यम् ॥ ज्येष्ठा स्वात्य शिवनी पुष्ये पुनर्भे रोहिणी करे ॥ उत्तरा सुशुभं कृत्यं शं-
 गिणां चन चारिणाम् ॥ २५ ॥ अथ पक्षीकृत्यम् ॥ शुभा हे सुरवौ तिथ्यं ह्यनुखे चोर्द्ध मुखे च भे-
 ॥ सारिका शुक्र मुख्यानां पक्षिणां कृत्य सुत्तमम् ॥ २६ ॥ अथ सर्ववस्तुविक्रयः ॥ विधाखा क-
 निका प्लेया भरणी पूर्विका त्रयम् ॥ विक्रयः सतिथा वैशु कर्त्तव्यो न क्रय प्रशुभः ॥ २७ ॥
 अथ गृह क्षेत्र मूल्यादीनां क्रय विक्रयौ ॥ जीवे शुक्ले च नन्दरासु पूर्णिमां मूलभे मृगे ॥ पूर्वा प्लेया मयां
 त्येच विशाखा द्वितये तथा ॥ २८ ॥ पुनर्भे मुनिभिः प्रोक्तं क्रयं विक्रयणं सुवः ॥ अथ वाणिज्य
 म् ॥ अनुराधोत्तरा पुष्ये रेवती रोहिणी मृगे ॥ हस्त चित्राश्वभे कुर्व्यां ह्यगणित्यं द्विसे शुभे-
 ॥ २९ ॥ अथ निधिद्वयादि वृद्धि संग्रहे ॥ पुष्ये मृगे ॥ नुराधायां श्रवणा त्रितये शिवभे ॥ पुनर्भे ॥ न्ये-
 विशाखायां निधे र्द्वि प्रच संग्रहः ॥ ३० ॥ अथ द्रव्यादीनां गुप्त स्थाने स्थापनम् ॥ धनिष्टोका वि-
 शाखाख्ये पूर्वा पादाभिधे त्यभे ॥ रोहिण्यां च निधे भूसौ स्थापनं शुभ मीरितम् ॥ ३१ ॥
 अथ द्रव्यप्रयोगः ॥ श्रवणादि त्रिभे चित्रा चतुर्वे रेवती द्वये ॥ पुनर्वसौ मृगे पुष्ये शुभो द्रव्यप्र-

योगकः ॥ ३२ ॥ संक्रांतौ वृद्धि योगे तु हस्त क्षैरवि भौमयोः ॥ नच ग्राहं ऋणं यस्मात्तद्वृणे
 सुस्थिरं भवेत् ॥ ३३ ॥ ऋणं भौमे न गृह्णीयान्न देयं बुधवासरे ॥ ऋणच्छेदं कुजे कुर्व्यत्सिं-
 चयं सोमनर्त्तने ॥ ३४ ॥ अथ धान्यविक्रयः ॥ रोहिण्या सत्क्रयोंऽन्त्यधनिष्ठा सत भोत्तरे ॥ अ-
 यस्स संग्रहः ॥ रससग्रहणं श्रेष्ठं तोरारंभो वित्तोद्भु ॥ ३५ ॥ अथ वृद्धार्थं धान्यप्रयोगः ॥ विप्राख-
 रोहिणी ज्येष्ठा पुनर्भौश्च शतत्रये ॥ न्युत्तरे स्त्वानि पुष्ये तु धान्य वृद्धिं प्रप्नु भेरिता ॥ ३६ ॥
 अथ गृहहस्तादनम् ॥ हस्तत्रये धातुयुगे सराधा घृत्नादियोगे गृह गोपनं च ॥ नवं परित्यज्य कु-
 ह्मं च ऋक्तांभौ मार्कजादित्य दिनाष्टच निष्ठाः ३७ अथ हल प्रवाहः ॥ रवौ रोद्रादि पादस्थे सूमौ संजा-
 यते रजः ॥ तस्माद्द्विनंत्रयं तत्र बीजवापनं कारयेत् ॥ ३८ ऋक्ताष्टमी विष्टि युनष्ट चंद्रे क्षीणे नु-
 रागर्कज वासरे शु ॥ दिन क्षये वानिग्नि संध्ययोर्वीरुता कक्षीपूर्वं धनानि हंति ॥ ३९ ॥ पुन
 र्वसूहये मूले न्युत्तरे रोहिणी द्वये ॥ हस्तत्रयेऽनुगधायां रेवत्यां श्रवणा त्रये ॥ ४० ॥ तिथौ
 वारे शुभेऽश्विन्यां हल प्रवहणं शुभम् ॥ अथ हलचक्रम् ॥ त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिः पंच त्रि-

भिः पंच त्रिभिर्द्वयम् ॥ सूर्यभादिनभंया वद्धनि दृष्टी हले क्रमात् ॥ ४१ ॥ अथ वीजोद्भिः ॥
 हस्ताभिः पुष्योत्तर रोहिणी शु चित्रा नुराधा मृगशिरा ॥ स्वाती धनिष्ठा च मघा च मूलं वी-
 जोत्ति रुक्मिणी फल्गु आर्द्रा ॥ ४२ ॥ शुभे वारे तिथौ श्रेष्ठा वीजोत्ति स्त्वथ राहु भात ॥ अथा-
 ग्नीसुत्रयंचैकत्रयेऽनुत्रिचतुष्टयम् ॥ ४३ ॥ असुभंच शुभं ज्ञेयं दिन क्षी फलि चक्रमे ॥
 अथ रास्या रोपणम् ॥ हस्त त्रयोत्तर मूले धनिष्ठा रोहिणी मृगो ॥ पुष्ये मृगोऽनुराधो त्येऽम-
 घा यो शुभ वासरे ॥ ४४ ॥ त्यक्ता ऋक्तांशानि भौमं रास्य स्यां कुर रोपणम् ॥ अथ रास्यादे-
 अथ धान्यच्छिदा ॥ पूर्वोत्तर मघा प्लेबा ज्येष्ठा द्वा प्रचरा द्ये ॥ भरणी द्वितये मूले मृगो पुष्ये
 कर त्रये ॥ ४५ ॥ धान्य क्षिदा शुभा ऋक्तां हित्वा भौम राशे प्रचरो ॥ अथ कणमर्दनम् ॥ अनु-
 राधा अवे मूले रेवत्यां च मृगो त्रिभिः ॥ ज्येष्ठायां चैव रोहिण्यां शुभं स्यात्कणमर्दनम् ॥ ४६ ॥
 अथ धान्यानयनं फलपुष्पोत्तारणं च ॥ रोपणोदित नक्षत्रे वासरे आर्द्रे कृषेः ॥ अन्नस्या-
 नयनं पुष्प फला द्युत्तारणं च सत् ॥ ४७ ॥ अथान्नादिपाकक्रिया ॥ मूलं चित्रा नुराधा सुविश ॥

सि खा कृत्तिका मृगे ॥ उत्तर रोहिणी ज्येष्ठा रेवती यु पचि क्रिया ॥ ४८ ॥ सत्यत्तां बुधं रं लग्नं
 पक्षं रं तिथिं शुभम् ॥ अथ नवान्न प्राशनम् ॥ हस्त चित्रा नुराधां त्रे रोहिणी अक्षरा ह्ये
 ॥ नृगाश्च न्युत्तरा संहं शुभे वारे तिथा वपि ॥ ४९ ॥ नवान्नस्य विधानं च प्राशनं फ-
 लमूनयोः ॥ अथ नवान्न चक्रम् ॥ बुधार्थं तुत्र ५ पुत्र ५ वेद ५ युगे ५ सु १ क-
 म् ॥ सच्छुभं शुभमर्घं शुभं व्यर्थं शुभं क्रमात् ॥ ५० ॥ विना मं हं विष घं टी न्नधुपौ-
 यार्कं भूमि जान् ॥ अथ कोष्ठादे धान्य स्थितिः ॥ पुनर्भैरव गृहीर्धेऽत्येऽनुराधा अक्षरा त्रये ॥
 हस्त त्रयेऽश्विनी पुष्ये रोहिण्या सुत्तरा त्रये ॥ ५१ ॥ गुरौ शुक्र रेवी दो ससत्कोष्ठा दो धान्य र-
 क्षणम् ॥ सूर्ये आदति वेदेषु वसु वेदगिरि न शुक्रमात् ॥ शुभा शुभं क्रमाद्भूयं कोष्ठा दो
 धान्य रक्षते ॥ ५२ ॥ गजवीज संग्रहः ॥ हस्त न्वये पुनर्वसुः रोहिण्या अक्षरा ह्ये ॥ स्थिरे लग्ने
 शुभे वारे विचं दे वीज संग्रहः ॥ ५३ ॥ गजवज्र रज्जु गिर्धन्य वंधनम् ॥ स्वातो मूलं च हस्तं त्वेभा-
 दा पाद न्वये घने ॥ रोहिण्यां कुम्भ नीलां तर्जुन्य सं रक्षणं शुभम् ॥ ५४ ॥ अथोत्तल सुप्तल चक्रम्

॥ भूदिगधिदिगक्षीणि शने भौहिनभंक्रमात् ॥ अशुभं च शुभं क्षेयं क्रमादूयलमूयले ॥
 ५५ ॥ अथ चूर्णभर्दिनचक्रम् ॥ शने भौहिनयुगा ४ अथ ४४ ८ राम ३ वेद ४ त्रिभं क्रमात् ॥ अस्
 च्चुभं क्रमाच्चक्रे चक्रि कारत्वे मनो हरे ॥ ५६ ॥ अथ सूर्यचक्रम् ॥ सूर्यभात्यं च ५ त्र्य ३ द्या ८
 धि ४ सुनि ७ भेषु शुभाशुभम् ॥ क्रमात्सूर्याभिधे चक्रे विज्ञेयं को विदेः सदा ॥ ५७ ॥ अथ
 चुह्नीचक्रम् ॥ सूर्ययादंग ४ वेदा ४४ ८ राम ३ शत्रु ६ शुभाशुभम् ॥ चुह्नी चक्रे क्रमात्
 क्षेयं शुभाशुभं विचक्षतेः ॥ ५८ ॥ अथ मार्जनीचक्रम् ॥ सूर्यभाज्यम ३ रामो ३ ग ६ राम ३
 तर्को ६ ग ६ नैशुच ॥ असत् शुभं क्रमात् क्षेयं मार्जनी संज्ञके शुभे ॥ ५९ ॥ हरिस्थयनि
 आदि ति नैत्र पुष्ये शुगे रोहि वस्त्रे धिरिके च भौमे ॥ त्यजे त्वं भमीने ५ प्यलो लग्नगेहे
 पवित्रं वृद्धत्ये रवे र्य्या मलानि ॥ ६० ॥ अथ गोमयपिण्डचक्रम् ॥ सूर्यक्षीद्रे समैरथ स्थलग
 तैः पाको रसैः संयुतः शोच्ये शुद्ध भित्तैः दावस्य वहनं मध्ये शुगे स्तार्पणीः ॥ प्रागाणा दि
 शुवेदभैः त्वत्तु हृदं स्यात्संग शीरोरगभीः छाया देः करणे शुभं च गदितं काष्ठादि संस्था

पने ॥ ६१ ॥ सूर्यभाद्र सतर्का द्द्वि ४ नाग ८ वेदा ४ भिजित्तह ॥ शुभा शुभं क्रमात्
 त्रैयं करीपादिषु संग्रहे ॥ ६२ ॥ अथ दीप चक्रम् ॥ सूर्यभाद्युगम २ वत्स ८ द्वि ४ दिक् १० त्रि-
 कं ३ चा शुभं शुभम् ॥ दीप चक्रे क्रमात् द्वैयं फलं योग विच क्षयोः ॥ ६३ ॥ त्यक्ता
 ऋक्तां रविं भौमं लग्नं च घट मी न कम् ॥ अथ कलश चक्रम् ॥ सूर्य भात्यं च ५ रमा ३ द्वि
 ७ वसु ८ पंच ५ शुभा शुभम् ॥ फलं क्रमाद् द्वैयं चक्रे कलश संज्ञके ॥ ६४ ॥ अथ कांश्य पा
 त्रं धार्या वि चक्रम् ॥ चरमदुलघु भे सत्त्वान के चैत्र पौषे स्थिति जर विजनं दः ५ पेय नाडी वि
 हाय ॥ प्रति समन वजातो ५ न्नस्य श्रत्या शन सत् भ्रव गण सहितै स्तेः कांश्य पानादि
 भोज्यम् ॥ ६५ ॥ सुखे श्रीणि ३ श्रोकं रसा ६ कंठ पुष्टिः त्रयो ३ रोग कुक्षे धनं रम
 वामे ॥ त्रये ३ एष व्याधिः सुखं रम ३ मध्ये रसे ६ हानि भार्का द्यदा सुंजि पानम् ॥ ६६
 ॥ अथ रंहं कादि सुहृत्तम् ॥ अदिति सि प्रमृदु भ्रव संज्ञके भृगु जवा क्यति पूर्ण जया तिथौ ॥
 शकट नाव सुखासन शिल्पकं भ्रमर कार्य रंहं कसिद्धिदम् ॥ ६७ ॥ अथ कोल्ह चक्रम्

॥ जंत्र काष्ठ समुद्भवं सुललितं भान्वृक्षतः पंच भंमूले मूल विदारणं च सरभंमध्ये स्थि-
तन्द्रव्यदम् ॥ लिंगे पंच निहन्ति तैल गुड को दंते ह्वयं त्वामि हृत् पंचे पंच भयं रियो प्रचर स-
भं सौरव्य प्रदं कर्त्तरी ॥ ६८ ॥ सूर्य भातपंच पंचेयु राम युग्म शर त्रिकम् ॥ नष्ट च्छुभमस्र
अथ कोल्ह चक्रम् ॥ साभिन् दुःखं लेशं शुभमतीऽशुभम् ॥ ६९ ॥ कोल्ह चक्रे साभिजिते

५	५	३	२	५	३
५	५	५	५	५	५

ज्ञेय मेवं विचक्षणोः ॥ अथ धर्मक्रिया ॥ रेवती द्वितये हस्त त्रित-
ये रोहिणी द्वये ॥ अवत्रयोत्तरा पुथ्ये पुनर्वसु चतुर्धयोः ॥ ७० ॥
ज्ञेय शुक्ले नुसूर्ये युद्धे र्ग शालिनि ॥ लग्ने जीव युते जीवे वलिष्ठे धर्म माचरेत्
॥ ७१ ॥ अथ प्रगतिकं पौष्टिकं कर्म ॥ पुनर्वसू ह्ये स्वाती व्युत्तरे प्रवरा त्रये ॥ रेवती द्वितये रु-
स्तेऽनु रा रोहिणी मघे ॥ ७२ ॥ प्रगतिकं पौष्टिकं कर्म पुराया हे कीर्त्ति तं बुधैः ॥ अथ होमादे
खेदाहुति फलम् ॥ रेवौ बुधे शुभो मंदे चंद्रे भीमे गुराव गो ॥ केतो च सूर्य भात द्वा द्वयं प्रत्येकं
भक्त्यं क्रमात् ॥ ७३ ॥ होमाहुतिः खले नेष्टा शुभदा शुभरवे चरे ॥ अथ होमादे चन्दिना

सफलम् ॥ तिथि वार युति स्तौ का वेद भक्ताव शेषका ॥ निवाहोऽग्ने ज्योतिर ह्ये १ क्वि प्राह्ववि
 नाशदः ॥ ७४ ॥ पाताले द्विकशेपे राधन संचय नाशान्नः ॥ गुरा वेदा च श्रे देवा भुजो वि-
 पुल सोरव्यदः ॥ ७५ ॥ संस्कारे यु विद्यारोऽस्य न काय्यो नापि वेत्तवे ॥ नित्य नैमित्तिके का-
 र्येन चाब्दे मुनिभिः स्मृतः ॥ ७६ ॥ अर्क प्रचक्षादष्ट मेक्षा च वृथै मन्द श्शुक्रा दष्ट मेऽ
 गारकश्च ॥ राहुर्धर्म जीवतः रेवट सुहो हेमो नाशः शुक्र दारा धना नाम् ॥ अथ मंत्र दीक्षा ॥
 रोहिण्यां अचूतरे मों जीवं धनो दित भांदिषु ॥ मंत्र दीक्षा शुभे चान्दि ग्रहरोऽव्या गनो दित
 ॥ ७८ ॥ अथ मंत्र यंत्रोपाशनादि ॥ ऊष्मा हस्ता श्विनी कर्ण विशाखा मृग भेहनि ॥ शुभे सू-
 र्य्य युते प्रातं मंत्र यंत्र व्रता दिकम् ॥ ७९ ॥ अथ वीर साधनम् ॥ सघाट्टी भरणी मूले मृगेशं
 सै बुधे घटे ॥ सुखे सुक्तेऽदने शुद्धे सिद्धिर्वीरभि चार्योः ॥ ८० ॥ अथौषध करणं तत्सेवनं-
 च ॥ हस्त त्रयेऽनु राधायां मूले पुष्ये प्रव त्रये ॥ मृग भे रेवती युगमे पुनर्व सौर्वि जन्म मे
 ॥ ८१ ॥ क्षीस्तु सुक्तेज्य सूर्य्यां रां वासरे सति घावपि ॥ हिंस्तु भावे शुभे लगने शुद्धे घृनि

नृति व्यपे ॥ ८२ ॥ भैषज्यं शुभदं प्रोक्तं योगे च पुण्यं दायिनि ॥ अथ सोत्पादनम् ॥ विष्णुत्वा-
 कृत्तिका मूले धनिष्ठा अश्वि करे सुगे ॥ ज्येष्ठायां भाद्रमे सोम्ये वासरे यु रस क्रिया ॥ ८३ ॥
 अथ रस सेवनम् ॥ हस्त त्रयेऽश्विनी पुष्येऽनुराधां त्ये श्रुति त्रये ॥ पुनर्भे मृग शीर्षेऽर्क भौमे
 ज्ये रस भक्षणम् ॥ ८४ ॥ अथ वात रोगाद्दे तैलोप सेवनम् ॥ हित्वा श्लेया मघा मूले विष्णु-
 भरणी हयम् ॥ मंदे ज्ञे ज्ञे स्थिति स्तेले तृतीयादि त्रिके तिष्ठौ ॥ ८५ ॥ अथ रक्त विमोक्षणा विरे-
 क वसनौ ॥ हस्त त्रयेऽश्विनी पुष्ये शत भे रोहिणी ह्ये ॥ अवलो चानुराधायां ज्येष्ठायां र-
 क्त मोक्षणम् ॥ ८६ ॥ गुरु भौमा र्क वारिषु कार्यं शुभ तिष्ठौ तथा ॥ विरेको वसनं शुक्रे च
 दे चैवोक्त भाविषु ॥ ८७ ॥ अथ तम्र लोह राहः ॥ शत चित्रा अश्विनी मूले विष्णुत्वा कृत्ति-
 कार्द्रुमे ॥ ज्येष्ठा श्लेया कुजेऽर्केऽग क्रूरे लोहाग्नि भैषज्यम् ॥ ८८ ॥ अथ रोगोत्थो नक्ष-
 त्र वशा त्कथं दिन संख्या ॥ अश्विनी कृत्तिका मूले ज्वरार्त्तो नव वासरः ॥ रोहिण्या मुत्तराभा-
 दे पुनर्वसो अश्व पुष्य भे ॥ ८९ ॥ ऊषायां वासरः सप्त मघायां विंशति स्तथा ॥ शत भं

भगवती चित्रा ग्रन्थे चैकादश स्मृताः ॥ ८० ॥ धुनिद्यायां विष्णोस्त्वाङ्गो हस्त मप्यङ्ग ॥ ८१ ॥
 ॥ मासं मृगोचरायादि कृत्वा दंत्यानुराधयोः ॥ ८२ ॥ श्रीहस्तमुक्तादि ते रुक्ते स्तुखी हस्त
 चतुर्नंतरम् ॥ अथ रेगोक्तो नैष्ठ फलम् ॥ पूर्वात्रयं तथा ज्येष्ठा ज्येष्ठाङ्गं स्थिति भेदवि ॥
 रोगोत्पत्ति भवेद्यस्य मरणा तस्य निश्चितम् ॥ ८३ ॥ अत्र श्रुतिः ॥ अक्षरं रूपं कनकेन
 यत्वा तस्मिन् मंत्रे प्रच सुगंध पुष्ट्यैः ॥ वस्त्रा धत्ते गुगुलुपुष्पाय नैवेद्यतो वूल फले प्रच स-
 म्यक् ॥ ८४ ॥ पूजां च कृत्वा मपचाशनाय द्विजाय दद्यादनुजं शीवाय ॥ अथ रेगोक्तो
 नैष्ठयोगः ॥ अक्षरं ज्येष्ठा मरणी नूले स्वाती पूर्वार्द्धे मे तथा ॥ प्रत मे पाप वारं च प्राप्ति पद्मद्वयो
 दिने ॥ ८५ ॥ चतुर्दश्या तथा कृत्वा पूर्णिमायां च रेतुयः ॥ सनरे मृत्यु माप्नोति स्वर्ग
 येनापि रक्षितः ॥ ८६ ॥ अत्र रेगोक्तं पुनर्द्वेदोपज्ञानं प्रश्न लगनात् ॥ मेधे तु भित् दोषस्यास्तु
 न्नाणोऽन्न विवर्तिता ॥ वये स्वदेवतोद्भूत दुःस्वप्नो नेत्र रुक्ज्वरः ॥ ८७ ॥ महा माया भवे
 दोषं दूरे चैवान्निज ज्वरः ॥ कर्कटे षण्किनी दोषो मीनं हास्यं च रेदनम् ॥ ८८ ॥ सिंह ज

लो प्रेत दोषो वै मनस्य हिमज्जरः ॥ कन्यायां खेटो दोषो व्यथा क्रोपोऽरुचिर्भवेत् ॥
 ५८ ॥ दुर्लाभो ध्वंशपालस्य दोषस्तन्ति पीडनम् ॥ नागदोषोऽलिर्भेदा हो देहऽस्मि
 न्बुद्धिनाशनम् ॥ दोषो धनृषि देहो त्यः श्रेयो को दब्धरुजा ज्वरः ॥ मर्करोर्नौदुका दोषो
 देवभंगो ज्वरोऽनिनः ॥ २०० ॥ मलिन प्रेत दोषश्च देह पीडा घटो भवेत् ॥ दोषो मीने-
 तु व्योमिन्याः ज्वरिधानस विभ्रतः ॥ १ ॥ तल्लगने तत्र चन्द्रे वा दोषं फलमुदाहृतम् ॥ ल-
 ग्नेऽष्टमे व्यये सूर्य्यं क्षेत्र पालस्य दूषणम् ॥ २ ॥ आकाश देव्या चन्द्रे तु लगने खलुऽष्ट-
 मे व्यये ॥ हाक्शे दशमे भौके प्राकिन्या दूषणं मद्रम् ॥ ३ ॥ वन देवी भवो दोषस्तप्तं मेहा-
 दशे बुधे ॥ पामित्रे हादशे जीवे देव दोषो निगद्यते ॥ ४ ॥ जले वास्तपमे शुक्रे दोषो वा-
 मेवतो द्वयः ॥ ग्राने एचरे व्यये चास्ते दोषस्त्यादात्य वातजः ॥ ५ ॥ वा मित्रे हादशे रा-
 हो बुगतिर्जाति दूषणम् ॥ व्यये धर्मे तृतीये च षष्ठे पाप ग्रहो यदा ॥ ६ ॥ हतोर्गरे ज-
 ले एतन्ने तस्य दोषः कुलोद्भवः ॥ ग्रहौ जले कुजे ग्रहौ स्वैव प्रजः ॥ ७ ॥ ग्रहो

च विकृतौ न योऽप्राति पूजा द्विजाच्चर्चनैः ॥ दशमस्ये बुधे मार्गदीपः प्रेत भवो गुरौ ॥ ८ ॥
 शुक्रे दीपस्तु देवोत्थः पापेन्दुः श्राकिनी भवः ॥ स्वर्गोत्रगोत्रजो दीपः परस्त्रे परोद्भवः
 ॥ ९ ॥ शत्रुक्षेत्रे शत्रुक्षेपो मित्रे स्वजन संभवः ॥ अथख्यादि वारे दीपः ॥ कुदृष्टि संभव
 स्सूर्ये पितृ दीपो निशा करे ॥ मंगले श्राकिनी दीपो व्योम देवी भवो बुधे ॥ १० ॥ गोत्र
 देवी भवो जीवे जल देव्यास्तु भार्गवे ॥ प्रेत पीडा शनौ सर्व श्रान्त्या श्रान्ति सुपेति तत् ॥
 ११ ॥ साध्या दीपः स्वदीपर्क्षे स्वेष्टे स्वीच वलान्विते ॥ असाध्या विवले नीचे स्थितं शत्रु
 गृहं गति ॥ १२ ॥ साध्या सीस्य गृहे दीया वलिभिः केंद्र संस्थितैः ॥ असाध्याः खेचरैः पापैः
 केन्द्रैर्गर्वल श्रालिभिः ॥ १३ ॥ यद्दीपः पूजनं तस्य कुर्यात्तद्दीप श्रान्तये ॥ जल देव्या जले
 व्योम देव्या व्योम्नि जलं त्यजेत् ॥ १४ ॥ श्राकिनी हाकिनी भूत दीप तच्चरणौ तथा ॥
 तदुद्देशेन हृद्दीप चत्वरं धारये हलिम् ॥ १५ ॥ गोत्र देव्युद्भवे दीपे कुल देवी प्रपूजयेत्
 ॥ पितृ दीपे तु कर्त्तव्यो नारायण वले विधिः ॥ १६ ॥ प्रेत प्राहुं त्रिपिंडाख्यं विस्त्रो स्तर्प-

रा मेव च ॥ अथ दोषद्वानायापरः क्रमः ॥ आत्मना मासुरं चैव दूत स्यैव तु रोगिणः ॥ एकी कृत्वा
 त्रिगुणितं नवभिर्भागा माहरेत् ॥ १७ ॥ शेषे षड्द्वे द्द ४ भू १ भूतः द्विके सप्त तथै प्रवरः
 ॥ अथ मे पितरश्चैव वारणां के ग्रहज्ञा भवेत् ॥ १८ ॥ अथ सर्पदंशे नेष्टम् ॥ विशगत्वा कृ-
 त्तिका मूले रैवत्या द्रो मया सुच ॥ ऋक्षे प्लेया मिधाने च सर्वदंष्ट्रो न जीवति ॥ १९ ॥ अ-
 थ रोग विमुक्त स्नानम् ॥ मघा पुनर्वसु स्वाती रोहिणी सूतत्रये ॥ अश्लेषायां च रेवत्या भार्ग-
 वे चंद्र वासरे ॥ २० ॥ नक्षत्राया द्रोग निर्मुक्तः शुभे चंद्रे तथैव च ॥ ऋक्षायां रवि भौमा
 किं वासरे चरलग्नौ ॥ २१ ॥ दुष्ट चंद्रे तथा विष्टां पाताद्ये दूषिते हनि ॥ रोग मुक्तो न
 रः स्नाया दानं कुर्याद्दिनं तरं ॥ २२ ॥ अथ रक्त मोक्षगं स्नानं च ॥ पुष्ट्ये हस्ते तथा श्विन्या
 अवरो रोहिणी द्वये ॥ चित्रा द्वयेऽनुराधा ख्ये ज्येष्ठायां गुरु वासरे ॥ २३ ॥ भौमेऽर्के रक्त
 मोक्षं स्यात् रोगयुक्ते स्नान मा चरेत् ॥ अथ रोग मुक्तस्य वह्निर्गमनम् ॥ सहारे गमनोक्तं धै सति-
 धौ शोभने दिने ॥ सहस्रगं रोग मुक्तस्य वह्निर्निगमनं शुभम् ॥ २४ ॥ अथ द्वाहलिकात्सव स्ना-

नृ॥ राजा पुरोषि स चंद्रे शोभन क्षे सुभे तिथौ ॥ होलिका नंतरं खाया द्विमंहरदिने प्रजा
 २५॥ अथ मलक्रिया ॥ ज्येष्ठा पूर्वा भरणी पूर्वा मूला श्लेषा मघा शिघ्रे ॥ जया शृणो सुसहार सांकीश्री
 षेदियेग के ॥ २६ ॥ सत्त्वैः केन्द्रं मे स्सार्कैः मल क्रीडा शुभा वह्ना ॥ अथ सर्प गृहणम् ॥ भ्राण्या
 र्शमघा श्लेषा पूर्वा ज्येष्ठा ख्य मूल के ॥ क्रूरे इन्हि केन्द्रं मेः पापैः हित्वा काल महि गृहः ॥ २७ ॥
 अथ नरायण मधुना दसनम् ॥ हलिका रोहिणी पुष्ये स्वाती हस्ते श्रव द्वये ॥ मृगे ऽर्के रवि युक्तं तं प्रस्त
 गो नर वाजिनाम् ॥ २८ ॥ अथ मेतुवंधः ॥ शुक्ल रा रोहिणी स्वाती मृगे ऽर्के मंगले गुरे ॥ सेतूनां वधन
 प्राप्तं सुभे लग्ने सुभे क्षिति ॥ २९ ॥ अथ नवरा कृत्यम् ॥ लवणा रभ कृत्य तु भरणी रोहिणी श्रवे ॥ शने
 चीरे दिवा श्रेष्ठो जन्म राशे क्षने वर्त्ते ॥ ३० ॥ अथ जिन चार्वा ना खंड क्रिया ॥ जया श्रिनी मृगे स्वाती पुनर्भे
 प्रवरात्रये ॥ जया शृणो सुषु के ऽजे वभे हनि चरो द्वये ॥ ३१ ॥ नाचकि जिन पाखंड मण्डली करण शु-
 भम् ॥ अथ शैल धन ट कृत्यम् ॥ चित्रा मृगे रोहिणी पुष्ये शुक्ले श्रवरात्रये ॥ शुभा हे ऽर्के च शैल धन ट कृ-
 त्यं समीरितम् ॥ ३२ ॥ अथ तैलिकं यंत्र कृत्यम् ॥ धनिष्ठा श्रिकर चित्रा शुक्राधा पुष्य भे तथा ॥ ज्येष्ठाया च

पुनर्वसो रेवत्या शुभवासे ॥ ३३ ॥ तैल यंत्रक्रिया शस्ता हित्वा ऋक्ता कुजावा ॥ ३३ ॥
 भकारकृत्यम् ॥ पुनर्वसूद्वये हस्तत्रयेत्येरोहिणी मृगे ॥ ३४ ॥ अनुराधा अवीज्येष्टा संसृज्य
 सोम्य वासे ॥ तदा च रोदने प्रोक्ता कुंभ कार क्रिया बुधैः ॥ ३५ ॥ अथ काष्ठाश्लेषकृत्यम् ॥
 हस्त षट्के ऽश्विनी पुष्ये रेवत्या अनुरात्रये ॥ पुनर्भरोहिणी युग्मे सूत्र धारि क्रियोत्तमा ॥ ३६ ॥
 ॥ अथ खर्गकारकृत्यम् ॥ अथत्रये ऽश्विनी पुष्ये मूले हस्त चतुष्टये ॥ कान्तिकायां पुनर्वसोः शु
 भे लने तिया वषि ॥ ३७ ॥ हेम कार क्रिया शस्ता हित्वा बुध शने श्रुते ॥ अथ चर्मकारकृत्यम्
 ॥ शुक्रार्द्ध शनि वारेषु चर्म कार क्रिया शुभा ॥ यसु पूर्वोद्दिदे वाग्नि योक्ता केन्दव वासे
 ॥ ३८ ॥ अथ लोहा प्रममणानां कृत्यानि ॥ स्वानोज्येष्टा दूये मूले चिन्नाद्वा भरणी त्रये ॥ मणि लो
 हा प्रसनां कृत्यं पापं चान्निह स्थि रोदये ॥ ३९ ॥ अथ नापितक्रियां ॥ ज्येष्टा हस्त त्रये करान्नि
 तये ऽश्वि मृगे ऽन्यभे ॥ पुनर्वसूद्वये हित्वा ऋक्ता षष्ठ्यदमी तिथिः ॥ ४० ॥ सशरेना
 पितानां चक्षुरादि सकला क्रिया ॥ अथाभीरंजन कृत्यम् ॥ क्षिणखायां पुनर्भे ऽन्ये ज्येष्टा

हस्ताश्विनी मृगे ॥ पूषा कर्ण त्रये मुख्ये ज्ञेऽर्के ऽजे बलवत्क्रिया ॥ ४१ ॥ अथ चौरक-
 त्यम् ॥ विशारवा कृत्तिका पूर्वा मृलाद्भौमणी मघे ॥ अश्लेषा ज्येष्ठयो मंद भौमयो प्रशकु-
 ने बले ॥ ४२ ॥ लग्ने वा दृशसे भौमसे चौर्यं सद्रव्यलब्धये ॥ अथ ग्रेतसाहः ॥ अत्यक्षा शव
 संस्कारे दिनं नैव विशेषयेत् ॥ अश्लेषा विनिवृत्तौ चेत्युनः संस्क्रियते मृतः ॥ ४३ ॥ सं-
 शोध्यै वदिनं ग्राह्यं मूर्द्धं संवत्सराद्यदि ॥ ग्रेत काय्यीरिण कुर्वीत श्रेष्ठं तत्रोत्तरायणम् ॥
 ४४ ॥ कृत्स्नपक्षश्च तत्रापि वर्जयेत्तु दिनत्रयम् ॥ चतुर्थाष्टमगे चंद्रे द्वादशे च विवर्ज-
 येत् ॥ ४५ ॥ ग्रेत कृत्यं व्यतीपाते वै धृतौ परिधिं तथा ॥ कर्णेण विष्टिं संज्ञे च ग्रहे प्रचरदि-
 ने तथा ॥ ४६ ॥ अयोदश्या विशेषेण जन्म तारा त्रये तथा ॥ जन्मदशे कोन विंशतिज-
 न्न तारा त्रयन्त्वित् ॥ ४७ ॥ नक्षत्रे तु न कुर्वीत यस्मिन् जातो भवेन्नरः ॥ न प्रोष्ठपद-
 योः कार्यं तथा ग्नेये च भारत ॥ ४८ ॥ दारुणेषु च सर्वेषु प्रत्यारं च विवर्जयेत् ॥
 भरणीयाद्भौमया श्लेषा मूलं त्रिचरणानीच ॥ ४९ ॥ ग्रेत कृत्येषु दुष्टानि धनिषाद्यं च पंचकं

म् ॥ फाल्गुणी हितवे रोहिण्य नुराधा पुनर्वसु ॥ ३० ॥ आषाढे हे विशाखा च आनि
 हि चरणा निच ॥ एतानि किंचिदुद्यानि संभवे सति वर्जयेत् ॥ ३१ ॥ चतुर्दशे तिथि-
 नंदो भद्रो सुक्कार वासरो ॥ सिते ज्येष्ठे रस्ते मिते द्वात्रिंशे विषमा प्रिभम् ॥ ३२ ॥ प्र-
 क्तं पक्षच सैत्यज्य पुनर्वसु सुतमम् ॥ वसुन्तरदुक्तं पच नक्षत्रेषु द्विजन्मसु ॥ ३३
 ॥ पौल्वे वल्लर्क्षयोश्चैव दहनो कुल नाशनम् ॥ गुरु मार्गवयोर्मध्यं पौष मासं मलि-
 स्तुचि ॥ ३४ ॥ नातीतः पितृ मे धस्याद्वा गोदावरो विना ॥ अथ लम्नादि तिथ्यं तानाव-
 लावलं ज्ञानार्थं गुणः ॥ सहस्र गुणं सुखं च दृश्यते गुणो वली ॥ तारापथि गुणो योगो हा-
 त्रिंशद्गुण भागमवेत् ॥ ३५ ॥ तदहं करणं विद्या हार स्वयं गुणः स्मृतः ॥ द्विवर्ति कुल
 संभूत सख्यं कृतं संगृहे ॥ शिरो मणौ समानैवेका दृश्येय प्रभा शुभा ॥ ३६ ॥ द्विनि श्री
 संग्रह शिरो मणौ सुहृते कथनं नामैका दृशी प्रभा ॥ ३७ ॥ अथ सकृति प्रकरणम् ॥ ए-
 कान्तिर्न च बाहुलं बोद्धी दीर्घं नाशका ॥ षड्विंशो जन विस्तीर्णो संक्रांतिस्तु स्त्रिया कृतिः

॥ १ ॥ संक्रांति भूमि वारे स्याद्वा राग्या भरणी मघे ॥ पूर्वात्रये च नक्षत्रे शुद्धाणां सुखदा
 स्यता ॥ २ ॥ सोम वारेऽभिजि तुष्येऽश्विनी हस्त्येयु भास्वतः ॥ संक्रांतीः कथिताध्यां
 क्षी विष्णोः सौख्य प्रदायिनी ॥ ३ ॥ अथ एतद्दि त्रिभे स्वातो पुनर्वसोः कुजे हनि ॥ या भवेत्स -
 तु चौराणां सौख्य दात्री महोदरी ॥ ४ ॥ बुधा हेया च रेवत्यां मृगे चित्रा सुराधयोः ॥ सा
 तु मंवाकिनी नाम्ना नृपाणां सौख्य वर्द्धिनी ॥ ५ ॥ बृहस्पती यदा जाता रोहिण्यां चोत्त -
 रात्रये ॥ तदा मंवाभिधा ज्ञेया विप्राणां हित कारिणी ॥ ६ ॥ भृगो वारे विष्णारवायां कुं -
 निकायां च या भवेत् ॥ सा तु मिश्रति विख्याता पशूनां प्रीति दायिनी ॥ ७ ॥ शनी मूले
 तथा र्क्षायाम् प्रलेवा ज्येष्ठयो रपि ॥ या भवेद्वाक्षसी सा स्यात् अंत्य जानां सुखा वहा
 ॥ ८ ॥ आषाढः न्हि ज्येष्ठा के राज्ञो द्वितीये हति वै द्वि जान् ॥ तृतीयैवाश्वयुजान्मृत्यु संक्रां -
 तिः शूद्र वर्ण कान् ॥ ९ ॥ प्रति या म क्रमादारे विष्णवान् राक्षसान् न दान् ॥ पशु पा -
 ल गणं हति प्रभाति सर्व लिंगिनः ॥ १० ॥ अथ सङ्गतम् ॥ दृष्ट्वैके लव भे सिंहे कम

विष्णुपदं स्मृता ॥ षड्शीति मुखं मीने कन्या मिथुन धनिषु ॥ ११ ॥ प्रीतिं यास्या यना क
 र्क मकरे चोन्नरा यथा ॥ विषुवाख्या तुला मेवे संक्रांति स्समुदाहृता ॥ १२ ॥ अथ क्रूर सो
 म्य परत्वेन फलमाह ॥ रवि रविज भौम चोरे संक्रांतौ दिन कस्य तन्मासि ॥ पितृ कफानिल
 ज्ञाभयनरपत्ति कलहस्त्व वृष्टिश्च ॥ १३ ॥ बुध गुरु सित चंद्रा हे सति संक्राता व
 नांमय न्दराणां ॥ क्षिति पति निकर ह्ये मं सस्य विवृद्धि विधि भिराणा पीडा ॥ १४ ॥ यस्य
 जन्म क्षमासाद्य रवि संक्र मणं भवेत् ॥ तन्मासाभ्यंतरे तस्य रोग क्षेप्र धन क्षयाः ॥
 १५ ॥ अज कन्या भयं कर्कि रा संक्रांतौ यदि नचे हर्षम् ॥ आसय मरणं भू भृद्युद्धमन
 ध्यं त्व वृष्टिश्च ॥ १६ ॥ वृष वृश्चिक तुला मकरे वृष्टिस्तथा त्संक्रम विषये ॥ विस्फोटा
 मय तत्कार पीडा वृष्टिः कृष्णानु भयम् ॥ १७ ॥ अथानिष्ट संक्रमे श्रुतिः ॥ तगर क्षुरो रुह
 पत्रै रजनी सिद्धार्थं लोघ संयुक्तैः ॥ त्मानं जन्म नृसे रवि संक्रांतौ नृणां शुभम् ॥ १८
 ॥ अथ पुण्य समयः ॥ प्रागृद्ध दशं पूर्वतो षड्वनि स्तद्वत्पणः पूर्वत स्त्रिंश त्वोड्दशं पूर्वतो ऽष्ट

संश्लेषतः पूर्वाः परास्त्यदर्शः ॥ पूर्वाः षोडश चोत्तराः ऋतुभुवः पञ्चत्वा त्ववेत्ताः पुनः पूर्वाः षोड-
 श चोत्तराः पुनरथो पुरायास्तु मेयादितः ॥ १८ ॥ अस्थार्थः ॥ नेमे प्रागृद्धचदृश घटिकाः
 पुराय कालः १ द्वये पूर्वाः षोडश ३ मिथुने पराः षोडश ३ कर्के पूर्वार्द्धिग्रह ४ सिं-
 हे पूर्वाः षोडश ५ कन्यायां पराः षोडश ६ तुलायां प्रगृह्यदृश ७ वृश्चिके पूर्वाः षोड-
 श ८ धनुषि पराः षोडश ९ मकरे चत्वारिंशत्पराः १० कुम्भे पूर्वाः षोडश ११ मीने पराः
 षोडश १२ पुरायाः षोडश नाड्यस्तु पराः पूर्वास्तु संक्रमात् ॥ त्रिंशत्कर्कटके पूर्वार्द्धि-
 रिशत्परा मृगे ॥ ३० ॥ मध्याह्नादुत्तरपुराय त्राडिप्रश्रीयास्तु संक्रमे ॥ निशीथादृद्धका-
 लेतु गध्याह्नात्वाक्परे हानि ॥ ३१ ॥ चेन्निशीथे द्वादशपुराय परं पूर्वं विभाग्योः ॥ अथा-
 यनयोर्विशेषः ॥ सूर्यास्तमनसंध्यायां यदि सौम्यायनं भवेत् ॥ ततोदयादहःपुराय पूर्वार्द्धि-
 पूर्वतो यदि ॥ ३२ ॥ अथ संध्या लक्षणम् ॥ अहर्निस्तमना तसंध्या घटिका त्रय संमिता ॥
 तथैवाहोदयान्नात घटिका त्रय संमिता ॥ ३३ ॥ अस्तादृद्धच मकरे रात्रौ च संक्रमरवेः ॥

संक्रान्ति
१७५

तदोत्तरदिने पुण्यं मध्याह्नात्प्राक् प्रकीर्तितम् ॥ २४ ॥ यदा सूर्यो दयात्पूर्वः कर्क संक्रम
रो रविः ॥ तदा पूर्व दिने पुण्यं तदुत्तरदिने हनि ॥ २५ ॥ एतौ विसु पवे यामे मध्येतु विपुवा
भिधे ॥ षड् रीतिमुखे सोम्ये ऽग्ने पुण्ये वदुत्तरम् ॥ २६ ॥ अथ एतौ स्नान दान निषेधे ऽपि विशेषः
॥ एतौ स्नानं न कुर्वीत दानं चैव निशेधतः ॥ नेमिचिकितु कुर्वीत स्नान दानं च एतिसु ॥ २७
॥ सुतु जनने संक्राता वुपु एगे सूर्य चंद्र को नित्यम् ॥ एता वपि कर्त्तव्य स्नानं दानं विशेषे
पत्तो न्दृष्टम् ॥ २८ ॥ अथ संक्राति मुहूर्त्त लक्षणं च ॥ पुनर्वसु विशाखा च राहिणी चोत्तराश्च
द्वे ॥ सुभिक्षं तत्र संक्रांतौ वारा वेद मुहूर्त्त काः ॥ २९ ॥ भरण्या दर्श शता श्लेषा स्वा
ती ज्येष्ठा जघन्य भं ॥ संक्रांतौ तत्र दुर्भिक्षं मुहूर्त्तं वारा भूमिताः ॥ ३० ॥ शेष भागि समा
ख्यानि संक्राता वरुं साम्यता ॥ मुहूर्त्तं त्रिंशति श्रोक्ता फलं चंद्रो द्यौः ऽपि तत् ॥ ३१ ॥
अथ कर्के मेष विशेष पकाः ॥ अथ कर्के मेष विशेष पकाः ॥ अर्कादि वारे संक्रांतौ कर्के स्यान् विशेषे
पकाः ॥ विशेषे न स्वा गजाः सूर्याः धृत्ये ऽष्टा च श सायकाः ॥ ३२ ॥

अथ कर्के मेष विशेष पकाः				
स	च	म	उ	व
१०	३६	८	१८	१८
			१८	१८

नैट सुज्ञो रविनीगे तैलिले च चतुः पदे ॥ किं सुज्ञे कोलवे तिष्ठन् शकुनी संक्रमित प्रशु-
 भः ॥ ३३ ॥ गरदि पंचके मध्य प्र्योप विद्या ऽर्घ्यवधरो ॥ अथ संक्राते वार्हन्तानि ॥ सिंहे
 व्याघ्रो वराहश्च खरेभ महियो हयः ॥ भवाजोगैः कुक्कुटो बाहः संक्रातेः क्रम प्रो व-
 वात् ॥ ३४ ॥ अथ वर्याणि ॥ स्वेतं पीतं हरित्याहुं रत्नं प्रयागं च मेचकम् ॥ चित्रं कंवल दिङ्मे-
 घस्तन्निभं क्रमतो ऽदरम् ॥ ३५ ॥ अथ रास्त्राणि ॥ भुशुंडी च गदा खड्गो दंडः को दंडो नो-
 मेरे ॥ कुंतः पाशो ऽकुशो ऽरत्नं च वारा भ्रैवायुधं क्रमात् ॥ ३६ ॥ अथ भस्त्राणि ॥ अन्न-
 च पायसं भैक्षं पक्वान्नं च पयो दधि ॥ चित्रान्नं गुड मध्वाज्यं शर्करा भक्षणा क्रमात्
 ॥ ३७ ॥ अथ विलेपनानि ॥ कस्तूरी कुंकुमं चैव चंदनं स्रग्ज रोचना ॥ यावको तु मदे वापि ह-
 रिष्मं जनको ऽ गुरुः ॥ कर्पूरं प्रचेति विज्ञेयं संक्राते श्च विलेपनम् ॥ ३८ ॥ अथ जातयः
 ॥ देवो भूतो रगः पक्षी पशु रेणो दिजः क्रमात् ॥ क्षत्रियो वैश्व सृष्टे च संकरे जातय-
 स्त्विमाः ॥ ३९ ॥ अथ पुण्याणि ॥ पुन्नाग जाति वज्रुलं केतकी विल्व मर्कजम् ॥ इर्वा जाम- २१०

स्त्रिका पुष्टं पाट लाच जया क्रमात् ॥ ४० ॥ अथाभरणानि ॥ नूपुरं किंकिणी मुक्ता विद्रुमं के-
 कणं मणिम् ॥ गुञ्जा वरुणिकानीलं वज्र भूया गरुत्मकम् ॥ ४१ ॥ अथमाला ॥ प्रवाल
 मुक्ता रजतं मणिस्तथा गो मेद नीलं च सुवर्णं शीसम् ॥ काष्ठं तथा ताम्रकं लोहकं-
 च विभर्ति सवै गलं के सुशोभितम् ॥ ४२ ॥ अथवर्णसि ॥ वाला कुमारिकारंढा मध्या
 प्रौढा प्रगल्भिका ॥ दृढा वंध्याति वंध्या स्यादसूता योगिनी वयः ॥ ४३ ॥ योगिनी स्थि-
 त कायान स्संक्रांते रागमो मतः ॥ चंद्र स्थदिष्टि दृष्टिस्त्यात् गमनं वार दिक् स्मृतम्
 ॥ ४४ ॥ अथदृष्टिः ॥ चंद्रे गुरो दृष्टि विदिक् कृशनी सूर्ये शिते नै कति काणंगो दृक् ॥ धा-
 त्री सुते दक्ष्य वने निरुक्ता बुधे शनी रुद्र दिष्टी सप्तं भवेत् ॥ ४५ ॥ अथगमनम् ॥ मंदे चं-
 द्रे गगस्तीम्ये बुधे भीमे च वारुणे ॥ रवौ शुक्रे गमो यास्ये गुरो प्रागगमनं स्मृतम् ॥ ४६
 ॥ मुखसंक्रांतेः ॥ रवौ संक्रमणे पूर्वं मुखं जीवेतु चोत्तरे ॥ प्रत्यङ् मुखं शनौ मोमे शोभेद्
 क्षिणतो मुखम् ॥ ४७ ॥ तवे पूर्व मुखं प्रोक्तं बालवेयम् दिङ्मुखम् । क्षौलवे पश्चिमम् ॥

नाहुयो राम शुभा रावे ३३ एथ विधोः षट् त्रयोः पलैर्युक् द्वयम् ३२६ भौयस्याधि पले
 ११३ व्युत्तानव ३४ विदो युक्ता पले स्वाध्याभिः षट् नाहुयो ६३० ५४ गजा ८८ गुरोरथम्
 गोर्नन्दाः पलैरष्टभिः ८८ पुरयाः स्युः खन्त्याः १६० शनैरुभयतो रां स्पृक्ष्योः सं-
 क्रमे ॥ ५६ ॥ अथाधिमास द्वायमासौ ॥ अयं संक्रांति रसां तोयो मासश्चेत्सोऽधि मासकः ॥
 परमासा ह्वयो द्वेयः प्रायश्चित्तेनादि सप्त सु ॥ ५७ ॥ द्विसंक्रांतौ क्षयाख्यस्वात्कदा
 चित्कार्ति कत्रये ॥ युग्माख्यस्वतु तच्चाक्षेधमास द्वयं भवेत् ॥ ५८ ॥ मलमास इ-
 ति द्वे योगा हितस्सर्व कर्म सु ॥ अथ तादादि वलादन्येषां वलम् ॥ तारायां वलतश्चंद्रः वलं
 सूर्यस्य चंद्रतः ॥ सूर्यतस्सर्व रेवतानां वलं द्वेयं शुभा शुभम् ॥ ५९ ॥ द्विवेदि कुल स-
 मूत सरयू छत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाक्षेपा द्वादशीयं प्रभा शुभा ॥ ६० ॥ - इति श्री
 संग्रह शिरो मणौ संक्रांति कथनं नाम द्वादशी प्रभा ॥ १३ ॥ अथ गोचरप्रकरणम् ॥

मशोः इत्येकं स्थान फलानि आचो रवेः ॥ ममो हानिर्द्वन्त्रो गोदेन्यं सीत्यं गु

तं विपदुजः ॥ पापं वैरं सुखं हानीं राहुकेत्वीः फले त्विदम् ॥ २० ॥ अथ शुभफलकाग्रहाः
 ॥ शुभा एका दशो सर्वत्रिषत्य दश गो रविः ॥ यत् त्रिंशत्स्यो धरा पुत्रो राहु केतु शनैश्चराः
 ॥ २१ ॥ दश सप्त त्रिषङ्काद्य संस्थिताश्चंद्रमाः शुभः ॥ शुक्ल पक्षे तु नवमो द्वितीयः
 पंचमोऽपि च ॥ २२ ॥ दिगष्टाश्वि चतुस्संस्थो गोचरे शुभदो बुधः ॥ बृहस्पति-
 श्शुभः प्रोक्तो हि पंचनव सप्तगः ॥ २३ ॥ एक द्वि त्रि चतुः पंच नवाष्ट व्याय गो भृगुः ॥
 अथ ग्रहाणां क्रमवैधः तत्रादौ रविः ॥ षष्ठं द्वादश गो विध्ये दशमं नूर्यगो गृहं ॥ तृतीय नटमे-
 सूर्यं लाभस्थं पंचम स्तथा ॥ २४ ॥ द्वितीय स्तप्तमश्चंद्रः पंचमं पंचम स्तथा ॥ षष्ठं द्वा-
 दश गो विध्ये दष्ट को लाभ संस्थितम् ॥ २५ ॥ ण्यमौम शनि केतुनाम् ॥ तृतीयं द्वादशं व-
 दं नवमोऽथ य लाभगम् ॥ विध्ये तं च सगो भौमं राहु केतु शनैश्चरम् ॥ २६ ॥ अथ
 बुधस्य ॥ द्वितीयं पंचमं तुर्यं तृतीयो नवमो रिगम् ॥ आद्येऽष्टमं बुधं त्वं स्वस्थ मष्टमोति
 मन्नायगम् ॥ २७ ॥ अथ शुरोः ॥ द्वितीयं गुरु रंत्यस्थः पंचमं तुर्यं गोऽष्टमम् ॥ लाभ

१२

गं सप्तम त्रि स्थो नवमं दशमो गृहः ॥ १८ ॥ अष्टम्योः ॥ भार्गवं चाद्यमष्टस्यः त्रिगमा
 द्योरिगोऽत्युगः ॥ खस्थसूर्यं च लाभस्यो नवमं त्रिगमायगम् ॥ १९ ॥ द्वितीयं सप्तमः
 खेतो नवमः पंचमं तथा ॥ पंचगं चाष्टगं विद्वेत्त्रमवेध उदाहृतः ॥ २० ॥ अविद्वेषु
 भदः खेतो नवेधस्तात पुत्रयोः ॥ निधस्थान गतो पीछो विद्वेष्वे त्सविलो भूतः ॥ २१

चंद्रस्य										बुधस्य			
६	१०	३	१२	३	७	१	६	११	१०	१	३	४	८
१२	४	८	५	६	२	५	१२	८	४	१	५	३	९
शनि वर्ज्यं										शुक्रस्य			
५	२	८	११	७		१	२	३	११	३	१२	५	१०
४	१२	१०	८	३		८	१०	३	११	३	१२	५	१०
जीवस्य										शनि रेख विवर्ज्यं			
५	२	८	११	७		१	२	३	११	३	१२	५	१०
४	१२	१०	८	३		८	१०	३	११	३	१२	५	१०
अथ अविमर्गेन जन्मती गृह										तो वा वेध गृहाना ॥ त्रिमादि			
										विध्यो मध्ये खेत स्त्री के			
										धको यवेत् ॥ अन्यत्र ज-			

१२

न्म राश्रोस्तु विज्ञेयो वेध्य वेधको ॥ २३ ॥ अथाष्टवर्गानि सारया ग्रह फलम् ॥ स्वाष्टवर्गे द्वाया
 खेतोऽधिकारे स्वग राश्रिगः ॥ तदा गोचर दुष्टेऽपि श्रेष्ठो नाल्य करे स्वगः ॥ २४ ॥ अ-
 थग्रहाणां निःफलत्वम् ॥ सत्फलो वीक्षितः पापैः सोम्ये दृष्टोऽप्य सत्फलम् ॥ ता बुभौ नि-
 फलो ज्ञेयो गोचरे जात केऽपि च ॥ २५ ॥ सत् क्षेत्र गतः खेतो नीच गोप्य स्तगोऽपि-
 वा ॥ निःफलस्तोऽपि विज्ञेयः शत्रु दृष्टोऽपि ता दृष्टः ॥ २६ ॥ अथ ग्रहाणां एष्टि भोग
 मानम् ॥ मासे शुक्रो बुधः सूर्यः सार्द्ध मासे महीसुतः ॥ गुरु खं तम सार्द्ध शनि त्साहो
 ब्दक द्वयम् ॥ २७ ॥ अथ शने विचारः ॥ ऋक्षे यत्र शनि स्थितो भवति तद्वक्त्रे सद्यो ज-
 येत् वाहो दक्षिणे के ततो भ चतुरः षट्पादयोर्विन्ध्यसेत् ॥ पंचो रस्य षट्पद्व्यः
 भान्यथ करे वामेऽथ शीर्षे त्रयं शुभे लोचनयोर्द्वयं गुरु गते जन्मार्द्ध शोक्त फलम् ॥ २८ ॥
 मुखे हानिर्लभो बाहो ऋम श्चां प्रौ धनं हृदि ॥ कुक्षे वा मस्तके गज्यं नेत्रे सौख्यं म-
 ति गृहे ॥ २९ ॥ मुखाच्चरति गुह्ये च गुह्या स्याति लोचनम् ॥ लोचनान्मस्तकं याति म-

स्त का ह्यम ह ल्ल कम् ॥ ३८ ॥ वाग हस्तः ३९, हृदयं हृदया चरणा हृदयम् ॥ पङ्क्त्या दक्षि-
 ण हस्तं च श्रानि चक्रे विचारयेत् ॥ ३० ॥ एक चासोत्तरं वर्षं दिनानां दशकं तथा ॥
 प्रत्येक सप्तमाक्रव्य शनिर्गच्छति सर्वतः ॥ ३१ ॥ सार्द्धं वर्षं द्वयं राशि मेकं सकल
 संमतम् ॥ त्रिंशद्वर्षाण्यभि व्याप्य राशि चक्रे भवे च्छनिः ॥ ३२ ॥ एवं सौरे गतिं ज्ञा-
 त्वा फलं ब्रूयाद्विचक्षणाः ॥ अभीष्ट फल लाभाय विना प्राया शुभस्य च ॥ ३३ ॥
 शने हि फलं भोक्तुं स्वर रात्रादिसंमतम् ॥ रिक्क १२ रूप १ धन २ भेषु भा स्करिः सं-
 स्थितो भवति यस्य जन्म भात् ॥ लोचनो दरपदेयु संस्थितिः कर्णो हरे रविज लोक जे-
 र्जनैः ॥ ३४ ॥ स्थान भेषु पुन रुच्यते बुधैः सार्द्धं मूधरसमा सुभा स्करिः ॥ तत्र चक्र
 मन वद्य मुच्यते मानुजा कृति पदं मुनीरितम् ॥ ३५ ॥ ज्ञानने दिन प्रातं प्रकीर्तितम्
 १०० हानि रत्र बहुधा प्रजायते दक्षिणो तु भुज के चतु र्शतं वासराणि विजयोरणां
 गने ॥ ३६ ॥ षट् शतं चरणा युग्म के पुनः अति रत्र सततं द्विगं तरे ॥ जाठरेषु शर

५०० संख्य के भवेत्त्वाभ एव धन धान्ययो स्सदा ॥ ३७ ॥ दक्षिणो हार भुजे चतुःश-
 तं दुःखं शिरसि च्छत त्रयम् ॥ राज्यं भवति नेत्रयो र्वयोः द्विः शतं च सुखं दं
 प्रकीर्तितम् ॥ ३८ ॥ गृह्य गंतं वनु तच्छत द्वयं दुःखं सुनि वरैः प्रकीर्तितम् ॥ चक्र-
 मे तद व लोका कीर्तये त्साई भूधर श्रुतोद्भवं फलम् ॥ ३९ ॥ अथ चरणादि विचारः ॥ ज-
 न्मां १ ग ईरुदे ११ पु सुवर्ण पादं द्वि २ पंच नै रज तस्य पादम् ॥ त्रिं सप्त दिक् तास्य पदं
 वंदति वेदा य सां किं छि हलौह पादम् ॥ ४० ॥ लोहे वित विना शस्यात् सर्व सौख्यं च की-
 र्चने ॥ ताम्बे च सम ताज्ञेया सौभाग्यं राजते भवेत् ॥ ४१ ॥ अथ शनिवाहनम् ॥ यामले-
 मन्द स्तो च्छ शि १ वेद ४ तर्क ६ विशिखा ५ अक्ष ४ अन्य ३ य ८ यक्ष २ ऋणाच्छा गो १
 प्वो २ भवनो गजोहि माहियोऽप्यो च्यो वायसः ॥ हानिं वैर भयं भ्रमो धन च्यो सा
 नाल्यको भूयतेः सौख्यं रोग च्यो नरस्य वस तो मंदस्य वाह्य च्यमी ॥ ४२ ॥ सपा-
 द्द्विदिनं चंदः प्रायः खेद भ भोग कः ॥ अथ गुरुणां फल समयः ॥ एषो राशे कुजः स-

यो मध्ये युक्तं दृष्टं सती ॥ अंत्ये चंदः शनिर्गोहे फलदः सर्वदा बुधः ॥ ४४ ॥ त-
 र्थः पंचदिना त्वं शीत रश्मिर्बही जयात् ॥ भौमोषहाल का दर्वकिं शुक्र दो सप्त
 वा सरात् ॥ ४५ ॥ गुरुर्मास ह्यथ श्वे वषराभा साचु शनैश्चरः ॥ राहुर्मासजवा दस्य राशे
 स्तु फलदः स्मृतः ॥ ४६ ॥ राशिनक्षत्र संधिस्थाः फलदा भव मे स्वयोः ॥ राशिनक्षत्रयो-
 रदशे का दश पद त्रिगः ॥ ४७ ॥ अथ जन्म राशितो गृहणं फलम् ॥ गृहणं जन्म आच्छेदं
 त्याद्यतुर्यस्य जन्म क्षेपे तु मृति भवित् ॥ जपात् सुवर्णं गो दानात् शान्ते श्वादर्शनाच्छुभ-
 म् ॥ ४८ ॥ अथ विषम स्थे ग्रहे विकर्षाणि ॥ आर्वेदः काल चर्या च दूर देश गन्ते नृपः ॥ दुष्टवा-
 जि गजा रोहे गमनं पर मन्दिरे ॥ ४९ ॥ न कार्यं साहसं कर्म विषमे युग्रहे शुच ॥ अथ
 ग्रहाणां नाना ॥ ये खेदाः खेचरे दुष्टाः दशरायां त्वाष्ट वर्ग के ॥ जप दानादि नाते स्युः प्रप्रा-
 स्ता स्नान तो ऽपि वा ॥ ५१ ॥ साराक्ष्यं धेनु गोधूम हेमं ताक्षं गुहो बुजम् ॥ चंदनं चांवरं

रक्ते देयं भास्वान्मुदे नृपैः ॥ ५२ ॥ सुजा शेष्यं सिंते वस्त्रं शरवं वंश स्थतं दुलान् ॥ कर्ष-
 रं गो युगं दद्याद् न कुंभं विधो मुदे ॥ ५३ ॥ प्रवालं हेम गोधूमान् रक्ते वासोऽरुणं वृषम्
 ॥ करवीरं गुहं ताम्रं यमराभीम तुष्टये ॥ ५४ ॥ कांस्यं नीलां वरं हेम गज दंतं गरुत्मक
 ॥ मुद्गाज्यं सर्वपुण्यं च दद्यात्प्रीत्यै बुधस्त्यच ॥ ५५ ॥ हरिद्राघ्नः क्षितो हेम पीतं धान्यं
 तथा वस्त्रम् ॥ लवणं पुण्यं राग प्रत्नं देयो वाचस्यते मुदे ॥ ५६ ॥ धेनुश्चित्रा वरं चाज्यं श्वे-
 ताश्वो हेम तंदुलाः ॥ सुगंधं रजतं वस्त्रं देयं सुप्रीतये भृगोः ॥ ५७ ॥ तिला स्तैलं तथा
 आखानिन्द्रनीला सितां वस्त्रम् ॥ कृष्णां गां महिषी लोहं स्वर्गं च दद्याच्छ ने र्मुदे ॥ ५८ ॥
 गोमेदं तुरगं खड्गं नील वस्त्रं च कांचनम् ॥ स्वर्णं तैलं तिलान् दद्यात् स्तैहि केय नुदे नृप-
 ॥ ५९ ॥ कस्तूरी कमलं वस्त्रं च्छागो वैडूर्यं कांचने ॥ तिला स्तैलं महीपालैः प्रदेयं के-
 नु तुष्टये ॥ ६० ॥ अथ ग्रह दुःख हर मोक्षधी स्नानम् ॥ एलाययि मधू सीरला च पुण्याज्ज कुंकु-
 मैः ॥ स्नानं मनः प्रियला देव सारु भारवि तुष्टये ॥ ६१ ॥ पंच गव्यं भवानां बु शरव स्फटि

क शुक्तिभिः ॥ कुमुदे स्मिञ्चितेः स्नानं चंद्र वीषा पनुत्तये ॥ ६३ ॥ हिं ग्वलू विल्व फलि
नी मांसी वं कुल चंदनेः ॥ रक्त पुष्पैर्वला मिश्रैः स्नानं भौमार्ति नुत्तये ॥ ६३ ॥ गोमयाक्ष
त मुक्ताभीरो चना मधु हेमभिः ॥ फल मूलैर्युतं स्नानं बोधनार्ति विनाशनम् ॥ ६४ ॥
॥ मालती कुशुम प्रवेत सर्प पक्षी च संयुतैः ॥ पल्लवैर्मदयं त्याश्र स्नायाद्गुरु मुदे नृपः ॥
६५ ॥ रत्ना मन शिशला मूल फलं कुंकुम वारिभिः ॥ स्नानं शुक्र कृतां वाधां नाशये-
त्येव भू मुजाम् ॥ ६६ ॥ वला लाजा ज्वनैः कृष्ण तिलैर्लोध्र घनै रपि ॥ शत पुण्या न्विते-
रस्नाया नंद वाधा पनुत्तये ॥ ६७ ॥ अथ गृहाणां दोष शान्तये सामान्यौषधी स्नानम् ॥ लाजा कुष्ठ व-
ला मिश्र चित्रं गुघन सर्यपैः ॥ देव दारु हरिद्राभिः पुंका लोघै रण संयुतैः ॥ ६८ ॥ वारि-
भिः स्नानं मुक्तं हि प्रोक्तं चान पुरस्सरम् ॥ एतस्मात्मान्यत स्सर्वं गृह पीडो पशान्तये ॥
६९ ॥ अथ गृह प्रीतये रत्नादि धारणम् ॥ शुक्रं हरे रजतं चैव विद्रुमं भानु भौमयोः ॥ क्व स्य हेम
शाने लोहिं गुरो र्मृत्का फलं नरः ॥ ७० ॥ प्रीतये धारयेत्तं गे लाजा वर्त्तन्त तो न्ययोः ॥ अथ न- १२३

व गृहमुद्रिका ॥ सागिां वं तरणे र्मध्ये प्राच्यां वज्रं भूगो विधोः ॥ अग्नेयां मोक्तिकं यास्यं प्र-
 वालं संगलस्य च ॥ ७१ ॥ गो मेदं राससो राहोः पञ्चिमं नीलकं प्रनेः ॥ वायो वैदूर्यं
 कं केतौ उदीच्यां पुष्यकं गुरोः ॥ ७२ ॥ गारुत्मकं तथै श्रान्या सोम पुत्रस्य नुद्यये ॥
 मुद्रिकायां नरै र्द्वार्यं मथवा एथ गे वहि ॥ ७३ ॥ अथ गृह पीठोक्थमनो पापः ॥ पालनाद्गु-
 रू वाक्यानां देव वाह्यानां वंदनात् ॥ नो कुर्वीत गृहाः पीडां दुष्टस्थान स्थिता अपि ॥
 ७४ ॥ हि वेदि कुल संभूत सरयू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाप्ते या प्रभेयंच त्रयोदशी
 ॥ ७५ ॥ इति श्री संप्रह शिरो मणौ गोचर कथनं नाम त्रयोदशी प्रश्ना ॥ १३ ॥ अथ
 संस्कार प्रकरणम् ॥ अथ संस्कार प्रकरणे आहो लो दर्शनम् ॥ वैश्वदेवे फाल्गुणे माघे मागरीत्येव
 वराणां दिवने ॥ पक्षे शुक्ले पुष्या हे च सहि जग्ने तथा दिवा ॥ १ ॥ श्रुति त्रयेऽनुपधायां रेवती
 द्वितये मृगे ॥ हस्त त्रये च रोहिण्यां पुष्य मे चोत्तरा सुच ॥ २ ॥ सित वस्त्रे शुभं स्त्रीणां
 प्रथमं ऋतु दर्शनम् ॥ मध्य ज्येष्ठे पुनर्वसो मूले चान्यत्र निवितः ॥ ३ ॥ अष्टम्यां वा ॥

॥ १३ ॥ दृश्यो हस्ते ऋक्ता दर्शो ऽथ संक्रमे ॥ भद्रा निद्रा व्यतीपाते ग्रहणो रुजि वैधृती ॥ १४ ॥ पर
 ॥ १५ ॥ लानु गृहं संध्या कुदेशे कल वाससि ॥ प्रायजो वर्धनिं नैष्टं शाल्यानु शुभदं भवेत् ॥ १५ ॥
 प्रागुक्ता चिलयं यांति रत्नो दर्शनं संभवाः ॥ सर्वे देवास्तु सप्तमे स्तितेज्य युत वीक्षिते
 ॥ १६ ॥ अथ ऋतुमती लानम् ॥ पुनर्वसु साधा चित्रा ज्येष्ठा पुष्या भिधेयुच ॥ स्वाद्या दतु मती
 नारी शुभे वारे शुभे तिथौ ॥ १७ ॥ रोहिणी हितये स्वातो हस्ते वैरेवती द्वये ॥ लानानु सुवती ग-
 र्भं विधत्ते प्रीति मे वहि ॥ १८ ॥ अथ गर्भा धानम् ॥ जन्मर्क्षं स्मरणी मूलं नष्टं पुं रेवती मघां ॥
 पूर्वार्हं च व्यतीपातं वैधृतिं परिघाट्टकम् ॥ पित्रो भ्रातृ द्विं संध्या दिवा यष्टी च पर्वच ॥
 श्रातं वाह चतुष्कं च विष्टी ऋक्ता र्कं संक्रमान् ॥ १९ ॥ तथैव क्रूर वारं श्रगर्भा धाने विव-
 र्जयेत् ॥ स्वातो हस्ते ऽनुषाधायां रोहिण्यां अवरा त्रये ॥ २० ॥ अतरे मृग शीर्षे च शुभा
 हे शुभग्रशिषु ॥ गर्भा धानं प्रशस्तं स्यात् चंद्रे शस्ते पुमांसके ॥ २१ ॥ कारिकायाम् ॥ पुं न
 क्षत्राणि चैतानि तिष्ठो हस्तपुनर्वसु ॥ अभिजिष्ठी च या चैव अनुराधा भिष्युक् नघा ॥ २२ ॥

१३ ॥ केन्द्र कोण स्थिते सौम्ये पापेच त्रिविधायगे ॥ पुं लग्ने पुनर्वाशे च तथा पुं ग्रह वी-
 क्षिते ॥ १४ ॥ चित्रा पुनर्वसु पुष्य मघ्विभं मध्य मंस्तृतम् ॥ नियेके शेष धिल्लानि संत्या-
 ज्या न्य शुभानि च ॥ १५ ॥ अथ जन्म मंसीमंते निधिदं ॥ वशिष्ठः ॥ बालान् भुक्तो व्रत बंधने च
 राजा भियेके खलु जन्म धिल्लम् ॥ शुभं त्व निष्ट सततं विवाह सीमंत यात्रा दिष्टु मंगलेषु ॥
 १६ ॥ मास त्रयुक्त कार्थ्येषु मूढत्वं गुरु शुक्रयोः ॥ न शेष कुम्भले मासे गुर्वीहि त्यादिकंत-
 या ॥ १७ ॥ अथ पुंस वन सीमंतोन्नयने ॥ द्वितीये वा मासि पुंस वनं स्मृतम् ॥ मासे
 षष्ठे ऽष्टमे वापि गर्भ सीमंत कं विदुः ॥ १८ ॥ पुनर्वसू द्वये मूले अवरो मृग हस्तयोः ॥
 गुरु भौमार्क वारेषु प्रोक्तं पुंस वनादिकम् ॥ १९ ॥ रेवत्या अतरे ऽप्ये के शुक्ले चंद्रे बुधे
 जगुः ॥ मासे श्रे सवले चंद्रे लग्ने पुंसां सके शुभे ॥ २० ॥ सौम्ये ऽर्के नु त्रिकोण स्ये पा-
 पे लाभे त्रिविधुके ॥ अथ मासे श्वरः ॥ मासे श्वरा भृगु भौम गुरु सूर्य नु सूर्यजाः ॥ बुधो-
 लग्न पति श्वरः सूर्य श्वैते यथा क्रमम् ॥ २१ ॥ अथ संस्कारे विशेषः ॥ विवाहे गर्भ संस्कार ॥ २२ ॥

३२ ॥ चंद्रादि स्त्रिया अपि ॥ भूवां वरादि कार्येषु भर्तुरेवैदवं चलम् ॥ ३२ ॥ गर्भधा-
 नादि संस्कारे तथा न्न प्राशने शिशोः ॥ न तत्र गुरु मुक्ता स्तमन् प्रासादि दूयणम् ॥
 ३३ ॥ अथ विलुपजा ॥ सीमंतोद्धृति पक्षे रोहिण्या अवगो तथा ॥ द्वादशे सप्तमे घले
 ह्यर्घ्यर्चा गर्भ पुष्टये ॥ ३४ ॥ अथ सति का ग्रह प्रवेशः ॥ अग्नि त्रयोत्तरा हस्त त्रये पुष्या नु
 रथयोः ॥ पुनर्भे रोहिणी युग्मे रेवती द्वितये तथा ॥ ३५ ॥ शुभाहे प्रश वाघुक्ता सूति
 का मंदिरं विशेषत् ॥ अथ जात कर्म ॥ जात कर्म क्रिया कुर्यात्पुत्रायुः श्री विवृद्धये ॥ य-
 ह द्योप विनाशाय सूत का शुभ विच्छिदे ॥ ३६ ॥ कुमार ग्रह नाशाय पुंसां सत्व वि-
 वृद्धये ॥ एकादशे न्हि विप्राणा क्षत्रियाणां त्रयोदशे ॥ वैश्यानां बीडशे नाम मासा
 मूढ जन्मनः ॥ ३७ ॥ चैत्रादि मास नागानि वैकुण्ठे ऽथ जनार्दनः ॥ उपेन्द्रो य-
 ज्ञ प्ररुयो वासुदेव स्त्रि विक्रमः ॥ ३८ ॥ योगीशः पुंडरी काक्षः कल्लो नंतो ऽच्युत-
 ज्ञया ॥ चक्र धारीति चैतानि क्रमादाहुर्मनीषिणः ॥ ३९ ॥ मार्ग शीर्षे विप्राणा

क्षीपौ ये लक्ष्मीश्च देवता ॥ माघे तु रुक्मिणीं प्रोक्ता फाल्गुने धात्रिर्नामिका ॥ ३० ॥
 चैत्रे मासिरसा देवी वैष्णवे मोहिनी तथा ॥ पद्माक्षी ज्येष्ठ मासे तु गङ्गायाह कमलेति
 च ॥ ३१ ॥ कंठे मती श्रावणे च भाद्रे तु अपराजिता ॥ पद्मावती श्रावणे तु रथादेवी
 तु कार्तिके ॥ ३२ ॥ मित्रा दिल्य मघोत्तराश्वतं भिषक् स्वाती धनिष्ठा च्युत प्राजे श्रृंगश्चि
 श्रां क पौषादिन कृत्युष्ये तुराश्रे तु स्थिरे ॥ छिद्रं पंचदशी विहाय नवमी पुनरे ॥
 दशमे भार्गवि ज्ञाचार्या मृत पाद भाग दिवसे नामानि कुर्व्यु श्रृंगशोः ॥ ३३ ॥ अ-
 मा संक्राति विष्ट्यां तु प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ॥ श्रृंगं तं ब्राह्मणस्याहर्मां तं क्षत्रियस्य
 वा वैश्यस्य धन संयुक्तं शूद्रस्य प्रेक्ष्य संयुतम् ॥ ३४ ॥ मास नामं गुरोर्नाम दद्याद्बालस्य
 वैपिता ॥ देवालय गजाश्वानां वृक्षाणां वापि कूपयोः ॥ ३५ ॥ सर्वा पराणां परायानां चि-
 न्तार्थं यो धितो नृणां ॥ ३६ ॥ काव्यानाञ्च केवीनाञ्च पद्मादीनां च सर्वसिः ॥ राज-
 प्रसाद वस्तूनां नाम कर्म विधिष्यते ॥ ३७ ॥ तदस्मदिकं नाम यस्मिन् स्थिते दद-

क्षरम् ॥ ये श्रीकृष्ण उ. अणा चरणिना मादौ संति ते नहि ॥ नेतु वर्त्तन्ति तदा ज्ञेया भजडास्ते
 यथा क्रमम् ॥ ३८ ॥ अथ जनन समये दुष्टकालः ॥ तत्रादावभुक्त मूलम् ॥ जेखांत्ये घटिका युरमं
 मूलादौ घटिका द्वयम् ॥ अयुक्त मूलमेव तस्यादित्येवं नारदो ब्रवीत् ॥ ४२ ॥ वशिष्ठोक्तं त-
 थो रत्याघयो रेक द्विनाडिकम् ॥ अंगिरा घटिका मेका अन्ये पंचाष्ट तत्रसु ॥ ४३ ॥ जानं
 शिशुं त्यजेत्तानो नयश्ये दष्ट हायनम् ॥ अथ मूलजनने पादफलम् ॥ आद्ये पिता नाश्र सुभेति
 मूल पादे द्वितीये जननी तृतीये ॥ धनं चतुर्थेऽथ शुभोऽथ श्रुत्या सर्वत्र सत्स्यादहि भे
 विलोमम् ॥ ४४ ॥ दिवा जातस्तु पितरं रात्रौ तु जननी तथा ॥ आत्मानं संध्योर्हेति नास्ति
 गंडो निरासयः ॥ ४५ ॥ मूलादि पादो यदि रात्रि आगे तदात्मनो नास्ति पितुर्विनाशम्
 ॥ द्वितीय पादो दिन गो यदि स्यान्त मातु रल्योऽपि तदास्ति दोषः ॥ ४६ ॥ माघा पादा-
 ध्विने भाद्र पद मूलं वशे द्विवि ॥ कार्तिके प्रावरो चैते यौधे मासे तु भूतले ॥ ४७ ॥ वैशाख
 रवे फाल्गुणे ज्येष्ठे मार्गे पाताल वर्जितम् ॥ भूतले वर्त्तमाने तत् ज्ञेयो दोषोऽन्यथानहि

४८॥ अथ मूलवृक्षम् ॥ मूलं स्तंभं त्वचा शारवा पत्रं पुष्पं फलं शिखा ॥ मुनयोऽद्योदिशो
 रुद्रा सूर्याः पंचाध्ययोऽग्नयः ॥ ४९ ॥ मूले तु मूलनाशः स्यात् स्तंभे वंश विनाशनम्
 ॥ त्वचि मातु भवे क्लेशः शारवायां मातुलस्य च ॥ ५० ॥ पत्रे राज्यं विजानीया त्र्युख्ये मं-
 त्रि परं स्मृतम् ॥ फले च विपुला लक्ष्मीः शिखाया मल्यजीवितम् ॥ ५१ ॥ मूलस्य घटि
 कान्यासो मूर्द्धि पंच नृपो भवेत् ॥ मुखे सप्त मृतिः पित्रोः स्तंभे वेदा महाबलः ॥ ५२ ॥ वा
 क्यो रथो बली पाण्यो त्तिस्त्रो हत्यान्वितो भवेत् ॥ हृदि खेटा भूप मंत्री नाभौ ह्यौ च ह्यवि
 द्भवेत् ॥ ५३ ॥ मुखे दृशति कामी स्याज्जानुनोः परम हा मतिः ॥ पादयोः षट् मृतिस्त
 स्य प्रोक्तवान्कमलाशनः ॥ ५४ ॥ अथ कन्याजनने गविभागः ॥ चतस्रो नाडिकाः शीर्षे कु-
 र्वीन्ति षण्णुनाशनम् ॥ मुखे षड्धन हानिः स्यात्कंठे पंच धना गमः ॥ ५५ ॥ कौटिल्यं हृद
 ये पंच बाह्वो विंशति गमं ततः ॥ वेदाः पाण्यो र्दया धर्मं वेदा गुह्येति कामिनी ॥ ५६ ॥ ज्येष्ठ
 रागुल नाशश्च जंघयो र्युग नाडिका ॥ ज्येष्ठ भात विनाशश्च चतस्रो जानु युग्मके

५७ ॥ पादयोर्दंष्ट्रा नाड्यश्च तत्र वैधव्य मादिशेत् ॥ द्यति मूल प्रसूतायाः मुनिभिः फल
 मीरितम् ॥ ५८ ॥ अथाश्लेषा फलम् पुत्रकन्ययोः ॥ मूर्द्धि पंच सु राज्याप्ति भुले सप्त पितृ क्षयः
 ॥ नेत्रे द्वे जननी नाशे ग्रीवायां स्त्रीयुलंपटः ॥ ५९ ॥ स्कंधे वेदा गुणे भक्तिः हस्तेऽष्टौ च व-
 ली भवेत् ॥ हृदये कादश भिन्नात्म घाती संजायते नरः ॥ ६० ॥ स्त्री वान्नाभौ भ्रमः प-
 ङ्क्ति गुदे नवतयोधनः ॥ पादे पंच धनं हति साय्या देतफलं क्रमात् ॥ ६१ ॥ अथाश्लेषा
 वृक्षः ॥ फलं पुष्पं दूलं प्रांखां त्वग्लता स्कंध एव च ॥ सार्य वल्यां च प्राक्षां क त्वरति श्वा-
 र्क सागरः ॥ ६२ ॥ नाडिका लङ्घ वे चाले फल ज्ञेयं यथा क्रमम् ॥ श्रीः श्री राज भयं हा-
 नि र्मातृ पित्रात्म संक्षयः ॥ ६३ ॥ अथ ज्येष्ठा पाद फलम् ॥ आधे पादेऽग्र जं हंति ज्येष्ठा
 या मनुजं द्विके ॥ तृतीये जननी हंति स्वात्मानं च तुरिय के ॥ ६४ ॥ पुनः ज्येष्ठा दो-
 जननी माता द्वितीये जननी पिता ॥ तृतीये जननी भ्राता स्वयं माना चतुर्य के ॥ ६५
 ॥ अत्मानं पंचमे हंति षष्ठे गोत्र क्षयो भवेत् ॥ सप्तमे चोभय कुलं ज्येष्ठ भ्रातर मष्ट

मे ॥ ६६ ॥ नवमे स्वसुरं हन्ति सर्वं हन्ति दशमं शकः ॥ निर्ऋत्यभोद्भूत सुत स्सुता वाल्मि-
 प्रादवश्य स्वसुरं नि हन्ति ॥ तदं त्य पादे जनितो निहन्ति तस्योल्भ मेणाहि भवेत्कलत्रम्
 ॥ ६७ ॥ सुरेयता राजनिता धवा गजं द्विदैव ताराजनिता च देवरम् ॥ पुंल्लेखे जनि-
 तः सुत स्तथा स्वस्या गजं हन्ती न पुत्रिका यदि ॥ ६८ ॥ मूल जा स्वसुरं हन्ति व्याल
 जा च तदं गजाम् ॥ माहेन्द्र जा गजं हन्ति देवरं तु द्विदैव जा ॥ ६९ ॥ धवा गजं हन्ति
 सुरेन्द्र जाता तथैव पत्न्या भगिनी पुमांश्च ॥ द्विदैव जा देवर माशु हन्याद्वार्यो नृजामाशु
 निहन्ति सन्तुः ॥ ७० ॥ पत्न्य गजाम गजं चाहन्ति ज्येष्ठा र्क्षतः पुमान् ॥ तथा भार्या स्वसा
 रं वा श्याल कं वा द्विदैव जः ॥ ७१ ॥ कन्यका देवरं हन्ति विशाखां त्य समुद्रवा ॥ आ-
 च पाद त्रये नैव आद्य भेतु पुमान् भवेत् ॥ ७२ ॥ नहन्या देवरं कन्या नृसा मिश्र द्विदै-
 व जा ॥ तदृक्षां नोद्भवा चर्ज्या दुष्टा वृश्चिक पुच्छवत् ॥ ७३ ॥ चित्रा चर्द्धे पुष्य मध्ये
 द्वि पादे पूर्वाषाढा धिह्न पादे तृतीये ॥ जातः पुत्रश्चोत्तरार्द्धे विधत्ते माता पित्रोऽर्थतरं

५७ ॥ पादयोर्दंष्ट्रा नाह्यश्च तत्र वैधव्य मादिशेत् ॥ इति मूल ग्रन्थलायाः मुनिभिः फल
 मीरितम् ॥ ५८ ॥ अथाश्लेषा फलम् पुत्रकन्ययोः ॥ मूर्द्धि पंच सु राज्याप्ति मुखे सप्त पितृ स्वयः
 ॥ नेत्रे द्वे जननी नाशे ग्रीवायां स्त्रीबुलंपटः ॥ ५९ ॥ स्कंधे वेसा गुणैः भक्तिः हस्तेऽष्टौ चक-
 री भवेत् ॥ हृदये कादशा भिश्चात्म घाती संजायते नरः ॥ ६० ॥ स्त्री वान्नाभौ अमः ष-
 ण्नि गुरे न वतयो धनः ॥ पादे पंच धनं हंति साध्या देतुफलं क्रमात् ॥ ६१ ॥ अथाश्लेषा
 वृक्षः ॥ फलं पुष्पं दलं शृण्वांस्त्वल्गता स्कंध एव च ॥ साध्यं चल्यां दध्ना क्षांक स्वस्वि श्वा-
 र्क सागरः ॥ ६२ ॥ नाडिका लङ्घ वे वाले फल क्षेप्यं यथा क्रमम् ॥ श्रीः श्री राजभयं हा-
 नि स्मां त पित्रात्म संक्षयः ॥ ६३ ॥ अथ ज्येष्ठा पाद फलम् ॥ आद्ये पादेऽग्र जं हंति ज्येष्ठा
 या मनुजं द्विके ॥ तृतीये जननी हंति स्वात्मानं च तुरीय के ॥ ६४ ॥ पुनः ज्येष्ठा द्वे
 जननी माता द्वितीये जननी पिता ॥ तृतीये जननी आता स्वयं माना चतुर्थ के ॥ ६५
 ॥ अथात्मानं पंचमे हंति षष्ठे गोत्र क्षयो भवेत् ॥ सप्तमे चोभय कुलं ज्येष्ठ आतर मष्ट

मे ॥ ६६ ॥ नवमे स्वसुरं हंति सर्वं हंति दशं शुकः ॥ निऋत्यभौद्रुत सुत स्वता वाधि
 प्रादवश्य स्वसुरं नि हंति ॥ तदं त्यपादे जनिनो निहंति तस्योत्क्रमेणाहि भवेत्कलत्रम्
 ॥ ६७ ॥ सुरेयता राजनिता धवा गजं द्विदेवता राजनिता च देवरम् ॥ पुंस्त्वर्हं जनि-
 तः सुत स्तथा स्वस्या गजं हंती न पुत्रिका यदि ॥ ६८ ॥ मूलजा स्वसुरं हंति व्याल
 जा च तदं गजाम् ॥ माहेन्द्रजा गजं हंति देवरं तु द्विदेवजा ॥ ६९ ॥ धवा गजं हंति
 सुरेन्द्रजाता तथैव पत्न्या भगीनी पुमांश्च ॥ द्विदेवजा देवरमाशु हंन्याद्वाय्या नृजामाशु
 निहंति सन्तुः ॥ ७० ॥ पत्न्य राजा म गजं वाहंति ज्येष्ठा सतिः सुमान् ॥ तथा माय्या स्वसा
 रं वा प्रयाल कं वा द्विदेवजः ॥ ७१ ॥ कन्यका देवरं हंति विशाखां त्य समुद्रवा ॥ आ
 द्य पादत्रये नैव स्थास्य भेनु पुमान् भवेत् ॥ ७२ ॥ नह्न्या देवरं कंन्या तुता मिश्र द्विदे
 वजा ॥ तदृक्षां तोड्वा चर्ज्या दुष्टा वृश्चिक पुच्छवत् ॥ ७३ ॥ चित्राद्यर्द्धं पुष्यमध्ये
 द्विपादे पूर्वाषाढा धिल पादे तृतीये ॥ जातः पुत्र प्रवोत्तर्गर्हं विधत्ते माता पित्रोर्भ्रातरं ॥ ७४ ॥

बालनाश्राम् ॥ ७४ ॥ द्विमासं चोत्तरा दोषः पुण्ये चैव त्रिमासिकः ॥ पूर्वा पादाद्युमे
 मासि चित्रा पारमासिकं फलम् ॥ ७५ ॥ नवमासं तथा श्लेषा मूले चाष्टकवर्षकं
 ॥ ज्येष्ठा पंचदशे मासि वर्जितम्पुन दर्शनम् ॥ ७६ ॥ व्यतीपातं गहानि स्यात्परि
 धे मृत्युमादिशेत् ॥ वैधृती पितृहानि स्यान्मृच्छेन्दा वंधतां व्रजेत् ॥ ७७ ॥ मूले
 समूलनाशस्यात्कुलनाशो धृतौ भवेत् ॥ विहृतांगे च हीने च संध्ययो रुभयो
 रापि ॥ ७८ ॥ पर्वण्यपि प्रसूतौ च सर्वा रिष्टभयप्रदः ॥ तद्वत्सदन्तजातश्च पाद
 जा तस्तथैव च ॥ ७९ ॥ तस्माच्छांतिं प्रकुर्वीत गृहाराणं क्रूरचेतसाम् ॥ पूर्णानिन्द्र
 ख्ययो स्तिथ्यो स्संधिर्नाडी द्वयं तथा ॥ ८० ॥ गंडांतं मृत्युदंजन्म यात्रो ह्यहव्रताः
 दिव्यु ॥ कुलीरसिंहयोः कीटचापयोर्भीन मेषयोः ॥ ८१ ॥ गंडांतं मंतगलं स्याद्द्व
 टिकाहं मतिप्रदम् ॥ तिथिगंडम् ॥ कृत्वा चतुर्दशी षोढा कुर्व्यादादौ शुभं स्मृतम् ॥ द्वि
 तीये पितरं हन्ति तृतीये हानिमातरं ॥ ८२ ॥ चतुर्थे मातुलं हन्ति पंचमेवंशनाशनं ॥ १३२

षष्ठे च धन नाशः स्यादात्मनो वंश नाशनम् ॥ ८३ ॥ अथैते वादानं ॥ तिथि गंडे च नष्टा हं नक्ष
 त्रे धेनु रुच्यते ॥ कांचनं लग्न गंडे तु गंड दोषी विनश्यति ॥ ८४ ॥ उत्तरे तिल पात्रं स्यात्सु
 खे गोदानं सुच्यते ॥ अजा प्रदानं त्वाङ्गे स्यात्पूर्वा पादे तु कांचनम् ॥ ८५ ॥ उत्तरातिथ्य
 चित्रासु पूर्वा पादोद्भवस्य च ॥ कुर्व्याच्छांतिं प्रयत्नेन नक्षत्राकारजां पुनः ॥ ८६ ॥ य-
 द्ये कस्मिन् धिले जायते दुहितरोऽथवा पुत्राः ॥ पितुं रंतं कराद्ये ते यद्यपरे श्रीतिरनुला
 स्यात् ॥ ८७ ॥ एकस्मिन्नेव नक्षत्रे भ्रात्रोर्वापित् पुत्रयोः ॥ प्रसूतिश्च तयोर्मृत्युर्भवे-
 देकस्य निश्चिनम् ॥ ८८ ॥ ग्रहणे चंद सूर्यस्य प्रसूतिर्यदि जायते ॥ व्याधिः पीडा तथा
 स्त्रीणां आदौ तु ऋतु दर्शनात् ॥ ८९ ॥ अकाल प्रसवानार्यः कालातीत प्रजास्तथा ॥
 विद्वत् प्रसवा न्वैव युग्म प्रशवकास्तथा ॥ ९० ॥ अमानुषाश्च भुङ्क्वाश्च अजा तव्यं जना
 स्तथा ॥ हीनांगा अधि कोणाश्च जायंते यदि वास्त्रियः ॥ ९१ ॥ पशवः पक्षिणाश्चैव तथे-
 व च शरीररूपाः ॥ विनाशस्तस्य देशस्य कुलस्य च विनिर्दिशेत् ॥ ९२ ॥ निर्वसि येनो-

नगरात्ततश्शान्तिं समाचरेत् ॥ अथ निकटोपः ॥ सुतत्रये सुता चै तस्या च त्रये वा सुतो
 यदि ॥ माता पित्रोः कुलस्यापि तत्पानिष्ठं महद्भवेत् ॥ ८३ ॥ एते द्रष्टृकालाः ॥ गंडांतः प-
 रिधः प्रलूनं व्यतीपातोऽथ वैद्यमतिः ॥ मूला श्लेयाथ्यं नाज्ये खा जंम पंढोऽर्कं संक्रम-
 म् ॥ ८४ ॥ गंडुयोगो मृति भद्रा व्याघातो हग्ध वासरः ॥ कृष्णा चतुर्दशी पात स्त-
 तस्मोदरजन्म भम् ॥ ८५ ॥ तथाव मद्दिनं नेष्टं जन्म काले शिशोः श्लेयः ॥ तद्दोष-
 परिहाराय श्रान्तिं कुर्व्याद्यथा विधि ॥ ८६ ॥ अथ जन्म समये द्वादश भाव फलम् अथ तनु स्या-
 नस्य ॥ लग्न रियतो दिनकरः कुरुते ग पीढां पृथ्वी सुतो वितनुते रुधिर प्रकीर्णं ॥ छाया सु-
 ततः प्रकुरुते बहु दुःख भाजं जीवेन्नु भार्गव बुधाः सुख कांति दाः स्युः ॥ ८७ ॥ अथ
 धन स्थानस्य ॥ दुःखा बहू धन विना प्रकरः प्रदिष्टा विन्ने स्थितारवि प्रनेश्वर भूमि पुत्राः
 ॥ चंद्रे बुधः सुरगुरु भृगु नंदनो वानाना विधं धन चये कुरुते धनस्थः ॥ ८८ ॥ अथ सह-
 ज स्थानस्य ॥ भानुः करोति विरुजं रजनी करोति कीर्त्या युतं क्षिति सुतः प्रचुर प्रकीपम् ॥ ८९ ॥

॥ अष्टदिं बुधः सुविनीतवेषं रत्नीणां प्रियं गुरु कवी रविजस्तृतीये ॥ २६ ॥
 अथ सुहवस्थानस्याद्वादित्य भौम धनयः सुखवर्जितां गं कुर्वन्ति जन्मनि नरं सुचिरं चतु-
 र्धं ॥ सोमो बुधः सुरगुरु र्भृगु मन्दनो वा सौख्या न्वितं च नृप कर्मरत्नं प्रधानम् ॥
 ॥ २७ ॥ अथ सुतस्थानस्य ॥ पुत्रे रविः प्रचुर कोपयुतं बुधश्च स्वल्या त्मजं प्रनिधरा तनु
 जाव पुत्रं ॥ सुक्रैन्दु देव गुरुवः सुत धाम संस्थाः कुर्वन्ति पुत्र बहुलं सुखिनं सुरूपम्
 ॥ १ ॥ अथ पितृस्थानस्य ॥ मातृद भूमि तनुजौ हत प्रानु पक्षं पंगु नरं रिपु गृहेष्वति पूज
 नीयं ॥ काव्यैन्दुजौ मतिविहीन मनल्य रोगं जीवः करोति विकलं मरणं प्राशङ्कः ॥
 ॥ २ ॥ अथ जाया स्थानस्य ॥ तिग्मां प्रु भौम रविजाः किल सप्त मस्या जायां कु कर्मीनि
 रतो तनु संत तिच ॥ जीवेन्दु भार्गवि बुधा बहु पुत्र युक्तो रूपा न्वितां जन मनो हर रूप
 प्रीलां ॥ ३ ॥ अथ मृत्यु स्थानस्य ॥ सर्वे गृहा दिन कर प्रसुरा नि तांतं मृत्यु स्थिता
 नि तनुते किल दुष्ट बुद्धिम् ॥ शस्त्राभिघात परिपीडित गात्रयष्टिं सौख्ये विहीन ज-

ति रोगगणौ रूपे तम् ॥ ४ ॥ अथ धर्मस्थानस्य ॥ धर्मस्थितारवि शानैश्चर भूमिपुत्राः कु-
 र्वन्ति धर्मरहितं विवर्तते कुशील ॥ चन्द्रो बुधो भृगु सुतः सुरराजमंत्री धर्मं क्रिया-
 सुनिरतं कुरुते मनुष्यम् ॥ ५ ॥ अथ कर्मस्थानस्य ॥ आदित्य भौम शनयः किल क-
 र्मसंस्थाः कुर्युर्नरं बहु कर्ममरुतं कुपुत्रम् ॥ चंद्रः सुकीर्तिं मुशना बहुविन्नयुक्तं रू-
 पान्वितं बुधगुरू शुभ कर्म भाजम् ॥ ६ ॥ अथ लाभस्थानस्य ॥ लाभस्थितो दिन क-
 रो नृपलाभ युक्तं नारायणं पतिं बहु धनं क्षितिजः क्षितीशम् ॥ सौम्यो विवेक सुभगं च ध-
 नायुषज्यः शुक्रः करोति सगुणं रविजः सुकीर्तिम् ॥ ७ ॥ अथ व्ययस्थानस्य ॥ सूर्यः क-
 रोति पुरुषं व्यय गोविशीलं कारणं शशी क्षिति सुतो बहु पाप भाजं ॥ चंद्रांगजोगत-
 धनं धियराः कृशांगं शुक्रो बहु व्यय करं रविजः सुतीव्रम् ॥ ८ ॥ राहु केतुफलं सर्वं म-
 न्दवत्कथितं म्बुधैः ॥ अथ मृत्युयोगः ॥ चंद्राष्टमं च धरणी सुत सप्तमं च राहु नवं च शनि
 जन्म गुरुस्तृतीये ॥ अर्कस्तु पंच भृगु षष्ठ बुधश्च तुर्ये जातो न जीवति नरः प्रवदन्ति सं-

तः ॥ ८ ॥ अथ स्त्रीहंतायोगः ॥ पक्षे च भवने भौमो राहुः सप्तम संभवः ॥ अथ मे च यदा
 सौरि स्तस्य भार्या न जीवति ॥ १० ॥ अथ पराक्रमयोगः ॥ मूर्त्तो धुक् क्रुधो यस्य केन्द्रे
 चैव वहस्पतिः ॥ दशमों गार्को यस्य सन्नेयः कुल दीपकः ॥ ११ ॥ अथ दुर्वलयोगः ॥
 नैव शुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे वहस्पतिः ॥ दशमों गार्को नैव सजातः किं करि-
 व्यति ॥ १२ ॥ अथ जातिभंग काक योगः ॥ धन स्थाने यदा सौरिः सैहिके यो धरात्मजः ॥ शु-
 क्रो गुरुः सप्तमे च त्वष्ट मौरवि चंद्रको ॥ १३ ॥ ब्रह्म पुत्र पदे वापि वेण्यासु च सदा रतिः ॥
 प्राप्ते विंशति मे चर्ये म्लेच्छो भवति नान्यथा ॥ १४ ॥ अथ मातृ पितृ नाशक योगः ॥ पक्षे च
 द्वादशे राशौ यदा पाप ग्रहो भवेत् ॥ तदा मातृ भयं विद्या चतुर्थे दशमे पितुः ॥ १५ ॥ अ-
 थ मृत्यु कारक योगः ॥ अर्को राहु कुजः सौरि लघ्ने तिष्ठति पंचमे ॥ पितरं मातरं हंति आतरं
 स्वं शिशुं क्रमात् ॥ १६ ॥ लग्न स्थाने यदा सौरिः पक्षे भवति चंद्रमाः ॥ कुजस्तु सप्तमे
 स्थाने पिता तस्य न जीवति ॥ १७ ॥ पाता लस्थो यदा राहु श्वेदुः पक्षाट मे पिच ॥ पाप

॥ ३० ॥ गुरुः कर्कच नक्त्रे च मीन कन्ये रसितस्य च ॥ मंदस्तुलायां मेघे च कन्या राहु ग्रह
स्य च ॥ ३८ ॥ राहु युग्मे तु चापे च तमो वंत्के तु जं फलम् ॥ प्रोक्तं गृहाणा मुच्चत्व नी
चत्वं च क्रमाद्बुधैः ॥ ३९ ॥ अथ जन्मलग्न फलम् ॥ मेघे दैन्यं भुयैति गर्वित वृषे ना ना मति
र्मन्मथे शूरः कर्कट के धृती च वन पे कन्या च साया न्विता ॥ सत्यं चैव तुलैस्त्व लो मलि

अथ ग्रहणा मुच्चत्व नीच व्यव्त्तानार्थ चक्रम्

गृह	सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
उच्च	मेघ	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	तुला
नीच	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेघ	धन	मेघ

न ता पापा न्वितं वै धनु र्मुखं त्वं मकरे घटे
च तुरता मीने त्व धीरा मतिः ॥ ३० ॥

अथ स्त्री जातकम् ॥ अथ तनु स्थानस्य ॥ मूर्तौ
करोति विधवां दिन कल्कुजश्च राहु र्विन

ए तनयां रवि जो हरिद्रां ॥ शुक्रः शशं क तनयश्च गुरुश्च साध्वी मायुः क्षयं च कुरुते
त्र च सर्वरीशः ॥ ३१ ॥ अथ धन स्थानस्य ॥ कुर्वति भास्कर शनैश्च राहु भौमा दारि-
द्रा दुःख मतुलं नियतं द्वितीये ॥ वित्ते श्वरी मविधवा गुरु शुक्र सौम्या नारीं प्रसूत तनया

कुरुते श्रांशंकः ॥ ३३ ॥ अथ सहज स्थानस्य ॥ सूर्योदु भौग गुरु शुक्र बुधा स्थनीये कुर्बु-
रित्रयं बहु सुतां धन भागिनी च ॥ सत्यं दिवाकर् सुतः कुरुते धनाढ्या लाक्ष्मी ददाति
नियतं किल सैहिकेयः ॥ ३४ ॥ अथ सुहृत्स्थानस्य ॥ स्वल्पं ययो भवति सूर्य सुते चतुर्थे दोर्भा-
ग्य मुषा किरणः कुरुते शशी च ॥ राहुर्विनष्ट तनयां क्षिति जो ल्यजीवां सोरव्या न्वितो
भृगु सुरेज्य बुधाम्ब कुर्बुः ॥ ३५ ॥ अथ सुस्थानस्य ॥ नद्यात्मजां रविकुजौ खलु पंचमस्थौ
चंद्रात्मजौ बहु सुतां गुरु भार्गवौ च ॥ राहुर्ददाति मरणं रविजस्तु रोगं कन्या प्रसूति नि-
रतां कुरुते श्रांशंकः ॥ ३६ ॥ अथ पितृस्थानस्य ॥ षष्ठ स्थिताः प्राणि दिवाकर् राहु भौम जी-
वास्तथा बहु सुतां धन भागिनी च ॥ चंद्रः करोति विधवा मुशना हरिद्रं वेध्यां श्रांशंक
तनयः कलह प्रियां च ॥ ३७ ॥ अथ जाया स्थानस्य ॥ सौराजीव बुध राहु रवीन्दु शुक्रा द्युः
प्रसह्य मरणं खलु सप्त मस्थाः ॥ वैधव्य वंधन मयं क्षय वित्तनाश व्याधि प्रवास मरण
नियतं क्रमेण ॥ ३८ ॥ अथ मृत्युस्थानस्य ॥ स्थाने द्यमे गुरु बुधौ नयते वियोगं मृत्युं

भृगु सुतश्च तथैव राहुः ॥ सूर्यः करोति विधवां धनिनी कुजश्च सूर्यात्मजो बहु सुतां प
 ति वल्लभां च ॥ ३९ ॥ अथ धर्मस्थानस्य ॥ धर्मस्थिता भृगु दिवा कर् भूमि पुत्रं जीवाः सु-
 धर्म निरतां शशिशः सुभोगां ॥ राहुश्च सूर्य तनयश्च करोति वंध्यां नारी प्रसूत तनयां-
 कुरुते शशशंकः ॥ ४० ॥ अथ कर्मस्थानस्य ॥ राहुर्न भस्थ लगतो विधवां करोति पापे परां
 दिन कश्च शनैश्चरश्च ॥ मृत्युं कुजो र्थ रहितां कुटिलां च चंद्रः शेषाग्रहा धन वती बहु
 वल्लभां च ॥ ४१ ॥ अथ आयुस्थानस्य ॥ सायि रवि बहु सुतां धनिनी शशशंकः पुत्रान्वितां हि
 तिसुतो रविजो धनाढ्यां ॥ आयुर्वमती सुरगुरु भृगुजः सुपुत्री राहुः करोति सुभगां सुखि
 नी बुधश्च ॥ ४२ ॥ अथ व्ययस्थानस्य ॥ अंत्ये धन व्यय वती दिन रुद्र रिशं वंध्यां कुजः प
 ररतां कुटिलां च राहुः ॥ साध्वी सितेज्य शशिशजा बहु पुत्र पौत्र युक्ता विधुः प्रकुरुते व्यय
 गोदिनां धां ॥ ४३ ॥ अथ अष्टोत्तरी दशाक्रमम् ॥ आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्य ज्ञान्लेषा तुरवे दृशा ॥
 मघा पूर्वोत्तरा चैव चंद्रस्य च दृशा तथा ॥ ४४ ॥ हस्तो विशाखा चित्रा च स्वाती भौम दृशा स्तु

ता ॥ ज्येष्ठा नुराधा मूले च सौम्यस्य च दशा बुधैः ॥ ४५ ॥ अभिजिच्छ्वराः पूषा ऊषा
 चैव शनेर्दशा ॥ धनिष्ठा शत तारां च पूर्वा भाद्र पदा गुरोः ॥ ४६ ॥ उभा पूषा अश्विनी का
 ल राहो अश्वेव दशा स्मृता ॥ कृत्तिका रोहिणी चोक्ता मृगः शुक्र दशा बुधैः ४७ एषां भानां क्ष
 मैशेव ज्ञेयाः सूर्यादि का दशाः ॥ क्रूरजा अशुभा भोक्ता शुभास्यात्सौम्य खेतजा ॥ ४८
 ॥ अथ महा दशा वर्ष संख्या ॥ सूर्यस्य षड्वर्षाणि द्वादशैव पंच दशैव च ॥ भौमस्य च सुवर्षाणि
 अथि चंद्र बुधस्य च ॥ ४९ ॥ मंदस्य दश वर्षाणि गुरो अश्वे को न विंशतिः ॥ राहोर्द्वादशाव
 र्षाणि शुक्र स्यैको न विंशतिः ॥ ५० ॥ अथातर्दशा क्रमः ॥ महा दशा स्व स्व दशा वृ निघ्रा
 भक्ताः स्ववाह शशिभिः समाद्याः ॥ अंतर्दशास्य गुरो ने च रागांत देव आवो हि महा
 दशा स्यान् ॥ ५१ ॥ अथ विंशतिर्दशा क्रमम् ॥ नयनो न जनो भूमिक हत् क्रमशो के लुङ्
 जा गुरु रयः ॥ शनि चंद्र ज केतु भार्गवाः परि शेषा तु दशाधिपा स्ततः ॥ ५२ ॥ अस्तु
 दिग्गिरयो धृति र्नुपाति धृति भेद्य ह्या नखाः समाः ॥ क्रमतो हिमता अथादिमा जग्नि

चिन्तादिः पुः पुः स्तेपाः					चंद्रस्य मघाः पूर्वाफा उत्तरा फाः					भीमस्य हस्त चित्रा स्वाति विषाः					बुधस्य मनुष्या ज्येष्ठा मूल								
गुरुः	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
मध्य	०	४	२०	०	अशुभ	चंद्र	२	१	०	०	शुभ	भीम	०	७	३	२०	अशुभ	बुध	२	८	३	२०	शुभ
चंद्र	०	१०	०	०	शुभ	भीम	१	१	१०	०	अशुभ	बुध	१	३	३	२०	शुभ	शनि	१	६	१६	४०	अशुभ
भीम	०	५	१०	०	अशुभ	बुध	२	४	१०	०	शुभ	शनि	०	८	२६	४०	अशुभ	गुरु	२	११	२६	४०	शुभ
शनि	०	१२	२०	०	शुभ	शनि	१	४	२०	०	अशुभ	शुक्र	१	४	२६	४०	शुभ	गुरु	१	१०	२९	०	अशुभ
गुरु	१	०	२०	०	अशुभ	गुरु	२	७	२०	०	शुभ	गुरु	०	१०	२०	०	अशुभ	शुक्र	३	३	२०	०	शुभ
शुक्र	१	०	२०	०	शुभ	गुरु	१	८	०	०	अशुभ	शुक्र	१	६	२०	०	शुभ	रवि	०	११	२९	०	अशुभ
शुक्र	१	०	०	०	अशुभ	शुक्र	२	१२	०	०	शुभ	रवि	०	५	१०	०	अशुभ	चंद्र	२	४	१०	०	शुभ
शुक्र	२	०	०	०	शुभ	रवि	०	१०	०	०	अशुभ	चंद्र	१	१	१०	०	शुभ	भीम	२	३	३	२०	अशुभ
संख्या	६	०	०	०	०	संख्या	२५	०	०	०	०	संख्या	८	०	०	०	०	संख्या	१०	०	०	०	०

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

५५४

रत्नेः पूर्णपाठ उत्तराषाढाभिषेक					गुरोः धनिएाशतमिति				गुरोः उत्तरभाद्रपदशुक्लभार				शुक्लस्य कनिका रोहिणी शुभशिर				
गुरु	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल	गुरु	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल	गुरु	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
शनि	०	११	३	२०	शुभ	गुरु	३	४	३	२०	शुभ	शुक्र	४	१	०	०	शुभ
गुरु	२	६	३	०	शुभ	गुरु	२	१	२०	०	शुभ	शुक्र	१	२	०	०	शुभ
गुरु	१	१	१०	०	शुभ	शुक्र	३	८	२०	०	शुभ	शुक्र	२	२१	०	०	शुभ
शुक्र	१	११	१०	०	शुभ	शनि	१	०	२०	०	शुभ	शुक्र	२	६	२०	०	शुभ
शनि	०	६	२०	०	शुभ	चंद्र	२	७	२०	०	शुभ	शुक्र	३	३	२०	०	शुभ
चंद्र	१	४	२०	०	शुभ	भौम	१	४	२६	४०	शुभ	शनि	१	२१	१०	०	शुभ
भौम	०	८	२६	४०	शुभ	शुभ	२	११	२६	४०	शुभ	शुक्र	३	८	२०	०	शुभ
शुभ	१	६	२६	४०	शुभ	शनि	१	६	२६	२०	शुभ	शुक्र	२	४	०	०	शुभ
संख्या	१०	०	०	०	०	संख्या	१६	०	०	०	०	संख्या	२१	०	०	०	०

२४४

मसि १४५ भस्या घटिका ससमाहताः ॥ ५२ ॥ भभोगेन भक्ताः फलं भक्त पाक स्तदूना दश सा भवे
 १४५ दोग्य संज्ञा ॥ अथविंशोत्तरीक्रमकोष्ठकः ॥ कृत्तिकादि क्रमेणीचक्षेत्राविंशोत्तरीदश ॥ अंत

सूर्यस्य मंदवर्षे दैर्घ्ये व				चंद्रस्य मंदवर्षे रेहि				भौमस्य मंदवर्षे ७ मृगशिरा				शुक्रो मंदवर्षे २०				गुरोः मंदवर्षे मू			
मंदवर्षाः ७ या				हस्त श्रवणा १०				चित्रा धनिष्ठा				आर्द्रा स्वाति प्रतभिष				पुनर्विशा पूर्वा भा			
नाम	वर्ष	मास	दिवस	नाम	वर्ष	मास	दिन	नाम	वर्ष	मास	दिन	नाम	वर्ष	मास	दिन	नाम	वर्ष	मास	दिन
रवि	०	३	१८	चंद्र	०	१०	०	भौम	०	४	२७	राहु	२	४	१२	गुरु	२	१	१८
चंद्र	०	६	६	भौम	०	७	०	राहु	२	०	१८	गुरु	२	४	१४	शनि	२	६	१२
भौम	०	४	६	राहु	१	६	०	गुरु	०	११	६	शनि	२	१०	६	बुध	२	३	६
राहु	०	१०	१४	गुरु	२	४	०	शनि	१	१	६	बुध	२	६	१८	केतु	०	११	६
गुरु	०	६	१८	शनि	१	७	०	बुध	०	११	२७	केतु	१	०	१८	शुक्र	२	८	०
शनि	०	११	१२	बुध	०	५	०	केतु	०	४	२७	शुक्र	३	०	०	रवि	०	६	१८
बुध	०	१०	६	केतु	१	७	०	शुक्र	१	६	०	रवि	०	१०	१४	चंद्र	१	४	०
केतु	१	४	६	शुक्र	१	८	०	रवि	०	४	६	चंद्र	१	६	०	भौम	०	११	६
शुक्र	१	०	०	रवि	०	६	०	चंद्र	०	७	०	भौम	१	१	१८	राहु	२	४	१४

१४६ दृष्टा गुना वर्षे मास वासर वर्तिताः ॥ ५३ ॥ अथ रवि दृष्टा फलम् ॥ दृष्टांतरं च निज वंश

१४६ विद्योगा दुःखं उद्देग रोग भय चौर भवा च पीडा ॥ पूर्व स्थितस्य निरिवल स्वपुनस्य नाशो-

प्रदोः मंदर्वधन् १४६					बुधस्य मंदर्वधन् १४७ प्रक्षेपा					क्रितीः मंदर्वधन् १४८ मया					सुकस्य गंदर्वधन् १४९ फा					भातो
उतः भा युगाः अनुपाः					ज्येष्ठा					मूलः आश्विनी					पूर्वाषाढा भरणी					
नाम	वर्ष	गम	दिन	श्री	नाम	वर्ष	मास	दिन	घटी	नाम	वर्ष	मास	दिन	नाम	वर्ष	मास	दिन			
यनि	३	०	३	०	युध	२	४	२०	०	केव	०	४	२०	जुक्त	२	४	०			
बुध	२	०	२	०	केव	०	११	२०	०	भुक्त	१	२	०	यय्य	१	०	०			
केव	२	२	२	०	युक्त	२	१०	०	०	एष्य	०	६	०	चंद्र	१	८	०			
भुक्त	३	२	०	०	मर्ग	०	१०	६	०	चंद्र	०	७	०	भौम	१	२	०			
गि	०	११	१२	०	चंद्र	१	५	०	०	भौम	३	०	०	राहु	३	०	०			
चंद्र	२	७	०	०	भौम	०	११	२०	०	राहु	२	०	१८	गुरु	२	८	०			
भौम	२	०	२	०	राहु	२	६	२२	०	गुरु	०	११	६	यनि	३	२	०			
राहु	२	१०	६	०	गुरु	२	३	६	०	यनि	१	१	३	बुध	२	१०	०			
गुरु	२	६	१२	२६	राणि	२	८	२६	१७	बुध	०	११	०	केव	१	२	०			

भूतर्दशफलम् ॥ हेमादिभूतिवरवाहनयानलाभः शत्रुप्रतापवलवृद्धिपरंपराच ॥ वृष्टा
 न्मदानशयनासनभोजनानि नूनं सदा प्राप्तिदशगमने भवन्ति ॥ ४५ ॥ अथभौमस्य
 अंतर्दशफलम् ॥ भूपालचौरभयवन्नि कृताचपोडा सर्वाङ्गि. रोगअयदुःखसुदुःखि
 ताच ॥ विंताज्वरश्च बहु कष्टदरिद्रयुक्तस्या त्सर्वदा कुल दशा जन्मने भवन्ति ॥ ४६ ॥
 अथगृहेः अंतर्दशफलम् ॥ दीनो नरो भवति बुद्धि विहीनचित्ता सर्वाङ्गि. रोगभयदुःखसुदुःखि
 ताच ॥ पापानि वंधु बहु कष्टदरिद्रयुक्तं राहो दर्शजनन काल दशा भवन्ति ॥ ४७ ॥
 अथगुरोः अंतर्दशफलम् ॥ राज्याधिकारपरिवर्धितचित्तदृष्टिं धर्माधिकारपरिपालन
 सिद्धवृद्धिं ॥ सद्विगृहेपि धनधान्या समृद्धिताच स्याद्विस्ता गुरु दशा गमने भवन्ति ॥
 ४८ ॥ अथप्रनेः अंतर्दशफलम् ॥ मिथ्यापवादवधबंधनमर्थहानिस्त्रिंशे च वंधुवचने बुच
 युद्धबुद्धिः ॥ सिद्धं च कार्यमपि यत्र सदा विनष्टं स्यात्सर्वदा शनिदशा गमने भवन्ति ॥
 ४९ ॥ बुधस्य अंतर्दशफलम् ॥ दिव्यागनामदनसंगमकेलि सौख्यं नाना विलासमभिराग

१ संक्षिप्तसौमिरामैः ॥ हेमादिरत्नविभवागमकोशध्यानं स्यात्सर्वदा बुधदृशा गमने भवे
 ति ॥ ६० ॥ अथकेतोः शतदृशाफलम् ॥ भाव्या वियोगजनितं च शरीर दुःखं दुःखस्य हा
 निरति कष्ट परं परात् ॥ रोगाश्च वंधु कलहश्च विदेशता च केनोदृशजनन काल
 दृशा भवति ॥ ६१ ॥ अथ शुक्रस्य शतदृशाफलम् ॥ आरामं हृदि परि सर्वशरीरं हृदि प्रवेतात
 पत्र धन धान्य समी कुलं च ॥ आयुः शरीर सुत पौत्र सुखं नरणां दुःखं च भार्गव दृशा गमने
 भवति ॥ ६२ ॥ अथ योगिनी दृशाफलम् ॥ स्वर्क्षपिना किं नयनेः संयोज्यं वसुभिर्भजित
 ॥ योगिन्यष्टौ समाख्याता शून्य पातेन संकटा ॥ ६३ ॥ अथ योगिनीनां नामानि ॥ संगलापि-
 गला धान्या आमरी भक्षिका पित्त ॥ उल्का सिद्ध संकटा च योगिन्यष्टौ दृशाः स्मृताः ॥ ६४
 ॥ अथ वर्ग संख्या ॥ एक द्वित्रीणि चेदाश्च पंच षट् सप्त मानि च ॥ अष्ट वर्षाणि हि भवे मंगला
 द्यस्तनु क्रमात् ॥ ६५ ॥ अथ दृशपाः फलम् ॥ मंगला मंगला नंद यशो इविण दायिनी ॥ पिंगला
 तनुते व्याधि म्मनसो दुःख संभ्रमी ॥ ६६ ॥ धान्या धन सुहृद्वैद्य रूप सीमन्निनी करी ॥ म्या

मरी जन्म भूमि मी आमये त्सर्वतो दिग् ॥ ६७ ॥ भद्रिका सुख संपत्ति विला सवग्र दायिनी
 उल्का एज्य धना श्रेय्य हारिणी दुःख कारिणी ॥ ६८ ॥ सिद्धा साधयते कांक्ष्यं नृणां वै सु-
 खदा भवेत् ॥ संकटा शंकट व्याधि मरण क्लेश कारिणी ॥ ६९ ॥ अथ एणवर्यसंख्या ॥ रंविदि-
 न नख संख्या चंद्रमा व्योमवारौः क्षिति तनय गजाप्त्री चंद्रजः षट् प्रराश्रव ॥ प्रानिरस
 गुण संख्या वाचयति नीगवाले नयन युग कैरहः सप्ततिः शुक्र संख्या ॥ ७१ ॥ जन्मना
 विंशतिः सूर्ये तृतीये दश चंद्रमाः ॥ भौमश्चतुर्थे चाष्टौ च पंचे बुध चतुर्थके ॥ ७२ ॥ सप्त-
 मंदश सौमिः स्या नवमे चाष्टमे गुरोः ॥ दशमे राहु विंशत्या तदूर्ध्वे तु भृगोर्दश ॥ ७३ ॥ प्र-
 यफलम् ॥ पंचा भोगो नृतापक्ष सौख्यं पीडु धनं क्रमात् ॥ नाशः शोकश्च सौख्यं च जग्ग ह्य-
 र्य दश फलम् ॥ ७४ ॥ अथ गहरां दिनदश प्रकारः ॥ तिथि वारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वि-
 तं ॥ नवभिश्च हरेद्भागं श्रेवं दिनदशो ह्यते ॥ ७५ ॥ रवि चंद्रौ भौम राहु गुरु मंद बु के सितौ ॥
 क्रमेणैका दशा क्षेत्र्याः फलं पूर्वोक्तं ने वहि ॥ ७६ ॥ अथ रं च ॥ चतुर्गणा जन्मनारातिश्चित्रा

समन्विता ॥ नवभिस्तु हरेद्भागं श्रेष्ठं दिनदशोच्यते ॥ ७६ ॥ रवीच श्लोकसंतापो श-
 र्णांके क्षेमलाभको ॥ भूमिपुत्रे तु मृत्युः स्याद्बुधे भद्रा विवर्द्धनं ॥ ७७ ॥ शुरो विहं भृगो सोऽं-
 यन्नो यीडा न तं शयः ॥ राहो च घातयातो च वै तो मृत्युर्दश फलम् ॥ ७८ ॥ अथ स्तनयानम् ॥
 अन्नप्राशन नक्षत्रे दिवसो ह्यराधितुः ॥ जातकर्मोक्तनक्षत्रे श्रवा ॥ त्रयपुनर्वसो ॥ ७९ ॥
 ॥ त्यक्ता स्वन्ती स्तन्यपानं शुभं प्रोक्तं शुभे हनि ॥ एकत्रिंशद्दिने चैव पयश्रं खेन पाययेत् ॥
 ८० ॥ अथ सूतिकाक्तायः ॥ भैवज्यगदिते धिले वारुदुर्योगवर्जिते ॥ आरोग्यहेतवे क्वाधः
 सूतिकायाश्च ताच्छिशोः ॥ ८१ ॥ अथ सूतिकापथ्यम् ॥ अन्नाश नोक्त नक्षत्रे शुभाहे सांशुमा-
 लिनि ॥ हिल्वाऽऽरुक्तां च दुर्योगं सूतिकापथ्यमीरितम् ॥ ८२ ॥ अथ पंचमीपक्षीपूजा ॥ जन्म-
 तः पंचमेघस्ते जीवंत्याः पूजनं निश्रि ॥ षष्ठेऽन्हि षष्ठिका पूजागीतैर्जागरणादिभिः ॥ ८३ ॥
 ॥ अथ सूतिका स्नानम् ॥ हस्ते मृगेऽनुराधायां रोहिण्यां रेवती दूये ॥ उत्तरा नितये स्वातो जीवाक-
 कुजवासरे ॥ ८४ ॥ सूती स्नानं प्रशस्तं स्याद्दिहाया इति त्रयं श्रवम् ॥ विप्रशस्त्वां भरांगीमूलं ॥ ८५ ॥

चित्राख्यं कृतिकां संधा ॥ ८५ ॥ ऋक्तां बुधं शनिं यद्यौ द्वादशी मष्टमी नत्था ॥ अथार्धक-
 स्य दंतोत्पत्तौ फलम् ॥ उपरि प्रथमं यस्य जायते च शिशो द्विजाः ॥ दंतैर्वा सिंहस्य स्याज्ज-
 न्मभार्गव सत्तम ॥ ८६ ॥ स्वात्मानं प्रथमे आसि द्वितीये चानुजो स्तथा ॥ तृतीये भ-
 गिनी तुर्थे मातरं पंचमेऽग्रजान् ॥ ८७ ॥ निहन्या द्वाशनोत्पत्तौ स दंत स्त्वर्भकोऽखि-
 लान् ॥ यद्यादौ लभते भोगानूर्ध्वं पंक्ताव सत्सदा ॥ ८८ ॥ दंता नामष्टमे मासि षष्ठे-
 मासि ततः पुनः ॥ दन्ता यस्य च जायते माता वाग्नियते पिता ॥ ८९ ॥ बालको मृत्य-
 ते तत्र स्वयमेव न संशयः ॥ अथ दंतनिर्मुक्तिः ॥ प्रथमं दंत निर्मुक्ति रूर्ध्वं बालस्य चेद्भ-
 वेत् ॥ त्रैलोक्याय मातुलस्ये ह तथा प्रीक्ता महर्षिभिः ॥ ९० ॥ अथ जलपूजा ॥ पुनर्वसू द्वये
 हस्ते मृगे मूलानुराधयोः ॥ अवे गुरो बुधे चंद्रे सत्तिथौ जल पूजनम् ॥ ९१ ॥ गुरो शु-
 क्रेऽस्तमे चैत्रे पौषे च मल मासके ॥ मास पूतौ विशुद्धा हेम कुप्या च जलाच्चैनम् ॥
 ९२ ॥ अथ शेला रोहणम् ॥ खद्वारे हस्तु कर्त्तव्यो द्वात्रिंशे पिव ॥ षोडशे दिवसे

॥ १ ॥ ततस्तृतीये कर्तव्ये मासि सूर्यस्य दर्शनम् ॥ चतुर्थे मासि कर्तव्यं शिशोः प्र-
 दस्य दर्शनम् ॥ २ ॥ मैत्रे पुष्य पुनर्वसौ प्रथमभे दोलेऽनुकूले विधौ हस्ते चैव सुरेष्वा-
 रे च मृगशिरा सुशस्ता सुच ॥ कुर्वायान्निःक्रमणं शिशोर्बुधगुरुशुक्रेश्वरिक्केतिथौ क-
 न्याकुम्भतुला मृगा रिभवने सौम्यग्रहा लोकिते ॥ ३ ॥ अथ कटि स्नानभूम्युपवेशनम् ॥ पुष्य
 हस्ताश्विनी मूले अश्विनरे रोहिणी मृगे ॥ ज्येष्ठाया सनुराधायां शुभाहे मासि पंचमे ॥ ४ ॥
 कुजे शुद्धे समभ्यर्च्य वाराहं धरणी भुवि ॥ कटि सूत्रमथो वङ्गवालिङ्गं चोपवेशयेत् ॥
 ५ ॥ पुस्तकं लेखनीं प्रास्त्रं तथा रोष्यं च कांचनम् ॥ तस्मिन्काले यवा दत्ते तद्बुल्या जीव-
 नं शिशोः ॥ ६ ॥ अथान्नप्राशनम् ॥ युग्मेषु मासेषु च षष्ठमासा तसो वत्सरे वानियतं शिश-
 नान् ॥ अथ युग्ममासेषु च कन्यकानां नवान्नसंप्राशनमिष्टमेतत् ॥ ७ ॥ रेवती हित-
 ये पुष्ये पुनर्वसु नुराधयोः ॥ अवणादि त्रये हस्तत्रितये रोहिणी मृगे ॥ ८ ॥ कर्णवैधे-
 तथा पानं क्षुरकम्बूनि भोजनम् ॥ पटुबंधनचौलान्नप्राशने चोपनायने ॥ ९ ॥ शुभं २५३

१२४ ॥ उज्ज्वलमयमभ्युपनिषत् ॥ उत्तराशुविष्टुद्धे च दशमे शुभवासे ॥ १० ॥ गोप्य
 कुम्भतुलाकन्यासिंहकर्कटयुग्मकाः ॥ शुभदा राशयश्चैते नमीनमेव दृष्टव्यकाः ॥
 ११ ॥ हित्वा ऋतं तथा नंदमयमी द्वादशी तथा ॥ तिथेः क्षयममां वारान् प्रणिभोमा-
 र्कसंज्ञकान् ॥ १२ ॥ जन्मराशि विलग्नाभ्यां नैधने श्रेष्ठं च वर्जयेत् ॥ संपूर्णो नूतनभया
 दृष्ट्योर्मध्येऽहः पूर्णसंज्ञकः ॥ १३ ॥ विनष्टे नूतनभयादृष्ट्योर्मध्येऽसौ क्षीरा सञ्ज्ञकः
 ॥ ॥ अथ तां वूलभक्षणम् ॥ सार्द्धमास द्वये दद्यात्तां वूलं प्रथमं शिशोः ॥ कर्पूरदिक्कं
 मिश्रं विलाशाय हिताय च ॥ १४ ॥ मूलार्कं तिथ्यं करचित्रहरीन्द्रभेषु योज्ये तथा मृग
 शिरोदिति वासवेषु ॥ अर्केन्दुजीवभृगुवोधनवासरेषु तां वूलभक्षणा विधिः स्मृति-
 भिः प्रदिष्टः ॥ १५ ॥ अथ कर्णवेधः ॥ मासे षष्ठे सप्तमे वाद्यमेवा वेध्यौ कर्णौ द्वादशे वो-
 दशेऽन्दि ॥ मध्ये नान्हः पूर्वभागेन रात्रौ नक्षत्रे द्वे द्वे तिथी वर्ज्येति ॥ १६ ॥ रेव-
 ती हितये पुष्ये पुनर्वसु नुराधयोः ॥ अथवा द्वितये चित्रा मृगे हस्ते शुभे तिथौ ॥ १७ ॥ १२५

आरस्य जन्म दिवसं याचन्निंशदिनं भवेत् ॥ जन्म मासः सविद्वयोषज्जितस्सर्वकर्मसु १५५

॥ हित्वा वमं चैत्र पौषौ जन्म मासं हरे प्रशयम् ॥ युगमाब्दं जन्म दिक् चैकोन विंशतारं
यथा क्रमात् ॥ १८ ॥ द्वेज्य सुक्रैन्दुवारेषु शस्तं विषमवर्षके ॥ सुतौ शुद्धे त्रिकोरोऽ
य केन्द्रे शुभ गृहान्विते ॥ १९ ॥ स्वयद्देगुरु सुक्रैवा त्रिषष्ठे कादशेऽशुभे ॥ गुरौ लक्ष्मे
ऽथवा कुर्यात्कर्ण वेधं शुभा वहम् ॥ २० ॥ कर्ण वेधोक्तभे शस्तं कन्याया द्वाणवे
धनम् ॥ अथाब्दमुहूर्तम् ॥ प्रतिवर्षं तु जन्माहे स्त्राया दुत्सव पूर्वकम् ॥ गणेशं वा स-
मभ्यर्च्य देवता श्रियं जीवितः ॥ २१ ॥ कृत्वा युध्यं च विध्युक्तं कर्मदानान्य नेकशः
॥ वध्वा मंगल सूत्रं च भुक्ता मिष्टं द्विजैस्सह ॥ २२ ॥ अथ चूडाकर्म ॥ जलाशय सुराश
मप्रतिष्ठा व्रत वन्धनम् ॥ अन्या धानं विवाहं च चौलं राजाभिषेचनम् ॥ २३ ॥ शु-
रु भागवियो रस्ते वाल्य वार्द्धक्यो रपि ॥ केतुद्वयेऽपि वै न स्यादिति विद्वत्स्य संमतम्
॥ २४ ॥ दृष्टाद्दे पश्चिमे वाल्यं पंचाहं वार्द्धकं भृगोः ॥ प्राच्यां तु निदिनं वाल्यं पक्षवार्द्ध

कमुच्यते ॥ २५ ॥ पक्षं वाल्यं च वार्द्धक्यं गुरोः स्थाज्यं शुभे सदा ॥ दृष्ट्वा हं वाल्यवार्द्धक्यं
 जरे सप्ताहं सूचिरे ॥ २६ ॥ अहं चावश्यं के कृत्ये केचिद्भगवज्जीवयोः ॥ भुक्तो गुरुः प्रा-
 क्य रतश्च वालो विध्येदृशं वति यु सप्त रात्रम् ॥ वंगेयुर्हूणोयु च घटं च पंच शोषे तु देशे
 त्रि दिनं निषिद्धम् ॥ २७ ॥ अथ भुक्तो दयास्तमानम् ॥ प्राच्यानेत्रेषु दिग्घृत्नान् २५२
 दृश्यो भवति भार्गवः वसु शैल ७८ मितास्तत्र यातोऽस्त्वं नैव दृश्यते ॥ २८ ॥ ख-
 वाणाश्च मितान् घृत्नान् २५० प्रतीच्यां दृश्यते भृगुः ॥ तत्रैवार्कं करगुप्तो न बाह्य-
 निन दृश्यते ॥ २९ ॥ अथ गुरुदयास्तमानम् ॥ प्रायो वाचस्य तिस्रसां भवती क्षरा गो-
 चरः ॥ प्राच्या मुखयते मासं याति पश्चाच्च वत्सरान् ॥ ३० ॥ अथेक्षोर्वालं दृढत्वम् ॥ दृ-
 ष्त्वमिदो स्त्रि दिनं दिनाहं वालं त्वमस्तत्त्वमहर्द्वयं च ॥ हिनोक्तमेकं दिवसं पश्चात्
 त्वमित्येतदिदं स्तदुक्तमेव ॥ ३१ ॥ अथ केतुद्वयम् ॥ त्रिंश्रि रवाश्च त्रिताराश्च रक्त-
 लोहितरश्मयः ॥ प्रायश्चित्तं तत्र माशं सचन्ते नित्यमेव हि ॥ ३२ ॥ केतो रस्तदिना २५३

स हि दुर्जं सप्त रात्राणि वर्जयेत् ॥ ब्राह्मणुन्नोद्गमे वर्ज्यं स्रत यात्रादि मंगलम् ॥ ३३ ॥ ब्राह्मणसु-
 तस्य निशि खोवर्णे स्त्रिभिर्गुणं तकरः ॥ अनियत दिवसं प्रभुवो विद्वेयो ब्रह्म दंडारव्यः
 ॥ ३४ ॥ केतो रस्स दिना दुर्जं सप्ताहं मंगलं त्यजेत् ॥ यावन्केतुं ह्यस्ता वदुष्टुस्समयो हि
 सः ॥ ३५ ॥ केतूह्ये सप्त दिना निचोर्द्धं विहाय यात्रादिषु गर्हितानि ॥ दिनानि शेषाणि
 शुभानि नूनं वदन्ति रैभ्य प्रमुखा मुनीन्द्रा ॥ ३६ ॥ चैलं संवत्सरे पूर्णे त्रितया द्विषमे चरे-
 त् ॥ सौम्याचने विचैत्रेयु ज्ञेज्य शुक्लेन्दु वासरे ॥ ३७ ॥ अथ स्याद्ब्राह्मण स्याकै क्षत्रिय-
 स्य कुजे हनि ॥ मंदाहे वैश्य शूद्राणं चै लोक्त तिथिभदिषु ॥ ३८ ॥ हस्ताष्वि विष्णु
 पौष्णानि अविद्या दित्य पुष्यभम् ॥ सौर्यचित्रे तथा क्षौरे उत्तमान वतार काः ॥ ३९ ॥
 श्रीरायुचराणि वायव्य रोहिणी चारुणं तथा ॥ क्षौरे षण्मा ध्यमा प्रोक्ता श्रेष्ठा द्वादशराग-
 हिताः ॥ ४० ॥ क्षौरे जन्म लग्नं शुभम् ॥ कृषिं प्रयाणं क्षौरे च विवाहः प्राशनं तथा ॥ श्री-
 शोर्वत्सं च शानं च जन्म राशौ शुभं भवेत् ॥ ४१ ॥ पात्न राशुदये षष्ठे द्वादशे निधने

तथा ॥ शत्रुक्षेत्रे च नीचे च क्षौरं नैव प्रशस्यते ॥ ४२ ॥ सेवे दुःखो सुगेहे च वृद्धि
 के व्यग्रं भवेत् ॥ राजा वीधे च धनुषि शुभयुक्तेन पुष्यति ॥ ४३ ॥ विषयशत्रुजलेषु
 रैः पीड्यते मरणान्वितः ॥ क्षौरं मृत्युघने लग्ने शुभयुक्तेऽपि सशतः ॥ ४४ ॥ यामित्रे
 भास्करे क्षौरं मृत्युस्स्याद्भूमिजे तथा ॥ शुक्ले सौख्यविना शस्त्रान्मंदभाग्यं घने प्रे
 ॥ ४५ ॥ लग्ने रवेदेव लोप्येते चंद्रतारां वलान्विते ॥ ज्येष्ठे ज्येष्ठस्य नो भासे मार्ग
 शीर्षेऽपि के चन ॥ ४६ ॥ सूक्तो मर्तारि गर्भिरया चूडा कर्म्म न कारयेत् ॥ पंचमा
 व्यात्मा गर्भोर्द्धु गर्भिरया मपि कारयेत् ॥ ४७ ॥ यस्य मांगलिकं कृत्यं तस्य माता
 रजस्वला ॥ तदा मृत्युमवाप्नोति पंचमं दिवं विना ॥ ४८ ॥ विवाहो तस्य कार्भ्येषु
 रमः ॥ सौम्यायने शुभे मासि स्वाध्याय दिवसे शुभे ॥ रवौ जीवि बुधे शुक्ले लग्ने रवेदेव
 लान्विते ॥ ४९ ॥ रेवती द्वितये पुष्ये पुनर्वसु नुराधयोः ॥ आर्द्राख्ये अवगो हस्ते स्वातो

चित्राभिधेतथा ॥ ५१ ॥ हेरं वांवेच वाग्देवी तथा भ्यर्च्यैष्ट देवताः ॥ पंचमाब्देनरः
 कुर्यात्त्रिप्यारंभं बुधः सत्वा ॥ ५२ ॥ अथोपनयनम् ॥ आयोदृश द्वाह्म रास्यसावित्री
 नाभिवर्त्तते ॥ आच्छाद्विंशद्ब्रह्म वंधोर चतुर्विंशतिर्हिजः ॥ ५३ ॥ अनऊर्द्धं त्रयी-
 प्येते यथा काल मसं स्मृताः ॥ सावित्री पतिता ब्राह्मी भवत्यपि च गर्हिता ॥ ५४ ॥
 कश्यपः ॥ ऋतौ वसंतं विष्णोरां ग्रीष्मे राक्ष्णं सरद्यथ ॥ विशं मुखं च सर्वथा ह्रिजानां
 चोपनायनम् ॥ ५५ ॥ साधारणं च मासेषु माघादिषु च पंचसु ॥ विनर्तुना वसंते न
 कलपक्षे गलग्रहे ॥ ५६ ॥ अपराह्णे चोपनीतः पुनः संस्कारमर्हति ॥ त्रिधा विभज्य
 दिवसं तत्रादौ कर्म्मचैदिकम् ॥ ५७ ॥ द्वितीये मानुषं कार्यं तृतीयेऽश्वेनुषैतद्वम् ॥ चैष्टे
 लभेऽति शस्तः स्यात् क्षययोगी शिखे तरे ॥ ५८ ॥ शुक्लपक्षे भवेद्यज्वा स्वभेनुंगेति
 शेषतः ॥ वर्द्धमानोऽपि वाप्लर्गः चन्द्रो यदि विलम्बतः ॥ ५९ ॥ निःसं करोति त्रिभिर्लंगगः क्षय-
 गिराम् ॥ श्राव्साधिपतिवारश्च श्राव्साधिपवलं शिशोः ॥ श्राव्साधिपतिलंगं च भित्तयं दुर्लभं च- २५६

६० प्राखेष्ट गुरु शुक्राणां मौढ्ये वाल्ये च वार्द्धके ॥ ६१ ॥ नैवोप नयनं कार्यं वयो
 प्रोदुर्बले स्मृते ॥ प्रचुनीचाधि शत्रुस्ये स्वाश्रे वास्वो च भागने ॥ ६२ ॥ प्राखेष्टे वा
 गुरो शुक्ले ननीचं फलं मलुते ॥ जन्मोदये जन्म सुतारका सुभासे तथा जन्म तिथौ
 च राशौ व्रते न विप्रोऽल्य परिश्रुतोऽपि राक्षो विशेषः प्रथितः पृथिव्याम् ॥ ६३ ॥ म
 भीष्ट मे गर्ग पराशरद्वैः फलं यदुक्तं व्रतं वंधने तु ततोऽधिकं जन्म सुवारका सुभासेऽथ
 वा जन्म निवाडवानाम् ॥ ६४ ॥ जन्म क्षमासलग्नादौ व्रते विद्याधि को व्रतो ॥ आद्य
 गर्भे तु विप्राणां क्षत्रादीनामनादिमे ६५ ॥ बालस्य बलहीनोऽपि प्रांत्याजीवो बलप्रदः
 ॥ ६६ ॥ यथोक्तं वत्सरे कार्यं मनुक्ते नोपनायनम् ॥ उक्तेऽपि वर्षेन गुरुर्वली चेच्छा-
 त्या प्रशस्तं व्रतं वंधं कर्त्तुम् ॥ अनुक्तं वर्षं सुबलप्रदोऽपि नैव तयोर्बलं वली चेच्छा-
 ॥ व्रतं वंधे निवाहे च श्रुतिद्यायां विशेषतः ॥ गोचरे लोचकतर्क्यं वेधादिकं मकारणम्
 ६८ ॥ वैश्वस्तु ॥ व्यये पक्षेस्त्रिंशे व्रतेः स्वर्गे नंदे सुखे शरैः ॥ एते रुद्धेऽपि विद्धि गुरुः ॥

सप्तमः सुहो सुभो ॥ १७ ॥ राजमार्गः ॥ अथ वर्गविशुद्धये गुरु शीतां शुभानुसु ॥ वनो ह्य
 हो तु कर्त्तव्यो गो चरेण कदा चन ॥ अथ वर्गोरा ये शुद्धां स्ते शुद्धा सर्व कर्मसु ॥ १८ ॥
 स ॥ १९ ॥ यद्ये चैला दरे ॥ २० ॥ वनबंधश्च विप्राणां गर्भा ह्यजन्मतो ॥ २१ ॥
 दद्यु मे गर्भतोऽपि वा ॥ २२ ॥ विप्रस्य पीड शब्दार्थाहुविष्णुः तथ भूभुजान् ॥ वैश्या
 नां तु चतुर्विंशद्गौरा काल उदाहृतः ॥ २३ ॥ निज वर्गोऽथ शरावेष्ट आत्स ह्यगती श्व-
 रेऽसु ॥ धीर्जं वत्सु द्विजातीनां व्रतबंधः शुभा वहः ॥ २४ ॥ अथ वर्गेशिः ॥ जीवशुक्लो
 तु विप्रेशीश्च भुजां रविभौसजौ ॥ विप्रोऽज्ञानश्च सुद्राणां अत्यज्ञानो पतिः शनिः ॥ २५ ॥
 ॥ अथ वेदधीशः ॥ ऋग्वेदे शो गुरुः प्रोक्तो यजुषां भार्गवः पतिः ॥ सामवेदे श्वरो भौमः पति
 चंद तोर वलं पूर्व मुक्तं यासं वलौः शुभम् ॥ २६ ॥ अथ मासादिः ॥ आद्यात्यं च सुमासेषु ॥ २७ ॥

शुक्ले जीवन् भागवि ॥ केचित्पुच्छे पक्षेऽपि प्रथमं त्रिलवे जगुः ॥ ७६ ॥ अथ तिथयः
 द्वित्र्येकादशद्विकं च द्वादश प्रमिते तिथौ ॥ अश्विनी मृगं चित्रासु हस्ते स्वात्यां च श-
 क्रभे ॥ ८० ॥ पुष्ये च पूर्व फाल्गुण्यां श्रवणे पौष्णभे तथा ॥ वासवेशत नारासु व्रतबंधः
 प्रशस्यते ॥ ८१ ॥ अथ प्रतिवेदनक्षत्राणि ॥ मूले हस्तत्रये सार्य्यं सैके पूर्वात्रये तथा ॥
 अश्वेदध्यायिनां कार्य्यं मेखलावं धनं बुधैः ॥ ८२ ॥ पुष्ये पुनर्वसौ पौष्णे हस्ते मन्त्रे प्र-
 शंकुभे ॥ और्वे च प्रशस्ते स्याद्यजुषां मौजिवंधनम् ॥ ८३ ॥ पुष्यवासव हस्ता-
 श्विशिव करोन्नरात्रयम् ॥ अशस्तं मेखलावंधे वदनां सामगायिनाम् ॥ ८४ ॥ मृगं न-
 त्राश्विनी हस्ते रेवत्य निति वासवम् ॥ अथर्वयाहिनां शस्त्रोभगणोऽयं व्रताप्यरे ॥
 ८५ ॥ नयसाधारतो नक्षत्रविरेवः ॥ पुनर्वसौ व्रतं नक्षत्रभे केचनेति च ॥ अथ व्रतानि
 विद्म ॥ कृत्स्नपक्षे श्रौतौ राशौ प्रद्वेगे चागलगृहे ॥ अनाध्यायेऽपरस्मिन् यानं कुर्वाद्म
 तवंधनम् ॥ ८७ ॥ अथानाध्यायः ॥ संक्रातिर्युगमन्वादी द्वितीया ज्येष्ठशुक्लगा ॥

चैत्र कल तृतीया च द्वादशी माघ शुक्ल जा ॥ ८८ ॥ प्रति पक्षे ऽष्टमी चैव चतुर्दश्याः
 दिनत्रयम् ॥ अनाध्याया दर्मेव ज्या स्वाध्याय व्रत बंधयोः ॥ ८९ ॥ अथ प्रदीपः ॥ च-
 नुधी प्रथमे यागे यास युग्मे त्रयो दशौ ॥ सप्तमी सार्द्धयामे च अदीप सस्या न्निष्ण मुखे
 ॥ ९० ॥ अथ गलग्रहः ॥ सप्तम्या स्थितयं चैव त्रयोदश्या अतुष्टयम् ॥ चतुर्थी चैकतः
 प्रोक्ता अष्ट्या वेते गल ग्रहाः ॥ ९१ ॥ अथ लग्नफलम् ॥ त्रि ३ षट् ६ संस्थाः खलाः रेवे १०
 के चन्द्रो द्वि २ धन ७ ख १० त्रि ३ गः ॥ सौम्याः केन्द्र त्रिकोण स्याः १।४।७।१०।९॥
 ५। लाभे सर्वे व्रते शुभाः ॥ ९२ ॥ जीवेन्नु भृगु लग्ने ण व्रते नेष्टा षडष्टगाः ॥ शु-
 क्रेण व्यय गौनेष्टो खला लग्नाष्ट पंचगाः ॥ ९३ ॥ व्रते सौम्या षष्ठ्युभाः प्रोक्ताः षड-
 षां त्य विवर्जिताः ॥ शुक्ले स्वर्क्षो च गंधर्वे लगे अष्टौ रविः क्वचित् ॥ ९४ ॥ द्वे-
 ज्य शुक्रांश गो लग्ने चंद्रः शस्तो व्रते नतः ॥ नान्यत्राथ निजो श्रेष्ठः पुनर्वसु अवे शु-
 भः ॥ ९५ ॥ अथ केन्द्रस्य खेट फलम् ॥ भूपा अथी चरिक् दत्तिः शस्त्र मृत्यान्त्य की मतः १६३

॥ पंडित प्रार्थ्य वानू म्लेच्छसेवी केन्द्रेऽर्कितः क्रमान् ॥ ८६ ॥ अथ व्रतयोगः ॥ ल
 ॥ ग्ने गुरु भृगुः कोणो घृक्तांशेऽब्जे व्रते शुभः ॥ गुरु श्वंद्रो भृगुर्नेष्टो रवि भौमाकि
 संयुतः ॥ ८७ ॥ अथ चैत्र प्राणस्यम् ॥ गोचराष्टक वर्गाभ्यां यस्य शुद्धिर्नलभ्यते ॥
 तस्योप नयनं कार्यं चैत्रे मीन गते रवौ ॥ ८८ ॥ हरौ सिंहांशे रजि जीवे नीच र्क्षे नीच
 भा गणे ॥ भौजीवंधः शुभः प्रोक्तं श्वेत्ने मीन गते रवौ ॥ ८९ ॥ अथात्र मातुः रजो दीये
 विधेयः ॥ मातूरज स्वल्पा दोषो नां दी आद्धोत्तरं तथा ॥ आषष्ठ्य के व्रतं चैलं श्रुत्या
 कुर्व्यात्कर ग्रहन् ॥ ९० ॥ अथ केशांत समावर्त ॥ चैलीकृत सनये काय्यं केशांतं दोढु ।
 प्रावृ के ॥ व्रत वंधोक्त काले तु समावर्तं न मीरितम् ॥ ९० ॥ अथ गङ्गा क्षुरिका वंधनम् ॥
 व्रतोक्त मास तिथ्यादौ विचित्रे सवले कुजे ॥ विभोमे क्षुरिका वंधं प्रारिचवा ह्यन्नह
 भुजान् ॥ ९० ॥ द्विवेदि कुल संभूत सरयू दत्त संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाक्षेपा प्र
 मेयं हि चतुर्दशे ॥ ९० ॥ इति संग्रह शिरो मणौ संस्कार कथनं नाम चतुर्दशी प्रभा

सं-प्रि ॥ २४ ॥ अथ विवाह प्रकरणम् ॥ आया धन्मार्थे कामानां साध्वी चेत्सा धनं भवेत् ॥ प्रो
 १६५ लं लग्नव प्रातः स्याः शुभं लग्नमथोब्रुवे ॥ १ ॥ देवज्ञं सुदिनेऽय्यर्च्यतां वृत्त
 श्री फलादिभिः ॥ विद्वाय्यगंतयोः पुच्छे द्विवाहं वरकं न्ययोः ॥ २ ॥ प्रदीपना
 द्विगी २० प्रा ११ गिन ३ त्राण ५ प्रेल ७ स्थिते विधीः ॥ सद्यः परिणयो जीव हृष्टे स्थे दूर
 कन्ययोः ॥ ३ ॥ गौ तुला कर्क लग्ने वा शुभे क्षित युते तथा ॥ विधम क्षीप्र गौ शुक्र
 चंद्रे चेत्यश्रय तस्तनुम् ॥ ४ ॥ वलिनी वरदे तन्नस्त्री प्रदो सप्त भां प्रागौ ॥ चंद्रे षष्ठेऽ
 द्यमे पापे लग्ने वा चूनगे कुजे ॥ ५ ॥ लग्नेऽङ्गे वा चून भौमे वै धव्यं चाद्यमेऽब्द के
 ॥ लग्नाच्च पंचमे पापे नीचस्ये शत्रु वीक्षिते ॥ ६ ॥ सा कन्या मृत वत्ता स्या दधवा
 कुलटा भ्रवम् ॥ द्यूने सेंदु भृगो रंदा भौमे वा कुलटा शनी ॥ ७ ॥ सुशीला शुभ-
 गा जीवे बुधे च प्रश्न लग्नतः ॥ चन्द्रः षष्ठेऽद्यमे पक्षे बाहुले सग राशिगः ॥ ८ ॥
 दूरे क्षिते विवाहस्य भंगदः परि कीर्तितः ॥ बाहू संलान संयुक्ता योपि त्सिं समा

१६६
 व्रजेत् ॥ ८ ॥ तां विलोक्य तथा पत्यं तस्य प्रश्ने वदेत्सुधीः ॥ प्रारव भेद्यो हि ना-
 दं प्रेत्य तन्ने स्यान्मंगलं सदा ॥ ९० ॥ वायसस्य शृगा लादिरवश्चेद् शुभं भवेत्
 ॥ दंपत्यो रंतरा मैत्री विवाहेन सुभा वहा ॥ ९१ ॥ जुंजा वर्गस्तथा वर्गो वृष्यं ता
 राय यो निजा ॥ गृह मैत्री गणो राशि मैत्री नाडीति चेदश ॥ ९२ ॥ अथोत्तरवला
 प्रचेति विज्ञेयास्तु परस्परम् ॥ गुराधिक्ये समुद्वाहः कर्तव्यो वरकन्ययोः ॥ ९३ ॥
 अथ जुंजा प्रीतिः ॥ पौष्ठादिकं यदुमुशंति पूर्व मार्गादिकं द्वादश मध्यभागम् ॥ पौरंद-
 राद्यं नवकं भचक्रं परं च भागं गण काः विदग्धाः ॥ ९४ ॥ पूर्व भागे पतिः श्रेष्ठो मध्य-
 भागे च कन्यका ॥ परभागे च नक्षत्रे द्वयोः प्रीति स्मर्हीत्यसी ॥ ९५ ॥ अथ वर्ग प्रीतिः ॥
 अथ वर्गो गरुडः प्रोक्तो मार्जारस्तु क वर्गकः ॥ च वर्गः केशरी द्वयोः द्वर्गः कुकुरः स्तु-
 तः ॥ ९६ ॥ तं वर्गं स्तर्प्य संज्ञं स्यात् पवर्गो मूल को मतः ॥ यवर्गो हरिणा न्यश्च
 श्ववर्गो मेघ उच्यते ॥ ९७ ॥ गरुडो रगयो वैरं तथा मेघ शुनो रथि ॥ क्षिप्राश्चाखुवि ॥ ९८ ॥

डालस्यात् प्रादूल मृगायो स्तथा ॥ १८ ॥ स्वर्गा त्यचम पशन्नु पचतुर्थो मित्र सं-
 हृक्तः ॥ उदाशीन स्तृतीय स्तु वर्ग भेद रित्रधो च्यते ॥ १९ ॥ वर्गारित्वे मह हुरुह
 वर्गे क्वे प्रीति रुतमा ॥ कन्यका वर्यो र्नेत्रेव स्वासि सेवक यो रपि ॥ २० ॥ अथ वर्णाश्री-
 तिः ॥ मीनालि कर्कटा विप्राः क्षत्री मेघो हरि ईनुः ॥ तुला हं ह घटाः प्रूढाः लवक-
 न्या मृगा विशः ॥ २१ ॥ नोत्तमा मुद्ग हेत्कन्या ब्राह्मणी च विशेषतः ॥ मृयते हीनद-
 र्णिश्च ब्रह्मणा सहशो यदि ॥ २२ ॥ वर्षा श्रेष्ठा च यानारी तस्या भर्तानि जीवति ॥ य-
 दि जीवति चेद्भर्ता तदा पुत्रो न लभ्यते ॥ २३ ॥ अथ वयस्य प्रीतिः ॥ युग्मं कुंभ स्तुला कन्या
 प्राग्दलं धनुषो द्विपात् ॥ परार्द्धं धनुषश्चैव पूर्वार्द्धं मकरस्य च ॥ २४ ॥ केशरी ह-
 ष भाख्यश्च मेघश्चैतं चतुः पदाः ॥ मृगोत्तरं दलं मीनो जल चांशे प्रकीर्तितः ॥
 २५ ॥ कर्कटः कीट संज्ञश्च लुश्चिकस्तु सरी स्तपः ॥ सिंहं विना वशा स्सर्वे द्वि पदा-
 नो चतुः पदाः ॥ २६ ॥ भक्ष्या जल चरस्तेषां भय स्थाने सरी स्तपाः ॥ २७ ॥ अथ-

योगिनारमेती ॥ कन्या भंवरभाद्रपदं च धूमाक्षरमक्षया ॥ नवहृच्छेषनेनेयं सप्तयं वत्रि
 संख्यके ॥ २८ ॥ अथ योनिमेत्री ॥ अग्निनी प्रातः अश्याध्वौ महिषौ स्वाति हरत वेत्तौ ॥
 पूर्वा धनिष्ठयोः सिंहः भरण्या न भयो गजः ॥ २९ ॥ कृत्तिका सुखाद्यो मेषः सुखा
 द्या पातयोः कपिः ॥ ऊषा भिजिज्ञयोर्वभूरोहिणी मृगशिरसि ॥ ३० ॥ मृगशिरसि
 धयो रेवाः श्वा मूलाद्रा अश्वो स्वया ॥ पुनरश्लेषयो रंतु राखुः पूषा मघा ह्वयोः ॥ ३१
 ॥ विशाखा चित्रयोर्व्याघ्रौ गो रूफोत्तरभाद्रयोः ॥ मीनौ वैरविचारार्थं भाणां प्रोक्तास्तु-
 योनयः ॥ ३२ ॥ गो व्याघ्रं गज सिंह मय्य महिषं श्वैरां च वभूरां वैरं वानरं मेघ
 कंच सुमहत्तद्वद्विलो न्दुर्म् ॥ लेकानां व्यवहारतोऽन्यदपि च क्षात्वा प्रयत्ना
 दिदं न्दम्पत्यो र्दृष्ट्वा भृत्ययोरपि सप्तवर्जं सुभस्यार्थिभिः ॥ ३३ ॥ अथ गृहयोगी ॥ क्षि-
 त्वाणि शुभराः कुजेज्य शशिनः श्रुक्ता र्कजो वैरिणो लौस्यश्चास्य सन्नो विधोर्धुधर
 वी मित्रे न चास्य द्विषत् ॥ श्रेयाश्चास्य समाः कुजस्य सुहृदं श्वं ज्येष्ठस्य सूर्या बुधः

शत्रुः शुक्र प्राणी समो च प्रश श्रुत्सूतोः सिता हस्करो ॥ ३४ ॥ मित्रे चास्य रिपुः
 प्राणी गुरु प्रा निक्षमा जाः समाः गीर्यते स्मिन्नाण्यर्कं कुजेन्दवी बुधसितो शत्रुसमः
 सूर्यजः ॥ मित्रे सौम्य प्राणी कवे प्रश शिरवी शत्रू कुजे ज्यौ समौ मित्रः शुक्र बुधो श
 नेः प्राशिरवि क्षमा जाः द्विवोऽन्यः समः ॥ ३५ ॥ संपत्यो राशिपो मैत्री मिथ स्या-
 च्छोभन नन्दा ॥ ग्रहिते त्वहितं विद्यात्समेवै मध्यमं स्मृतम् ॥ ३६ ॥ अथ गैत्रीफल
 म् ॥ नवर्गवर्गो नंगणो नयोनि द्विहा शो नैव षडष्टकेवा ॥ तारा विरुद्धे नवयंचमेवा
 मैत्री यदं स्याच्छुभदो विवाहः ॥ ३७ ॥ अथ गणमैत्री ॥ हस्ता स्वती शुक्तिः पुष्योऽनु
 राधारेवती ह्यंम् ॥ पुनर्वसु नृगश्चैषः प्रोच्यते देवता गणः ॥ ३८ ॥ तिस्रः पूर्वा उत्त-
 राश्च तिस्रोऽप्यार्द्रा च रोहिणी ॥ भरणी च मनुष्याख्यो गणोशः कथितो बुधैः ॥ ३९
 ॥ कृत्तिका च मघा ज्ञेया विष्णवा शत तारका ॥ चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोग-
 णः स्मृतः ॥ ४० ॥ स्वगणो परमा प्रीति र्मध्यमा देव मर्त्ययोः ॥ मर्त्यराक्षमयो र्मर्त्युः

कलहो देव रक्षसाः ॥ ४१ ॥ राक्षसी तु यदानारी पुरुषो मानवो भवेत् ॥ विवा-
 हिताय मे मासि सा च भक्षयते पतिं ॥ ४२ ॥ अथ गणदीपापवादः ॥ मेघ्यां राश्रीं प्रयोरं
 श स्वामिनीं वरकन्ययोः ॥ न तत्र गणदीपस्या हि वाहं शुभदीमतः ॥ ४३ ॥ रक्षो-
 ना च गणानारी चैतदीहाहनं तयोः ॥ योनिमैत्र्या दिना कार्थ्यमिदं गर्गादि भावितम्
 ॥ ४४ ॥ अथ राशिकूटम् ॥ राश्योः षड्वाष्टके मृत्युस्त्रिकोरो त्वनपत्यता ॥ नैष्वे द्विद्वाद
 ये द्वेयं सौख्यमन्यत्र चोभयोः ॥ ४५ ॥ कुमार्या विषमा द्वाश्रोः षष्ठं तु वरभं न स
 त् ॥ समा द्वाश्रोः शुभं षष्ठं विपरीतमसत्सुतम् ॥ ४६ ॥ वरस्य पञ्चमे कन्या कन्या
 यानवमे वरः ॥ एतन्त्रिकोराकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखा वहम् ॥ ४७ ॥ अथ कूटपवादः ॥
 प्रोक्ते तुष्टमकूटेऽपि राश्यो रेकाधिपत्यके ॥ गैत्रं त्रिपनयः प्रेच्छो ह्येकनाडी न चेतयोः
 ॥ ४८ ॥ तुला वषभयोर्मर्षिनसिंहयोः कुंभकन्ययोः ॥ धनुः कर्कटयोर्नक्तं युगमयोश्चा-
 लिभेषयोः ॥ ४९ ॥ प्रीतिः षष्ठाष्टकं चैतन्नदन्यस्याज्यमेव हि ॥ ५० ॥ राशिदोर्वैरभावे

अपि मैत्री चेत्स्यात्तदंश्रयोः ॥ नाडी वश्येत्तु ताराणां शुद्धा बुद्धहर्नं स्मृतम् ॥ ५१ ॥ भा-
 मिनी जन्म नक्षत्रा द्वितीयं पति जन्म भम् ॥ न शुभं भर्तु नाश्राय कथितं ब्रह्मया मले
 ॥ ५२ ॥ अथ नाडी शुद्धिः ॥ ज्येष्ठा मूलाश्वि भाद्रपदा च भिद्या ह्वयम् ॥ उत्तरा फाल्गु
 रणी युगमगाद्या नाडी यमीरिता ॥ ५३ ॥ चित्रा पुष्योऽनुराधा च धनिष्ठा भरणी मृगः
 ॥ पूर्वा पादोत्तरा भाद्रपदा मध्य नाडिका ॥ ५४ ॥ रोहिणी कृत्तिका ज्येष्ठा मघा स्वा
 ती ह्वयन्तथा ॥ रेवती चोत्तरायाता श्रवणश्चोत्तरा नाडिका ॥ ५५ ॥ दंपत्योरेक नाडी-
 स्थे ऋक्षे नेष्टः करग्रहः ॥ मध्य नाडी गति मृत्यु स्तस्मात्तं सर्वं ध्या त्यजेत् ॥ ५६ ॥
 अथ नाडी दोषा पवादः ॥ राक्षस्यैके भिन्न भेष्ये के अन्य राशौ तैयैकमे ॥ भिन्नेऽघ्नौ न ह्वयो
 दोषा गण नाडी भकूट जाः ॥ ५७ ॥ अथैकमेऽपि विशेषः ॥ विष्णवायाद्राश्रवः पुष्यो रो-
 हिराश्रुतरा भाद्रपात् ॥ रेवती च मघा श्रवः नेतराश्रवः के ह्वयोः ॥ ५८ ॥ अथ नाडी वि-
 षये विशेषः ॥ उक्तं नारदेन ॥ चतुस्त्रिंशद्घिमौ स्यादाः कन्यायाः कमशोऽश्वि भात् ॥ ५९

सन्धिमा विंदुभा न्नाडी त्रि चतुः पंच पर्वसु ॥ गणयेत्संख्यया चैकनाड्यां मृत्यु
 नै संशयः ॥ ५६ ॥ एकनाडी विवाहश्च गुणैः सर्वैस्समान्वितः ॥ वर्जनीयः प्रय-
 त्नेन दंपत्यो निर्धनयुतः ॥ ६० ॥ गर्गः ॥ चतुःपात्कन्यका ऋक्षं गणयेदाश्विना
 दिकम् ॥ त्रिभंसं व्यापसब्धेन भिन्नपर्वशुभावहम् ॥ ६१ ॥ कन्यका भं त्रिपा-
 त्चेत्स्याद्गणयेत्कृतिकादिकम् ॥ चतुर्भिः पर्वभिस्तद्द्वदभिजित्ताका न्वितम्
 ॥ ६२ ॥ कन्यकां दीप्तिपात्चेत्स्याद्गणयेत्सीम्यभादिकम् ॥ पंचभिस्त्ववरो हेतुपं-
 चमां गुणिवर्जितम् ॥ ६३ ॥ चतुर्न्माहीत्यहल्यायां पांचाले पंचनाडिका ॥ त्रि-
 नाडी सर्वदेशेषु वर्जनीया प्रगल्भतः ॥ ६४ ॥ अथ नाडीविचारे चंडेश्वरः ॥ पृष्ठम-
 ध्ये शुभसमीन्वितः भोगः क्रोडिवनिता दित्तवियोगः ॥ मध्यरेखे भवति विवाहेऽ-
 भयोर्मरणं वदति नराहः ॥ ६५ ॥ अश्व्यादिनाडी वेधर्क्षक्रमात्यष्ट द्वितीयकम्
 ॥ याम्यादि तु र्यनुर्ध्वं च कृतिकादि द्विषष्टकम् ॥ ६६ ॥ अर्धेन्दुजक्षोणि तनूज

सं शि जीवाः केतुः सितो राहु शशंक प्रोराः ॥ जन्मादि नाडी त्रितये शुभा स्स्युः शुभे शुभं
 १७३ स्याद शुभेऽ शुभं च ॥ ६७ ॥ तद्यथा अर्कः १। १०। १६ बुधः २। ११। २० भौमः ३।
 १२। २१। गुरुः ४। १३। २२। केतुः ५। १४। २३ शुक्रः ६। १५। २४। राहुः ७। १६। २५।
 चंद्रः ८। १७। २६। शनिः ९। १८। २७ अथ नाड्यादि दोषे दानानि ॥ हेमाज्य रत्न गो
 दानं मृत्युञ्जय जप स्तथा ॥ कुय्या दावश्य को द्वाहे नाडी दोषा पनुत्तये ॥ ६८ ॥ ता
 मन्दि द्वाद् प्रोदया त्सुवर्षा च्च षड्युके ॥ गोशुगान्व पञ्चाख्ये त्वरां वराणि दि दोषजे-
 ॥ ६९ ॥ हेमान्नं वसनं धेनुं सर्व दोषा पनुत्तये ॥ ७० ॥ अथ वय्यादिगुणाः ॥ एकैक
 द्वादितौ द्वेया वराणि दीनां गुणाः क्रमात् ॥ विवाह शुभमदस्तेषां गुरो त्वष्टादष्टा-
 धिके ॥ ७१ ॥ अथ जन्म कालिक भौम दोषः ॥ लग्ने व्यये च पाताले यासिन्ने चाष्टमे
 कुजे ॥ कन्या भर्तु विनाशाय भर्ता कन्या विनाशकः ॥ ७२ ॥ एवं विधे कुजे
 संस्थे विवाहो न कदाचन ॥ कार्यो वा गुणवाहुल्ये कुजे वा तादृशे द्वयोः ॥ ७३ ॥ १७

संक्षि॥ अथान्निविधो विषययोगः ॥ कन्यायां सूर्य भौमार्कि वारेषु तिथि भद्रा प्राता शिधम्
१७६ ॥ अश्लेषा कृत्तिका चैत्स्या तत्र जाता विवांगना ॥ ७४ ॥ अथ द्वितीयः ॥ तनुर्लेभे
रिपु क्षेत्रे संस्थितः पाप खेचरः ॥ हो सौम्या वपियोगेऽस्मिन्संजाता विष कन्यका
॥ ७५ ॥ अथ तृतीयः ॥ लग्ने शनैश्च रोयस्या स्तुतेऽर्को नवमे कुजः ॥ विषाख्यासा-
पिनो द्वाह्या त्रिविधो विष कन्यका ॥ ७६ ॥ अथ कन्या दोषापवादः ॥ सावित्र्यादि ज्ञतं
कृत्वा वैधव्य विनिवृत्तये ॥ अश्वत्थादिभिरुद्वाह्य दद्यात्तं चिरजीविने ॥ ७७ ॥
अथ जन्म कालिक दृश्य नक्षत्र फलम् ॥ मूल जाश्व सुरं हति ज्येष्ठा जा स्वध वा गुजम् ॥ क-
न्यका तु विशाखो त्यानिह न्या देवरं स्वकम् ॥ ७८ ॥ अथ्यापवादः ॥ अश्लेषा प्रथमः
पादः पादो मूलांति मस्तथा ॥ विशाखा ज्येष्ठ ओराद्यस्त्रयः पादाश्चतुर्भा वहाः ॥
७९ ॥ इति वधूवरयो र्मेला पक विधिः ॥ अथ वाग्दानम् ॥ धरणि देवोऽद्य वा कन्यका
सोदर श्वभुभ दिने गीत वाद्यादिभिस्संयुतः ॥ वरद्वर्ति वस्त्र यज्जो यवी तादिना क्रव

पुते वर्न्ति पूर्वात्रये राचरेत् ॥ ८० ॥ अथ कार्यविशेषे जन्म नामस्त्वयोः प्रधानता ॥ अ-
 ज्ञात जन्म नो नृणां नाम मे परि कल्पयन्ता ॥ तेनैव चिंतयेत् सर्वं राशि कूलं हि जन्म
 वत् ॥ ८१ ॥ जन्म भं जन्म धिस्तेन नाम भं नामा धिस्ततः ॥ व्यत्ययेन यदा योज्यन्ते
 म्यत्योर्निधनं प्रदम् ॥ ८२ ॥ देशं याम ग्रहं द्युत व्यव हरे रणो ज्वरे ॥ दाने मंत्रे च से-
 वायां का किन्यां वर्गं योजने ॥ ८३ ॥ पुनर्भूमेलने द्वेया नाम राशेः प्रधानता ॥ अ-
 तोन्यत्र विवाहादौ प्राधान्यं जन्म मस्य हि ॥ ८४ ॥ अज्ञात जन्म धिस्तेन नाम भा देव
 चिंतयेत् ॥ जाया पत्यो भकूटाद्यं गोचराख्यं खिलं तथा ॥ ८५ ॥ एकस्मादिह दम्यत्यो
 रज्ञाते जन्म भेतथा ॥ जन्म माहुरु शुद्धादि मेलनं नाम भातयोः ॥ ८६ ॥ अथ विवाह
 संवत्सर हि शुद्धिः ॥ गर्भजन्म दिना ह्यपि हाय नात्यं च मात्यम् ॥ आदशाब्दं तु कन्याया
 विवाहः समवत्सरे ॥ ८७ ॥ विशेषः ॥ षडब्द मध्ये नो हाद्या कन्या वर्ष ह्वयं यतः ॥ सो
 मो भुंक्ते ऽथ गंधर्व स्ततः पश्चाद्भुता प्रानः ॥ ८८ ॥ अष्ट वर्षा भवेद्गोरी नव वर्षा-

च रोहिणी ॥ दश वर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥ ८८ ॥ गौरी नृदह्न स्त्र-
 लोक सावित्रं रोहिणीं ददत् ॥ कन्या ददद्ब्रह्म लोकमतः परमसद्गतिम् ॥ ८९ ॥ मासत्रया
 दूर्ध्वमयुगमवर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत् ॥ विवाह शुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्याद-
 योगा गविराहमुख्याः ॥ ९० ॥ विशेषः ॥ ज्ञेया गुरुवला गौरी रोहिणी आनुमहला ॥
 कन्या चन्द्रवलो द्वाह्या ततो लग्नचलेतरा ॥ ९१ ॥ अथ विवाहे गुरु रवि चन्द्र वलम् ॥
 गुरोर्वलनु कन्याया वरस्याथ चलं रविः ॥ ग्राह्यं परिणये प्राज्ञैः चलं चन्द्रात्तथो-
 मयोः ॥ ९२ ॥ अथ कन्यावरयो गुरुवलम् ॥ कन्याया गृहशुद्धिश्च दशवर्षावधिस्तु
 ता ॥ दश वर्षव्यतिक्ताता कन्या शुद्धिर्विवर्जिता ॥ ९३ ॥ तस्यास्तारेस्तु लग्नानां
 शुद्धौ पाणि गृहोमतः ॥ जन्म राशे गुरुः श्रेष्ठः पंचमो नवमो द्विगोः ॥ ९४ ॥ एकाद-
 शः सप्तमस्यः कन्यायाश्च वतो व्रतम् ॥ त्रिषददशायगोमध्ये नेष्टस्तु व्योःष्टमो
 ऽत्यगोः ॥ ९५ ॥ एकया पूजया मध्यस्तुर्व्योऽन्यो द्विगुणार्चया ॥ कालानि क्रमरो-

धनात् ॥ ९७ ॥ गुरुस्त्वोच्चैस्वर्गमेतन्नेवास्वर्गमेव गतिमेऽपि वा
 १५ धर्मोऽत्योऽपि न चारिष्यद्भुभोप्यसत् ॥ ९८ ॥ वक्राति चारुगोवा
 कन्यायाः विशेषः ॥ नष्टात्मजा १ धनवती २ विधवा ३ कुशीला ४ पुत्रान्विता ५ परता
 ६ सुभगा ७ विपुत्रा ८ स्वामिप्रिया ९ विगतकोशधना १० धनाढ्या ११ वंध्या १२
 भवेत्सुरगुरौ क्रमशो विवाहे ॥ १०० ॥ कस्यचिन्मते विशेषः ॥ अष्टमे द्वादशे वापि च
 पुंथे वा दृहस्यते ॥ पूजा तत्र न कर्तव्या विवाहः प्राणनाशकः ॥ १०१ ॥ षष्ठे जन्म
 नि देवे ज्ये तृतीये दशमेऽपि वा ॥ भूरिपूजा पूजितश्च कन्यायाश्शुभकारकः ॥ १०२
 ॥ एकादशे द्वितीये वा पंचमे सप्तमेऽपि वा ॥ नवमे च सुरचार्ये कन्यायाः कथित-
 १६ शुभः ॥ १०३ ॥ अथ वरस्य रविवलम् ॥ तृतीयः षष्ठगश्चैव दशमे कादश स्थितः
 रविः शुद्धो निगदितो वरस्यैव करग्रह ॥ १०४ ॥ जन्मस्थे च द्वितीयस्थे पंचमे सप्तमेऽ

पिवा ॥ नवमे भास्करे पूजां कुर्व्यो त्यागि गृहोत्सवे ॥ १०५ ॥ चतुर्थे वायुमे चैव द्वा-
 दशे भास्करे स्थिते ॥ वरः पञ्चत्व मान्नोति कृते पाणि गृहोत्सवे ॥ १०६ ॥ कालाति-
 क्रान्ते विशेषः ॥ यदि स्त्रियष्ट वर्षा यस्थो वरस्यो द्वाहने शुभः ॥ मध्यः पंचद्वि सप्तैक
 नवगः पूज्योत्तमः ॥ १०७ ॥ हिरन्यो द्वादश स्तुर्योऽथायुमस्त्रिगुणार्चनात् ॥
 अथो मयोऽष्टद्वलम् ॥ ग्राह्य प्रागुक्तमुद्गाहे द्वयोऽष्टाद्रम संवलम् ॥ १०८ ॥ अथ जन्म-
 मासादि दोषा पवादः ॥ स्वजन्म मास क्षीतिथि क्षणेषु वै नाशिका दृष्ट गणेषु चैवम्
 ॥ नो द्वाह मात्मा भ्युदया भिकाक्षी नैवाद्य गर्भ हितयं कदाचित् ॥ १०९ ॥ जन्ममा-
 सादि के ज्येष्ठे विवाहो वर कन्ययोः ॥ आद्य गर्भ भवो नैवो नानाद्य जन्मयोस्तयोः ॥
 ११० ॥ त्रिज्येष्ठं नेष्ट मुद्गाहे द्विज्येष्ठं मध्यमं स्मृतम् ॥ कृत्तिका स्थैरवौ केचित्त्रिज्येष्ठं
 तु शुभं जगुः ॥ १११ ॥ अथ केयां विन्मते विशेषः ॥ नेष्टं त्युद्गाहनं केचित्त्रिज्येष्ठयोस्तु परस्पर-
 म् ॥ पुत्रो द्वाहान्तु वरमासान् नो कन्याकर्षीडुनम् ॥ ११२ ॥ मुंडना मुंडनं वापि - १

कुले सप्तमतीऽन्यथा ॥ सीमन्तो द्वाहनं चोले केशान्तं व्रतबंधनम् ॥ ११३ ॥ गुरु
 मंगलमेतत्स्यात्तदन्यत्त्रयु मंगलम् ॥ गुरु मंगलतो नेष्टं परमासा त्रयु मंगलम् ॥
 ॥ ११४ ॥ शुभत्रयं तथा पित्र्यं कृत्यं स्वीय कुलेन सत् ॥ सहोदर प्रसूतानां आन्तरा-
 गले कुल्यादब्द भेदेऽथ वा पुनः ॥ ११६ ॥ चतुर्दिना न्तरे वापि संकटे तु दिना न्तरे ॥
 एका हेऽपि प्रकुर्वीत सरि त्ति रि गृहान्तरे ॥ ११७ ॥ तथा मण्डपभेदेन लग्नभेदे य-
 थो दितं ॥ यमयोस्तु विशेषोऽयं काय्यां स्मर्त्वा स्मह क्रियाः ॥ ११८ ॥ एको वरसमु-
 त्पन्न मेक स्मै कन्य का ह्वयम् ॥ न देयं न च देये च सोदराभ्यां सहोदरे ॥ ११९ ॥ वि-
 वाह निम्नया दूर्ध्वं कुले वध्वा वरस्य च ॥ पित्रा हेर्मरिणो याते विवाहो नतथो ष्यु-
 भः ॥ १२० ॥ अथ वा वत्सरा दूर्ध्वं मास षट्का दथोऽपि वा ॥ नासोर्ध्वं सून कान्ते वा-
 शान्त्या प्रास्तः कर गृहः ॥ १२१ ॥ अथ विवाहे शुभमासाः ॥ मेष दृष्टिश्च क कुम्भेषु मका

रे मिथुने दृषे ॥ रवौ पाणि ग्रहः श्रेष्ठः युग्मे विष्णुश्रया वधि ॥ १२२ ॥ वैशाखः फा-
 ल्गुणौ माघौ ज्येष्ठ श्रैते शुभ प्रदाः ॥ मासा उद्धहने मार्गो मध्यो ऽन्ये त्व शुभामताः
 ॥ १२३ ॥ वृश्चिके मकरे मेघे विधमाने दिवा करे ॥ कार्तिकः पौष चैत्रौ वा विवाहे
 त्वेव शोभनाः ॥ १२४ ॥ मार्गशीर्षे धनुष्यर्के मीनार्कः फाल्गुणे शुभः ॥ सौर-
 ज्ञत विवाहा दौ मासः सर्वत्र शस्यते ॥ १२५ ॥ चान्द्रो मासस्तु विंध्यादे भगि दक्षि-
 रा के मतः ॥ योगस्तयो विवाहा दौ शोभन स्सौर चान्द्रयोः ॥ १२६ ॥ अथ विवाहे
 तिथि वार नक्षत्राणि ॥ वखी दश्रो ऽष्टमी ऋक्ता कृष्ण पक्षान्त्य पञ्चकम् ॥ शुक्ला चैत्र्य
 ति पन्नेष्टा तिथयो ऽन्येतु शोभनाः ॥ १२७ ॥ सौम्या वारा शुभामध्या स्सूर्य्य
 मन्द कुजा धमाः ॥ रोहिण्यां व्युत्तरे मूले ऽनु राधारेवती मृगे ॥ १२८ ॥ वृत्ते स्वाती
 मृगा क्षीरां शोभनं कर पीडनम् ॥ सत्तूला पूर्व फाल्गुण्यां चोत्तरे च्छं ततो न स-
 त् ॥ १२९ ॥ पुष्योपि काम योषि त्वा च्छा पमा प प्रजा पतेः ॥ अथ विवाहे दश महा

१८१
 शि- दीपाः ॥ लता पातो युतिर्वेधो यामित्रं बुधपंचकम् ॥ एकार्गलो पग्रहो चक्रांति
 साम्यंततः परम् ॥ १३० ॥ दग्धा तिथिं च विज्ञेयं दश देवा महा वलाः ॥ एतान्दे-
 या न्यरित्यज्य लग्नं संशोधयेद्बुधः ॥ १३१ ॥ अथ लता ॥ नक्षत्रं द्वादशं भानुस्त-
 तीयं लत्तया कुजः ॥ षष्ठ्यस्त्रीविष्टमस्मन्दे हन्ति दक्षिणतस्सदा ॥ १३२ ॥ वामे-
 न सप्तमं चान्द्री नवमे सिंहिका सुतः ॥ हन्ति भं पंचमं शुक्रो द्वादशं पूर्णचन्द्रमाः
 ॥ १३३ ॥ रवेर्लजा हरेर्द्वितं कुजस्य कुरुते मृतिम् ॥ बृहस्पतेर्वन्धुनाशं शनैः कुं-
 ध्यां त्कुल क्षयम् ॥ १३४ ॥ बुधस्य कुरुते त्राघं लत्ताराहोर्विनाशनम् ॥ शुक्र-
 स्य दुःखदा नित्यं त्राघादाच कलानिधेः ॥ १३५ ॥ अथ यातः ॥ सूर्ययुक्ताच्च नक्ष-
 त्रा वेद्युपातो विधीयते ॥ मघा श्लेषाच्च त्रिषाच्च सानुराधाच रेवती ॥ १३६ ॥ श्र-
 वणोपि च षड्गोत्रं पातदुष्टं निगद्यते ॥ अश्विनी मघा चिंक्त्वा गणयेत्लग्न आ वधिं
 ॥ १३७ ॥ पावकः पवमानश्च विकारी कलहोपरः ॥ मृत्युः क्षयश्च विज्ञेयः

पातघट्टस्य लक्षणां ॥ १३८ ॥ पतिन पति तो ब्रह्मा धातेन पतितो हरिः ॥ धाते-
 न पतित प्रशम्भु स्तस्मा त्यातं विवर्जयेत् ॥ १३९ ॥ अथ युतिदोषः ॥ यन्नेराशौ
 भवेच्चन्द्रे ग्रहस्तत्र वदा भवेत् ॥ युति दोग्य स्तदा द्वेयो विना शुक्र प्रभुभा शुभः ॥
 १४० ॥ रविणा संयुतो हानि भौमे न निधनं प्राप्तिः ॥ कुर्वन्ति मूलनाशं च राहुके
 तु शनैश्चराः ॥ १४१ ॥ अथ वेधः ॥ वधू प्रवेशने दाने वरणे पाणि पीडने ॥ वेधः
 पंच शलाकारव्योऽन्यत्र सप्त शलाककः ॥ १४२ ॥ रेखाः पंचोर्द्ध गतिर्यथे द्वे
 रेखे च कोणायोः ॥ चक्रं पञ्चशलाकारं विवाहे वेधसाधनम् ॥ १४३ ॥ र्द्वे प्रा
 द्वितय रेखा तस्मा भिजि त्कृतिका दिकम् ॥ लिखेत्सव्य क्रमात्तत्र ग्रहा देया यथाय
 यम् ॥ १४४ ॥ एक रेखा स्थितो विद्वादिन नाया देयो ग्रहाः ॥ विवाहे तत्र मांसं तु न
 जीवति कदाचन ॥ १४५ ॥ अश्विनी पूर्व फाल्गुण्या भरणी चानुराधया ॥ अभि-
 जिच्चापि रोहिण्या कृतिका च विप्राधया ॥ १४६ ॥ मृगश्चोत्तराश्विने पूर्वाषाढात-

संश्लिष्टाद्र्या ॥ पुनर्वसुश्च मूलेन तथा पुष्यश्च ज्येष्ठया ॥ १४७ ॥ धनिष्ठाया तथा ज्येष्ठे
 १८३
 षामघापि श्रवणेन च ॥ रेवत्युत्तर रोहिण्या हस्ते नोत्तर भाद्र पात्र ॥ १४८ ॥ स्वा-
 त्या शत भिषा विह्व चित्रया पूर्व भाद्र पान् ॥ विज्ञान्येतानि वज्र्यानि विवाहे भानि-
 को विदेः ॥ १४९ ॥ रविर्वेधे च वैधव्यं कुजवेधे कुल क्षयः ॥ बुधवेधे भवेद्वध्या प्रव-
 ज्यर्था गुरु वेधतः ॥ १५० ॥ अपुत्रा शुक्र वेधे च सौरे चन्द्रे च दुःखिता ॥ पर पुरुषरता
 राहो केतो स्वच्छन्द चारिणी ॥ १५१ ॥ अथ श्रीमित्र दोषः ॥ चतुर्दशं च नक्षत्रं यामित्रं
 लग्नभा त्सूतम् ॥ शुभयुक्तं तदिच्छंति पापयुक्तं च वर्जयेत् ॥ १५२ ॥ चन्द्रश्चान्दी
 शुक्रजीवौ यामित्रं शुभकारकम् ॥ स्वर्भानु भानु मंदा रायामित्रे चाशुभप्रदाः ॥
 १५३ ॥ चंद्रा द्वा लग्नतो वापि ग्रहा वज्र्याश्च सप्तमे ॥ तत्र स्थिता ग्रहानूनं व्याधिवै-
 धव्यकारकाः ॥ १५४ ॥ अथ बुधपञ्चकम् ॥ धार्त्र्या त्रिष्वि १५ मीस १३ दृष्टा २० दृष्ट ८
 वेदा ४ संक्रान्ति तो जात दिने प्रत्ययो ज्ञ्याः ॥ ग्रहे विभक्ता यदि पञ्चकं स्याद्दोगस्त- १८३

१८४ संक्षिप्ताग्निर्नृपचौरमृत्युः ॥ १५५ ॥ अन्यच्च ॥ तिथिचारमलग्नां कोरसाग्न्यजा-
 हवेरयुक् ॥ नन्दाप्तपंचशेषेरुक् वह्निराट्चौरमृत्युद्वत् ॥ १५६ ॥ शेषैके-
 नवभिर्भक्ते पंचशेषे सश्रल्यकं ॥ अथ दक्षिणात्यप्रसिद्धपंचकं ॥ शुक्लाद्यास्तिथयो
 याता लग्नाख्या भाजिता ग्रहेः ॥ शेषेष्टद्विचतुस्तर्कभूमिते वारा पचकं ॥ १५७
 रोगोग्निर्नृपतिश्चोरो मृत्युश्चेति यथा क्रमात् ॥ प्रसिद्धं दक्षिणा त्यानां शुभे का-
 र्ये विवर्जयेत् ॥ १५८ ॥ रोगं चौरं त्यजेद्वात्री दिवा राजन्यं पंचकम् ॥ संध्य
 योर्मृत्युदंत्याज्यं सर्वदा वह्नि पंचकम् ॥ १५९ ॥ रवौ रोगं कुजे वह्निः प्रानौ
 च नृप पंचकम् ॥ वर्ज्यं पुनः कुजे चौरं बुधवारं च मृत्युदम् ॥ १६० ॥ नृपा-
 रण्यं नृप सेवायां गृह गोपे ऽग्नि पंचकम् ॥ याने चौरं व्रते रोगं त्यजेन्मृत्युं करं
 ग्रहे ॥ १६१ ॥ लग्ने पूर्णा वलोपेते न दोषः पंचकस्य च ॥ १६२ ॥ अथैकार्गलदो-
 षः ॥ योगां के विषमे सैके साद्या विंशति के समे ॥ तदाहं संख्यमं मूर्ध्नि चक्रे १८

संशिखाजूरि के न्यसेत् ॥ १६३ ॥ अथैतस्योदाहरणं ॥ व्यतीपाते अमश्लेषाव्या-
 धाते च पुनर्वसुः ॥ अतिगंडे नुराधा च मूर्द्धि भं परिधे मघा ॥ १६३ ॥ विष्कुंभे-
 चाश्विनी पुष्यो वज्रो चित्रा तु वैधृती ॥ तथा मूले खेग गंडे मूल भं मूर्द्धि कीर्ति ॥
 १६४ ॥ चोगे खे तेवु संभूतिर्नान्येव्ये कार्गलस्य च ॥ अथैतस्य चक्रम् ॥ एका चोर्द्ध
 गता रेखा तिर्यक् कार्व्यात्रयो दश ॥ मूर्द्धि भं मूर्द्धि विन्यस्य साभिजित्तनून्य-
 सेत् ॥ १६५ ॥ एका गलितो मिय अथैक रेखा गश्चे द्विधूरविः ॥ विवाहादि शुभे कार्ये
 नेष्ट स्त्वे कार्गलाभिधः ॥ १६६ ॥ अथोपगृह्येयः ॥ सूर्य भातं च मे विद्युन्मक्षत्रेषु
 लमष्टमे ॥ चतुर्दशे शनेः पातः केनुरखा दशे तथा ॥ १६७ ॥ ऊनविंशे भवेदु-
 ल्कानि घातित्वे द्विविंशती ॥ अथो विंशति के कं पश्चतुर्विंशे च वज्रकः ॥ १६८ ॥
 दिक् सप्त तिथि तत्वारव्य स्वर्ग संख्यानि आनि च २०।७।१५।३५।२१ ॥ एता-
 न्यपि जगु अथोपगृह क्षणीति केचन ॥ १६९ ॥ पुननाश करी विद्युच्छूलः पुन वि- १७०

नाशकः ॥ शनेः पानो वंशघातः केतोर्देवनाशकः ॥ १७० ॥ द्रव्यनाशकरी
 चोक्ता निघीतो वंधुनाशकः ॥ कंपः कंपयते नित्यं वज्रेस्त्री व्यभिचारिणी ॥ १७१
 ॥ उपगृहेषु लतायां तथा चण्डा युधा न्हये ॥ गृहोऽस्ति युत्तमारांशो विद्वांशस्त
 त्रमाराकः ॥ १७२ ॥ अथक्रांति साम्यदोषः ॥ ऊर्ध्वं स्तिस्त्रास्तिस्त्रिखो मध्ये मीनं लिखे
 दधुः ॥ सूर्ये चन्द्रमसोर्दृष्टे क्रांति साम्यं निगद्यते ॥ १७३ ॥ मीनः कन्यकया
 युक्ता मेघस्सिंहेन संगतः ॥ मकरे च वृषः क्रांतिः चायोऽपि मिथुने न च ॥ १७४
 कर्क वृश्चिकयो र्वेधो वेधश्च तुलकुंभयोः ॥ क्रांति साम्ये कृतो ह्यहेन जीवति कः

	११	१२	१३
१०	क्रां	ति	२
२५	सा	म्यं	३
८	७	६	५

दाचन ॥ १७५ ॥ अथ दग्धा दोषः ॥ द्वितीया धन मीने बुचनु
 धी द्यपकुंभयोः ॥ मेघकर्कटयोः वृषी कन्यायां मिथुनेऽष्टमी ॥
 १७६ ॥ दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ॥ एतास्तु तिथ-
 यो दग्धा प्रशुभे कर्मणि वर्जिताः ॥ १७७ ॥ अथ दश दोषाः ॥

तिष्ठ्यग वेदैक दिगून विंशप्रसृत्यं भवाद्या दश विंश संख्याः ॥ दृष्टो हुना सूर्ययुक्तो
 हुना च योगा दमी च दश योग दोषाः ॥ १७८ ॥ मरुन्मेघाग्निभूपालचौरमृत्युरु-
 ज्जो शनिः ॥ कलिर्हीनिर्दशोद्वाहे दोषा स्त्याज्या सदा बुधैः ॥ १७८९ ॥ योगां
 के विषमे सैके समे सव सुलोचने ॥ दली कृत्वा श्विनी पूर्व दश योग मुदा हतम् ॥
 १८० ॥ दश योगे महाचक्रे प्रमादाद्यदि विध्यते ॥ क्रूरे सौम्य ग्रहेर्वपि संपत्यो रे-
 क नाश्रनं ॥ १८१ ॥ अथ दश दोषापवादः ॥ गुरो लग्नाधिपे शुक्रे सर्वोर्ध्वे लग्न केन्द्रगे ॥
 दश दोषा विनं प्रयंति यथाग्नौ तूल राशयः ॥ १८२ ॥ गुरुणा भृगुणा वापि संयुक्तो
 दृष्ट मेव च ॥ दश योग समा युक्त मपि लग्नं शुभावहम् ॥ १८३ ॥ एका र्गलोपग्रह
 पात लक्षा यामित्रकर्तार्युदया स्तदोषाः ॥ नश्यन्ति चन्द्रार्क वलोप पन्ने लग्ने यथा
 कश्चिदुदयेतु दोषाः ॥ १८४ ॥ उपग्रह क्षेप्तुर्वाल्हिकेषु कलिङ्ग वङ्गेषु च पाति
 ततम्भम् ॥ सौराष्ट्र साल्वेषु चलति तं भंत्यजेतु विद्वं किल सर्व देशे ॥ १८५ ॥

शिल्पज्ञा मालव के देशे पातः कोशल के तथा ॥ एका गलितु कल्मीरे वेधं सवर्त्रव-
 र्जयेत् ॥ १८६ ॥ युति दोषो भवेद्गोडे यालिन्न स्य तु यामुने ॥ वेधयेवस्तु विव्या-
 र्व्ये देशे नान्येषु केचन ॥ १८७ ॥ अथापरः यमघंटयोगः ॥ शैला क्षुद्रनयः सूर्ये ७।
 ५। ४। चन्द्रे षट् षट् ४ पवर्ताः ॥ ७ ॥ भौमे वाराण धग्नि ३ नेत्राणि २ सोम्ये
 वेदा ४ क्षि २ वायवः ५ ॥ १८८ ॥ गुरु वारेग्नि ३ चन्द्रे १ भाः ८ शुक्र नेत्रा २ द्वि ७
 वन्हयः ३ शनौ चन्द्रे १ भ ८ तर्काः ६ स्युः कुलि को या मघं एतकः ॥ १८९ ॥ अ-
 र्द्धप्रहरं सङ्घां स्तान्मंगलेषु विवर्जयेत् ॥ निधनं प्रहरार्द्धे तु निस्स त्वं यमघंट के ॥
 कुलिके सर्वे नाशः स्यात् रात्रा वेतेन दोषदाः ॥ १९० ॥ अथ कर्त्तरी दोषः ॥ म्विणा
 व्यययो १२ र्लगा च्चन्ना द्याया पखे चरे ॥ यदि स्यातां तदा द्वा कर्त्तरी दोष कारि-
 का ॥ १९१ ॥ अथ महा कर्त्तरी ॥ धने क्रूर गृहवक्त्री व्यये मार्गी भवेद्यदि ॥ सामहा-
 कर्त्तरी द्वेया प्रयत्नात् विवर्जयेत् ॥ १९२ ॥ अथ दोषा पवादः ॥ धने मार्गी व्यये व-

श्रीवक्तोवामार्गगावुभौ ॥ लग्नेवाद्वादशोसोम्योयदिचेत्कर्त्तरीनसा ॥ १८३ ॥
 प्रकृज्जीववृधैःकेन्द्रकोणगैःसानदुःखदा ॥ कर्त्तरीकाकायासौशूत्रुनीचक्ष्णो
 याद ॥ १८४ ॥ अथवास्तमितौतन्ननदोषःकर्त्तरीभवः ॥ अथापरोदोषः ॥ मर्मवैधःकंद
 कश्चशूल्यंक्षिद्रंचतुर्थकम् ॥ एतद्वैषंचतुष्कंचपरित्याज्यंप्रयत्नतः ॥ १८५ ॥
 लग्नेपापे मर्मवैधःकंदकोनवपञ्चमे ॥ चतुर्थेदशमे शूल्यंक्षिद्रंभवतिसप्तमे ॥
 १८६ ॥ मणामर्मवैधस्यातंकंदके स्यात्कुलक्षयः ॥ शूल्येचन्दपतेभीतिःपुन
 नाशश्चक्षिद्रके ॥ १८७ ॥ मासान्तेदिनमेकंतुतिथ्यन्तेघटिकाद्वयम् ॥ नक्ष-
 त्रान्तेघटीत्रीणि विवाहादौविवर्जयेत् ॥ १८८ ॥ अथनक्षत्रविषघटिकाः ॥ खवा-
 णाश्चजिनास्त्रिंशत्खवेदामनवःकमात् ॥ स्वर्गस्त्रिंशन्नखादन्ताःखरामाविंश

अ	भ	क	ऐ	म	पु	पु	पु	पु	म	पु	उ	ह	चि	स्वा	वि	नु	ल्ये	मू	पू	उ	अ	ध	श	पू	उ	रे
५०	२५	३०	४०	१४	२५	३०	३०	३०	३३	३०	२०	२१	२०	१४	१४	१०	१४	५६	२५	२०	१०	१०	१०	१०	२५	३०

तिर्धृतिः ॥ १८६ ॥ भूनेत्राः खयमाः शक्राः मनुकाः श्वानुर्धरा ॥ वटपञ्चाश-
 ज्जिनाश्चैव विंशतिश्च ककुपदिशः ॥ २०० ॥ धृतिर्भूपाजिनारिंशद्विंश-
 द्घटिकाः स्मृताः ॥ आभ्यश्चतुष्टयं त्याज्यं घटिकानां विद्याभिधम् ॥ २०१ ॥
 सर्वर्षघटिकाभिश्च प्रोक्तैर्घटिकाहताः ॥ वक्ष्यामक्ताः स्फुटा नाड्यस्तथास्युर्वि-
 षनाडिकाः ॥ २०२ ॥ अथ तिथिविघटिकाः ॥ तिथिवाणाष्टसप्तगुपञ्चवेदांग-
 धराः ॥ दिग्वन्त्यर्कमनुस्माभृद्वसवो घटिकाः क्रमात् ॥ २०३ ॥ आभ्यो घटीच-
 तुष्कञ्च विषंप्रति यदा दितः ॥ अथ वारविषघटिकाः ॥ नखयुग्मार्कं दिक् सप्तवारा-
 त्वमिताः क्रमात् ॥ आभ्यो नाडी चतुष्कञ्च विषन्तद् विवासरात् ॥ २०४ ॥ ति-
 थिविषनाहिका चक्रम् ॥ सुवीधनार्थम् ॥ अथ वारविषघटी चक्रम् ॥ अथ विषनाडी दोषापवादः ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

कोणा ६ । प्रस्ता ७ धि ४ नभः १० संस्थः सुहृत्सीम्ये क्षितोऽपिवा ॥ सद्वाशावा-
विधुः स्वांशे लम्बेवाकेन्द्र १० । १ । ४ । ७ । १ । ५ । ॥ २०५ ॥ निहन्याद-
खिलं दोषं विपनाही समुद्धवम् ॥ अथ ग्रह दृष्टिः ॥ तृतीय दशमे पादे त्रिको-
णोऽग्नि द्वयं ग्रहः ॥ पश्येत्तुर्थेऽष्टमे पादत्रयं पूर्णान्नु सप्तमे ॥ २०६ ॥ पूर्णान्नु त्रिदश
मं वः पंचमं नवमं गुरुः ॥ भौमीषुमं चतुर्थं च सप्तमं सकला ग्रहाः ॥ २०७ ॥ अथ लज्ज
शुद्धिः ॥ लमे लम लवे वापि लप्यांशे शयुते क्षिते ॥ लवेश शुभ मित्रेण दृष्टे वा स्वामिना
शुभः ॥ २०८ ॥ द्यूनांशे पून लम्बे वा द्यूनांशे शयुते क्षिते ॥ द्यूनांश पतिसन्मित्र दृष्टे व
ध्वा शुभं स्मृतम् ॥ २०९ ॥ लग्नेशे लग्नमंशेशः स्वांशं पश्यति वामिथः ॥ तद्वरस्य
शुभं ज्ञेयं मन्यथानैव शोभनम् ॥ २१० ॥ द्यूनेंशेशः तद्यास्तांश पति द्यूनांशमीक्षते
॥ तन्मिषो वा तथा वधाः शुभन्वितरथानहि ॥ २११ ॥ नीच राशि गते शुक्रे शत्रुक्षे
त्र गते पिवा ॥ भगु षट् स्थितो दीर्घो नास्ति तत्र न संशयः ॥ २१२ ॥ अस्तगे नीच गेभौ ॥ २१३

222

मे शत्रु क्षेत्र गते ऽपि वा ॥ कुजाष्टमो द्वयो दोषो न किंचिदपि विद्यते ॥ २१३ ॥ गुरुरेको
 ऽपि केन्द्रस्थः शुक्लो वा यदि वा बुधः ॥ हरे स्मरति र्यथा हति तद् दोषा रिक्तकोण गाः ॥ २१४
 लनोपग्रह चरदीश चन्द्र या मित्र स भवान् ॥ तत्केन्द्र गो गुरु हन्ति सुपत्न्यः पत्न्य गानिव ॥
 २१५ ॥ सङ्कर राशे रशुभो नवाष्टः प्रोक्तस्स पापो ऽपि विलम्बे संस्थः ॥ त्रिकोण केन्द्रेषु
 गुरुः सिनो वायदा तदा साव शुभो ऽपि शस्तः ॥ २१६ ॥ यत्रैकादश गः सूर्यो दोषानाश्र
 ययुस्तदा ॥ स्मरणा देवरुद्रस्य पापजन्म प्रातो द्ववम् ॥ २१७ ॥ वर्गोत्तम गते लग्ने स-
 र्वे दोषा लयं ययुः ॥ चन्द्रे वाप्यथ वाये ऽपि ग्रीष्मे कु प्रारितो यथा ॥ २१८ ॥ सुहूर्त्त ल-
 ग्न षड्वर्ग कु नवांश एहो द्ववाः ॥ ये दोषा स्तान्निहन्त्येव यत्रैकादश गः शश्विः ॥ २१९
 ॥ नक्षत्र दोषे कु नवांश दोषं गंडांत दोषं च मुहूर्त्त दोषम् ॥ विरुद्ध पंचांग विरुद्ध दोषं
 निशान करो लाभं गतो निहन्ति ॥ २२० ॥ त्रिकोणो केन्द्रे वा मदन रहिते दोष शतकं हरे
 त्सौम्य प्रष्टुको द्विगुण मपि लाभं सुर गुरुः ॥ अवे दायके केन्द्रे ग पउय लवे शो यदि तदा

समूहं दोषाणां दहनं द्वे तूलं श्रमयति ॥ २२१ ॥ अथ पञ्चधा दित्याज्यलग्नानि ॥ दिने सदा
न्या चषमेव सिंहाः रात्रौ च कन्या मिथुनं कुलीरः ॥ मृगस्तु लालिर्वधिरो पराङ्गि संध्या
सुकुब्जा घटधन्वि मीनाः ॥ २२२ ॥ दिवान्धो वरहं तान्च रात्र्यं धाधननाशकाः ॥ दुः
खदो वधिरो लग्नः कुक्षो वंशविना शकः ॥ २२३ ॥ अथ होलाष्टकम् ॥ शुक्लाष्टमीं समा
भ्य कालगुणस्य दिनाष्टकम् ॥ पूर्णिमा मवधिं कृत्वा त्याज्यं होलाष्टकं प्रभुभे ॥ २२४ ॥
ऐरावत्यां विषाखायां शतद्वी च त्रिपुरारे ॥ होलाष्टकं विवाहादौ त्याज्यं मन्यत्र शोभन
म् ॥ २२५ ॥ राश्रयो मासः शून्याश्च लग्नं कारणं धपं युयत् ॥ तत्याज्यं मालवे गोडेना
न्यत्रा शुभदं स्मृतम् ॥ २२६ ॥ हन्यादिनार्द्धे जन्मेयं तिथिं स्मिन्ना वमोद्भवम् ॥ गुरुः
केन्द्रे गतः शून्य तिथिजं लाभग प्रशुभः ॥ २२७ ॥ अद्यायनर्तुमासोत्थाः पक्षनिष्ठवृ
क्षसंभवाः ॥ कारणं धवधिरोद्भूता दग्धलग्न तिथेर्भवाः ॥ २२८ ॥ अकालजाश्च नी
हारविद्युत्याताश्च संभवाः ॥ यौवेषे प्रतीसूर्य्य शक्रचापध्वजादयः ॥ २२९ ॥ दोष

प्रदामंगलेषु कालजाश्चेन्नदीषदाः ॥ दृष्यन्ती वृश्चिकी मीनः कन्या मकरकर्कटाः ॥
 २३० ॥ लग्नेष्वेतेषु नो दीपो जन्मतो ह्यष्टमे ख्यपि ॥ अथ शुभनवांशाः ॥ कन्या युग्मतुला
 धन्वि नवांशाश्शुभता ग्रहाः ॥ विवाहे न्येतु मीनस्य नवांशाः शुभदा जगुः ॥ २३१ ॥
 अथ मंगदाग्रहाः ॥ लग्ने प्रेने श्वरः सूर्यो लग्नारिर्निधने शशी ॥ लग्नेऽष्टमे महीसूनुख-
 मे बुधवाक्यती ॥ २३२ ॥ राहु सुख्ये विलग्ने वानिधनारि गतो भृगुः ॥ द्यूनेतु रवे च रास्व-
 रं विवाहे मंगदाः स्मृताः ॥ २३३ ॥ कुजः रवे द्वादशे मन्दो लग्ने शो निधनारिगः ॥ तृ-
 तीये भार्गवश्चन्द्रो व्यये नैनेऽपि शोभनाः ॥ २३४ ॥ अथ रेखा प्रसंगहाः ॥ व्यायाष्टयत्
 सुरविकेतु तमोऽर्कपुत्राः व्यायारिगः क्षिति सुतो द्विगुणाय गो हतः ॥ सप्त व्यायष्टरहि-
 तौ द्विगुरू सितोष्टत्रि द्यून षट् व्यय गृहान्यरि हन्त्यष्टस्तः ॥ २३५ ॥ अथ दिनज्ञानम् ॥ छा-
 या पादो रसो पेतो एक विंश शतं भजेत् ॥ लब्धो कै घटिका द्वाया शेषां के च पलाः
 स्मृताः ॥ २३६ ॥ अथेष्टकालाक्षग्रायनम् ॥ सायनार्कस्य भवानि निजोदय विनाडिकः

खत्रि भक्ता भवेद्भोग्य कालो लब्ध पलात्मकः ॥ २३७ ॥ सोध्योऽभीष्ट घटी स्यञ्च
 तदग्रम् निजोदयः ॥ शोभ्याः शेष खरा मधान शुद्ध तिष्ठि भाजितम् ॥ २३८ ॥ ल-
 धमं प्रादिकं योज्य मेवादौ शुद्ध राशिभिः ॥ अयनांश विहीनाय विलग्नं तत्स्फुटं
 भवेत् ॥ २३९ ॥ भोग्य कालेन शुद्धिं श्रेदिष्ट कालः पलात्मकः ॥ खरा मद्यो हृतस्ती
 योदये नाप्तिं लवादिकम् ॥ २४० ॥ योज्यं सूर्ये स्फुटं लग्न मयनांश विवर्जितः ॥
 रात्रीष्ट कालतो वापि सप्तद्वार्काच्च पूर्ववत् ॥ २४१ ॥ अथास्यष्ट लग्नादिष्ट काल ज्ञानम् ॥
 भानो भोग्य स्तुयः कालो भुक्त काल स्तथाननीः ॥ तदैक मेतयो र्मध्यो ह्यालुधं सम-
 य स्फुटः ॥ २४२ ॥ यद्यै कर्क्षे तु लग्ना क्केतियो र्भागान्नै र्हतः ॥ स्वीयो दयः ख-
 रा माप्तीऽभीष्ट काल स्फुट स्तदा ॥ २४३ ॥ अथ प्रप्रस्तयोगः ॥ शुभै स्तनुगतैः खेटै र-
 शुभै र्निधनी पंगैः ॥ ध्वजो यं परिली तात्र युवती प्रिय वल्लभा ॥ २४४ ॥ कुजेऽ-
 के लाम गे षष्ठे शनौ चन्द्रे द्वितीयगे ॥ धर्मस्थे खेचरै रन्यैः श्रीवत्सो योग उत्तमः ॥

२४५ ॥ यदि स्यात्कन्यका लग्ना तृतीये चन्द्रवाक्यती ॥ पञ्चमेश्वगुरानन्दो योग-
 श्वानन्दकृत्सहि ॥ २४६ ॥ लाभोऽर्केऽरिगृहे भौमे दुश्चिकेऽथ प्राने अरे ॥ यो-
 गो यमई चन्द्राख्यस्तत्रोत्ता शुभगासती ॥ २४७ ॥ गुरोर्धर्मबुधे भूतौ लाभे भू-
 गजाभिधः ॥ परिणीताहिवा मासी साध्वी धर्मार्थिदायिनी ॥ २४८ ॥ खतूर्यान्व-
 भौ स्सौम्यः शंखोयं शुभकृत्सदा ॥ अथनेष्टयोगः ॥ पापाचक्रस्य पूर्वार्द्धे पञ्चार्द्धि-सो-
 म्यखेचराः ॥ विवाहे चक्रयोगोयं तदूहा स्त्रैरिणी भवेत् ॥ २४९ ॥ सर्वैः केन्द्रगतेः
 पापैः वापीयोगोऽतिनिन्दितः ॥ सौम्ये लग्ने व्यये विज्ञे पापैः कोटलडकोऽप्यसत् ॥
 २५० ॥ भौमे द्वादशगेष्वे शुक्रे तुर्ये प्राने अरे ॥ कुठारेऽयं समारव्यातः शुभवल्ली
 विदारणः ॥ २५१ ॥ व्यये केन्द्रविगे शुक्रे रिपो मन्देऽद्यमेविधौ ॥ योगस्यात्कर्मना
 मायमत्रोदाभिंक्षुकी भवेत् ॥ २५२ ॥ रवौ लग्ने व्यये मन्देऽद्यमेऽत्रो मुशला युधः
 ॥ तत्रोदाया कुमारीसा कुलमारी भवेद्भुवम् ॥ २५३ ॥ अथ गोपूतिकलग्नं ॥ विष्टयादिकुलि

कं क्वात विद्धमपाय युक् तथा ॥ लभाद्यारिगतं चन्द्रलम्बे गोधूलिकं त्यजेत् ॥ २५४ ॥
 ॥ नान्यो गोधूलिके चित्तो दोषाश्चण्डा युधाह्वयः ॥ प्रयद्यन्ते यत सर्वे गोरजो भिस्स
 संततः ॥ २५५ ॥ यत्र चैकादशुश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयगः ॥ गोधूलिकस्स विद्वे-
 यश्चोषा धूलिसुखाः स्मृताः ॥ २५६ ॥ कुलिकं क्रान्ति साम्यं च मूर्त्तौ षट्पादग प्रशसी ॥
 पंच गोधूलिके त्याज्या अन्ये दोषा प्रशुभा बहाः ॥ २५७ ॥ यावद्दिनाते निशि पञ्चिमा
 यां पश्ये तृतीयं रवि विंव भागम् ॥ तस्यात्परं नाडिक युग्म मेके गोधूलिकालं मुनयो व-
 दन्ति ॥ २५८ ॥ अर्द्धास्तात्पूर्वं मयूर्द्ध घटि कार्द्वे तु गोरजः ॥ शनौ सार्कं गुरो चास्ते उ-
 भयत्रान्य वासे ॥ २५९ ॥ स कालो मंगले श्रेया न्विवाहादौ शुभ प्रदः ॥ अर्द्ध विंवा-
 त्परं केचिद्वृटी ह्यमिदज्जगुः ॥ २६० ॥ निराघे सार्द्ध विवेर्कं पिंडी भूते हि सांग के ॥ मेघकाले
 तु पूर्णस्ति प्रोक्तं गोधूलिकं शुभम् ॥ २६१ ॥ प्राच्यानां च कालिगानां मुख्यं गोधूलिकं स्मृ-
 तम् ॥ गंधर्वादि विवाहेषु वैश्यो द्वाहे तु योजयेत् ॥ २६२ ॥ विप्रेषु घटिका लाभे दातव्यं -

गो रजोनुधैः ॥ सकीर्णो गोरजस्सत्तं परेषु दितयं सुभम् ॥ २६३ ॥ महादीयान्यरित्य-
 ज्य प्रोक्तान् धिमादि के सुच ॥ कारवेहो रजोयावतावत्स्रगं सुभा वहम् ॥ २६४ ॥ अ-
 थ गृहवशात् ज्ञानम् ॥ सूर्या सति स्त्री च विधौ स्तथा राहितं सुतो ज्ञाच्च सुखं गुरो न् ॥
 धर्मस्सिता वर्क सुतां च वेष्टम जूयात्स मुद्वाह विधौ त्व युक्त्या ॥ २६५ ॥ लग्नो देहः
 ॥ २६६ ॥ सुखं स्वपुत्रोऽर्कमिन प्रशष्णी ॥ अर्त्ता कांता कलत्रे श सत्तल्लभा त्सुखं वदेत्
 ॥ चंद्र पञ्चांगं पुद्गे सौम्याय न विवाह सौ ॥ राज्ञो गो धूली दे लवने खड्गो हाहः ॥ अ-
 प्रदः ॥ विवाहो धन पुत्रायुः प्रीति सौख्य करो भवेत् ॥ २६८ ॥ अथ मूलादीनां क्षि-
 या पुनर्विवाहः ॥ मूलादीनां विवाहर्क्षे पुनरुद्हनं रित्रयः ॥ राज्ञो दुर्धर्मान्तत्रास्ति ति-
 थि मासादि दूषणम् ॥ २६९ ॥ सूर्य भादेव ७ नेत्रा रश्मि ३ भू १ चन्द्रा रश्मि रसा ६

नयः ३ ॥ भू १ राम ३ संमितास्तार गंधर्वीदि विवाहके ॥ २७० ॥ नेष्टाः श्रेष्ठाः
 क्रमा देतास्त्रिपद्यां गदिता बुधैः ॥ २७१ ॥ अथ विवाहांग कार्यं ॥ कार्यं विवाहका-
 र्यं विवाहोदित भोजनैः ॥ विवलेऽपि विधौ हित्वा त्रिषष्ट नवमं दिनम् ॥ २७२
 ॥ चित्रा विशाखा शत तारकाश्विनी ज्येष्ठा भरणी शिवभास्वतुष्टयम् ॥ हित्वा
 प्रशस्तं फलतैलवेदिका प्रदानं कंहुन मंडनादिकम् ॥ २७३ ॥ मूलेन्दु रुद्र
 अवराणार्क पौषा विष्वेष्ट चित्रा नल रेवतीषु ॥ संस्थापनं कंजिक कुंडिका यावारे
 रवे भूमि सुतस्य शस्तम् ॥ २७४ ॥ अथ तैल लेपने दिन संख्या ॥ मेघादि राशि जातानां
 कुर्यान्नैलादि लेपनम् ॥ श्रेल दिग्वाण दिग्वाणान्सप्तंगेषु प्ररेखिषु ॥ २७५ ॥
 वाण शैलेषु घरेषु क्रमात्कैश्चिद्वितीरितम् ॥ अथ वेदिका निर्माणम् ॥ हस्तोद्धिताचतु-
 र्हस्तैश्चतुरां समंततः ॥ स्तम्भैश्चतुर्भिस्सुश्लक्ष्णैर्वाम भागे स्वसम्पन्नः ॥ २७६ ॥
 ईशान्यां स्थापयेत्स्तम्भं सिंहादि त्रितये रक्षौ च्छ्रिकादि त्रिभे वायौ नैऋत्या कुंभतस्त्रिभे

॥ दृष्यान्नयं तथा मे यो स्तंभ स्वातस्तथैव हि ॥ २७७ ॥ अथ विवाहानंतरं मंडपो ह्यसन्म-
 २० ॥ मण्डपो ह्यश्रानं कार्यं समेत्त शुभ भेतिथौ ॥ वसंतविषमं नैष्टं मुक्ता सप्तमं पंचमौ
 ॥ २७८ ॥ उत्पानात्सह पात दग्ध तिथि धिर्दुष्टा श्रयोर्गो स्तथा चन्द्रे ज्योश्रान
 सामथा स्तमयनं तिथ्याः क्षयर्द्धी तथा ॥ गंडानं सच्च विष्टि संक्रम्य दिनं तन्वं श्रयास्तं
 तथा तन्वं श्रेष्ठ विधुन याद्यग्निपुगान्या पस्य वर्गो स्तथा ॥ २७९ ॥ सन्तु क्रूरस्वर्गो
 द्योश्र सुदया स्ता सुद्धि चंडा युधान् खार्जूरं दश योग योग सहितं यामि च तत्ता-
 भिधम् ॥ चारो पग्रह पाप कर्त्तार तथा तिथ्य क्षयो गोत्थितं दुष्टं योग मथाद्द यामकु-
 लिकाद्यान्वार दोषानपि ॥ २८० ॥ क्रूरं क्रांत विमुक्त भंग ग्रहा भयत्क्र गन्तव्य भंने
 गोत्पान हतं च केनु हत भं संध्यो दितं भंतथा ॥ तद्वच्च ग्रह भिन्न युद्ध गत भं सर्वानि मा-
 सं न्यजो दुद्धाहे शुभ कर्म्य सुग्रह कृतान् लग्नस्य दोषानपि ॥ २८१ ॥ द्विवेदि कुल
 सम्भूत सरयू कृत संग्रहे ॥ शिरो नगौ समाज्ञेया प्रभा पंच दशी शुभा ॥ २८२ ॥ इति २०

श्रीसंग्रहशिरोमणौ विवाहकथनं नाम पंचदशीप्रभा १५ ॥ अथ वधूप्रवेशप्रकरणम् ॥ १ ॥
 स्यो द्वादहदिवसात्प्रेष्ये वाप्यष्टमे दिने ॥ वधूप्रवेशस्तस्यैतदेष्टमेऽथ सप्तमे दिने ॥ २ ॥
 धूप्रवेशं कार्यं म्यञ्चमे सप्तमे दिने ॥ नवमे च शुभे वारे सुलग्ने शशि नो वले ॥ ३ ॥
 विवाहमारम्य वधूप्रवेशे युग्मे दिने षोडशवासरान्नः ॥ ऊर्ध्वन्ततोऽद्वेऽयुजि पंच
 मांतपुनः पुरस्तान्नियमो नवास्ति ॥ ४ ॥ अत्राह द्वितये मूलेऽनुराधारेहिणीज्ये
 ॥ हस्तत्रये मघापुष्ये त्र्युत्तरे रेवती द्यौः ॥ ५ ॥ प्रवेशे शुभदो वध्याः सोमे शुक्ले गुरो
 शनौ ॥ नध्यो बुधे कुजाक्षौ तु नेष्टोरिक्ता तिथिस्तथा ॥ ६ ॥ विवाहात्प्रथमे यौष
 भायादृचाधिमासके ॥ नसा भर्तृमृहे तिष्ठे चैत्रे तात गृहेऽपि च ॥ ७ ॥ ज्येष्ठे पति
 ज्येष्ठमथाधिके पतिं हन्त्यादिमे भर्तृमृहे वधूः शुचौ ॥ अथ शुभसहस्ये प्रसुरक्षये
 तनुं तातं मधौ तातमृहे विवाहतः ॥ ८ ॥ इति वधूप्रवेशः ॥ अथ द्विगमनम् ॥ विवाहा
 द्विषमे वर्षे कुंभे मेवालिंगे रवौ ॥ वलिन्यके विधौ जीवे शुभा हे चाश्विनीसुरे ॥ ९

रेवती रोहिणी पुष्ये च्युतरे अवरात्रये ॥ हस्तत्रये पुनर्वसोस्तथा मूला नृगधयोः ॥ ८
 २० ॥ कन्या मीन तुले युग्मद्वये प्रोक्तं वलान्विते ॥ लग्ने यस्य दलाक्षीणां द्विरागमन मि-
 न्ते ॥ १० ॥ सन्मुखं दक्षिणे शुक्ले नो गच्छेत्तु कदाचन ॥ गर्भिणी तु विगर्भा स्यान्ववो
 यतामियात् ॥ ११ ॥ बालकश्च विपद्येत विमोहादपि चेद्वजेत् ॥ भौमार्किव
 वारा वृत्ता षष्ठी च निदिष्टे ॥ १२ ॥ द्वादश्यमासदा वज्या द्विरागमन कर्म्म
 णि ॥ दीपोत्सवे देवापवादः ॥ अस्तं गते गुरौ शुक्ले सिंहस्थे वा दृष्टं स्यते ॥ दीपोत्सव दिने च
 ब्रह्मण्या भर्तृ गृहं विप्रोत् ॥ १३ ॥ स्वभवनपुरप्रवेशे देशानां विभ्रमे तथोद्वाहे ॥ नूत-
 नं प्रतिशुक्लं विचारणं नास्ति ॥ १४ ॥ एक ग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राज वि-
 हेतीर्य यात्रायां प्रतिशुक्लं न दृश्यति ॥ १५ ॥ पित्रा गारे कुच कुशुमयो
 यदि स्यात् पत्न्युद्दिन्नं भवति खेः सम्मुखो वायुशुक्रः ॥ शुद्धे लग्ने
 तिथौ चन्द्रतारविशुद्धौ स्त्रीणां यात्रा भवति सफला सेवितुं स्वामि सच्च ॥

॥ १६ ॥ कश्यपेषु वशिष्ठेषु भृगवः श्यामिसेषु च ॥ भारद्वाजेषु वत्सेषु प्रति शुक्रं न
 दूयति ॥ १७ ॥ विवाहे गुरु शुद्धिश्च भृगु शुद्धिर्द्विरगमे ॥ त्रिगमे राहु शुद्धिश्च च-
 न्द्र शुद्धिश्चतुर्गमे ॥ १८ ॥ आद्यर्क्षे भ्रमते राहुः पूर्वाश्लदिक् चतुष्टये ॥ स राहुर्द-
 क्षिणो त्याज्य स्तृतीय गमने स्त्रियः ॥ १९ ॥ गमोक्त तिथ्यादिषु कारयेद्बुधो वध्वा
 तृतीयं पतिवैश्वनो गमः ॥ तत्रालितस्त्रिभिः संस्थितैर्वौ प्रागादि राहुर्न भु-
 भोग्रदक्षे ॥ २० ॥ गेहात्पुरा चान्यगृहे पुरे वा देशे तृतीये च वधू प्रवेशे ॥ युद्धे ऽ
 लिगेहा त्रिभगेन सूर्ये प्रागादि राहुर्न भुभोग्रदक्षे ॥ २१ ॥ मार्गादिकेषु त्रिषु मा-
 स्तु पूर्वाद्याभ्यां तथा फाल्गुणतः प्रयाति ॥ ज्येष्ठा त्रतीची चिन्दिश्र मुत्तरस्यां भाद्रादि-
 केषु त्रियु याति राहुः ॥ २२ ॥ सौरेन मासेन विचिंत्य मेतत् मार्गाद्यथा वृश्चिकत-
 त्तथैव ॥ त्रिभिस्त्रिभी राशिभिरिन्द्रदिक् तो ककुप्सु राहु प्रचति सृष्टिर्हेति ॥ २३ ॥
 ॥ मेघादि राशीषु चतुर्षु गते पतं गेभ्या वत्स्य पूर्व ककुभः क्रमतः प्रयाति ॥ राहुः ॥

ककुप्सु च तस्यैवपि वर्जनीयो ह्यंगेषु कर्मसु ससन्मुख दक्षिणस्थः ॥ २४ ॥
 भेन्न राहो वैधव्यं दक्षिणे सुखदो भवेत् ॥ पृष्ठे पुत्रवती नारी वामे दो भग्यवर्द्धि
 नी ॥ २५ ॥ छागे नर्क्ष १ शरां ५ क ८ राशिषु गते पूर्वे भृगो ह्यं १० गनास्थे २६
 याम्ये वरुणा लये घट तुलायुग्मर्क्ष ११ ७ ३ संस्थेऽसुरे ॥ सौम्येऽन्तान्य च कर्क
 ने ८ १२ १४ धव गृहे वध्वा स्तृतीये गमे वामः पृष्ठ गतः शुभो मुनिवैभूसासिकः
 कीर्तितः ॥ २६ ॥ आपादित्य हस्तेऽन्य मृगांश्च भैत्रे तथा अत्र विद्या स्वपि वातपित्रे
 ॥ वध्वा स्तृतीये गमने प्रशस्तं स्याद्यो गिनी प्रूलतमे विश्रुद्धौ ॥ २७ ॥ न सन्मुख
 स्थे न च दक्षिणस्थे यात्रा तृतीया पति साधनेष्टा ॥ वध्वा स्तृतीये गमने स्व भर्तुर्गु-
 हे सुवोरसु तिथौ प्रशस्तम् ॥ २८ ॥ वत्सोऽयं वाम भागे गुर्दक्षिणे पुरुषस्थ च ॥
 उभयोः पृष्ठ देशे च शोभनं यामले मतम् ॥ २९ ॥ अथ विशेषः ॥ त्रिंशत्सं मासि
 कं चैव त्रिपक्षं द्विमुहूर्तकम् ॥ चतुर्विधं गतिं राहो म्मुनीनां चाभि भाषितम् ॥

॥ ३० ॥ गृह्णां रमे त्रिमासं च वधूयात्रा शुभासिकम् ॥ गृह प्रवेशे त्रिवर्षं युद्ध-
 कालेऽर्द्धयामिकम् ॥ ३१ ॥ द्विवेदि कुलसंभूत सरयू कृत संग्रहे ॥ शिरोमणौ
 समाक्षेया प्रभेयं योडशी शुभा ॥ ३२ ॥ इति संग्रह शिरोमणौ वधू प्रवेशे द्वि-
 रागमनादि कथनं नाम योडशी प्रभा १६ ॥ अथान्याधानम् ॥ सौम्यायने विशा-
 यायां कृत्तिका रोहिणी मृगो ॥ अश्लेषे रेवती ज्येष्ठा पुष्येऽग्न्या धान मिष्यते ॥ १ ॥
 कुजेऽर्केऽङ्गे गुरौ शुक्रे नो नीचेऽस्तं गतेऽरिभे ॥ नो ऋक्तायां तिथौ कर्के लग्ने नै-
 व मृगात्त्रये ॥ २ ॥ अग्न्याधानं प्रकुर्वीत नेन्दोर्लग्न गतेऽपि च ॥ त्रिकोणोपचये
 केन्द्रे सूर्यजीवकुजेन्दुयु ॥ ३ ॥ शेषे चोपचये शुद्धे रंध्रेऽग्न्या धान मुत्तमम् ॥ लग्ने
 जीवे धनुर्गेवाधूनेऽख १० वाजगेकुजे ॥ ४ ॥ चन्द्रे वा त्रियङ्गायस्थे सूर्ये वा दीप्ति
 तो भवेत् ॥ यस्य चा धान लग्नस्थे चंद्रे वा भृगु नन्दने ॥ उपैति तस्य जातोऽग्निनिर्वो
 रां स ततं कुले ॥ ५ ॥ द्विवेदि कुल संभूत सरयू कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाक्षेया प्र-

तिः ॥ ताभ्यामुपचयं भवायातुस्याद्वैरिसंक्षयः ॥ ३ ॥ जयो लगनेऽथ सद्गर्गे भवे
 च्छीर्षोदयेऽपि वा ॥ शुभैर्युक्ते क्षिते वापि शुभायात्रा चरोदये ॥ ४ ॥ स्थिरोदये
 गमो नस्याच्छुभैर्दृष्टेयुते शुभे ॥ द्विस्वभावोदये गपैर्युक्ते वाथ निरीक्षिते ॥ ५ ॥
 प्रस्थितोऽपि निर्वर्तेत निज्जितोऽरिजनैः पुनः ॥ रस्ये भूमि तले दृष्टे शुभे मांगल्य
 वस्तुनि ॥ ६ ॥ अत्यादरेऽपि चेत्प्रश्ने जयो लान्तोऽपि जायिनाम् ॥ भृगौ लगने पु
 धे तुय्ये सहीत्येऽर्क्षे सुते गुरो ॥ ७ ॥ लाभैर्गौरयैः शत्रून् जित्वाभ्येत्येति नृपो गृहम्
 । लगने भौमेथवा मन्दं सुते जीवेऽथवा रवौ ॥ ८ ॥ लाभे कस्मरी वा चन्द्रे शुक्रो
 ऽपि विजये ध्रुवम् ॥ लगने भौमे न्युयुक्ते वादिने शतनुजे क्षिते ॥ ९ ॥ चंद्रवानि
 धनेऽस्तस्थे भास्करे लगनवर्तिनि ॥ यौषेर्वर्षानुलग्नाष्टदिवुको यगते गृहेः ॥
 १० ॥ एभिस्त्रिभिश्च दुय्येगैः प्रकुर्मंगो न संशयः ॥ कोणे भौमाहुधे ज्या किं शु
 कावेषु चतुर्विपि ॥ ११ ॥ एकश्चेद्गमनं न स्यात्सूर्याद्वा कोणो विधे ॥ नयेद्ग

स्वदिशं सोऽन्नयः खेटो वलवौ स्तयोः ॥ १२ ॥ अग्ने गम्य दिगी प्रात्वेदः पंचमगो
 यः ॥ वोभूया हल युक्तस्त्वा माशं नयतेऽसौ ॥ १३ ॥ अथ संक्रांति यात्रा ॥ मेघसिं
 ह धनुः संस्थे यात्रा शस्तां शुक्ता लीनि ॥ कुंभ न च्छोगना युग्म राशि संस्थे तु मध्य-
 मा ॥ १४ ॥ कर्कालि मीनगेऽर्के तु यात्रा दीर्घ तमा मता ॥ विशेषोऽपि ॥ यात्री ज-
 सिंह तुरगे यगते वरिष्ठा मध्या श्नैश्चर बुधो शन सौ रहेषु ॥ भानौ कुलीर दृषत्
 अश्वकगेऽतिदीर्घा प्रास्तश्च देवल मतेऽप्य निष्टु गोऽर्कः ॥ १५ ॥ अर्द्धयामावशे-
 षाया रात्रे र्याम प्रमायातः ॥ अष्टास्वपि क्रमादिषु अमरां आत्ततः स्तुतम् ॥
 १६ ॥ अङ्कुरिणी दिग् विणा विमुक्ताय स्यां रवि स्मिधुति साग्रदीपा ॥ प्रभूमिताया स्व
 तियां दिनेशः शेषाश्च शान्ताश्च दिशो भवंति ॥ १७ ॥ दग्धादि गेशी ज्वलिता दि-
 गेन्द्री धूमा न्विता वानल दिक्च भति ॥ इत्येव जेवं प्रद्वारात् केन भुक्ते दिशं ता-
 मिहति गम रस्मिः ॥ १८ ॥ लग्नस्ये बरुणा शं हि वुक स्थे दक्षिणां रवौ यायां त-

भासप्तदशी शुभा ॥ ६ ॥ इति श्रीसंग्रहशिरोमणावगत्या धानकथनं नाम सप्त-
 दशी प्रभा २७ ॥ अथ राजाभियेकप्रकरणम् ॥ उदितेऽब्जे गुरो शुक्ले विचित्रे चोत्तरायणे
 ॥ जन्मेशे वा स्वर्के गेशे रवौ भौमे वलान्विते ॥ १ ॥ गेहिरणी हितये पुष्ये ज्येष्ठा
 पां च्युत्तरतथा ॥ रेवती युगले हस्ते चित्रायां श्रवणेऽपि च ॥ २ ॥ तिथौ वारे शुभे
 ३ ॥ शुभे युक्ते क्षिते वापि पापदृश्योगवर्जिते ॥ धनकेन्द्रत्रिकोणारव्यरहितैः
 पापस्वेच्चरैः ॥ ४ ॥ सोम्यै रषष्टगैः सर्वैर्व्ययमृत्युविवर्जितैः ॥ केन्द्रत्रिकोणा
 भवर्जितैः ॥ राजयोगो चिते लगने कुर्याद्भ्राज्येऽभिषेचनम् ॥ ६ ॥ पौषेस्तनौ
 रुक्निधने मृतिः सुते पुत्रार्तिरर्थव्ययगैर्दरिद्रता ॥ स्यात्स्वेऽलसो भयपदोद्यु
 ना मृगैः सर्वं शुभं केन्द्रगते प्रशुभग्रहैः ॥ ७ ॥ गुरुर्लग्नकोणो कुजरो मितः ॥

रवे स राजा सदा मोदते राजलक्ष्म्या ॥ तृतीयाय नो सोरि सूर्यो ख वंधो गुरुश्च द्वि-
 त्री स्थिरा स्यान्नुपस्य ॥ अथ युव राज्याभियेकः ॥ युव राज्याभियेकस्या दभिये को कर्मा-
 दिषु ॥ अथ पुत्राभवेऽन्यस्याभियेचनम् ॥ स्वज्ञाति रत्नस्तत्स्थाने पुत्राभावे कुलोद्भवम्
 ॥ नो चिंत्वा स्तिथि वाराद्यास्तत्कालमभियेचने ॥ २६ ॥ राजचिन्हधारणम् ॥ चामरं
 छत्रदोलादि पीठसिंहासनादिकम् ॥ यदा भियेकके सर्वे विदध्याच्छेभनेहनि
 ॥ १० ॥ द्विवेदि कुलसम्भूतसरयूकृतसंग्रहे ॥ शिरोमणौ समाज्ञेया प्रभाद्या-
 दशी शुभा ॥ ११ ॥ इति श्री संग्रह शिरोमणौ राज्याभियेक कथनं नामाद्या-
 दशी प्रभा १८ ॥ अथ यात्रा प्रकरणम् ॥ विज्ञातजन्मनो रत्नां ज्ञात्वा शुभ फलोदयम्
 ॥ योज्या यात्रा शुभे प्रशस्ता प्रश्नादज्ञातजन्मनाम् ॥ १ ॥ अथ प्रश्नलग्नाद्यात्राया
 शुभशुभाशुभफलम् ॥ अनुयो लभ राशौ वालभेऽस्ते वात दीर्घरे ॥ ताभ्यां चोपच-
 यलनं तदा रत्नां जयो ध्रुवम् ॥ २ ॥ जन्मतोलभभे राशौ स्तूर्येऽस्ते वातयोऽप-

तिः ॥ ताभ्यामुपचयं भवायातुस्त्याहैरिसंक्षयः ॥ ३ ॥ जयोलगनेऽथ सच्चर्गे भवे
 च्छीघोदयेऽपि वा ॥ शुभैर्युक्ते क्षिते वापि शुभायात्राचरोदये ॥ ४ ॥ स्थिरोदये
 गमोनस्याच्छुभैर्दृष्टेयुते शुभे ॥ द्विस्वभावोदये गपैर्युक्ते वाथ निरीक्षिते ॥ ५ ॥
 प्रस्थितोऽपि निर्वर्त्ततनिर्जितोऽरिर्जनैः पुनः ॥ रस्ये भूमि तले दृष्टे शुभे मांगल्य
 वस्तुनि ॥ ६ ॥ अत्यादरेऽपि चेत्प्रश्ने जयो लान्नोऽपि जायिनाम् ॥ भृगौ लगनेषु
 धेतुर्ये सप्तोत्थेऽर्क्षे सुतेगुरो ॥ ७ ॥ लाभगौरपरैः शत्रून्जित्वाभ्येतित्नुयोरुहम्
 । लगने भौमेथवामन्दे सुतेजीवेऽथवा रवौ ॥ ८ ॥ लाभे कर्म्मणि वाचन्द्रे शुक्रेऽ
 ऽपि विजयो भ्रवम् ॥ लगने भौमेन्दुयुक्ते वादिनेशतनुजे क्षिते ॥ ९ ॥ चंद्रवानि
 धनेऽस्तस्थे भास्करे लगनवर्त्तिनि ॥ षोपैर्वाधून्लग्नाष्टहिवुको पगते र्हैः ॥
 १० ॥ एभिस्त्रिभिश्च दुर्य्योगैः प्रष्टुर्भंगेन संप्रथः ॥ कोरो भौमाहुधे ज्याकिंशु
 वेयुचतुर्थ्यपि ॥ ११ ॥ एकश्चेद्भमनं न स्यात्स्वर्ग्यीद्वा को एते विधौ ॥ नयेद्ग

त्वाद्वा साऽत्रयः खटो वल्वौ स्तयोः ॥ १२ ॥ अश्वगम्य दिवा शाल्वतः ॥ १३ ॥
 यः ॥ वीभूया हल युक्तस्त्वा माशानयतेऽहो ॥ १३ ॥ अथ संक्रांति यात्रा ॥ मेयसिं-
 ह धनुः संस्थे यात्रा शस्तां शुभालिनि ॥ कुम्भ नक्रांगना युग्म राशि संस्थे तु मध्य-
 मा ॥ १४ ॥ कर्कालि मीनगेऽर्के तु यात्रा दीर्घतमा मता ॥ विशेषोऽपि ॥ यात्रा ज-
 सिंह तुरगो यगते वरिष्ठा मध्या श्नैश्चर बुधो शन सो गृहेष्टु ॥ भानौ कुलीरं च वृ-
 श्चकगेऽतिदीर्घा शस्तश्च देवल मतेऽथ निष्टु गोऽर्कः ॥ १५ ॥ अर्द्धयामावशे-
 षाया रात्रे र्य्याम प्रमारातः ॥ अष्टास्वपि क्रमादिष्टु चमरांश्चास्वतः स्मृतम् ॥
 १६ ॥ अङ्गुरिणी दिग् विरा विमुक्ताय स्यां रवि स्निष्टुति साग्रदीप्ता ॥ प्रधूमिना यास्व-
 तियां दिने शः शेषाश्च शान्ताश्च दिशो भवंति ॥ १७ ॥ दग्धादि गे शीज्वलिता दि-
 गेन्द्री धूमा न्विता वानल दिक्च भाते ॥ इत्येव भवं प्रद्वाराष्ट केन भुक्ते दिशो ना-
 मिहति गमरस्तिः ॥ १८ ॥ लग्नस्थे वरुणा श्रां हि वुक स्थे दक्षिणा रेवौ यायाव-

॥ सप्तमगे पूर्वाग्रामे बूरा संस्थिते सौम्याम् ॥ १८ ॥ अथ तारा तिथ्यादि शुद्धिः ॥ ता-
 रानि पंच सप्ताद्या नृत्ता मा पूर्णिमा शुक्ली ॥ शुक्लाद्या द्वादशी षष्ठी हित्वा चंद्रव-
 ले गमः ॥ २० ॥ एतत् तिथिफलम् ॥ कृत्वा च प्रति पञ्चैका नो शुक्ला गमना दिव्यु ॥
 चितीया कार्य सिद्धौ स्या च्छतीया क्षेम संपदे ॥ २१ ॥ चतुर्थी क्लेश दाज्ञेया लाभ
 दा पंचमी तथा ॥ व्याध्यति दायिनी षष्ठी सप्तमी भक्ष्य भोज्यदा ॥ २२ ॥ रोगदा
 चाष्टमी ज्ञेया नवमी मृत्युदा सदा ॥ दशमी लाभदा नित्यं हेम देका दशरी स्मृता
 ॥ २३ ॥ प्राण हृद् दशरी प्रोक्ता सर्व सिद्धात्रयो दशी ॥ शुक्ला चतुर्दशी नेत्रा क्लेश पक्षे
 विशेषतः ॥ २४ ॥ पूर्णिमा मध्यमा प्रोक्ता त्याज्यो दशरश्च सर्वदा ॥ तिथीनां फल
 मेतद्वि विचार्य न मन्ये दुर्धैः ॥ २५ ॥ अथ शुभवारः ॥ सार हेतुः ॥ नारायण चतुर्थ्या
 विज्यासे ॥ आद्या श्रेया बुधे मध्या लोके प्राप्ते तु न कंचित् ॥ २६ ॥ रवौ सूर्यो द्येयाया
 दुष्यकाले शनौ नरः ॥ भौमे शुक्रा सदान्यत्र वारे कैश्चिदितीरितम् ॥ २७ ॥ अथो- २१०

शिक्तममथ्यमाधमनक्षत्राणि ॥ अग्निस्वा अवरुणो हस्तोऽनुराधारेवतः दुयम् ॥ नृगः पुनर्वसुः
 पुष्यः श्रवणं ज्येष्ठानि ज्ञानि च ॥ २८ ॥ मूलं पूर्वात्रयं ज्येष्ठारोहिणी धनतारका ॥ उ-
 त्तराणान्नयोर्याने सध्या न्येतानि भानि च ॥ २९ ॥ चित्रात्रयं मघाश्लेषा कृत्तिका द्रु-
 मरार्यपि ॥ वज्र्या न्येतानि धिष्णानि यात्रायां जन्मभूतया ॥ ३० ॥ आश्रवणं केनक्षत्रो-
 णं त्याज्य घटिकाः ॥ पूर्वासुयोदशौ वाघा कृत्तिका स्वक विंशतिः ॥ मघा स्वका दश त्याज्या-
 भरण्या सप्त नाडिकाः ॥ ३१ ॥ स्वात्यश्लेषा विशाखा सुज्येष्ठा याश्च चतुर्दश ॥ यायास्त-
 र्गन वले श्रेष्ठं ख्यावश्य के सति ॥ ३२ ॥ मंगतरम् ॥ कृत्तिकायां मघा स्वात्योरेकेषू-
 र्वं हस्तं जगुः ॥ उत्तरार्द्धं चित्राया भरण्या श्लेषयो रपि ॥ ३३ ॥ सर्वं स्वाती मघा त्या-
 ज्यो सन सो मत मीढशम् ॥ ३४ ॥ अथ नक्षत्र विशेषे विजययात्रा ॥ संप्रस्थायानुराधायां
 स्थित्वा ज्येष्ठामिधेततः ॥ मूले गच्छेन्महीपालो यदि स्याच्च ज्यो भवम् ॥ ३५ ॥ हस्ते
 प्रस्थाय वा स्थित्वा तत्रैव स्वाति चित्रयोः ॥ विशाखायां व्रजन्भूपो विजयं लभते भवम् ॥ ३६ ॥

॥ ३६ ॥ प्रस्थाय मृग प्रीर्येवास्थित्वाद्र्योततो व्रजेत् ॥ पुनर्वसो ग्रही यालो लभते
 च जयञ्जयम् ॥ रेतस्याम्युद्यमे चापि धनिष्ठायां ग्रही श्वरः ॥ उद्यित्वा स्वीय शिवि-
 रे रत्नौ गच्छन् जयत्यरेन् ॥ ३८ ॥ अथ दिक् प्रलम् ॥ दिग्दूल्लं पूर्वादिग्भागे ज्येष्ठायां श-
 नि सोमयोः ॥ पूर्वं भाद्रपदेयाम्यां तथैव गुरुवास्तरे ॥ ३९ ॥ रेवौ शुक्रे च रोहिण्यां
 पश्चिमायां त्यजेद्बुधः ॥ उदीच्या मुत्तरा फाल्गुणाय भिधे मंगले बुधे ॥ ४० ॥ अथ विदि-
 क प्रलम् ॥ ज्ञानेयां च गुरौ चन्द्रे नैऋत्यां रवि शुक्रयोः ॥ दृशान्यां चंद्रजे वायौ मंग-
 ले गमनं त्यजेत् ॥ ४१ ॥ अथ दिक् प्रलम् परिहारः ॥ सूर्यं वारे घृतं प्रास्य सोम वारे दधत्त
 षा ॥ गुड मंगारके वारे बुध वारे तिलान्यपि ॥ ४२ ॥ गुरु वारे दधि प्रास्य शुक्लवा-
 रे यवानपि ॥ माषान्मुक्ता शने वारे गच्छन्मूलेन दोष भाक् ॥ ४३ ॥ अथापरः ॥ तां-
 वूलं चंदनं मृच्च पुथ्यं दधि घृतं नित्याः ॥ वारभूल हरण्यर्क्षात्स्मरणादपि वानि शि-
 ॥ ४४ ॥ अथ समय विशेषे त्वान्यानि भानि ॥ पूर्वोक्ते रोहिणी धिसे वि श्रगथा कृत्तिका नरः ॥ ४५ ॥

॥ मध्यान्ह समये ज्येष्ठा श्लेष्माद्रि मूल भन्तथा ॥ ४५ ॥ अपराह्णे परित्याज्या रामने
 चाश्विनी सदा ॥ चित्रान्त्यमनुराधा च यामिन्याः प्रथमं शके ॥ ४६ ॥ मध्येऽंशके
 त्यजेत्पूर्वा त्रितयं भरणी मघा ॥ आन्ते पुनर्वसू स्वाती धनिष्ठा श्रुत तारका ॥ ४७ ॥
 अथ सर्वकाले श्रेष्ठ नक्षत्राणि ॥ अश्वी पुष्यो मृगी हस्त श्र्लेष्ठा यात्रा सुसर्वदा ॥ ४८ ॥ अथ
 युद्धयात्रायां विशेषः ॥ राहु भुक्ता निजरक्षारि जीव पक्ष स्त्रयो दश ॥ मृत पक्षस्तु भोग्या
 नि कर्त्तरी तदधिष्ठितम् ॥ ४९ ॥ ततः पंचदशे ग्रस्तं चित्यं युद्धे गमा दियु ॥ जीव-
 पक्ष श्रुभो द्वे यो मृत पक्ष स्त्वशोभनः ॥ ५० ॥ मृत पक्षाच्छुभं ग्रस्तं ग्रस्त भारक-
 र्त्तरी शुभा ॥ मृत पक्षे सहस्रांशौ जीव पक्षे विधौ स्थिते ॥ ५१ ॥ यात्रायां विजय
 स्तत्र विपरीते पराजयः ॥ उभौ चेज्जीव पक्ष स्थौ यात्रा तत्रापि शोभना ॥ ५२ ॥
 चेदुभौ मृत्यु पक्ष स्थौ रविन्दूतत्र कष्टदा ॥ याथिनो जय दश्चंद्रो जीव पक्षे व्यद-
 स्थितः ॥ ५३ ॥ भानु मान् जीव पक्ष स्थः स्स्थायिनो विजया वहः ॥ अथ शकुलकुल कुलार्क-

शैल गणः ॥ आदेशकुलम् ॥ धनिष्ठा भरणी स्वाती हस्तो ज्येष्ठा पुनर्वसूः ॥ रोहिणी ज्यु-
 तं चान्त्या नुराधा विद्यमातिथिः ॥ ५४ ॥ सूर्येन्दु गुरु मंदारव्यवागश्चैव गणोऽ-
 कुलः ॥ अत्र संग्रस्थितो राजा शत्रून् जयति संगरे ॥ ५५ ॥ अथ कुलगणः ॥ पूर्वोच्चि-
 नी मघा पुष्यः कृत्तिका अवरोण मृगः ॥ चित्रा ज्येष्ठा विशारवा च कुज शुक्रौ चतुर्द-
 शी ॥ ५६ ॥ अष्टार्काश्च मितास्तिथ्यो गणोऽयं कुलसंज्ञकः ॥ संग्रहं या यिनोभ-
 गः स्यायिनोऽत्र जयो भवेत् ॥ ५७ ॥ अथ कुलाकुलगणः ॥ अभिजिन्मूलमाङ्गि च श-
 तमं बुधवासरः ॥ द्वितीया दशमी षष्ठी कुलाकुलगणस्त्वयम् ॥ ५८ ॥ राज्ञस्त्वय-
 स्थितस्यात्र संन्धिर्भवति वैरिणा ॥ अथ नामादि वर्णचक्षणैः सर्गिको वर्णस्वरः ॥ कच्छडाधन-
 वानां स्यादकारो वर्सर्जः स्वरः ॥ खजद्वानसं सानान्तु स्वरद्वकार उच्यते ॥ ५९ ॥ ग-
 भतापयधा वर्णोऽकारस्वभाजिनः ॥ घट या फरश वर्णा एकारस्वरसंज्ञकाः ॥
 ६० ॥ चट्टा वल्ह्यैवाशोकारः कथितस्वरः ॥ नाम्नियश्चादि मो वर्णस्तद्वशात् ॥ ६१ ॥

गुणस्त्वः ॥ ६१ ॥ अथतिथिस्वरः ॥ अकारादि स्वरः पंच नंदद्या स्तिथयः क्रमात् ॥
 निजस्वरतिथेर्द्ध्या वाल प्रभृतयस्वरः ॥ ६२ ॥ आद्यो वालः कुमारोऽन्यो युवा वृद्ध-
 स्तथा सृतः ॥ द्वेषस्त्राभ करस्त्वाद्यः कुमारस्त्वर्द्धलाभदः ॥ ६३ ॥ सर्वास्मिद्धियुवाकु-
 म्प्यहृद्धीमध्योऽधमोऽन्तिमः ॥ अथपथिराहुचक्रम् ॥ विशारवा पुष्य मङ्गलेषाः नुराथा-
 ऽचि प्राता अधम् ॥ धानिष्टे नानि धर्मेस्यु अन्तेऽस्मिन्वथिराहुके ॥ ६४ ॥ भरणी
 प्रवर्णोज्येष्ठा मघा स्वाती पुनर्वसू ॥ पूर्वभाद्रपदेतानि भान्यर्धे गार्गिता निच ॥ ६५ ॥
 चित्रार्द्रा छत्तिका मूलं पूर्वा फाल्गुणि का अभिजित् ॥ तथा भाद्रपदेतानि कान्ते धिला
 नि सप्तच ॥ ६६ ॥ उत्तरा फाल्गुणी हस्तो रेवती रेवती मृगः ॥ पूर्वाषाढा ह्येकोक्षे
 भान्येतानि बुधा जगुः ॥ ६७ ॥ धर्मर्क्ष संस्थिते सूर्ये चन्द्रे मोक्षार्थ गण्युभः ॥
 सूर्येर्धे भास्करे चंद्रः प्रशस्तो धर्म मोक्षगः ॥ ६८ ॥ सूर्ये काम क्षीगे ष्वेष्टो मो-
 क्ष धर्मार्थ गण्युभ ॥ मोक्षधिस स्थिते सूर्ये चंद्रा धर्म गण्युभः ॥ ६९ ॥

स	पुष्य	श्ले	वि	श्रु	ध	श	धर्म
भ	पु	म	स्वा	ज्ये	श्र	पू	अर्थ
क	आ	पू	चि	मू	अ	उ	काम
र	म	उ	ह	पू	उ	रे	मोक्ष

अथान्यत्रा शुभो द्वयोः सान्नायां शुभमी-
 मुभिः ॥ अथ गोरक्षक मतेन तिथिचक्रम् फल-
 न्न ॥ मासे शुक्लादिके यौषे तिथिः प्रतिप-
 दादितः ॥ द्वितीयाद्यास्तु माघे म्यु स्स्त-
 तीयाद्यास्तु फाल्गुने ॥ ७० ॥ एवं चान्ये

सु मासेषु तिथ्यो द्वादश सञ्चुकाः ॥ लेख्याश्च क्रेत्रयो द्रष्टव्या सविहायति-
 थित्रयम् ॥ ७१ ॥ तृतीयादित्रये तत्र त्रयो द्रष्टव्यादिके फलम् ॥ यानि प्राच्या-
 दिकाद्या सुवक्ष्ये द्वादशधा क्रमात् ॥ ७२ ॥ सौरव्यं भून्यं धनार्तिश्च लाभोला-
 भोभयं धनम् ॥ कष्टं सौरव्यं कलिर्मृत्युः भून्यं प्राच्यां फलं क्रमात् ॥ ७३ ॥
 क्लेशो नैश्वव्यथा सौरव्यं द्रव्याप्तिर्निपीबुने ॥ सौरव्यं लाभः कष्टं सिद्धिः ली-
 भस्सौरव्यन्तु दक्षिणे ॥ ७४ ॥ भयं नैश्वप्रियाप्तिश्च भव्यं द्रव्यं मृतिर्जनम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्यं	लेश्य	भीति	अर्थागम
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्यं	नीचं	नेषं	मिश्रता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्यलेशः	दुःखं	वृथापिः	अर्थः
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभः	सौख्यं	मंगलम्	वित्तलाभः
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	द्रव्यापि	धनम्	सौख्यम्
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भीति	लाभः	मृत्युः	अर्थागमम्
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	द्रव्यलाभः	सुखम्
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्टम्	सौख्यं	लेश्यलाभः	सुखम्
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्यं	लाभः	कार्यसिद्धिः	नष्टम्
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	लेश्य	कायानुसिद्धिः	अर्थः	धनम्
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	द्रव्यलाभः	प्रत्ययम्
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्य	सौख्यं	मृत्यु	अन्त्यतकष्टम्

लेश्यलाभो यं सिद्धिस्त्वं लाभो मृत्युश्च पश्चिमे ॥ ७५ ॥ धनं मिश्रं धनं लाभः

शि शेरव्यं लाभस्सुखं सुखम् ॥ कष्टं द्रव्यत्वं शून्यत्वं कष्टमुत्तरदिक्फलम् ॥ ७६ ॥
 ॥ अथ सर्वकियोगफलम् ॥ तिथिनक्षत्रवारिव्यं सप्ताष्टारिन्विभाजितम् ॥ आदि-
 शून्येऽतिपीडास्यान्मध्यशून्ये अयं तथा ॥ ७७ ॥ शून्येत्येवपुनो गेगो मृत्यु-
 शून्यत्रये भ्रवम् ॥ जय प्रत्वायी गमस्सौरव्यं श्रेषे च स्थानकात्रये ॥ ७८ ॥ वि-
 त्यमेतद्विद्यागादौ युक्ताद्यास्तिथयोऽत्रतु ॥ अथाद्वलभमोत्याज्यौ ॥ यात्रायन्त्रह-
 लं प्रवाह समरे चौर्ये च संधौ तथा कृपा रामतडागबंधन विधौ पापार्द्धिदुर्गि-
 हे ॥ अन्ये भोक्तृ रसाधिरोहण विधौ त्याज्यं सदैवाद्वलं यत्नान्नात्रशुभेषु मंगल-
 विधौ देवी नतस्तद्वचिन् ॥ ७९ ॥ रविमात्साभिचान्दे सप्तभिर्द्वा २ द्वि ७ श्रेष-
 के ॥ आद्वलोऽथत्रि ३ पत् ६ श्रेषे अमो नेष्ट्ये गमे त्विमौ ॥ ८० ॥ अथ प्रस्तो हैव
 योगः ॥ चंद्रं सूर्यं माधु तं पक्षादि तिथि वासरैः ॥ नवाप्तं सप्तश्रेषेतु हैरवस्थ-
 च्छुभोगमे ॥ ८१ ॥ अथ चवाडाल्यः शुभयोगः ॥ सूर्ये भाद्रपदे च्चांद्रं त्रिगुणं तिथि-

संयुतम् ॥ सप्तभिस्तु हरेद्भागं त्रि श्रेयं स्याद्द्वादकम् ॥ ८२ ॥ गमेऽभुमंसदा
 द्वौर्ध्ववाटुं हेरवात्सदा ॥ अथटेलकम् ॥ सूर्य्य आङ्गराये च्चाद्रं तिथि वारच चि-
 मित्रनम् ॥ सप्तभिस्तु हरेद्भागं पञ्च श्रेयसु टेलकम् ॥ ८३ ॥ अथ गौरवम् ॥ सूर्य्य
 भाङ्गराये च्चाद्रं तिथि वारच मिश्रितम् ॥ अर्कसंख्ये हरेद्भागं नव श्रेयसु गौर-
 वम् ॥ ८४ ॥ अथ श्रे गौरवं दद्यान्निर्गमे हेरवन्तया ॥ तस्करे टेलकं दद्याद्द्वादं
 सर्वकर्मसु ॥ ८५ ॥ अथ मेवादीनां घातचंद्रः चंद्रघातो लाघवत्वेन ॥ मेषकन्या घटहरी
 नक्र युग्मधनुर्दृषाः ॥ मीन सिंह धनुः कुंभा घात चन्द्राऽप्रजादितः ॥ ८६ ॥ युद्धे
 चैव विवादे च कुमारी पूजने तथा ॥ राजसेवावाहनादे घात चंद्रं विवर्जयेत् ॥
 ८७ ॥ तीर्थे द्वात्रा विवाहान्त प्राप्नोपनया दियु ॥ मांगल्य सर्व कार्येषु घात
 चन्द्रं न चिंतयेत् ॥ ८८ ॥ जन्मस्थो मेष राशे स्स्याद्दुवभस्य तु यंचमः ॥ नवमे
 निधुनखेन्दुः द्वितीयः कर्कटस्य च ॥ ८९ ॥ षष्ठस्तु सिंह राशे च्च कन्याया दश ॥ ९० ॥

मस्मृतः ॥ तृतीयत्तुदुलाराशे र्दश्विकस्य च सप्तमः ॥ ८० ॥ चतुर्थीधन्विनो
 द्वेयो मकरस्याश्वस्तथा ॥ कुंभस्यैकादशः प्रोक्तो मीनस्य द्वादशः स्मृतः ॥
 ८१ ॥ घातचंद्रादग्नेवज्याद्यात्रायां राजदर्शने ॥ विवादे वाहना रोहे युद्धे भे-
 यज्यसेवने ॥ ८२ ॥ विवाहादिभ्युभेऽन्यत्र नैते चिंत्या मनीषिभिः ॥ अथमेया
 दीनाघातक्षारिणि ॥ मेवेमघाद्वधे हस्तो भियुने स्वाति रुच्यते ॥ कर्केटचानुराधारव्यं
 सिंहमूलं प्रकीर्तितम् ॥ ८३ ॥ कन्यायां श्रवणो द्वेयस्तुलायां प्रतत्तारकाः ॥ दृ-
 श्विके रेवती धिष्णं भरणी धनुर्वि स्मृता ॥ ८४ ॥ मकरे रोहिणी कुंभे चार्द्राश्ले-
 षातु मीनिगे ॥ एतानि घातधिष्णानि जन्म राशे र्ध्वरस्य च ॥ ८५ ॥ अथ घातवाराः ॥
 मेवे रविर्बुधः कर्क भियुने चन्द्र एव च ॥ कन्या दृषभ सिंहेषु शनिः स्यान्मकरे कु-
 जः ॥ ८६ ॥ धनु र्दश्विक मीनेषु शुक्रोऽथ तुलकुंभयोः ॥ जीवश्चेज्जन्म राशौ
 च घातवारा बुधे स्मृताः ॥ ८७ ॥ अथ घाततिष्ठयः ॥ सेषदृश्विकयोर्नन्दा भद्रा

मिथुन कर्कयोः ॥ जया सिंह धनुः कुंभे रिक्ता च तुल कुंभयोः ॥ ८८ ॥ कन्या वृषभ-
 मीनेयु पूर्णा घात तिथि स्मृता ॥ अथ घात तिथीनां त्याज्य घटिकाः ॥ कार्त्तिके ८ त्या वष्यके
 नाडी बह्वं घात तिथौ बुधैः ॥ आदिमं शोपरित्यज्य नो निद्या शेष नाडिकाः ॥ ८९ ॥
 ॥ अथ घात लग्नानि ॥ मेष गोकर्कद तौलि नक्र मीनां ग नालयः ॥ धन्वि कुंभौ युग्म
 सिंहौ घात लग्नानि मेष भात ॥ ९० ॥ अथा वष्यके घात चन्द्र नक्षत्र पाद त्याज्यः ॥ मे-
 धेनु कृत्तिका द्यौः द्विर्द्वे चित्रा द्वितीयकः ॥ युग्मे शते तृतीयोऽङ्घ्रिर्मघाया अपादि
 कर्कटे ॥ ९१ ॥ धनिष्ठा द्यास्तथा सिंहे रत्रिय श्वाद्रा तृतीयकः ॥ तुले मूले द्विती-
 योऽघ्निरलो रोहे स्तृतीयकः ॥ ९२ ॥ पूभा तुर्व्या धनुः सद्मे मघा तुर्व्यो मृगे तथा ॥
 कुंभे मूल चतुर्थोऽघ्नि मीने पूभा तृतीयकः ॥ ९३ ॥ त्याज्या घात विधौ चोक्त पादा
 आवष्यके बुधैः ॥ अथ सूर्यादयो घात ग्रहाः ॥ अथ सूर्यः ॥ वेदाद्या केषु न देहुरसदिक्
 शेल संमिताः ॥ रुद्र नेत्राग्नि संख्याश्च घात सूर्यास्तु मेघतः ॥ ९४ ॥ अथ चन्द्रः २२

संस्थि द्दुवाण कनत्राग दिगांघ्रौ लसत्स्य काः ॥ वेदद्ये शार्क संख्या का मेवा ह्वाने
 २२२ दवः क्रमात् ॥ २०५ ॥ अथ भौमः ॥ वाराणं केन्दुरसाश्रादृक् शैल रुद्र भसंसिताः
 ॥ सूर्याग्न्यभिमितोसेषान्क्रमाह्वानो धरात्मजः ॥ २०६ ॥ अथ बुधः ॥ नेत्रांगाश्रा

अथ यात तिथिवा एनक्षत्र लग्नचंद्रमा स्त्रियते ॥

अथसूर्यादयो घातग्रहाः,

[illegible]

दिग्निशैलेषा वेदाष्टैस्त्वं कं संमिताः ॥ हादशेऽष्टुमिताघातवोधनः क्रमतस्त्वजात् ॥
 १०७ ॥ अथगुरुः ॥ रसनेत्रेषा शैलेषा वह्निनागार्कसंमिताः ॥ नंदेन्द्वि त्रिसं-
 रख्याना घातेज्या मेघतः क्रमात् ॥ १०८ ॥ अथशुक्रः ॥ शैल दिग्वह्निनागार्कवेद
 नंदेन्दुभिर्निर्मिताः ॥ आश्राप्य वारा दक् संख्या घातशुक्रस्तु मेघतः ॥ अथशनिः
 वह्निशैलेषा वेदाष्टसूर्यवारां कं संमिताः ॥ दिगीन्दुरस संख्याप्यमेवाह्वातश्रा-
 नैश्वरः ११० अथस्त्रीणां घातचन्द्रः ॥ भूनागाद्येक वेदाग्नि रसा श्रव्याप्राशिवेषु
 भिः ॥ सूर्येऽथ प्रमिता मेघाह्वातचन्द्रो मृगी दृशाम् ॥ १११ ॥ अथचंद्रवासः ॥ ति-
 थिपंचगुराणीकृत्य तथैकेनच संयुतम् ॥ रुद्रनैत्रे हरेद्भागं चन्द्रवासस्त्रिधाभवे
 त् ॥ ११२ ॥ एकशेषेवसे त्वर्गे द्विके पातालमेवच ॥ तृतीये मृत्युलोकेच च-
 द्रवासस्त्रिधाभवेत् ॥ ११३ ॥ स्वर्गलोके यदाचंद्रो ह्यमृतत्रियदृग्निः ॥ मृ-
 त्युलोके यदाचंद्रस्सर्वकर्मसु सिद्धिदः ॥ ११४ ॥ पाताले च यदाचंद्रः पंचक-

शि स्मारी दिवज्जयेत् ॥ वास्तौ पुरुष नाशाय होमे हगनिः प्रजायते ॥ ११५ ॥ कू-
 पादियु जलं नस्या न्नि रन्ना मेदिनी भवेत् ॥ यात्रायां कार्यं हानि स्यान्नभि प्या
 रुद्र भाषितम् ॥ ११६ ॥ अथ चद्रांगवासफलम् ॥ शिरः प्रदेशे गुण ३ पंच ५ जन्म १
 षट् ६ नंद ४ दृष्टे हृदि सप्त ७ रुद्रैः रिख्या १२ ८ वेदे च शिरः प्रदेशे कोरे च दिग्
 १० युग्म २ विधुर्नृदेहे ॥ ११७ ॥ कालम् विधुर्द्वार्धं लग्नं शिरो भाग के स्या-
 च्छुभं हस्तप्रदेशे च दृष्टे च प्रहन्यम् ॥ पदे युद्धकारी कोरे सर्व लाभं प्रकुर्व्या च्छेप्री
 मानवानां फलं च ॥ ११८ ॥ अथ सन्धुखचन्द्रफलम् ॥ करण भगण द्वांशं वार सं-
 आति दोषं तिथिज कुलिक दोषं योगिनी मूल दोषम् ॥ रवि स्तिन कुज दोषं या-
 मयामार्द्ध दोषं हरति मकल दोषं चन्द्र मा सम्मुखस्यः ॥ ११९ ॥ अथ द्वादशचंद्रफ-
 लम् ॥ पारिा ग्रहे रत्नी सुरते ऽभिधेके निषेक यात्रा जत बंधने च ॥ इतो यवासादियु
 गर्ग पूर्वैः प्रीक्त प्रशुभौ द्वादश नो हि मां शुः ॥ १२० ॥ अथ चन्द्रवासफलम् ॥ मेघशि-

हृदयसंस्थः पूर्वस्यां दिशि चन्द्रमाः ॥ दक्षिणस्यं वशे नित्यं कन्या वृषभन
 क्रगः ॥ १२१ ॥ तुला मिथुन कुम्भस्थः पश्चिमायां निशाकरः ॥ कर्क वृश्चिक
 मीनेषु गतस्तिष्ठेत्तथोत्तरे ॥ १२२ ॥ सन्मुखेऽङ्गेऽर्धलाभाय मुख संपञ्चद-
 क्षिरो ॥ दृढगो निधनं यातु वमिभागे वसु क्षयः ॥ १२३ ॥ अथ तत्कालचंद्राया-
 दृष्टिः ॥ नाड्य सप्त दश प्राच्यां याम्यां तिथिमितास्ततः ॥ ततस्त्वर्गमिताऽत्रा-
 त्यनुतरस्यां नुषोडश ॥ १२४ ॥ पुनस्सप्तदश प्राच्यां दक्षिणस्यां चतुर्दश
 पश्चिमे नख संख्या ता उदीच्यां यंच भूमिताः ॥ १२५ ॥ वारद्वयं भूमे चैन्दुः स्व
 वासस्यानतः क्रमात् ॥ एक एशि स्थितोऽपीहतदिप्राजं फलं दिशेत् ॥ १२६
 ॥ अथ योगिनी वासस्तत्फलञ्च ॥ नवमी प्रतिपत्तिर्ध्योः प्राच्यां निष्कृति योगिनी ॥
 अग्नि कोरोत्तृतीया यामे कावश्यां तथैव हि ॥ १२७ ॥ त्रयोदश्यां च यंच म्यां
 दक्षिणस्यां च योगिनी ॥ द्वादश्यां नैर्ऋते क्षीया चतुर्थ्या मधि सर्वदा ॥ १२८ ॥

८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----

चतुर्विंशं च वक्ष्यामि यन्निर्मायां दिशि-
 क्वम् ॥ वायु कोरो तु तप्तस्यां पूर्णिमा
 च तथा वृष्यामीशान्यां योगिनी द्वितीया दशमी दिने ॥ अमास्या-
 द्वे च सप्त्युदा ॥ अशुभा वाम भागस्था पृष्ठे दक्षे जय प्रदा ॥ १३० ॥ योगिनी सन्ध्यां द्यूते गयेषु
 लयोगिनी ॥ प्राच्युत राग्नि नैर्ऋत्य गाम्य पश्चिम वायुयु ॥ १३१ ॥ अथ तात्का-
 रायुस्त्वदिशः कथितः क्रमात् ॥ १३२ ॥ यामार्द्धे भोग कालोऽस्यास्ति यो
 दिग्भ्रमरा न्तथा ॥ तत्काल योगिनी चैवाजयदा पृष्ठ दक्षिणे ॥ १३३ ॥ अथ
 कालपार्श्वे ॥ उत्तरस्यां रवे वीरे वायो चन्द्र दिने भवेत् ॥ औसवारे प्रतीच्यां तु नै-
 र्ऋत्यां बुध वासरे ॥ १३४ ॥ यमा प्रायां गुरवे व वन्हेर्दिशि भृगोर्दिने ॥ प्रा-
 च्यां दिशि शनि वीरे कालः प्रोक्तो महर्षिभिः ॥ १३५ ॥ कालस्याभिमुखः

पाशो वैपरीत्यं तयोर्निर्निशि ॥ तावुभौ सन्मुखौ त्याज्यौ वाम दक्षिण गौ शुभौ
 ॥ १३६ ॥ अथयामार्दराहुः ॥ इन्द्रवायुश्चमरुद्रतौ याग्निः श्राग्निः सारुते ॥ यामार्द्रमु-
 दितो राहुर्भूमत्येवं दिगल्लके ॥ १३७ ॥ सूर्यो दयात्कृमे रौवं दिने ज्ञेयं यथोनि-
 शि ॥ अथ सुहृत्तत्सक राहुः ॥ वर्शगत कश्चरुच्छक्क रक्षश्च द्रानलांभं साम् ॥ दिशि
 अमत्यं गुनीडी ह्यमानं दिवा निशम ॥ १३८ ॥ ज्ञेयोऽत्र बोद्धिः शङ्खस्तु मुहुर्ज्ञो
 ऽयं न्दिवा निशि ॥ १३९ ॥ अथ राहोऽफलम् ॥ द्विविधः दृष्टः गौराहुः शुभदो दक्षि-
 तोऽपि च ॥ मत्वेद्यो गिनिका युक्ते सारु युद्धे जयो ध्रुवम् ॥ १४० ॥ वामगस्म-
 न्मुखस्याज्योऽत्रात्रा युद्धे जये सुना ॥ अथ परिघदंडः ॥ छत्तिका तन्मन्त्रादिस्तु सप्तम-
 पच पूर्वतः ॥ अपरिघं लघयेन्नैव वायव्या नल दिग्गतम् ॥ १४१ ॥ प्राचीमुख-
 ग्गूरि मिरत्रयाया ल्ना ग्गूरि कैश्चो दुभिरप्युदीचीम् ॥ तथैव आख्यास्य रा-
 त्रिते भैरव्या म्या अये श्वाय्य रं प्रयायात् ॥ १४२ ॥ अथा वप्रयके परिघोऽल्प नम् ॥

ॐ शिः कृत्ये ऽत्यावश्यके गच्छेद्विलंघ्यापि च पारिधम् ॥ कृत्वा वप्रयंभूल प्रुद्धिं दि-
 २५२२८ रलग्नस्य सदानृपः ॥ १४३ ॥ पुष्य हस्तानुराधाश्च सर्वदिग्मनं सुभम् ॥
 १४४ ॥ पुष्याश्विहस्तमित्राणि यौस्तवैलव सौम्यभम् ॥ वासवं सर्वदिदृक्वा
 पुष्यात्रायां शोभनानि हि ॥ १४५ ॥ अथ वक्रग्रहस्य वारादित्याज्यम् ॥ ग्रहः केन्द्र
 गतो वक्त्री लग्नं वा वक्त्रि वर्गगम् ॥ वक्त्री खेटस्य वारे वा तत्र यातुर्विनाशनम्
 ॥ १४६ ॥ अथायनानुकूलम् ॥ दिवा सौम्यायने सूर्य्यायादुत्तरपूर्वयोः ॥ चंद्र
 सौम्यायने रात्रौ प्रोक्ता यात्रा तयोर्दिशोः ॥ १४७ ॥ सूर्य्ये याम्यायने गच्छेत्त्र
 त्यग्दक्षिणायोर्दिवा ॥ दिशयो स्वेतयोश्चान्द्रे रात्रौ याम्यायनं गते ॥ १४८ ॥
 उभौ सौम्यायने यायात्तथा चोत्तरपूर्वयोः ॥ तोचे चाम्यायने प्रत्य ग्याम्ययो-
 स्तु दिवानिशम् ॥ १४९ ॥ अन्यथा गमनेन्द्रेणां भवेद्वन्धोवधोऽपि वा ॥ अथ
 त्रिविधः शुक्रः ॥ यत्रो देति भृगो र्य्यत्मा तां दिशं सम्मुखी त्यजेत् ॥ भागवार्वाधिष्ठितो

राशि दिशि वा यत्र लग्नतः ॥ १५० ॥ कृत्तिका दिवु दिग्द्वार भेदु यत्र स्थितो
 ऽपि वा ॥ त्याज्या सापि दिग्भाग्य स्मात्सन्मुख स्त्रि विधौ मतः ॥ १५१ ॥ अथ पु-
 न्र दोषा पचादः ॥ रेवत्यां मेघगे चंद्रे अवत्यं धो भृगोः सुतः ॥ यात्रा दोनैव दोषाय
 सन्मुखो दक्षगोऽपि वा ॥ १५२ ॥ भृगवादि गोत्र जातानां न दोषः प्रति शुक्र
 जः ॥ अथ गमने शुक्र स्थास्त्रादि दोषः ॥ विवरो विजिते नीचे वक्रिते वासिते ऽस्तरो
 ॥ शत्रु क्षेत्र गते वापि तदंशे तन्निरीक्षिते ॥ १५३ ॥ भौमांशे भौम संयुक्ते मंदां
 शे मंद संयुते ॥ यात्रा नैव प्रकल व्याल इत्यायुर्वल हानिदा ॥ १५४ ॥ अथ बुधोऽ-
 पिसन्मुख स्त्याज्यः ॥ अनुकुले बुधे यायादित्यं भूते ऽपि भागिवि ॥ सन्मुख इत्ये बुधे
 सर्वे दृष्ट्या रेवता शुभा अपि ॥ १५५ ॥ असामान्य यात्रायां शुक्र दोषा भावः ॥ प्रति शु-
 क्रदि दोषोऽयं नूतने गमने नृणां ॥ राज्ञां विजय यात्रायां नान्यथा दोष मंह-
 ति ॥ १५६ ॥ अथावश्य के तीर्थ यात्रायां न दोषः ॥ अर्द्धोदयो मरागा दो पुरय योगे सु-

दुर्लभे ॥ तीर्थाधीतु सुखं याया त्कालेव स्तादि केयसि ॥ १५७ ॥ अथ मार्गगु-
 र्गुणकृपास्तेनथैव ॥ जीव एषा माहूने मुक्तो वा नार्गसंख्येऽस्तगोद्यदि ॥ तत्रैव निव-
 सेद्राज्ञाया वदभ्युदितो भवेत् ॥ १५८ ॥ सस्मृतवज्यं इज्जीयन्न मार्गं कथ्यो हितो
 यदि ॥ यावदस्ते गतस्तस्मिंस्तावन्नैव संविशेत् ॥ १५९ ॥ अथ यात्रायां लनवि-
 चारः ॥ तत्रादौ त्याज्यलग्नानि ॥ कुंभकुंभांशं को त्याजो सर्वमायत्नतो बुधैः ॥ तत्र प्र-
 यातु र्दपते रथं नाशः पदे पदे ॥ १६० ॥ नीने मीनांशं केयानुः यं यावत्को धनदा-
 तिः ॥ निगिह्य गमने केश्चिन्मीनं दृष्ट्वि क कर्कटाः ॥ १६१ ॥ लग्नस्थावानवां-
 प्रस्थाः प्रीक्ता राज्ञां जयार्थिनाम् ॥ भूभुजां जन्मलग्ने वा जन्म राशे च लग्नगे
 ॥ निधने निधनेंशे वा गमनं निधनायते ॥ १६२ ॥ वैरिणो जन्म राशे स्तु वैरिभे-
 वा तदीश्वरे ॥ यात्रा काले विलग्नस्ये सापि यात्रा विषायते ॥ १६३ ॥ अथ पु-
 न्रलभानि ॥ जन्म राशे लग्न गते तदीशे वा विलग्नगे ॥ अमीष्ट फलदा यात्रा एषी

शश्वेच्छुमग्रहः ॥ १६४ ॥ लग्नेवर्गोत्तमे चंद्रे यात्रोक्ता कार्यसिद्धये ॥ अंशोर-
 शो नंदं शेषा नौ कायानं प्रप्रस्यते ॥ १६५ ॥ जनौ यप्रभुभयुगाश्चिर्वैलि संज्ञो
 ऽथवा भवेत् ॥ स्वाद्यनाभिधनस्योवासराशिर्लग्नगप्रभुभः ॥ १६६ ॥ अष्टा
 प्रीर्षोदये लग्ने यात्रा सर्वार्थदायिनी ॥ राजयोगोचिते लग्ने प्रप्रस्यता वसुधाभु
 जान् ॥ १६७ ॥ अथ द्वाप्रयः ॥ सेषादि रा प्रयोदिसु चतुर्वर्षि च पूर्वतः ॥ त्रि-
 क्रमा द्वा कैः प्रोक्ता एते द्विग्वारसंज्ञकाः ॥ १६८ ॥ दिग्द्वारमे लग्नगते प्रप्र-
 स्ता यात्रार्थदात्री जय कारिणी च ॥ हानिं विनाशं रिपुतो भयं च कुर्व्यात्तथा-
 तन्मानी लोमलग्ने ॥ १६९ ॥ अथ दिगीशः ॥ सूर्यः सितो भूमि सुतो ऽथ राहुः श-
 नि प्रप्रशीलं च दहस्यति च ॥ आच्यादिलोदिसु विदिसु चापि दिशमधी-
 राः क्रमस्तद्विद्वताः ॥ १७० ॥ दिगीशस्त्वीय दिक्षं स्यो लालाटी कश्चितो
 रः ॥ लग्नादी संन्मुख स्थान्यो गने मृत्यु करिष्यतः ॥ १७१ ॥ अथ लग्नादी स्यथम

दूद्वेयं गमादिषु ॥ जयंती तिद्विद्वद्देया राक्षसी व्याधिदायिनी ॥ १८७
 ॥ तारिणी कार्क्यं कृद्देया संहरी मृत्युदा सदा ॥ साधारिणी शुभा सम्य-
 गैरावती शुभप्रदा ॥ १८८ ॥ महोवला राज्यदात्री कालाख्या भयदा स-
 दा ॥ १८९ ॥ अथ यात्रावा जन्मफलं च ॥ जन्मभादिनभंगरायं नवमि विभिजे द्वित-
 म् ॥ श्रेयतो वाहनं प्रोक्तं गर्धभादिनरस्य वै ॥ १९० ॥ गर्दभः तुरगो हस्ती मे-
 षो जंबुकं सिंहकौ ॥ काको मयूरं हंसौ च नैवेते नरवाहनाः ॥ १९१ ॥ राशभे
 धनहानि स्याद्बललामस्तुरंगमे ॥ लक्ष्मी प्राप्तिर्गजे सम्यङ्मेवे च मरणं भवेत्
 ॥ १९२ ॥ जंबुके ह्यायुषो हानि रायुर्द्विस्तथा हरो ॥ काके तु कलहश्चैव मयूर-
 मुखसंपदा ॥ १९३ ॥ हंसे मित्यान्मभोजी स्याद्वाहनानां फलं त्विदम् ॥ अथ या-
 त्रादृश ॥ जन्मर्क्षाच्च चतुर्गुरांयं तिथि वारसमन्वितम् ॥ नवमिस्तु हरेद्भागं ३ः
 श्रेष्ठं यात्रादृशं भवेत् ॥ १९४ ॥ रविश्चंद्रः कुजो राहुः जीवामंदो बुधस्तथा

॥ केतुशुक्रः क्रमाद्द्वयं बुधैर्यत्रा दशाफलम् ॥ १८५ ॥ भास्करे श्लोकस-
त्तापौ चंद्रलक्ष्मी वरगना ॥ भौमे शस्त्रभयं हानी राहो मंगो ऽथ वंधनम् ॥
१८६ ॥ जीवे लाभं शुभा प्रज्ञा मन्दे मन्द गतिर्भवेत् ॥ शुक्रे सर्व सुखं क्षये
जयं चागममेव च ॥ १८७ ॥ अथ यात्रायां श्रेष्ठ नैष्टाग्रहाः ॥ हित्वा सप्तमं शुक्रं के-
द्रे कोलो शुभा शुभाः ॥ पापाश्चोपचये प्रास्ता याने नो दशमः प्राप्तिः ॥ १८८
॥ चन्द्रस्तु गमने नैष्टो लग्ना रिष्यय रन्ध्रगः ॥ द्युन षष्ठाष्टरिः फस्थो लग्ने श्लो-
ऽपि न श्लोभनः ॥ १८९ ॥ सुरेश स्याहितो लग्ने सत्वेदो ऽपि न श्लोभनः ॥ पा-
पो ऽपि चेत्सुहृत्तस्य तनौ भव्य फल प्रदः ॥ २०० ॥ जनने जन्म लग्ने श्लो जन्म
राश्री प्रवरोदये ॥ सुहृच्चैत्कर्मगः रेवेदो नैष्टो पीड्यो विलम्बगः ॥ २०१ ॥ अथ-
लग्नादि भावानां संज्ञाः ॥ लग्नाद्भावाः क्रमाद्देह १ कोश २ धानुष्य ३ वाहनम् ४
मंत्रो ५ रिद्धिर्मर्ग ७ आयुश्च ८ हृत् ९ व्यापार १० गम ११ व्ययः १२ ॥ २०२ ॥

दिने प्राधिष्ठितो राशिर्गर्ह्यदा लग्नगतस्तदा ॥ आतुर्गृह्यत्तु प्रदः प्राच्यादिशि सूर्यो
 ललाटगः ॥ १७३ ॥ सूर्यस्य राशितस्तस्मात्तद्वा दशे लग्नगो गृहे ॥ एकादशे
 वाग्नाग्नेयां दिशि शुक्रो ललाटगः ॥ १७३ ॥ ललाटगः कुजो यास्ये दशमे
 लग्नगो गृहे ॥ लग्नगो नवमे राशा वष्टमे वापि नैर्द्धते ॥ १७४ ॥ ललाटग
 स्सैर्द्धि के यो यातुर्द्दीक्षि धन प्रदः ॥ लग्नगो सप्तमे राशौ प्रगनिः प्रत्यग लला
 टगः ॥ १७५ ॥ वष्ट राशौ लग्नगते पंचमे वापि चन्द्रमाः ॥ ललाटगो वा
 शुदिशि यातुर्मुत्तु प्रदस्तदा ॥ १७६ ॥ चतुर्थ राशौ लग्नस्ये बुधस्सौम्ये ल
 लाटगः ॥ राशौ तृतीये लग्नस्ये द्वितीये चन्द्र पूजितः ॥ १७७ ॥ ललाट
 गश्चन्द्रमौलेर्द्दिशि यातुर्विना प्रदः ॥ इत्थं ललाटगो लग्ने सम्मुखे गमनं
 त्यजेत् ॥ १७८ ॥ दिगीशो केन्द्रगे गच्छेन्न तु ललाटिगे क्वचित् ॥ अथोक्तं
 मये लग्नाद्य लाभे समय निषेधः ॥ १७९ ॥ उषः कालो विना पूर्वगो धूलिः पश्चिमा

विना ॥ विनोत्तरं निप्रोथ्य हसन् याने वाभ्यां विना भिजित् ॥ १८० ॥ पूर्वा-
ले तूत्तरं गच्छेन्मध्यान्हे पूर्वतो व्रजेत् ॥ अपराह्णे व्रजेद्याभ्यां मर्द्धरात्रे तु प-
श्चिमाम् ॥ १८१ ॥ अथ सजीवनिर्जीवयान्ना ॥ सूर्य्यभादिनभंगराय मष्ट भि-
जित् ॥ १८२ ॥ निजभादिन नक्षत्रं पञ्चमं मेलेये त्समं ॥ १८३ ॥ द्वाद-
शमे शेषं यात्रा तु कथ्यते ॥ रूप १ पक्ष २ गुण ३ द्वीपे ७ दिक् १०
विषय ११ ॥ १८४ ॥ वेद ४ रुद्रो ११ ग ६ मातंग ८ नन्द-
११ ॥ सजीवे गरायेस्त्रामं यात्रा बुद्ध विवादिदम् ॥
अथ यात्रानाम ॥ ति-
नसुभिश्च हरेद्भागं श्रेष्ठं यात्रा च
साधारि
स्थाने स्थिताः
करोति सतत
त्रोजनयति शृगुजो धर्मं चामार्थं लाभ ॥

अथ द्वादशभावफलम् ॥ राहुः क्षमाजदिवाकरेन्दुरविजास्तं प्रस्थितो लभगाः क्षु-
 त्क्षामि विवादकांश्च कुरुते रोगाश्च नाना विधान् ॥ जीवस्सोम सुतस्तथैव
 भृगुजो यात्रोदय स्थो नृणां सा यात्रा धनधान्यलाभ शुभदा पुरये हिंसा ल-
 भ्यते ॥ २०३ ॥ वित्तस्थाने नृपाणां मसुर गुरुविधौ सर्वकार्यार्थं सिद्धिं वल्बो
 पेत्तश्च जीवो हृदि सुखमलुलं प्राप्नुयस्स क्षयं च ॥ मन्दो मार्गेषु दीर्घं स्थिति सु-
 त सहितः कोश हानिश्च भानुश्चंद्रः कुर्यान्मरेन्द्रः प्रियजनसहितं राहु रुद्रादं-
 कारी ॥ २०४ ॥ प्रस्थाने भूमिलाभं क्षिति सुतरविजौ आनुनासं प्रयुक्तौ ॥ शुक्र
 श्रंष्टोत्सजो वै सुरगुरु रथवाशी तरश्चिर्यदाच ॥ आतुःस्थानस्थितस्स्थानर-
 वरगमने सर्वकारार्थं सिद्धिं ॥ राहुप्रशन्नो विनीशं सुखयति सततं प्रस्थितः
 पार्थिवोऽपि ॥ २०५ ॥ सौरव्य स्थानगतो ददाति विपुलाभो गान्धर्गो रात्मजः
 प्रात्रूणां क्षयमीहते सुरगुरुः सौरव्यतथा चंद्रजः ॥ हानिं चित्तगतं करोति रवि-

संक्षिप्तः स्मिग्धक्षयं चंद्रमा राहु भूषि सुत स्तथा कं सहितः कुर्वीति दुःखं महत् ॥

२३७

२०६ ॥ जीवः पुत्रार्थं लाभं जनयति भृगुजः सर्वं कार्यार्थं सिद्धिं प्रीतिं चैवाव

शेषं सुत धन सहितं पुण्य मारोग्य कर्तुम् ॥ सूर्यं श्रद्धे महीजो दिनकर तनयः

संहिकेयः प्रयुक्तो सर्वेते पंच मस्था स्सनत मय करः पार्थिवानां प्रयागो ॥ २०७

॥ षष्ठे भानुर्नराणां दिनकर तनयो भूमि पुत्र स्तथैव प्रीतां प्रुद्धृत्य संज्जी रजनि

कर सुतः संहिकेयो ऽथ जीवः ॥ कुर्वन्सर्वार्थं लाभं यद्यपि हृदि गतं साध्यते स-

र्वं कार्यं तन्ने को भूमि पुत्रो ऽप्यरिव लभयन् सर्वं सिद्धिं ददाति ॥ २०८ ॥ नि-

त्यं प्रुक्त्वा दिवा कर्कतनया श्रंङ्गस्तथा भूमिजः छिन्नं प्रान्नुप्रराक्ष नयति च चर-

मे स्थाने स्थिताः सप्तमे ॥ सौम्यो मित्र सभा गमं सुर गुरुः कार्यार्थं सिद्धिं परा-

राहुर्दुर्ध्विततिं करोति सततं यान्ना सुयाभिन्न गः ॥ २०९ ॥ आरोग्य सेम पु-

त्रो जनयति भृगुजो धर्म वामार्थं लाभं जीवो रक्षत्य शेषं सुत मित्र जननी-

२३८

यात्रिकं नैधनस्यः ॥ चन्द्रो वंधं विधत्ते जनयति सचिना शत्रु यद्धेऽपि स-
 र्वो राहुश्चेद्भूमिपुत्रो हि मरि पुतनये क्षिप्रमर्थस्य नाशस् ॥ २१० ॥ शुक्रो
 ऽति सौरव्यनवमै बुधश्च जीवो विधत्ते सुखसंपदर्थम् ॥ चन्द्रश्च सौरिस्तह
 भूमिजश्च कुर्वति पौराः पुरुषस्य दोषम् ॥ २११ ॥ कर्मस्थाने गतोऽर्कः प्र-
 चुरधनकरः पुष्टिदः प्रीत रस्मिः जातस्संगम काले जयति रिपु बलं सौम्य
 शुक्रो च सौरव्यम् ॥ नित्यं यात्रा स्थितानां भवति भयकरः सर्वकार्येषु
 भौमो राहुर्वैरन्तथोगं जनयति सततं दीर्घ कालं तथार्किः ॥ २१२ ॥ भृगु सुत
 बुधजौ वै श्वन्द्र सूर्या किं भौमे प्रजति यदि नरेन्द्रः क्षिप्रमेका दशस्थैः ॥ सज
 यति रिपु वर्गं स्वेच्छयानि विंशकं विचरति गजराजो यूथमध्ये यथेष्टम् ॥ २१३
 ॥ क्षितिजरवि सिगार्क सैंहि कैयो नराणां जनयति कुलनाशं श्रेष्ठ भृत्यस्य भे-
 दम् ॥ जनयति रिपु सौरव्य भृत्य हानिं च कष्टं यदि बुध गुरु शुक्रा ह्यादशस्था-

॥ लग्न गते भुगु पुत्रे स्य प्रशालभा इव सर्वे ॥ २२२ ॥ उदये रविर्द्यदि सोरि
 ॥ प्रशाली दशमे ऽपि ॥ वसुधा पतिर्यदि याति रिवुवाहिनी वसमेति ॥ २२३
 ॥ मन्दे कुजे तनो रवे ऽर्के षुक्ते च विदित्वा भगो ॥ संव्रजन्मृयाति प्रशान्द्विजि
 त्यश्रियमसृते ॥ २२४ ॥ मन्दरो ज्ञिबहा दस्थो बलिर्नो द्येज्य भार्गवाः ॥
 प्रयारो भूपतेर्यस्य वसुधा तस्य हस्तगा ॥ २२५ ॥ लग्ने जीवे विधौ द्युने च
 तुर्थे द्वे तथा भुगौ ॥ पायास्त्रिगो र्मही पालः प्रास्थितो लग्नते श्रियम्व ॥ २२६
 ॥ लग्ने ऽर्के रवे बुधे षुक्ते दुश्चिक्ये भूमि ते शानो ॥ द्युने ऽस्त्रे तनुगे जीवे प्र-
 स्थितस्य भवे ज्ञायः ॥ २२७ ॥ लग्ने ऽस्त्रे वायुरो सूर्ये बधे व्याज गते प्रा-
 नो ॥ सुते द्वे हि बुधे षुक्ते राजा हंति गये रिपून् ॥ २२८ ॥ बलिनीन्दु सुते
 लग्ने केन्द्रे जीवे ऽथ निर्वले ॥ त्रिषडं त्यांको चन्द्रे संव्रजन् श्रियमाप्नुया
 त् ॥ २२९ ॥ अशुभं रवो रन वाटमरस्थे हिदुक् सहोदर लग्नमहस्वः ॥

श्रीः कविरिह केन्द्र गणीः पति ह्यो वसु चय लाभ करः खलु योगाः ॥ २३० ॥ रि

२३१ ॥ पुलक कर्म हिवुक्ते शशिशे परि वीक्षिते शुभन भोग मनेः ॥ व्यय लय मन
य महं शुजायः परि वर्जिते वष शुभ नाम धैः ॥ २३१ ॥ लने यदि जीवः पा
पा यदि लाभे कर्मण्य पि चेद्रा ज्या धिग मस्यात् ॥ दूने बुध शुक्रौ चन्द्रे
हिवुक्ते वा तह त्कल मुक्तं सर्वैर्मु नि वर्यैः ॥ २३२ ॥ षडाद्याद गते शुक्र जीवा
जैर्गमने जयः ॥ तुर्य वोषा न सिद्धे च मन्दे चन्द्रे च तत्कलम् ॥ २३३ ॥ वु
ध भार्गव यो रत्न ध्याति कुमुद बांधवे ॥ तुर्य स्थे ऽङ्गे जयन्मायु गमने ऽरीन्
रे श्वरः ॥ २३४ ॥ लग्ना १ स्ता ७ र्य ६ म्बु ४ वन्हि स्थे षष्ठ्युक्ते ज्या र बुधा
र्क जैः ॥ योगो ऽयं क्रमतः प्रोक्तो गमने जय दी बुधैः ॥ २३६ ॥ षट् ६ त्रि ३ रवा
१० री ६ न्दु १ वेदे ४ षा ११ संस्थिते तथ ना दितिभिः ॥ रे चरैः क्रमतो जीव वारेषो
गोऽय सुतमः ॥ २३६ ॥ जीदे ऽर्के ऽरिं गते भौषे त्रिगो रं द्य गते द्युगो ॥ द्ने द्यु

सन्दिने च शुभा जाजा भू भुजां जय दाधिनी ॥ २३९ ॥ शुक्का की ज्या रिन्न तूर्य स्थि

२४२

प्राचुस्थे वन्द भूमिजे ॥ याजा भूमि भुजां प्रास्ता प्राचुहंद विद्गदिष्णी ॥ २४०

॥ एको द्वेज्य सितेषु पंच भ तपः केहेयु मोग स्तथा द्वे चैते व्यधि योग एवु स-
कला योगाधि योग स्स्ततः ॥ योगे क्षेम मयाधि योग गमने क्षेमं रिद्गणां
वधं चाष्टो क्षेम यष्टो ऽ वनिञ्च लभते योगाधि योगे व्रजन् ॥ २४१ ॥ पंच-
मेष्टो एविः यष्टे वर्हते नवमे गुरुः ॥ भाग्य योगाभिधि योगे निहन्ता वैरिणां
सदा ॥ २४० ॥ गुरुः केन्द्रे त्रिकोणे वा रवि लभिच कर्माणि ॥ कल्याणा योगो
भूषस्य यातुः कल्याणा कृद्भवेत् ॥ २४२ ॥ दिगीष्टो दिग्बली चैत्स्या स्त्रिमे प्रा-
स्य सुहृदादि ॥ विज्यो नाम योगो ऽयं यातो राजा जायी भवेत् ॥ २४३ ॥ सह-
अस्थान गो भोमो भाग्यस्य अष्ट सह स्पर्तिः ॥ चिन्ता मणि सुभा एवो ऽयं यातु
स्तंकल्प पूरकः ॥ २४३ ॥ लग्ने शुक्र प्रराष्टी वंधो कर्म स्थाने गुरु र्यदा ॥ २४२

मेन्द्रयोगो विख्यातो यातु सर्वार्थ साधकः ॥ २४४ ॥ लगने भौमो गुरुः छि-
 द्रे षष्ठ स्थाने च भास्करः ॥ मृत्युक्षय समारव्योयं सर्व प्राचू निवर्हणः ॥
 २४५ ॥ आपोक्तिं नगते चन्द्रे केन्द्रस्थे सुर पूजिते ॥ योगः केन्द्र द्वाति ख्यातो या-
 तु रित्यार्थ सिद्धिदः ॥ २४६ ॥ चन्द्रोदये गुरु आस्ते लग्ने वा सुर पूजिते ॥ योगः
 पाणवतो यातुः शुक्ले वा लग्न केन्द्रगे ॥ २४७ ॥ प्रवले यदि योगो ऽस्ति गन्धने स-
 र्वसिद्धिदः ॥ २४८ ॥ रविः षष्ठे स्थित छिद्रे तृतीये भूमि नन्दनः ॥ विना किं यो-
 गो विख्यातो यातु विजय कारकः ॥ २४९ ॥ अन्योन्य क्षेत्रे न गा वै कक्षेत्रे वा क-
 विभास्करौ ॥ मृत्युयोगो ऽय माख्यातो यातु मर्त्ये त्सु प्रदायकः ॥ २५० ॥ उच्चक्षे-
 त्र गत चन्द्रो ह्य क्षीणो अथ विगुरुः ॥ संजीवन समारव्यो ऽयं मृत्युयोगा पद्वार-
 कः ॥ २५१ ॥ एकर्क्ष गो जीव शुक्लो स्यात्तामव्यो न्य सप्तगो ॥ भयं करारव्यो-
 यो गो ऽयं यातु भीति प्रदः स्वतः ॥ २५२ ॥ उच्च मूल निकोरोषु वर्हते गुरुया

गोर्वो ॥ अथ याभिधयो गोयं भयं कर विनाशान्नः ॥ २५३ ॥ आर्ये प्रो व्यय
 गो नीचः पुत्रस्थाने प्रोनेश्वरः ॥ विदारिक समारव्योऽयं यातुः पत्नी निह-
 न्यसो ॥ २५४ ॥ मार्गे प्राः शनि संयुक्तः सप्तमेऽस्तं गतो ग्रहः ॥ विदारिक
 मिमं मन्ये यातुः पत्नी विनाशकम् ॥ २५५ ॥ सप्तमे चन्द्रमास्तस्मात्सप्तमे
 नीच रवेचरः ॥ कुटुंब हारको योगो यातुः श्रिय तमां हरेत् ॥ २५६ ॥ दुर्वलो
 यदि मार्गे प्रो निवसे त्याय मथ्यागः ॥ पाप कुंजरयो गोयं यातुः पत्नी निह-
 न्यसो ॥ २५७ ॥ मार्गे प्रास्तप्तमे भानुः पञ्चमे क्रूर रवेचरः ॥ विदारिका रव्य
 हवासो भाव्या मरिच प्रं नयेत् ॥ २५८ ॥ खोच्च मूल त्रिकोण स्थः सोम्यः पा-
 प विवर्जितः ॥ आनन्दार्णव योगोयं धर्मेणैव जया वहः ॥ २५९ ॥ उद-
 याग्नि भस्तलगो दिन क्कद्यथ शीत करैः ॥ नभ वन्य रवोऽमि मुरवा हरिणा ह-
 वके प्रारिणः ॥ २६० ॥ द्योसितेन सहितेऽस्त गो विधौ बंधुगे प्रवसता मही

भुजा ॥ संगरेरिपु गणौ विकीर्त्यते दल राशि रिव मानरिभ्रना ॥ २६१ ॥ स्त-
 निर्निविन सहजेषु संस्थिताः शुक्र चन्द्र सिततिमस रश्मयः ॥ यस्य यान्न समये
 रणं गणेतस्य याति शूलभाङ्गवारयः ॥ २६२ ॥ यो याति जीवे तनुरो महीशः
 क्रूरस्थितैर्व्योम्नषवाय संस्थेः ॥ तस्यामृतस्संयति वैरि सेनां प्रीति नृपाणा
 भिवना स्थिरा स्यात् ॥ २६३ ॥ लाभारिदुश्चिक्व गतौ यमारो वलान्विताभा
 गोवर्जावसोभ्याः ॥ यस्य प्रयागो विलयं प्रयान्ते तस्य द्विषस्सर्वरसं यथाप्सु
 ॥ २६४ ॥ लाभ विक्रमसुखस्थिते कंदकस्थगुहणा निरीक्षिते ॥ दूनरं प्रभ
 ववर्जितैः खलैः स्यात्ततोऽभिमतसिद्धिभाक्नुपः ॥ २६५ ॥ सौम्यग्रहेः केन्द्र
 तपस्सुतस्थेः क्रूरैः स्त्रिजामा रिगतै र्गताये ॥ क्षोभान्नलप्रशान्ति सुपैति तेषां
 विरोधि नारो नयनां वृषातैः ॥ २६६ ॥ एकोऽपि जीवार्ककुजा र्कजानां स्वोच्चै-
 विलभे स्वग्रहे यदीन्दुः ॥ यातस्य यान्त्यत्र पराः प्रणाशं महाकुलानी वबुद्धं

शिवभेदैः ॥ २६७ ॥ चन्द्रेऽस्तमे देवगुरौ विलम्बे क्षुब्धयोः कर्मणि लार्भगेऽर्थे
॥ सौरा रयो र्मातृ गयो अयातो नृप स्वभृत्या निवशास्ति प्राकृन् ॥ २६८ ॥

सोच्चस्थे लम्बगे जीवे चन्द्रे चाप गते यदि ॥ गतो राजा रिप्सुह्मनि पिनाकी विप्र-
रं यथा ॥ २६९ ॥ शुक्ले त्रिकोणे वेन्द्रस्थे लम्बे चन्द्रेऽथवा रक्षी ॥ प्राञ्जलित-
गतो राजा ब्रह्म द्वेषः कुलं यथा ॥ २७० ॥ पापास्तनीये हिवुके स्थितक्षी जीवे
विलम्बे मृगलां कनोऽस्ते ॥ यस्योद्भूतस्यापि वलं रिपूणां कृतं दत्तमे दिव वया-
ति नाशम् ॥ २७१ ॥ यस्योदयास्तारिचतुस्त्रिंशसंस्थाः शुक्लोऽगिरां गार्क-
स्येव्य सौराः ॥ द्विषद्वलं रक्षी वदनाभि तस्य ह्नां तानि कान्गान विलोकयन्ति
॥ २७२ ॥ पूर्वेक्षि योगे धनगो वृधप्रेच्छ प्रांक सूर्यो च दशाय संस्थो ॥ प्रा-
स्मिन् गत स्याल्लिङ्गलोप गीता नाना वनस्था दिग्दा भवन्ति ॥ २७३ ॥ त्रिष-
चन्द्रेऽवलः वृधो वली उभौ च त्रिषण्य वान्त्येव भवत स्तदायोगाः ॥ १ ॥

५०
 शि तान्मवान्त्येऽनुवल प्रप्राप्रां को बुधो वली यस्य गुरुश्च केन्द्रे ॥ तस्यारियो वा भ-
 रणोऽधियाणि धियाधियाणां जनयति सैन्ये ॥ २७४ ॥ केन्द्रेऽप गते न वीक्षिते गु-
 रणा रवाय तु र्यगो सिते ॥ पाथे रन वाय सन्नगो वसु किं तन्न यदा शुभान्दपः ॥
 २७५ ॥ यथाय गो शुक्र बुधो प्रयाणो सुरेष्टा पूज्यो ग गने यदि स्यात् ॥ रिपुः प्रणा-
 प्रं विषयेषु सौख्यं प्राप्नोति कीर्तिं विपुलां च भोगाम् ॥ २७६ ॥ इति कालाभारि-
 गतेऽर्क पुत्रे चतुर्थ गे दैत्य गुरो प्रयाति ॥ तदा युमान्स हिरदैन्द्र यानं कीर्तिं यष्ट-
 स्तिद्धि सहस्र मेति ॥ २७७ ॥ केन्द्र स्थाने सुरपति गुरो कंठकस्थेऽसुरेज्ये कि-
 द्रे सौम्ये प्रवसति यदा त्वष्टमेन्दु र्यदि स्यात् ॥ येषां क्रूर रिपु सहजगाराहु के-
 तू च मूर्धा वापुः कीर्तिर्निन्द विण भगुलं तैल मन्ते यष्टाश्च ॥ २७८ ॥ मूर्धौ शुके-
 सुरपति गुरो छिद्र गे वा त्रिकोणे केन्द्र स्थाने प्रनिरवि कुजा लाभगा वा यदि स्थुः
 ये सृपा यानि प्राञ्च विपुल धन मयो सैन्य नाशं रिपूणां कीर्तिं शुद्धं यष्टाश्च प्रमथि-

एवं स्ते सुरवाद्यज्जन्ति ॥ २७६ ॥ दोरासंस्थे सुरपतिगुराभावात् ॥
 एवं चन्द्रे च जति यदि वा कार्ययोगा स्थितीम् ॥ प्राज्ञोत्पुमं कनकतुल्यं ॥ २८० ॥
 यथे चन्द्रे कोष्ठा मायुः कीर्तिजयति च तदा मत्तमाता दृष्टम् ॥ २८१ ॥
 यथारत्नादि कोष्ठा मायुः कीर्तिजयति च तदा मत्तमाता दृष्टम् ॥ २८२ ॥
 जगन्नारि कर्म हि वुक्तेषु शुभे स्थितेषु द्युज्जान्त्यलम्ब्य रहिते बद्धशुभग्रहेषु ॥ २८३ ॥
 जगन्नारि कर्म हि वुक्तेषु शुभे स्थितेषु द्युज्जान्त्यलम्ब्य रहिते बद्धशुभग्रहेषु ॥ २८४ ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ २८५ ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ २८६ ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ २८७ ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ २८८ ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ २८९ ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ २९० ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ २९१ ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ २९२ ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ २९३ ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ २९४ ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ २९५ ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ २९६ ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ २९७ ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ २९८ ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ २९९ ॥
 तुर्ययन्त भवति प्रतरे त्समुद्रं यथ प्रमनापि किमुता रिसमागमेषु ॥ ३०० ॥

६
 ण दिशि ॥ २८३ ॥ बुधभावि नध्यगते हिमगो हिवुकोपगते च नृपः ॥ प्रवि-
 द्रोत्पुरुहत दिशं यदि वा त क्तमः पुरुहतयमं प्रति ॥ २८४ ॥ सितेन्दुजो चतुर्थगो
 निशाकरश्च सप्तमे ॥ यदा तदा गतो नृपः प्रशास्त्य रीन्वि तारणात् ॥ २८५ ॥ शु-
 क्क वाक्यति बुधैर्द्धन संस्थैः सप्तमे प्राग्नि लज्जन गेर्तुर्क ॥ निर्गतो नृपति रिति कृ-
 तार्थो वर्धन्ते यद रीन्वि निहत्य ॥ २८६ ॥ सूर्येन्दु वल वर्जितो वल युतो लभ्ये-
 प्राजन्मे पूर्वरो पाताले दशमे पिवा प्राग्नि सुतो लज्जन स्थितो वाक्यतिः ॥ षट्स-
 षाष्टम वाज्जिते क्षुभृगुजः स्थाने क्षुभृयस्य स्थितो यातुस्तस्य न विद्विषोरणा मुरवे-
 ति स्थिति योषा द्वाव ॥ २८७ ॥ सौरे भौमे लभ्यगेऽर्के रव मध्ये कर्म राधाये भार्ग-
 वे चन्द्रजे वा ॥ याथाद्दृप प्रशान्तु गेहं निहन्तुं दहं प्रात्रुं काल वक्त्ररचैष्टः ॥ २८८
 ॥ शुरे विलभ्ये यदि वा प्राशांके षष्ठे रवौ कर्म गतेऽर्के पुत्रे ॥ सित क्षयो वर्धु सु-
 तस्य योश्च यात्रा जानित्री वहिता निधने ॥ २८९ ॥ त्रिनिधन तनु सप्तमारि सं-

रेखाः कुजसित जीव बुधारेविश्वयस्य ॥ खल जन जनिते ५ वल्लोकायात्रा न भव
 तितस्य चिण्य प्रवृत्तेना ॥ २६१ ॥ कुज रेविज युते रिभे गतानां जल महजा यग
 ते स्मिता र्क जीवैः ॥ परवलमुपयाति नाश माशु श्रुतमधनस्य कुट्टं च चित्तयेव
 ॥ २६२ ॥ भृगु पुत्र महेन्द्र गुरु रमिने सहितो यदि भंयुग पत्य जतः ॥ क्ष गुरु यदि
 नवांशक मेक गतो समरे ५ मर राडिव भाति तदा ॥ २६३ ॥ सिंहाति तनय युता न्न
 वांशजे यदि शत मे भृगु जीष वा गुरुः ॥ शत गुण मय हन्य रेर्वलं विषं भिव काय
 मसृक्य षो यगम् ॥ २६४ ॥ स्वोच्चो परो जीव कुजार्क वर्गे रेभि र्विभि र्वा कथिते रे
 कलने ॥ राक्षः प्रणाशं समुपैति प्राशुः सौरव्य हि भार्यस्य तथा धनस्य ॥ २६५ ॥
 शतांश का इर्द्धमवस्थिते बुधेय मारय स्तत्र गतस्य भूभृतः ॥ प्रयाति नाशं समरे
 द्विषद्वलं य धार्थि भावो यगतस्य गौरवम् ॥ २६६ ॥ सिंह राज तोलि सिधुना भृग क
 र्कतो च स्वेषा न्विता भवति यस्य शानि श्व लने ॥ तत्सेनिकाः परवलं क्षय यन्ति या

तु भूर्वस्य विज्ञ भिव चारण च द्वे मं ह्यः ॥ २६७ ॥ अथ समग्राना ॥ गुरो वीर्य केन्द्र
युते बुधे वा भृगु नन्दने ॥ विजयो नाम यो गोयं यातुर्विजयदः सदा ॥ २६८ ॥
स्वराग्रिगे बुधे लगने सिधे वा सुर वन्दिते ॥ नंदा वर्त्तयौ यो गो यातु रिष्टार्थसि-
द्धिदः ॥ २६९ ॥ स्वाग्र संस्थे बुधे लगने शुभे वा देव प्राप्तिने ॥ प्राग्व संज्ञा क्ययो यो
गो यातुः कीर्ति प्रदः सदा ॥ ३०० ॥ स्वराग्रो स्वाग्रो गो सौम्ये लग्नस्थे वा भृगोः ससुते
॥ जीवे वा ज्ञानयोगोऽयं यातु प्रप्राप्तु विनाशकृत् ॥ ३०१ ॥ अग्निभिन्नांशो गो सौ-
म्ये सिधे वाथ सुरा चिन्ते ॥ लग्नयोगात् यो गोऽयं प्राज्ञाणां संधि कृत् सदा ॥ ३०२ ॥
यत्रैकादशगण्ड्यन्द्भो भानुर्वा प्रवल प्रभुर्भः ॥ अश्वयो नाम यो गोयं अग्निभिन्नातिवि-
नाशकृत् ॥ ३०३ ॥ त्रिकोणो गो शुभे रवेरे सवले वा द्वितीयो गो ॥ कल्याण सङ्गो
योगोऽयं याथिनां संगाल प्रदः ॥ ३०४ ॥ यत्र स्त्री च गत ऋन्द्भो लग्ना देका दशे
स्थितः ॥ जयन्तो नाम यो गोऽयं प्रातु पक्ष विनाशकृत् ॥ ३०५ ॥ वर्गो जगमते

लभे शुभे वायवलाचिन्ते ॥ शुभ ग्रह युतैः केन्द्रे योगोऽयं सिद्धिदायकः ॥ ३०६ ॥
 पश्ये वायु गते सूर्ये ताम गेह रस च्चकः ॥ योगो महारणे प्राञ्च पक्ष क्षय करस्सदा ॥
 ३०७ ॥ चच्चस्ये लाभगे शुभे त्रिषष्टे देव पूजिते ॥ सुदृष्टो महा योग प्रपञ्च भवंस
 करो रणे ॥ ३०८ ॥ लभान्ये केन्द्रे चन्द्रे लग्नस्ये देव पूजिते ॥ महा शंखाक्षयोः
 योगः प्रति पक्षाच्च मानदः ॥ ३१० ॥ भूसुते स्तोत्रगे लाभे मृगा कुम्भ गते यमे ॥ नं
 द्या वत्ता ह्यो योगो रणे प्राञ्च लण नलः ॥ ३१० ॥ मेघगे भास्करे षष्टे लाभगे स्तो
 त्रगे यमे ॥ नक्षत्र पाद योगोऽयं प्राञ्च मेघा निलो रणे ॥ ३११ ॥ भीमे स्वर्गाक्षि
 गे लग्ने सौम्ये केन्द्रे त्रिकोणा गो ॥ पुष्य योगोऽति विविन कुटारः संग्रहो गणे ॥ ३१२
 ॥ एकांतरे गते लग्ना च्छुभ रवेदेऽथवा शुभे ॥ वापी योगास्त्व रिज्ञान तिजिरे ष
 दिवा करः ॥ ३१३ ॥ आचक्षुके तथा याने सौम्येऽस्ते निधनेऽपि वा ॥ ब्रजोद
 कोदयेऽस्ते वा मथ्यान्हे वायु शंकितः ॥ ३१४ ॥ प्रभष्ट ह्युति तारका स्फुट

तदी प्राची भवे निमर्मला त्वीष इत्त विलोहिता न भवला देवे स्मदा वां छिता
॥ नो वारं न तिथिं न चापि कारणं लभ्यं न चापि क्षते हत्वा दीष सहस्रकंचयमुखा-
नूषा कणे त्पुन्यतिम् ॥ ३१५ ॥ मध्यं व्योम प्रयाते स्फुरद नलनि भेके परैराकर्क-
विंवे क्षया साध्वी वकांता प्रचलति पुरुषे यन्न तत्पाद लभा ॥ तावत्सौरिर्न्म-
विधिः कुञ्जकत मयुभं नैव ऋक्षं न योगः सुमाना रोग्य संपत् स्थिति मयु-
वतिं तन्न गन्ता लभेत ॥ ३१६ ॥ अथ मयान्हे किंचिद्विशेषः ॥ अंगुल्यो विंशतिः सूर्येभि-
कुस्सोमे च षोडश ॥ कुजे पंच दश गुर्यो वुधवारे चतुर्दश ॥ ३१७ ॥ त्रयो दश-
गुरो वारे द्वादशा र्क्षज शुक्रयोः ॥ शंको मूर्ध्नि यदा क्षया मयान्हे च प्रजापते ॥
३१८ ॥ तदा चाभिजिदाख्या ता घटिका च सदा वुधैः ॥ अन्न कार्याणि सिध्यन्ति
सर्वा नीह कृतानि च ॥ ३१९ ॥ जातोऽभिजिति राजा स्या द्यापरे स्थिरुत्तमा ॥
या चत्सिंहरवर्णो गगन तल गतं भानु विदंच नासं यावन्नो दिक्षु श्रान्तिं ज्ञाति

॥ ३३३ ॥ अहं धौले ह्यहं माधे दिने मेकं नु फाल्गुणे ॥ चै-
 न्ने घटी द्वयं दीपो नाथं गर्भं समुद्भवे ॥ ३३४ ॥ आवस्यंतुं सूर्या चंद्र नरो विंश-
 कत्वा हेम मये तदा ॥ दत्त्वा भूमि पति र्याया त्कार्यः ॥ ३३५ ॥
 ॥ अथे कश्चिन्दिने निर्गम प्रवेष्टव्यो विचारः ॥ मही पते रैक दिने पुरात्पुरं यदा भवेतां गमन प्रवे-
 षको ॥ भवार पृथ्वी प्रति शुक्रं योगिनी विचार्ये नैव कदापि पाहिताः ॥ ३३६ ॥
 यद्ये कस्मिन्दिने मही पते निर्गम प्रवेष्टो स्तः ॥ नहि विचार्य स्वधिया प्रवेष्टका-
 लो न यात्रि कस्तत्र ॥ ३३७ ॥ प्रवेष्टा निर्गम प्रवेष्टे च निर्गमाच्च प्रवेष्टान्नर ॥ नवमे-
 जातु नो कुर्या द्विष्टे वारे ति यावपि ॥ ३३८ ॥ अथ यात्रा विधिः ॥ अग्निं जुत्वा देवतां पू-
 जयित्वा नत्वा विधानं संधित्वा दिगी प्राप्त ॥ दत्त्वा दानं ब्राह्मणेभ्यो दिगी प्रोक्ष्यात्वा-
 चित्ते भूमि पालोऽधि गच्छेत् ॥ ३३९ ॥ अथ नक्षत्र होह नमः ॥ कुलमावा तिलतलं दुत्वा-
 नपि तथा मावांश्च गव्यं च धित्वा ज्यं हुण्ध मध्येण मां सम परं तस्यैव रक्तं तथा ॥ तत्र

निधि दोहस

२३

कथेत् ॥ ३४८ ॥ दोह दस्याप्य लभेत् ध्यात्वा नदीहृदं व्रजेत् ॥ अथ प्रसंगाद्देहजस
रविचारः प्रोक्तो ॥ यदुक्तं सारतन्त्र द्वे रहस्य यागलादिषु ॥ वक्ष्ये ह्यहोपयुक्तं च सं-
क्षेपाद्भूमनादिषु ॥ ३४९ ॥ नाडी डावा मगा चान्दी विंगला दक्षिणा रवेः ॥ सुदु-

न्या श्रेष्ठमवीमिष्या सातु यो गीन्द्र गोचरा ॥ ३५० ॥ अथ तिथि परत्वे स्तरे द्यः ॥ शुक्ले भू-
नि पद्मारम्भा दादौ चन्द्र तिथि त्रयम् ॥ ततस्तिथि त्रयं सूर्योद्देश्ये वै च पुनः पुनः
॥ ३५१ ॥ ततो न्यस्य तथा चैवं तिथौ दादश संक्रमे ॥ कृत्स्ने तु प्रथमे सूर्योत्पत्तौ
श्रान्तेऽन्य द्दुक्तं च ॥ ३५२ ॥ निज नाड्युदयादुदयाः पंच स्वीय स्वरे द्यः ॥ अ-
थ चार परत्वेन निज स्वरे द्यः ॥ अन्य सूर्योत्पत्तौ स्तरे द्यो भानु जीव धरा तज्जाः ॥ एतानि
भार्गव चंद्र द्वाः प्रोक्ता चन्द्र स्वरादौ ॥ ३५३ ॥ स्वस्व चारे स्तरा रम्भो न्यस्तः पंचो-
दया द्रवेः ॥ निज स्वरो दिनं कायं स्व चारे स्व स्वरो द्ये ॥ ३५४ ॥ काले सूर्योत्पत्तौ
स्वरे द्योः स्वरे चंद्र मसो रवेः ॥ उद्देश्य प्रसाधु भं हानिः स्वस्वे काले रवि संशुभम् ॥

॥ ३५५ ॥ अथ प्रातस्त्वरध्वं गुत्थानम् ॥ प्रातर्निर्त्तवं स मुत्तिद्ये त्वारं अस्य स्वरं एहि ॥
 अयने दक्षिणे ऽङ्गस्य स्वरेणोत्तरे रेवेः ॥ ३५६ ॥ निजस्वरो द्ये कार्यं न भवेत्तो
 ज्ञवत्तदा ॥ प्राणा यान्नादियत्नेन चाहर्षेण स्वरं सुधीः ॥ ३५७ ॥ अथ चंद्रस्वरकल्पम् ॥
 प्रवेशो द्वाह यात्रा पथ च स्वा लंकार धारणम् ॥ संधिप्रयुभानि कार्याणि कार्याणि
 न्तु स्वरो द्ये ॥ ३५८ ॥ योऽष्टिकं श्रान्तिकं ग्रीति योऽष्टकं चरसायनम् ॥ योगाभ्यासा
 दिकं कर्म सिध्येत्सर्वं स्वरे विधी ॥ ३५९ ॥ आन्ते श्लोके विधीर्न च मूर्च्छिते ज्वरिते
 पित्तम् ॥ सज्जनस्य प्रबोधे च चन्द्रनाडी प्रवाहयेत् ॥ ३६० ॥ अथ सूर्यस्वरकल्पम् ॥ कु
 र्यात्सूर्यं स्वरे युद्धं व्यवहारं च भोजनं ॥ मेधुनं विग्रहं धूलं स्नानं भोगं भयन्तथा ॥
 ३६१ ॥ विदिषां सारणं शस्त्रं मोहनोच्चादनं वसं ॥ सूर्यनाड्यामिधा तिसिद्धि मत्सु च
 कर्मचारिवलम् ॥ ३६२ ॥ मंदमिध भोजनादूर्ध्वं वष्यार्थं यो विता मपि ॥ सूर्यना
 ड्यां नरकुर्व्यात्त्रयत्नेनापि सर्वदा ॥ ३६३ ॥ अग्लिगने प्रसंगे यो वष्यार्थं प्रयत्ने

३६
 त्रिपुः ॥ चन्द्रस्वरं स्वसूर्येण सकामस्तु पिवन्भवेत् ॥ ३६४ ॥ अथ वहन्नाडी स्वरकल्पम् ॥
 ३७
 पूर्णं नाडी स्थिते पूर्णं कार्यं सिध्यति पृच्छके ॥ अल्पनाडी स्थिते अल्पं संक्रमेऽपि न सि-

ध्यति ॥ ३६५ ॥ अग्रे दत्त्वा व्रजेऽङ्गीमान्पूर्णं नाड्योः पदत्रयम् ॥ प्रवेष्टुं समये नाड्या त्र-
 याद्यं सर्वसिद्धिदम् ॥ ३६६ ॥ दूरे युद्धे स्वरं अल्पं समासन्ने रवेऽशुभः ॥ यायी सूर्य
 स्वरं ज्ञात्वा यायी चन्द्रस्वरे जायी ॥ ३६७ ॥ रिक्षि मंगं पुरः कृत्वा वहन्नाड्यो स्थितो ज-
 येत् ॥ अल्पभागो स्थित प्रष्टुर्नृन्यते नात्र संशयः ॥ ३६८ ॥ गुरुं शुक्रं बुधे नृनां वास-
 रे वामनाडिका ॥ सिद्धिस्तु सर्वकार्येषु शुक्लपक्षे विशेषः ॥ ३६९ ॥ प्रष्टुः प्रवाहे गम-
 नादि प्रसक्तं सूर्यं प्रवाहे नहि किंच नाऽपि ॥ प्रष्टुर्ज्येष्ठस्य हृद्मानभागो रिक्षे च भा-
 गो विप्रलं समस्तम् ॥ ३७० ॥ अथ स्वरपत्त्रेन तत्त्वोदयः ॥ तत्त्वानि पंचभूतपक्षे जो वायु
 र्नेभः क्रमात् ॥ एकैकस्य घटीभोगः पंच घट्यात्मके स्वरे ॥ ३७१ ॥ अथ तत्त्वानां प्रचारः
 अथ हस्तं दहे ह्यपु एतेन अ चतुरंगुलः ॥ माहे योऽर्का गुल्मो क्षेयो वारुणः षोडशं गुलं

विभीषणो शुभं कार्यं यन्न कार्यं सुनन्दने ॥ ३८६ ॥ याम्ये भवे न्नारण कार्यं मय
 सो सोम्ये सभाया मय वेशनं स्यात् ॥ रजि से वनं भार्गव के मुहूर्त्तं सावित्रि नाभिन् प्रप
 दत्सु विधाम् ॥ ३८७ ॥ अथ मुहूर्त्तोदयं वार परत्वेन ॥ उदये रौद्रमादित्ये भैजं सोमं प्रकी
 र्त्तितम् ॥ जयदवं कुजे वारे तुरहेदं बुधे तथा ॥ ३८९ ॥ रावणे च गुणे ज्ञेयं भार्ग
 वे च विभीषणम् ॥ ग्रानो याम्य मुहूर्त्तञ्च दिवा रात्रि प्रयो गतः ॥ ३९० ॥ अथ
 मुहूर्त्तौ गत्वेन गुणोद्भयम् ॥ गुरु सोम दिने सत्त्वं रजः प्रयागार के भृगो ॥ रवौ मन्दे बुधे
 वैव तमो नाडी चतुष्टयम् ॥ ३९१ ॥ सत्त्वं गौर रजः प्रयागं तामसं कृत्स्नं मेव च
 ॥ इमं दणमिष जानीया त्सत्त्वा दीना यथो दितम् ॥ ३९२ ॥ अथ सत्त्वादि गुणानां फ
 लम् ॥ सत्त्वेन साधवे त्तिदि रजसा धनं संपदां ॥ तमसा साधये न्मोक्षं दाने ज्ञेयं
 सदा बुधैः ॥ ३९३ ॥ सत्त्वे रजसि सत्तकार्यं नयवा प्रभुम मेव च ॥ तमसा ज्ञेयं भे
 दादि साधयेन्मोक्षं मार्गिकम् ॥ ३९४ ॥ अथ मुहूर्त्तौ गत्वेन रेखा ज्ञानम् ॥ प्रत्येकं न-

५ भः रवादिभिरेव वर्णैर्विभं धनुर्व्यास गणार्धे पाद्यैः ॥ मृत्युं तथा पादयमादि व-
 र्णैः श्रीविष्णुनामा धृत सध्वंसिद्धिः ॥ ३६७ ॥ अक्षतध्वोर्द्धरेरेका कालरेखा
 त्रयं भवेत् ॥ विप्रमावर्तं कन्तत्र धृत्ये धृत्यमिति क्रमात् ॥ ३६८ ॥ अक्षरेखाफ-
 लत्र ॥ धृत्ये नैव भवेत्काया विप्रमावर्तं के भवेत् ॥ कालरेखा मृत्यु करी सर्वसि-
 द्धिस्तथा भूते ॥ ३६९ ॥ धनुर्मौन कर्कटानां घातं सत्वे विनिर्दिशेत् ॥ तुलालि-
 ल्य मेधानां घातो रजासि निश्चितम् ॥ ४०० ॥ कन्या भिक्षुन सिंहानां कुम्भ
 स्वभकरस्य च्च ॥ घानस्नाभं सवेलायां विपरीतं श्रुभा वहम् ॥ ४०१ ॥ ध-
 नुः कर्कट मीनारव्या गोरवर्णाः क्रमो दितः ॥ द्रुवे मेघे तुलायां च दृष्टिर्के स्या-
 मवर्णता ॥ ४०२ ॥ भिक्षुने मकरे कुम्भे कन्यासिंहे च हस्तता ॥ गोरश्च मृद-
 ते सत्वे प्र्याम वर्णं रजोगुणो ॥ हस्तं तामस वेलायां मृदते नान्न संशयः ॥ ४०३
 ॥ यस्मिन्वर्धे भवेन्मासो गोरणाधिक्यस्तथा क्षयः ॥ मासेन गृह्यते मास स्तव

कार्यार्धं साधये ॥ ४०४ ॥ माघमास्युण चैत्रे शु. वैशाखे आवणे तथा ॥ नभः
 स्पे सासि वाराणां मुहूर्तानि यथा कदात् ॥ ४०५ ॥ रुद्र प्रोक्त मिरञ्जानं प्रिया
 ये रुद्र यामले ॥ गोधनीयं प्रयत्नेन सद्यः प्रत्यक्षं कारकम् ॥ ४०६ ॥ रवौ नभः के
 प्राद्व विभ्रयजो ग्रां विन्द नाशानभश्चाखुभायी ॥ रात्रौ च्छिंहो युगलं नभो यत्न
 द्दसी प्रा लंबो द्द रास सञ्ज्ञौ ॥ ४०७ ॥ सोमे हर्षि विभ्रयति स्फुरेशः प्रत्येव गोरी सुत

रं	प्रे	मं	च	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सो	भा	सा	तै	त्रे		चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सो	भा	सा	तै	त्रे		रा	वि
ल	त	त	स	र	र	त	त	स	र	र	त	त	स	र				र	र	त	त	स	र	र	त	त	स	र				र	र	त	त	रा
०	३	४	४	०	०	०	०	४	४	४	४	०	०	०	०	४	४	४	४	०	०	०	४	४	४	०	०	०	०	४	४	४	४	४	४	

विभ्रु संज्ञौ

॥ पदं निशान्यां एव रव विभ्रु रश्म्यं सुरमं च नाशयता विभ्रनाद्यौ ॥ ४०८

मं	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सो	भा	सा	तै	त्रे		चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सो	भा	सा	तै	त्रे		रा	वि
स	स	र	र	त	त	स	र	र	त	त	स	र	र			त	त	स	र	र	त	त	स	र	र	त	त	स	र	र	त	त	स	स
४	४	०	०	०	४	४	४	४	०	०	०	०	४	४	४	४	४	०	०	०	४	४	४	०	०	०	०	४	४	४	४	४	४	४

[illegible][illegible]

यं श्रीललितसंनयनः श्रीः ॥ ४०४ ॥ द्रुपेधनुःलस्ययसो नक्षत्रैः सिद्धिर्द्वेनः सौरियमोक्षसिद्धिः

[illegible]

रात्रौ सुपर्णश्च जलवयुमं न भोऽष्टदाभो हरकुंजरस्त्यो ॥ ४१० ॥ गुरौ गोपिनां प्रत्नाया विभ्रां रा-

[illegible]

संश्लि विचार पूर्वद विवृधै विधिं त्यक्त्वा ॥ ४१४ ॥ सत्ये नृसिंहो द्विपदं च चापौ हरिर्नरः सर्वपदम् ॥
॥ ४१५ ॥ एतौ परं चापख मच्चतुर्दं च युगं च गौ । वज्रख सिसिद्धि सञ्जो ॥ ४१६ ॥

सें भद्र आपंख नमो भूकुन्दो नमः भद्र आपंख नमः ॥ पदं निशायां ख सुगं सुगारिबे

[illegible]

नायकोविह्वुनमध्वाविह्वुः ॥ ४९६ ॥ भौमे महेभास्यनभोऽद्यविह्वुर्नभोद्युगोपातिरवंग
योप्रः ॥ नतंगजोद्गास्यरवमद्युतंचयुगमंचध्वन्यं नहरिश्चयुगमम् ॥ ४९७ ॥

[illegible]

सं सिंह युग्मं गगनं च युग्मं स ॥ ४२० ॥ प्रतीपदं श्री ननभो नकलः खं श्री प्रदं विष्णु नभो हं
 २ रिः पद ॥ एतो पदं खं पदं नंद खं गजा ननो गोपति शून्य पादः ॥ ४२१ ॥

प्रमि	या	सो	भा	सा	रे	प्रे	भे	चा	ज	वै	तु	जा	रा	वा	वि	सु		सो	भा	घा	रे	प्रे	भे	चा	ज	वै	तु	जा	रा	वा	वि	सु	या	शनि	
दिवा	न	त	स	स	र	र	त	त	म	स	र	र	त	त	स	स		र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	र	तो
	७	६	०	०	०	६	०	०	६	७	६	०	०	६	७	७		७	०	७	७	६	०	७	०	७	०	७	०	७	०	७			

ज्येष्ठे मासे तथा धादे तथैव च मलिक्नु चै सूर्यादि वारं संश्लोभ्याः सुहृती निरुमा त्विमाः ४२६

गवि	ते	भे	भे	सा	ज	वै	तु	झं	रा	वा	वि	सु	या	सो	भा	सा	प्रे	भे	चा	ज	वै	तु	झ	रा	वा	वि	सु	या	सो	भा	सा	शै	रवि	
दिवा	न	त	त	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रा	तो
	०	०	०	६	०	७	७	७	७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

अर्कं दृष्ट्ये च कश्चिद्भुग पद युगलं खं हरि विष्णु चापस ॥ रातो प्राल्नी प्रा युग्मं युगलं हरि दृष्ट्यं युग

सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रविवर	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	शुक्र	गुरु	बुध</
-----	------	-----	------	-------	-----	-------	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-----	------	-----	-------	------	-------

ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४२३ ॥ सोमे चाप ह्यं नो नृहरि रव युगलं पीत वासश्च धूम्रम् ॥ चाप हं
 २ हं नि प्राया मज पद रत्न मजं चाप यक्षे प्रा पादम् ॥ ४२४ ॥ भोमे धूम्र्ये च कृत्सी युग गान्

ॐ	ज	वै	तु	ज	रा	वा	वि	सु	वा	सो	भा	सा	शै	श्वे	मे	चा	वै	तु	ज	रा	वा	वि	सु	वा	सो	भा	सा	शै	श्वे	मे	चा	ज	ओ	म
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

हरि त्रिगुणि चाप नि सिद्धिः ॥ नक्तं द्यु रसं द्वि शून्यं युग युगल पदं श्री रत्न चापं हरि श्व ॥ ४२५ ॥ शिप र्व्ये

वुध	तु	ज	रा	वा	वि	सु	वा	सो	भा	सा	शै	श्वे	मे	चा	ज	वै	तु	ज	वै	तु
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

श्री विष्णु नाथोऽथ हरि गणपतिः पद्म नाभश्च पादः ॥ दोषा यो हि द्वि द्यु रसं हरि रव गज सु खः ॥ ४२६ ॥

गु	र	रा	वा	दि	तु	वा	सो	भा	सा	शै	श्वे	मे	चा	ज	वै	तु	ज	वा	वि	सु	वा	सो	भा	सा	शै	श्वे	मे	चा	ज	वै	तु	ज	वा	वि	सु
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

स पृथ्वेचक्रः ॥ ४३४ ॥ जीवे विष्णुश्च चापो गगन मज्जितरव संधि पादो नृसिंहः ॥ रा-
त्रौ नोखं शुशरि गगन युगम जी विष्णु चापं द्वि युग्मम् ॥ ॥ शुक्रे युगं शुशरि गगन यु-
गम जी विष्णु चापं द्वि युग्मम् ॥ तद्वा त्रौ युग्म नोपी पति युग गगनं श्री वरः खं पदे श्रीः ॥ ४३५

गगजोविस्तुत्तायां द्वि युगम् । तद्भाजो नुक्तमोषी पति युग गगन आ वरः श्वषट्श्रः॥ ४६॥																																	
सुक्र	वि	सु	पा	सो	भा	सा	शे	व्हे	शै	चा	जै	वै	तु	अ	रा	वा	तु	पा	सो	भा	सा	शे	व्हे	शै	चा	जै	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सुक्र
र	र	न	न	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	न	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	राजो
००	६	६	६	६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	६	६	६	६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

मंदे श्री युगम सिद्धिः रव हरि हरि नभः शैरी खं सिद्धि रंवा ॥ तं श्री युगम सिद्धिः खग युगल हरि व्योम गो विंद

प्रा	नि	पा	सा	भा	सा	शे	व्हे	शै	चा	जै	वै	तु	अ	रा	वा	तु	सो	भा	सा	शे	व्हे	शै	चा	जै	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	क्र
६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

अथ यात्रा विधिः ॥ देव मुहा ह्य शुभ सुदना ह्य रव ह्य काल न शुभ ह्य ॥ प्रा श्रुत
विध्य विधानु मतः पृथक् पृथक् राव न भगल नैवात् ॥ ४३७ ॥ उक्तं प्रथम न सव दक्षि-

पांघ्रिद्वनिं प्रत्यदमभियात्यदिश्यपानम् ॥ आरोहेते लघुतहेमता अभानं दत्वा दीमा
 णा ज्वलण्यच प्रगच्छेत् ॥ ४२८ ॥ कौशिकस्तु दक्षिणं पादं नये दत्वा ज्वजं दिति ॥ शोके
 तत्तु स्वकालोक्तं स्वरश्चैव भवेत्तदा ॥ ४२९ ॥ प्राच्यां गजं रथं याव्यं प्रतीच्यां गुरुं गते भ-
 न् ॥ उदीच्यां शिविको भूपस्समारुह्य जजन् जयेत् ॥ ४३० ॥ दिश्युक्तं दाहना भावे ध्या-
 त्वा तद्दाहनं व्रजेत् ॥ अथ सगमनविलंबे गति निमित्तेन प्रस्थानम् ॥ प्रस्थाने आहूत्या दीनां द-
 द्वास्तत्र तथा शुभम् ॥ सध्या मूलं फलं चैव प्रशस्तं दृढि कारणम् ॥ ४३० ॥ अदत्ता तप-
 न्नेभ्य जन्तुभिरांश्च विभूषणोऽसीधमजां वराणि ॥ अंशो लिङ्गकारत्वं रथाश्च चारान् प्र-
 ध्याया नाद्यं भन सख्यं भीष्टम् ॥ ४३१ ॥ धृत प्रस्थानं कोचापि स्वयं सं प्रदियतोपि वा ॥
 नतोऽपि गतौ चित्तं सच्चन्द्रं प्राकुनादिकम् ॥ अथ प्रस्थितस्य गमनविधिः ॥ अथ मेऽन्दि-
 त्पथः क्रोधां हिंसां चैव हनिष्यो जन्तुः ॥ कोशवद्धं तृतीयोऽन्दिद्यद्येच्छन्तु ततः परम् ॥ ४३२
 ॥ अथ प्रस्थितविलंबे दिननिर्णयः ॥ प्रस्थाने भूपतिस्तिष्ठेन्नैकं न दश एतन्नि कन्द ॥ सप्त एतन्ने

तुसा मतः पचाह प्राकृतो जनुः ॥ ४३३ ॥ अथ द्विक्पलत्वेन प्रस्थानं ॥ प्राच्या ग्रहाणि शुनयः प्रवह-
न्ति सप्त ग्राम्या भतीव शुभ दानि दिन्मनि पंच ॥ श्री एषे च पश्चिक्पलत्वेन प्राच्यानि नायकानां प्रस्था-
नकेषु दिपसह्य मुत्तरस्थात् ॥ ४३४ ॥ अथ प्रस्थान प्रमाणम् ॥ गेहा गेहा अत्रापि गम रतहि याने-
ति गार्गसी भ्यस्ती यांतरमपि भृगु वर्ण विच्छेप मात्रम् ॥ प्रस्थानं स्यादिति कथयते ॥ सो भर्द्वा-
जरायं यागा कार्या वहिरिह पुरास्था दृष्टिष्टो ब्रवीति ॥ ४३५ ॥ प्रस्थान मत्र धनुषां हि प्राता-
निपंच के विच्छत ह्य मुष्टानि दशैव चान्ये ॥ सं प्रस्थितो यदह मन्दिरतः प्रयानो गंतव्य दिक्षु त-
दपि प्रयतेन कार्यम् ॥ ४३६ ॥ यात्रायां प्रयत्न तस्या ज्यानि ॥ यात्रा हा तूर्ध्व तस्मै रात्रं रत्नी सेवजं
त्यजेत् ॥ अथ क्लृप्ते नृप ज्ये क रात्रं तु सर्व धैरिहि ॥ ४३७ ॥ द्वाधं त्याज्यं पूर्वमेव त्रि रात्रं-
शीरं त्याज्यं पंच रात्रं तु पूर्वम् ॥ शौचं तैलं दासरे ॥ स्मिन्त्वमिच्छ त्याज्यं यत्नाद्भूमि पालेन नून-
म् ॥ ४३८ ॥ भुक्ता गच्छति यदि चेत्तैल गुड क्षार धृक् कांसाणि ॥ विनिवर्त्तने सूर्यः रत्नी-
हिजमवमान्य गच्छतो मरणात् ॥ ४३९ ॥ अथ यदि क्लृप्ते यत्ते पुष्य रत्नाता समाजसं कृत्वा

दुदितो वाच्छन्नजमते मनो रथान् विरको लेन ॥ ४४० ॥ जगन्नाकाले पुनः पुनः ॥
 नायने ॥ माधय ॥ ४४१ ॥ वज्रं यनिर्गच्छ प्रज संभरेति सिद्धि करः ॥ रवत्वेति ॥ ४४२ ॥ धिक्ताः म-
 मोदजगन्जीव द्वाकाश्च ॥ ४४३ ॥ मागासि र्निवर्तयक गम्यते मूढ दुर्भर्ते भीहान् ॥ वा-
 नेच्छन्ति दुधीः क्षुण्णकाशित भूति पार्दैश्च ॥ ४४४ ॥ माध ग्रह होरा प्रकुन्तानि ॥ म्मादित्य हो-
 रे प्रकुन्तान् सन्मुखं रथी पुन बुक्ता कलशं च दधत्येति ॥ द्वात्ये विभागे नग्नं च वायु संदध्याः क-
 मे वा न करे नृगाश्च ॥ ४४५ ॥ चंद्र होरे मृगश्र्वैव फलं वा कुल भंदधीः ॥ रजकी धीति वर्यो-
 ण नापितो दय्यराणां चितः ॥ ४४६ ॥ भौम होरेण प्राङ्मुखं काय भारं न पुंसकम् ॥ वलीक-
 च प्रकुर्नेन न लभो न्मनो मदीन्मनः ॥ ४४७ ॥ सौम्ये होरे द्विज श्रैव शवत्ता गौः श-
 द्यते ॥ नारी सुवासिनी दासोत्तम्ये दक्षे मृगास्तथा ॥ ४४८ ॥ होरे देव गुरो प्रख्या-
 पत्या रत्नी गुरो भवेत् ॥ पूरा कुम्भं द्विज श्रैव सवत्ता गौः मदधर्मिन् ॥ ४४९ ॥ भृगु हो-
 रे सदा भोक्त सस्कुनश्च विरोधतः ॥ नारी सक्ल प्राचेव सपदि द्विज दर्शनम् ॥ ४५० ॥

स हि शान्तं होरे सत्त्वात् नान्ता दुर्भगा दर्शयन् ॥ काष्ठ पाषाण भारश्च सविज्ञेयो न संप्राप्यः
२७७ ४४८ ॥ अथ ग्रहशकुन्तम् ॥ लग्ने वाक्यति शुक्राणां ब्राह्मण स्त न्पुराणलिखयः ॥ बुधशु-

क्रौंचकेन्द्रस्थो सत्त्वागोः ग्रहप्रयते ॥ ४५० ॥ चंद्रः सूर्यश्च भवति दशमस्थो यदा
यदा ॥ दीपादग्नेः शुभन सौरजकीधौ तवाप्तसा ॥ ४५१ ॥ सुतस्थाने यदासौ म्यो द-
धो दृष्टस्तु सभुरवः ॥ चन्द्रो गुरुश्च सहजे स्वानोदावाप्त आगमाः ॥ ४५२ ॥ सर्वकर्मणि
य नवमे भारद्वाजो हिताकुलः ॥ चापस्य दर्शनं वास्या ह्यसंगोऽत्यंत दुर्लभम् ॥ ४५३
॥ शार्दूलो गार्ह्योरो च सहजस्थो कुमारिका ॥ प्रौढानां शुभभागानां च दर्शनं सर्वका-
मदम् ॥ ४५४ ॥ यथे ततीये कर्मणि भोगश्चेत्फलं भवेत् ॥ दासो वैश्यासुरा मांसं-
लाभश्चेव सुविभिनतः ॥ ४५५ ॥ सप्तारुषं च भेदस्य जीवो ज्ञो ता न्न वहीते ॥ शार्दूल-
पुष्यमांसादि सुरा दर्शयन् लाभदः ॥ ४५६ ॥ गार्ह्यो मेषश्च यन् दृष्ट्य लभन्ता यदि ततीयगः
॥ उद्धृत गोमयं पश्येच्छीघ्रं लाभं धनं विप्रोत् ॥ ४५७ ॥ अथ याज्ञिका पुनश्च शकुन्तानि ॥ पृथि-

११
 राज्ञो वाजी रथो धेनु स्रवत्मा तु विप्रेवतः ॥ भेतो हृषोऽन्य दृष्टोऽपि हृष्टे कप्रो तदा शु-
 २०६
 भः ॥ ४६७ ॥ वर्णी स्वयिन्न सुस्त्री वंदर्भी हंसो मयूरकः ॥ नकुलश्च शरहाजश्चाथ

पक्ष्मागस्तथैव च ॥ ४६८ ॥ चित्तोत्साहकरं वस्तुषु भान्ये तानि दर्शनात् ॥ अथ पुन-
 वस्तुनि विशेषः ॥ कीर्तनाच्छ्रवणं श्रोत्रं श्रवणा तु विलोकनश्च ॥ दर्शनात्स्यर्शने चैवां-
 द्रयादीनां गमादिषु ॥ ४६९ ॥ शुभदं दर्शनं ये वा तथि वाद्य तथा नृपः ॥ कत्वा द-
 क्षिण तत्सर्वान्नाच्छन्सिद्धि मवाप्नुयान् ॥ ४७० ॥ ज्ञाप्य दुःशकुन्ताः ॥ तार्प्यं संकल्य भ-
 न्यं च लोहकारश्च रोदनम् ॥ लोहं च रक्तं पुष्पं च शुद्धं नैलं धुतं तथा ॥ ४७१ ॥ पि-
 रया कटुरात काणि भस्मा स्थिजदणं तुषः ॥ वायारो न्धनं च स्मरिण मधुरं च निहरे-
 यधम् ॥ ४७२ ॥ मत्तो वा ततः रक्त्वो हित्वो मुदि तश्च द्रुमुक्षितः ॥ जटिलश्च तन्मा-
 रोमी संन्यासी मलिनो रियुः ॥ ४७३ ॥ रवंजो नन्दो गह्वानश्च तैलाभ्यक्तोऽथ गार्भि-
 रयि ॥ काषाय वस्त्र धारी च सुक्त के प्रोऽथ भाषावान् ॥ ४७४ ॥ चंभ्या च प्रदं दत्तौ

चौरः तंही पान पलायनम् ॥ रचरोय महिषा रुढाः कुवाक्य भवरां तथा ॥ ४७३ ॥
 क्लृप्त सय्योऽथ नंदकु प्रभारतो गाय भुक्तरः ॥ कपलाः पतिनो ज्यंगः कुडोऽभ्यो वधिसि
 जडः ॥ ४७६ ॥ शार्द चाभशु विपवा स्वर्ण कारो रज स्वला ॥ उपानत्क दे मां गाराः
 धुरिपंद वसा दृणाम् ॥ ४७७ ॥ तथा रजोवती पुष्पं क्लृप्तो च्छ महिषो दृकः ॥ स्व
 गेह रहनं सुहं माञ्जरिं स्वकुले कलिः ॥ ४७८ ॥ गोक्षुतं प्राणिना संगतिरः श्रो
 त्र प्रकंपनम् ॥ अञ्जरि मार्ग रोधप्रव सवलं रित्त कुंभकः ॥ ४७९ ॥ एतद्गुः प्रकु
 नायाने तर्वा कार्य निवेय काः ॥ अथ गद्गा पप्र कुनानि ॥ सर्वदिक्षु क्षतं भिदं गो क्षुतं शर
 णा प्रदम् ॥ अफलं तच्छुतं वाक्यं दृढ पीन सके तवैः ॥ ४८० ॥ अथ कस्मिंश्चित्का
 र्यं शुभाक्षिका ॥ ओषधे दान सारो दे विवां दे दायनेऽप्राने ॥ विद्यारसे रान्न वापि क्षुतं
 सन्न सु प्रोभनम् ॥ ४८१ ॥ क्षिप्त्वा विडाल सध्याभ्यां मार्ग रोधो दृते र्वचः ॥ मा
 ज्जरि माहिवं युद्धं युनः कर्ण प्र कम्पनम् ॥ ४८२ ॥ अति धूसा न्वितो वान्हिः वेदेते सरण प्र

संक्षि- दाः ४८३ अथ दुःशकुनावाप्ततस्याज्याः ॥ एतदुःशकुना दामि कृत्वा चेच्छकुनोत्तरम् ॥ अष्ट-
 २८२ द्यास्वते रोधाः प्राकुना दक्षिणे शुभाः ॥ ४८४ ॥ अथ केयं चित्कीर्तनं केया चिदर्धनं शुभमशुभं
 च ॥ प्राशजाहं कं गोधानां सर्व्यं सूकरयो रपि ॥ कीर्तनं शुभमदं नाश्यां नो रत न्व च दर्श-
 नम् ॥ ४८५ ॥ अस्ववानरयो र्यानि दर्शनं चरुतं शुभम् ॥ नास सं कीर्तनं श्रेष्ठं द-
 क्षिणे च रवरस्व नः ॥ ४८६ ॥ अथ वामभागे शुभाः ॥ वाद्यं गी को किला पल्ली पीत की भू-
 को रला ॥ पिंगला छूच्छुका श्रेष्ठा शिवा पुरुष साक्षि ता ॥ ४८७ ॥ मध्याह्ने चुरत-
 श्रेष्ठो चाप वधू च दायगे ॥ रवरो हूक श्रगा लानां वाने पृथे शुभमस्वनः ॥ ४८८
 अथ दक्षिणभागे शुभा ॥ श्री कण्ठो वानरो भाषः छिक्कारः पिक्क कोरु रुः ॥ प्रया अस्त्रो
 वायसः श्रेष्ठो र्श्री संज्ञा आपि दाक्षिणे ॥ ४८९ ॥ न च श्वी सुग वच्छ लाः संभ्या
 यां दक्षिण शिवा रवी ॥ मरुदक्षिणा गताः श्रेष्ठाः दाने तु सृग पक्षिणाः ॥ ४९० ॥ दिव-
 माश्वेद ति श्रेष्ठाः व्रज नो भूषते मूर्धगाः ॥ वाम दक्षिणा गाः श्रेष्ठाः सृग वधू पतत्रि-

णाः ॥ ४८२ ॥ अथ विशेषः ॥ प्रहृष्टात्मा सारमेयाश्च दक्षिणा ह्यमगा प्रभुभाः ॥ पूर्व
 दिगमने पूर्णवदनः प्रोकरपिकः ॥ ४८३ ॥ वामगोदक्षिणाः काक प्रभुभोऽन्यत्र
 गमेऽन्यथा ॥ चाव पूर्णाननो व्योम्नि विधत्ते यदि तो रणाम् ॥ ४८४ ॥ अन्योन्य
 विजयस्तनुकाकश्चेन्नराणां भवम् ॥ अथ ध्रुवश्चेष्टा विशेषः ॥ प्रीर्षीदरहनुर्धारा हत्कं-
 एतस्कन्धष्ठकम् ॥ अथादक्षिणेन पादेन कराडये ह्रमना दिद्यु ॥ ४८५ ॥ लाभं क्षे-
 मं जयन्दत्ते दक्षिणां गं विशेषतः ॥ वामपादेन सर्वस्य नाशं प्रीतं फलस्य च ॥ ४८६
 विष्टापं कादिलिप्तो गं प्रवणा स्कालनं क्षुतम् ॥ दत्तप्रकाशानं निज्ञानस्यं कुर्वन्मु-
 निप्रदः ॥ ४८७ ॥ नृत्वं क्रीडोत्सवाद्यं प्रवा विदधन्चि लिहन् सन् ॥ अरत्नन्मोसं चि-
 तास्थः सन् सहगच्छन् जयप्रदः ॥ ४८८ ॥ अथ प्रवेष्टे प्रकृन्वत्यथः ॥ प्रवेष्टे निम्नगो-
 तारे नष्टसंवीक्षणे भये ॥ दृढानाड्याः प्रवाहे च द्यूते भेषज्य कर्मरीणा ॥ ४८९ ॥ बुद्धे
 ते व्यत्यया ज्ञेयाः प्रागुक्ता भवन्नाश्चये ॥ वामे च दक्षिणे च सं प्रीताः प्राकृन्वाश्चये ॥

॥ ५०० ॥ वैपरीत्येन विज्ञेयाः प्रवेष्टुं नृपते वृषभे ॥ यात्रोक्ताः प्राकुना ये च त एव नृ-
 पद्वर्धने ॥ ५०१ ॥ अथ प्राकुनानां कियता कालविशेषे नैर्वर्त्यमाह ॥ नगरं ५ रात्र्यमाह्म-
 नाराया ग्रामसंस्थिताः ॥ दिवा च येन प्रवर्ध्या न च नक्तं चरो दिवा ॥ ५०२ ॥ हं-
 द्रो रोगादिस्तत्तत्र कलहामिषकां क्षिराः ॥ आपयन्तां तस्मिन्नामज्ञानग्राह्याः प्राकुना-
 कचित् ॥ ५०३ ॥ रोहिताश्वाज्जवाले यद्वुरंगो ह्यमृगाश्च प्रागाः ॥ निःफलाः शि-
 शिरे ज्ञेयाः वसन्ते काक कोकिलौ ॥ ५०४ ॥ ननु भाद्रपदे ग्राह्याः प्रशकराश्च वृकाद-
 यः प्ररथाश्चादग्नौ चोक्ताः प्रावर्णे हस्तिचातको ॥ ५०५ ॥ व्याधुर्ध्वानरहीषिग्रहि-
 षा सविलेखाः ॥ ५०६ ॥ हेमन्ते निःफला ज्ञेयाः वालाः सर्वेऽपि ज्ञानुवाः ॥ प्रभ-
 नशुक्लमुमकंदकीधुप्रसन्नानभस्मास्थितुषानलेषु ॥ ॥ आकारः प्र-
 न्यालयजर्जरीयुसौम्याऽपि पापः प्राकुनः प्रकल्पः ॥ ५०७ ॥ वरं प्रदेहूर्ज्जनकालसूर्यो
 वरं क्षिपेद्वा प्रमुखे स्वमंगलम् ॥ वरं तरे ह्यारिनिधिं भुजाभ्यां नोलेद्यये दुःशत्रुनं क-

दापि ॥ ५०८ ॥ अथ वायोः शुभाशुभप्रकृतम् ॥ शुभदोदक्षिणो षष्ठे मन्द प्रशीतोऽथ शर-
 ततः ॥ प्रचरादस्सभुरवो वामेभंगदस्समरादिवु ॥ ५०९ ॥ आद्येपशङ्कुनेस्थि-
 त्वा प्राणानेकादश ब्रजेत् ॥ द्वितीये षोडश प्राणां स्वतीयेन क्वचिद्ब्रजेत् ॥ ५१०
 ॥ याने दुष्प्रकृतं त्याज्यं स्वर्गन्दत्वा ब्रजेत्सुखम् ॥ स्थित्वा सच्छङ्कुनं भूयो हृदा
 हृदो ब्रजेत्पुनः ॥ ५११ ॥ विरुद्धे शङ्कुने पादौ प्रच्छान्त्वा च स्य भूपातिः ॥ स्थित्वा शर-
 क्षीरदक्षायोभूयः सच्छङ्कुने ब्रजेत् ॥ ५१२ ॥ अथ त्याज्य दोषाणां संग्रहः ॥ सिध्य-
 क्षायनमासाहर्भवाऽशूलादयश्च ये ॥ सभुरवस्थो भूगुप्तो म्यो भूगोर्दन्नादि कु-
 न्ताया ॥ ५१३ ॥ ललाटीपरिषोदाहः रजस्सूतकमुद्गवं ॥ चूतपक्षोऽर्कषट्प-
 तास्तिथयः पापवासराः ॥ ५१४ ॥ सुखवामगतश्चन्द्रेऽग्निजिह्वाभ्योभयंसकाश्च
 जन्मशशिश्रुभसोऽंघ्रिः लघने प्रातृभर्तोऽरिभम् ॥ ५१५ ॥ रिपुशशिश्रुभयोर्लघुः लघा-
 शो कुंभमीनगौ ॥ लानधृक्षोदयं षष्ठदिगस्तत्र शनिस्तुरवम् ॥ ५१६ ॥ चूर्नेशु

मणिः क्रस्तथा केन्द्रे चक्रो वक्रगा वासराः ॥ सतेऽन्येऽपि विवाहोक्ता योगानेष्टा प्रयत्ना
२८५ के ॥ ५१७ ॥ अथात्र युद्धयात्रा वसा धूमम् ॥ अथो वक्रैऽथ नक्षत्रे वरैश्चापच वावहे

॥ चंद्रताला वल्लोपेने कुमारेष्टनि वासरे ॥ ५१८ ॥ कालजोदिरभवे वापि स्वस्व
पूर्ण वले स्वरे ॥ योगिनी कालदिक् प्रज्ञान चंद्रताला नुक्कुल के ॥ ५१९ ॥ दृष्टा
यामद्वयो वा गोचरे लाभगेरदौ ॥ युद्धोक्तजयदे योगे प्रोभने देहजे स्वरे ॥
५२० ॥ धूमन कार्या विनोदाय धनलाभाय भूतये ॥ ५२१ ॥ अथ युद्धेष्टने स्वरभू-
तलम् ॥ पूर्वदि तंश्चतुर्दि क्षुनदाद्या स्तिथयः क्रमात् ॥ मध्ये पूर्णो द्दशे पंच ह्यकाद-
शश्चास्त्वेष्टा स्तथा ॥ ५२२ ॥ दिक्प्रतिष्ठे स्वरतश्चैव षटी षट् प्रमाणा नः ॥ तत्रा ल्का
लिक स्वरौ द्वेयो दिक्स्वरस्तत्त्व वेदिभिः ॥ ५२३ ॥ वाला मभूतयोऽवस्था स्ते-
षां दोषाः क्रमाद्बुधैः ॥ पूर्णो जय स्वरेष्टनि वाले द्याता ज्ञतयो भवेत् ॥ ५२४ ॥
द्वैधहातः कुम्भारे च दृष्टे अभ्योष्टतो मृतिः ॥ स्वयं स्वर वल्लोपेन दिग्नि स्थित्वा द्याया

शुभाचीनां निजपंचम वैरिणा गच्छे ॥ ८ ॥ स्ववर्गात्पंचमप्रशुच्यनृष्यभ्यानि निजकः
 ॥ तृतीयो मित्रसंज्ञस्तथा दृढा धीनी हिनीच कः ॥ २५ ॥ नाप्रमाद्य कथो र्वर्षो वैके स्याद्
 तस्योत्तमः ॥ २६ ॥ अथ काविका ॥ स्ववर्गा हि गुराणि कस्य परवर्गिराद्यो जयेत् ॥ अथ निरुद्धे
 ज्ञानं योऽधिकस्तस्य नृणां भवेत् ॥ दृढो काविकाधिक्ये निवसे न्न भिरनरः ॥ २९ ॥
 अथ प्रमेदि कप्रकंशः ॥ ग्रामस्य भागं नवधा विधाय मध्ये हरिर्नृकवृकोऽथ युग्मम् ॥
 पूर्वदिशो वृष्टिक मीनकन्या कर्कोधनुस्तो ल्य ज कुम्भ जाश्च ॥ २३ ॥ वसे चुरर्थाहं न-
 रान्न तज्ज वासे तथा हानि रिहा रिवलस्य ॥ युष्ठा स्वदिग्भागा गताश्च वर्गास्तै परांशु-
 रव्याः काचिताः क्रमेण ॥ २३ ॥ अथ परः ॥ मध्ये ग्रामस्य गोद्वन्द्वनक्रासिंहा रव्य राश-
 यः ॥ मीनालि कन्यकाः पूर्वो दक्षिणो कर्को राधिकाः ॥ २४ ॥ धनिवजः पाश्चिमे मेख-
 तुला कुंभा स्तथो जरे ॥ नो वसे युर्नरास्तोरव्य धन लाभात्स जाधिनिः ॥ २५ ॥ वै-
 नतेय मुरवा वर्गा वलिद्याः पूर्वतः क्रमात् ॥ स्वदिग्भास्य महं प्रोक्तं पञ्चम्या न्दिशि

संक्षिप्तम् ॥ १६ ॥ अभ्युदयः कोणवसेयुर्हीन जातयः ॥ विद्याध्यास्तुतिश्चैवम

222

अस्मात्सु सन्निहितः ॥ १७ ॥ अथ दशविधाः साधनानि ॥ अथाष्टद्वयैः क्रयतोष्ट ८ वाणारसा द-
 द्यि ४ सन्नि ७ न्नु १ गुणा ३ भिन्नोच ३ न्नुग्राभदिपवर्गमितो क यो गो मूर्ध्यादृशेष्टावसु
 भक्त प्रोधात् ॥ १८ ॥ सूर्येन्दुभोगाद्युपसौरिजीवास्सिंही सुतो वै भृगुजः क्रमेण
 ॥ पट् देवाणां चंद्रा १५ वसुतो ८ धर्माश्च नागा १० नंदेन्दवो १५ को १२ कुयमा-
 ३१ तथेत्यम् ॥ १९ ॥ त्वेत्वेयुवर्वप्रभितेयुतेषां दशाफलं तत्र निवासिनां च ॥
 तदुत्तरादुत्तरतो दशो प्राफलं विकल्पं च दशा क्रमेण ॥ २० ॥ अथ दशाफलम् ॥ उ-
 द्दिपचिह्नः परिपूर्व विविधो वन्द्याभितप्तो बहु सौरव्यशुक्लः ॥ रोमार्भितप्तो बहुद्र-
 व्ययुक्तो ज्वराच्चित्तस्मर्त्तुसुखाच्चित्तश्च ॥ २१ ॥ यद्यदृशसौरव्यफलानि लक्षा-
 तन्तदृशोक्तं सकलं शुभं स्यात् ॥ अथ सकलाद्याः फलभेददेवदशोक्तरीत्या त्वस-
 द्दन्वरीत्या ॥ २२ ॥ अथ वर्णपरत्वेन भूमि विचारः ॥ प्रवेताभूमिस्तु विभाणां रक्ताशक्ता

भराभुजाम् ॥ विश्रं पीताद्य प्रहारां प्रयासामिभ्रं तरस्य च ॥ २३ ॥ याभूः कुशा
 ह्यार संयुताच दूर्वान्विताका प्रायुताः क्रमेण ॥ माधुर्य्य युक्ताच कथा विक्ता
 ल्लाकट्टी प्रशस्ता हिजवर्त्यतोवा ॥ २४ ॥ प्रागादिप्रवराभूतिः स्रग्दीनां धुभा
 क्रमात् ॥ सर्वदिक्प्रवराभूमिर्विप्रादीनां गृहादिदु ॥ २५ ॥ अथ प्राल्लज्जाम् ॥ प्र
 हस्यथिरिडकां चैव कृत्वा वै न व खंडिकाम् ॥ तेषु तेषु च भागेषु प्रवर्दि क्रम
 तोबुधः ॥ २६ ॥ तिरवे हकच तावर्णिएह साध्य पयस्ता ॥ मध्यान्तं प्रवर्ज्या
 प्रच्छेद्वाहारागपुद्य भेवच ॥ २७ ॥ क्षत्रियान्तिन्नगा प्रभुं वै प्रयादिव गणं लया
 ॥ प्रह्लाकल भित्ति क्त्वा प्रस्तावरादिभंतदा ॥ २८ ॥ पुंसी फलास्ता दीप्यगृही
 ला संभ्रं संश्रितान् ॥ प्राक्षिपेन्नव कोष्टे युस्वेष्ट कोष्टे विचक्षणाः ॥ २९ ॥ गृहप्र
 श्नाक्षरं प्रवर्दि यदि वृणादिभंतदा ॥ प्राल्लं तद्विप्रिजानीयात् हयाद्ये र्मभ्यगं वदेत्
 ॥ ३० ॥ वकारं मानुषं प्राल्लं पूर्वस्यां सार्द्धं हस्तके ॥ मृत्युदं मनुजो न्नत्र वासिनां

नान्यसंप्रदायः ॥ ३२ ॥ ककारेऽन्तो गार्ह आरिष्य कटिमात्रे भुवि स्थितम् ॥ राक्षो
 दंष्ट्रिस्त्रिजानीया दण्डादुत्तरतो मृतिः ॥ ३३ ॥ चकारे यमदिग्भूमौ मर्कटास्थि-
 स्थितं वदेत् ॥ कटिमात्रे गृहे प्रस्य मृत्युर्भवति नान्यथा ॥ ३३ ॥ तकारे राक्षसे
 ऽथ यस्य प्रालम्बे सार्द्धं हस्तके ॥ राक्षोदंष्ट्रं विजानीयाद् दण्डादुत्तरतो मृतिः ॥
 ३४ ॥ सकारे चैव चारुवां सार्द्धं हस्ते प्रिष्टो वदेत् ॥ प्रालम्बं मृत्युं प्रवासादि चत्वार-
 दे प्रालम्बतां व्रजेत् ॥ ३५ ॥ हकारे वायुदिग्भागे योरुवं प्रालम्बमा वदेत् ॥ भूमौ
 हृदि जिते दुःखं दुःखं भिजना प्रानम् ॥ ३६ ॥ प्रकारे द्विज प्रालम्बं च कोविध्या
 कटिमात्रके ॥ निर्धनत्वं धनात्मानाम ल्यायुः करमेव च ॥ ३७ ॥ प्रकारे-
 प्राप्सु धित्वा गो प्रालम्बं च्छभवं वदेत् ॥ सार्द्धं हस्तभित्ते भूको धननाशं प्रपु-
 ष्य च ॥ ३८ ॥ दकारे भानुवं मृगं मध्ये मत्स्य चित्ता भवद् ॥ हृन्मार्गे कुल्लभा-
 श्वाय निप्रालम्बं मृगं वदेत् ॥ ३९ ॥ अथ भुजप्रशोधनं हठी करणम् ॥ मध्ये गृहे

तस्मिन् जलनिर्गतं रवनि त्वा सं प्रवेत्त्यां शुभिराशुनस्य ॥ सं प्रवेत्त्याधिकतामुधेतः
 ५० ॥ समे समं न्यूनतरे सर्वो नोन कारये ह्यन्यदहं क
 दाचित् ॥ तद्गते मध्ये जल प्रवितं स्यान्निष्ठाशुखे प्रवर्जले ५५ प्रातः ॥ ४९ ॥ शु
 भं भवेच्छुभ्यति चेद्विदुः रवं भवेन्निवासे सततं ज्ञानात् ॥ स्थिरे जले वै स्थिरता
 विधेया स्याद्दक्षिणा वर्तं जलेन सौख्यम् ॥ ४२ ॥ क्षिप्रं जलं प्रोषयती ह रवातो
 मृदु हिंवा मेन जलेन कर्तुः ॥ रवाते यदि प्रमा लभते हिरण्यं तथै व काष्ठं च समृद्धि
 रत्न ॥ ४३ ॥ इत्थं हि इत्थाणि सु रवा निधने तात्रादि धानुर्गदितन हृदि ॥ विप्री
 लि का ददु रका हि चे त्स्या द्द स न्न तत्रा विल का र्थ्यं हानिः ॥ ४४ ॥ तुवाः स्थि च्ची
 राणि तथैव भस्वाद्यं हानि सार्थमिरा प्रदा स्युः ॥ दरादि का दुःख दारिद्र्य दान्त्री क
 र्था सरवाति ददाति रोगम् ॥ ४५ ॥ काष्ठं प्रदायं यदि रोगा दृद्धिः कालि भवे त्व
 र्थ रत्नं च केन ॥ लोहं कर्तुं र्मरां प्रदासं विचार्य वास्तुं प्रवदति न ह्यः ॥ ४६ ॥

तत्र विभ्राश्रवाला स्तराणि सवाजा ॥ ४७ ॥ वेष्ट्यासु वेष्टारज की सुवत्ता दृष्टा हि चे-
 तन्न सुवर्ण दृष्टिः ॥ अन्येऽपि चेन्मंगल वादिनःस्युर्भवन्ति तत्रैव सुमंगलानि ॥
 ४८ ॥ ददाति कश्चिद्भूविणं फलं चेत्तदा हिरण्यादि समृद्धयस्त्युः ॥ अथ सप्तभूमौ
 दिक्शेषधनम् ॥ दिक् शुद्धि रहितं गेहं प्राणदो वाजला प्रायः ॥ कुर्याद्भूनिं सृतिं त-
 स्मादादौ दिक्प्रोन्नतं चरेत् ॥ ४९ ॥ द्विप्रायामभितं सूत्रं द्विप्राप्रोतयोर्दृष्ट-
 म् ॥ कृत्वा यामे तृतीयेऽद्यो चिन्हं तत्कथं एणपि च ॥ ५० ॥ विस्तारार्द्धं तु को-
 णार्धक्षेत्रस्य मध्यसूत्रतः ॥ ग्रान्ते प्रंकुद्वये पाशौ कृत्वा द्योर्ध्वार्णाभिधम् ॥ ५१ ॥
 चिन्हमाकृष्य कोणार्धचिन्हे प्रंकुनिधापयेत् ॥ एवं कृते चतुःकोणाः स्वेष्टक्षेत्रे भ-
 वंति च ॥ ५२ ॥ अथ गृहसंज्ञायाः ॥ आयः क्रमाद्भूजो धूम्रः सिंहः श्वारवभः खरः ॥ रा-
 जो भ्यां क्षद्रमेक्षेया प्राक्षौर्गङ्गादि कर्म्मसु ॥ ५३ ॥ विस्तारश्रुतिने क्षेत्रे स्वायामेऽप्या-

॥ श्रीशिवो नमः ॥ शेषेभ्यज्जादिकाध्यायः प्रशास्तो विषयो ऽखिलः ॥ ५४ ॥ प्राचीतोच
रक्षि त्राश्चेते ॥ शेषेभ्यज्जादिकाध्यायः प्रशास्तो विषयो ऽखिलः ॥ ५४ ॥ प्राचीतोच
स्तिन्नधायाः भवन्ताद्याः क्रमतस्त्वमे ॥ सर्वदिक्षु भवेत्तत्रां सिंहप्रादक्षिणोक्ते
॥ ५५ ॥ आचार्यैर्गजे गजे धाम्ये पूर्वयोः शुभमालयोः ॥ भवेत्प्रत्यङ्मुखं वापि सिंहकु
ख्याद्बुद्धिमुखम् ॥ ५६ ॥ दक्षिणाभिमुखं नागे रोहप्राची मुखवदे ॥ दक्षिणास्तकं
या वदे का दशायवात्परम् ॥ ५७ ॥ चित्तमायादिकं तावन्नोचित्वन्यतरणिमा ला
ञ्जलिं दादि क्षुदाणोपा मंदिरं वा चतुर्मुखे ॥ ५८ ॥ आयादिकं तु नोचित्वन्यतरणिमा ला
दिकंतु न ॥ विशेषेण हि ॥ भवेत्प्रतीचीमुखं समाना मुद्बुद्धं श्रीमभुतांच सिंह ॥ दि-
शं ह्येवावदनं गजे तु भूद्रस्य यास्या न्नमामनंति ॥ ५९ ॥ अथ आधानं प्रयोजनम् ॥
हवं सिंहगतं चैव रवौ दे कर्षटकाद्योः ॥ द्विपः पुनः प्रयोक्तव्यो बापी कृपसास्तु च ॥ ६०
॥ मृगेन्द्रनासने दद्यात्प्रयनेष्टु गजं पुनः ॥ हवं योजनपानिषु च्छनादिषु पुनर्ध्वजम्
॥ ६१ ॥ अनन्तदेशं सुसर्वेशु ग्रहे चतुष्षीविनाम् ॥ पूज्यं नियोजयेत्केचिदस्थानं ले

हि च्छादि जातिषु ॥ ६२ ॥ त्वरो वे प्रयागहे प्रत्तो ध्वांस् प्रश्वापि कुटीषु च ॥ दृष सिंहर
 १ ध्वजश्वापि प्राग्नादधुरधे प्रमनि ॥ ६३ ॥ गजार्थे वा ध्वजाये वाणजानां सदनं शुभम्
 ॥ अथालयं ध्वजाये च खराये तपमेऽपि वा ॥ ६४ ॥ अमंत्रं शास्त्रं वस्त्राणां तपार्थे वा
 ध्वजंऽपि वा ॥ पादुको पानहो कार्ये सिंहारथेऽप्यथ वा ध्वजे ॥ ६५ ॥ उक्ता नाम व्य-
 नुक्तानां सर्वेषां च ध्वजः शुभः ॥ अथ यदा संनिधे भगवह ॥ नीचे प्रातु गते जीवे शुक्ले चन्द्रे
 ऽथ वारवो ॥ निमिर्मेतं सदनं सध्वदतिनिस्त्वत्तमाहुयात् ॥ ६६ ॥ अस्तदीर्घोऽन्नन-
 गस्तः प्राति दैवसिको वृधेः ॥ नास्ति दोषस्तदा चन्द्रे न भैत्रेऽज्ञस्य नीचता ॥ ६७ ॥
 यदा यत्नं ध्वजं अक्षेत्रे च गन्तव्ये च न्द्रमाः ॥ शलाका सप्तकं देयं कानि कादि क्रमेण
 त् ॥ ६८ ॥ वामदक्षिणभोगे तत्प्रशस्तं शान्ति कारकम् ॥ अग्रदृष्टेन दातव्यं यदी-
 क्षेच्छेत्प्रशान्तनः ॥ ६९ ॥ अस्तप्रचन्द्रस्य वास्तोश्च अग्रदृष्टेन प्रस्यते ॥ पुरस्त्रे
 रक्षणे वास्तोः खनिः स्थाहिधुमे मृतिः ॥ ७० ॥ अथ क्षेत्रफलप्रदानम् ॥ विस्तृतिप्रो मृदा

मंथि यामो द्वेयं क्षेत्रफलं चरेत् ॥ राशि कृतादिकं सर्वदं पत्यो रिवचिंतयेत् ॥ स्वेष्टमं वैक
 १२६ नाडी स्थं चिन्तयेत्सततं बुधः ॥ ७१ ॥ देशे ग्रामे पुरे गोहे प्रभो मित्रे ऽन्यथो विति ॥ ए-
 कनाडी प्रशस्ता स्याद्विरुद्धाभिन्वनां द्विका ॥ ७३ ॥ गोह गोहेष्टयो र्मे ज्यो र्वर्णाद्या-
 स्तु विवाहवत् ॥ गोहे श्रालयमेक्येतु मृत्युदं तद्गृहं स्मृतम् ॥ ७४ ॥ काष्ठ पाषाणयो-
 र्वाह्यमिष्टि कानां तदद्वैकम् ॥ मृत्तिका गर्भमात्रं च्चाहती प्राह पराशरः ॥ ७५ ॥ जयेष्ट-
 र्थग्रोधनम् ॥ त्रिभिस्त्रिभिर्वै प्रमनि कृत्तिकाद्याहृच्छेदयुनासि भजानि श्लोकः ॥ प्राज्ञो-
 र्थयं राजभयं च मृत्युः सुखं प्रवासी च नव प्रभेदाः ॥ ७६ ॥ त्रिकोणाभं धी धवापि षडष्ट-
 भं वा भौकं न शस्तं महत्त्वाभिर्नो प्रच ॥ द्वारक्षकं षडदि गार्क्षिकं च स्थितिं चर्चो ररूप-
 योहितस्स्यात् ॥ ७७ ॥ अथपिण्ड ज्ञानम् ॥ एकोनितेष्टर्षाहता द्विनिष्टयो १५२ स्तो-
 नितेष्टाय ह तेन्दु नागैः ॥ युक्ता धर्मे प्रचापि युता १७ विभक्ता भूयाप्यिभि २१६
 प्रशेष नितो ऽहि पिंडः ॥ ७८ ॥ अस्मार्थः ॥ यदेव न क्षत्रं व्यवहारनाम्ना विवाहो-

धिनाशुभदं स्यात् ॥ तदेवं स्वेष्टं भक्त्यभ्युपार्जाद्यो विषमभा-
 यर्हसितः स्यात् तस्य देहायः कल्पः ॥ तस्या भ्विस्ता राया मज्ञानम् यथानालोक-
 वस्य अनुपधानक्षत्रस्य रोहिण्या सहस्रे लापकः संभवति तस्येष्टभं रोहिणी कल्पि-
 तम् ॥ तत्संख्या ४ सको नितेष्टर्क्षिम् ३ अनेन द्वितीयोः २५२ हताः ४५६ दूष्यः
 सिंहः कल्पितः लतीयः ३ रूपो नित दूष्यः ॥ अनेनेन्दु नागाः ८१ गुणिताः २६२
 युताः ६१८ घनैश्च ९७ युताः ६३५५ पात्रिभिः २९६ विभक्तः शेषे २०३ द्वादमेव
 क्षेत्रफलम् ॥ गृहस्य दूष्याय नक्षत्रं भवम् ॥ पिएडम् ॥ अथ क्षेत्रफलादर्थे विस्तार-
 नम् ॥ भक्ते क्षेत्रफले स्वेष्ट विस्तारेण च दीर्घता ॥ स्वेष्ट दीर्घं तथा भक्ते विस्तारे वेष्ट-
 नः स्फुटः ॥ ७६ ॥ अथ कल्पितैर्धर्मैः अनेन भक्ते लब्धो विस्तारः ७ अथ कल्पित वि-
 स्तीः ७ ॥ अनेन भक्ते लब्धं दैर्घ्यम् २७ ॥ अथ कथादंष्ट्रज्ञानम् ॥ गृहं नक्षत्रं संख्या कै-
 नाग तष्टे व्ययो भवेत् ॥ भुवादिनाम वर्णैश्च युक्ते क्षेत्रफले तथा ॥ ८० ॥ त्रिभिः २६

तत्तुः प्राकाशे वे प्राक्कः न के नृपः क्रमात् ॥ इन्द्रभूषु प्रभावं प्रीयमाने चो यद्वादि
 ८८ सु ॥ ८१ ॥ अथ भुवादि गोह्वयगद्वारज्ञानम् ॥ अथ यत्तु प्रभं विप्रदं मन्दिरं द्वाष्टमभिधत् ॥
 प्रेषाति अक्षरणि स्युः सत्तमञ्चतुरक्षरम् ॥ ८२ ॥ अथ भुवादि ग्रहाणि ॥ अथ धन्य
 अथ नन्दस्वरं कृतं मनोरमम् ॥ सुसुखं दुर्भस्वि च्छीमं रिपुदं वितदं तथा ॥ ८३ ॥
 नाशनाक्रन्द विपुले विजयश्चेति षोडश ॥ अथ भुवादि गोह्वयज्ञानम् ॥ दिक्षु पूर्वादि त-
 प्रशाला भुवाभू १ द्वौ २ कृता ४ गजाः ८ शाला भुवाङ्कः संयोगः सेकीवे प्रमभुवादि
 कम् ॥ ८४ ॥ अथ क्षेत्रफलाद्याद्यानयनम् ॥ गोदं कदं स्वीदं सु ८ गुण ३ सु ८ नाग-
 ८ जलधि ४ व्यालं ८ हंसं ५ फलम् नागा ८ कं ७ कदं दिवा कए १२ सु ८ म २ ७
 तिथी १५ द्यौः ५ ७ खसूर्ये १२ ० रजित् अथ चारमथां प्रकं धनमृणं तारं ति-
 थिं चिंतये द्यौः चादु रिती ह प्रोष कपदे भागे हते तां त्रिकैः ॥ ८५ ॥ अथैतेषां प्रयोज-
 नम् ॥ अथायः ॥ विषमा यद्वा भुवाद्यैव समा यद्वा प्रयोगे कदुःखदः ॥ अथ चारः ॥ सूर्या

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
धुवम्	धुवम्	धुवम्	धुवम्	धुवम्	धुवम्	धुवम्	धुवम्	धुवम्	धुवम्	धुवम्	धुवम्	धुवम्	धुवम्	धुवम्	धुवम्

रवादाप्रयः सदा
वन्दिमयप्रदाः ॥
८६ ॥ अष्टिवन्दादि
त्रयं मेवे मयातलि

तयं हौ ॥ मूलाखयं धनुर्व्यवहरे भे प्रोष राशीषु ॥ ८७ ॥ गृहस्थागतनक्षत्रे तदि
राप्रयात्मकं यदि ॥ तन्मवांशावशात्तत्र ज्ञातव्यं सर्वदा गृहम् ॥ ८८ ॥ धनस्योपयोग्य
॥ धनाधिकं गृहभृद् हौ निर्द्देनं गृहणाधिकम् ॥ नक्षत्रस्य ॥ विपक्षस्य विपक्षाराप्रत्यरी
प्रति कूलदा ॥ निधनाख्यातारकातु सर्वदा निधनप्रदा ॥ ८९ ॥ द्दोदुःखं तृतीयार्द्ध
पंचमर्द्धे यशः क्षयम् ॥ आयुः क्षयं सप्तमर्द्धे कर्तृ भाद्यदि सप्तमम् ॥ ९० ॥ तिथि
प्रयोजनम् ॥ दृष्टि क्रमज्ञातवर्ज्जि येत् योगानामपि दुःखयोगाः प्रज्ज्याः ॥ आयुः प्रयोजनं
नं तावत्कालं गृहस्थितिः ॥ अथ वर्णपरत्वेन गृहशुद्धिः ॥ द्वात्रिंशदक्षाधिक विंशति पञ्च

[illegible]

ከሁሉም ሕግ ሕግ ሕግ ሕግ ሕግ

संभ्रममूर्तिगोष्ठाः ॥ वृषभ्य कन्या मकरोऽथ वैश्यः शूद्रा तुला शुभ्रपटा भवानी ॥ २७ ॥
 त्वाङ्गमुत्तंवात्सरा राशि सद्य चोदङ्गुत्तंस्वनिप राशि कन्याम् ॥ वैश्यार्कजानां यमदिङ्गु-
 रंदिष्टुद्गभिधानामथपथिभं स्यात् ॥ २८ ॥ अथ हारविचारः ॥ पूर्वार्थे ग्रानान्यान्मेयदक्षि-
 णानीयात् ॥ द्वाणानैकृत्यादीनिपथिमानिवायोपत् ॥ २९ ॥ अथ पूर्वार्थेदिष्टुद्गणं फलम्
 अनलभयं १ सुतजन्म २ धनता ३ नीरुद्र तोलाभः ४ कोधपराता भूतत्वं ५ क्रोर्ध्वं ७ चो-
 र्यं च ८ पूर्वार्थ ॥ १०० ॥ अथ सुतत्वं १ प्रेक्ष्यं २ नीचत्वं ३ अक्षयानासिः ४ ॥ ऐदं भूततप्त ५
 मधनं ७ सुतवीर्यं च ८ याम्येन ॥ १०१ ॥ सुतपीडा १ रिपुवृद्धिः २ धनमुतासि ३ स्मस्त-
 गुणसंपत् ४ ॥ धनसंपत् ५ वृषतिभयं ६ धननाशः ७ योग ८ द्रव्येव धनबंधो ॥ १०२ ॥ बंधो १
 रिपुवृद्धि २ र्द्धि सुतलाभः ३ समस्त गुणं संपत् ४ ॥ पुत्र धनासि भर्त्तुं ६ सुतेन दोष ७ स्त्रियो-
 नै प्रलम्भ ८ ॥ १०३ ॥ अथे ग्रान्यादि चतुर्णाम् फलानि ॥ बुः १ रं १ प्रोको २ धनासि ३ नृप पूजा ४ म-
 हद्वनम् ५ र्वी जन्म ६ पुत्रता ७ द्वाविः ८ अर्था द्वा फलानि च ॥ १०४ ॥ निधनः १ रं धनं २ नीतिः

३ पुत्रासि श्व ४ धनागमः ५ य प्रो लब्धि र्दृष्टो रभय ७ व्याधि र्भो । त श्व द्वाक्षरा ॥ १०५ ॥ न प्रह
 र्नी दृषां चैव लक्ष्मी प्राप्ति र्द्वागमः ॥ सोभायं धनलाभश्च दुःखं प्रो क्तश्च पश्चिमे ॥
 १०६ ॥ प्रात्रुद्विर्म्महदुःखं हानि स्सत्य त्सुखा गमः ॥ प्राप्ति दुःखं प्रात्रुवाधा चोत्तरस्यां दि
 श्चि क्रमात् ॥ १०७ ॥ अय संक्रांति परत्वेन महद्वार निश्चयः ॥ कुंभे र्को फाल्गुणे मासे श्रावणे कर्क
 सिहयोः ॥ पौषे न के महं कुर्यात्सर्व पश्चिम दिङ्मुखम् ॥ १०८ ॥ मार्गश्रुलाश्रिगे भात्री वैशाख
 शे वृष भाजयोः ॥ दक्षिणोदङ्मुखं प्रोष्ठं मंदिरं नेष्ट मन्यथा ॥ १०९ ॥ पूर्णिमातो ऽष्टमी या
 वत्पूर्वास्य वर्जयेद्गृहम् ॥ उत्तरास्यं न कुर्वीत नवम्यादि चतुर्दशी ॥ ११० ॥ इयमाया व्याहृ
 मी यावत्पश्चिमास्यं विवर्जयेत् ॥ नवम्या दौ दक्षिणास्यं यावच्छुक्लं चतुर्दशी ॥ १११ ॥ न
 वभागे महं कुर्यात्सं च भागं च दक्षिणो ॥ त्रिभागे सुतरे त्याज्यं प्रोष्ठं चारं विनिर्दिशेत् ॥ ११२
 तिथिं पंचगुणी कल्प न्मासास्तु यो र्युतम् ॥ शिव नेत्रे हेरे ज्ञागं प्रोष्ठां के फलमादिशेत् ॥
 ११३ ॥ एकेन लभते राज्यं द्वितीये सुखं संपदम् ॥ शून्ये च मरणं प्रोक्तं गृह्णारं मे विप्रो षतः ॥ ११४ ॥

॥ अथ गंगासंलग्नविचारः ॥ हिंस्रभावे स्थिते लग्ने शुभैर्कदां त्यगे भूहः ॥ प्रापत्य ॥ १८५ ॥ शु-
 १८५ ॥ अग्निद्वारं गंगं बुधः ॥ १८५ ॥ अथ गेहासीसमयोगः ॥ लग्ने गुरो रदौ पश्ये द्यूने चै भा-
 गवे सुखे ॥ मन्दे त्रिगै कृतं तिथे न्यदि रं प्रारदां प्रतम् ॥ १८६ ॥ ततः शुके सहोत्थे ५
 के पश्ये भोगे सुते गुरो ॥ सभा रक्षं गृहं तिथे द्वाय नानां प्रत ह्वयम् ॥ १८७ ॥ सूर्ये लाभ-
 गते शुके तनो नभसि चन्द्र जेभी हं वयं प्रता युयं निर्व्वितं नृचै रभवेत् ॥ १८८ ॥ चतु-
 र्धवाक्या तौ लाभे भोगे मन्दे च विविधिः ॥ अग्रति हायना युय भारक्षं मन्दिरं स्थितम्
 ॥ १८९ ॥ शुके स्त्रोक्षे तनो वापि जीवे पातालगे ५ धत्वा ॥ लाभगे वा प्रभौ स्त्रोक्षे संप्र-
 तं चिरं गृहम् ॥ १९० ॥ लग्नस्थे स्वर्गगे चन्द्रे केन्द्रे जीवे ५ धत्वा चै रः ॥ स्त्रोक्षे भिन्नां भा-
 गं हं लक्ष्म्या युक्तं स्थिरं भवेत् ॥ १९१ ॥ अथ नेष्टयोगः ॥ नीचांशे स्थे स्तथा रवे र्दे र्नि-
 नं मन्दिरं हितम् ॥ रवे र्दे र्को हि रवे द्यूने परांशे स्थो ह नभ्यगः ॥ १९२ ॥ कुप्यास्त्रिभ-
 पण्डीनं लग्ने शो ददि निर्दलः ॥ अथ नक्षत्रग्रहचरणदिशेययोगः ॥ पूर्वाषाढोत्तरा पुष्ये षष्ठे

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ जीवयुक्ते मुरे वीरे गोहो राज्या धर्मपुत्रदः ॥ ११३ ॥ विप्रारवादी ध-
 ३५५ निर्याधिप्रशतचित्रास्थिते भुगो ॥ अमु वारकृतं वेप्रमथनधान्यसुतप्रदम् ॥ ११४
 ॥ पूर्वार्थादा मया हस्तपुव्यमूलान्यगे कुजे ॥ कुजे हि निस्सितं गोहं भस्मसादीनना
 भवेत् ॥ ११५ ॥ उक्ता हस्ताधिनी चित्रारोहिणी मृगगे वुधे ॥ वुधेऽन्हि संदिशरत्नः
 सुखपुत्रार्थे सिद्धये ॥ ११६ ॥ अरणी स्वात्यनूराभाज्येष्टा प्रभा हृदये प्रानौ ॥ शनिवार
 कृतं वेप्रमरक्षो दूतयुतं भवेत् ॥ ११७ ॥ सेधे चैत्रे हृदये ज्येष्ठे आषाढे कर्कटे रवौ
 ॥ सिंहो आइ परदे तोलि नाधिने कार्तिकेऽलिनगे ॥ ११८ ॥ पौषे न के तथा माघे मक-
 रे कुंभगेऽपि च ॥ प्रकुप्यार्थं न्मदिरं विद्वान्माभ्यैः कौश्रिदिती रितम् ॥ ११९ ॥ हस्त-
 पक्षाद्यो मासा विज्ञेयास्तत्र सूरिभिः ॥ अथ मृदा रंभसमयध्यां मास परत्वेन ॥ श्लोको ध्या-
 न्यं मुनिप्रभुहृती द्रव्यहृदि विनाशो बुद्धभूत्यसति रथाधनं श्रीध्वजवन्हेर्भयं च ॥
 लक्ष्मी प्राप्तिर्भवति भवना रंभकर्तुः क्रमेणैवेना दूवे मुनिभिरिति फलं वास्तु प्र-

३०६
 ॥ १२२० ॥ त्यक्त्वा चतुर्दशैः षष्टी चतुर्थी मयसी ममान् ॥ नवमी च दशैः भी-
 त्योपदिष्टम् ॥ १२२१ ॥ दशैः प्रतिपत्कुर्वा चतुर्थी भनहारिणी ॥ अष्ट-
 मं गृह्णामो विषं च के ॥ १२२२ ॥ दशैः राजभयं क्षेपभूति दारविना प्रान-
 म्युच्चादनं चैव नवमी प्राज्ञघातिनी ॥ १२२३ ॥ दशैः राजभयं क्षेपभूति दारविना प्रान-
 म् ॥ १२२४ ॥ विषं च के ॥ १२२५ ॥ रणानलमप्यचौरमृत्युसञ्ज्ञकपंचकरहिते ॥ १२२६ ॥ सु-
 राधायां भनिद्या युगलोत्तरे ॥ हस्तत्रये च रोहिण्यां रेवत्यां गृहभारभेत् ॥ १२२७ ॥ सु-
 तिका मन्दिरं कुर्यात्पुनर्भेऽभिजि ति श्रवे ॥ १२२८ ॥ अथ भूमिसूक्तम् ॥ प्रद्योतनाभ्यं च-
 नगां कसूर्यन वेन्दुषः द्विष्टा चित्तानि भानि ॥ श्रोते महीने वगृहं विधेयं तडागा वा पीव-
 ननं न प्रस्तम् ॥ १२२९ ॥ अथ गृहार्थे वस्तुचक्रम् ॥ शीर्षे दृषे गोह विधा विनष्टा द्वाहोऽ-
 निमेषि श्वाधि निरय प्रादे ॥ भूतं द्युगैः पश्चिम पादजातैः स्थेय्यं गुरौः पृष्ठगतैर्द्विजा-
 तैः ॥ १२३० ॥ लाभो द्युगैर्दक्षिणां कृषिपातैः पुच्छैः निमिस्सप्त पतेर्विनाशः ॥ वा-
 मे द्युगैर्निर्द्वनता च कुक्षौ पीडा च पत्युर्मरुतगैश्च निमिष्ठ ॥ १२३१ ॥ अथैतदेव पुनः स्वर्ग-

संक्षिप्तये ॥ राविभास्वनेयानि शुभान्येकादशाद्यभात् ॥ इष्टशेषाण्यनियानि साभिजिह्व
 ३०० यवास्तु नि ॥ १२८ ॥ अथखलम ॥ अथोमुखैर्भैर्विदधीत रवातं शिलातयेवोर्द्धमुखैश्चपट-
 म् ॥ तिथ्यङ्मुखैर्द्वारिकपाटदानं गृहप्रवेशोऽमुदुभिर्दुर्वर्त्तः ॥ १२९ ॥ अथसोऽन्नाभेद्विशेषा-
 स्तोमुखैश्चकटिश्च ॥ दद्यात्कादित्रयंवेद्यां सिंहदिग्गणयेद्दृष्टे ॥ देवालयेचभीमादि तडा-
 गे मकरादिकम् ॥ १३० ॥ दर्शानतः सूर्याति कालसूर्यो विहाय स्थितं गणयेद्विदिष्टम् ॥
 शेषोऽस्य वास्तोर्मुखमथपुच्छं त्रयं परित्यज्य रवनेच्चतुर्थम् ॥ १३१ ॥ कन्यासिंहेवु-
 लायां सुजागपतिमुखं ग्राम्भुकोणेऽग्निखानं वायव्ये स्पातदास्यं त्वलिधनमकोर्द्धश-
 खानं वदन्ति ॥ कुंभे मीने च भेषे निर्ज्यति दिशि मुखं खानं वायव्यकोणे चाम्भेः कोणो मुखं
 वैदव्यमिधुनं गते कर्कटे रक्षारवातम् ॥ १३२ ॥ ऊर्ध्वभागत्रयं जज्ञाप्य भोगत्रयं तथा ॥
 मध्ये वीडशः शस्त्राणि रवननं तत्र शोभनम् ॥ १३३ ॥ अथशान्दमासाहारनिश्चयार्थं वास्तुभि-
 रे ॥ खाते भाद्रपदाहास्तुः क्रमान्मासत्रिषु त्रिषु ॥ प्राणाश्रादि रश्मिरो गोहाहारं शीतं दि-

कश्चिद्विस्मृतम् ॥ २३४ ॥ वास्तो प्रशीर्षेदिशो दीर्घपुच्छं समुत्तदिगा तम् ॥ अथवास्तिर्नामि
 २३५ ॥ कुंक्षो र्वानि प्रकुरेणाम् ॥ अथाविप्रति कान्मास्तु पुच्छात्मन दशां सत्यजेत् ॥ २३५ ॥ अ
 प्रोत्तयादश रवातं चामभाने च मध्यतः ॥ गेहास्ये मुहूर्तेऽत्रा कुन्त्वा सम दूरणाम् ॥
 २३६ ॥ चतुर्हस्त प्रमाणान्तरात्वा गते समं ततः ॥ कुम्भोदके प्रशेचयेयुः प्रातिपार पुर
 त्सरम् ॥ २३७ ॥ ततर्द्धशानं दिग्भागो साक्षते रत्न पंचकम् ॥ साज्यं कुम्भ स्थिरं कृत्वा वा
 स्तु पूजन पूर्वकम् ॥ कुम्भो परिशिला न्यासः कर्तव्य सादनन्तरम् ॥ २३७ ॥ अथ द्वार प्रा
 स्थानेः ॥ अष्टि वन्या भुजरा हस्त पुष्प शुक्ति मृगोद्युत्त ॥ रोहियां स्वाति भेत्ये च द्वार प्रास्था
 प्ररोपयेत् ॥ २३८ ॥ अथ द्वार चक्रम् ॥ सूर्य भास्वर भै प्रशीर्षे स्थितेऽथ च धन संपदः ॥ गेह
 स्यो द्वासनं तस्मादष्टभिः कोणा संस्थितैः ॥ २३९ ॥ प्राग्वा स्वष्ट भित्ते स्तस्माद्भनं सौरव्य
 भवेद्द्वे ॥ देव ल्यान्तु चिधि द्विष्टे मृत्यु र्देह प्रते भवेत् ॥ २४० ॥ चतुर्भिर्मध्य गौ स्तस्मा
 द्द्वय लाभः सुखं भवेत् ॥ एतच्चक्रं विचार्या दी द्वारं कुर्यात्स्वमहिम्ने ॥ २४१ ॥ कस्याचि

नन्ते विप्रोषः ॥ कृतः कराधि युगमन्त्रेन संतकश्चकारिभिः कारस्वसुदसूर्यभादिनज्ञानस्त-
तः क्रमात् ॥ धनागमं विनाशसौख्यं च धनं मृतिः क्षान्तिः शुभं न स त्पुनरवपदं क्रमात् कृतं वि-
चक्षणेः ॥ १४३ ॥ अथ गवाक्षनिर्ययः ॥ पूर्वदिनाय प्रस्तासु गवाक्षान्दिह कारयेत् ॥
अथ हारस्यतिथ्यग्नाननिर्ययः ॥ आधाने नवधामने द्वारमेकाग्रमानतः ॥ प्राच्यातुर्यक्ती-
ये वारुद्रकोणादिधीयते ॥ १४४ ॥ यास्यां षष्ठे चतुर्थे वा तुरीयेऽशेषपंचमे ॥ उरीच्याम्वा-
यनीच्यां वा सव्यमार्गेण धीमता ॥ १४५ ॥ अथ हारस्योच्चता ॥ गेहोच्चस्य चतुर्धा शोदिशु-
णे द्वार उच्छ्रयः ॥ अथ गेहोच्चता ॥ विस्तारोऽष्टशेषभागश्चतुर्भिर्मर्याः करैर्युतः ॥ गेहो-
च्चं तन्मिमतं क्षेत्रं न्यूनाधिक्यमसत्सु तम् ॥ १४६ ॥ विस्तारतुल्यप्रमितिं गृहस्य चोच्छ्रय-
ताभ्यं नारभू प्रदेष्टात् ॥ गृहोपरि स्थस्य गृहस्य तद्विस्तारहस्तोच्छ्रयता विधेया ॥
१४७ ॥ अथ हारस्ये वेधविचारः ॥ कोणाभागी भूमिद्वारकर्दमस्तं न भू रूहम् ॥ देवास्तप प्रक-
पाणां वेधो द्वारेऽथ सन्मुनि ॥ १४८ ॥ अथ वेधपवादः ॥ गेहोच्चद्विगुणाधिक्ये प्राग्ग्रेमसि

॥ सति ॥ नैव कोणादि को वेधो भिति मार्गान्तरेऽपि च ॥ १४८ ॥ कलम् ॥ कर्षेनाप्रमारे
 भवति विनाशो देवता विद्मे ॥ स्तम्भेन स्त्री दोषः कुलनाशे ब्रह्मणोऽभिमुखे ॥ १४९ ॥
 उन्मादस्त्वय मुहुर्दितेऽप्यपि हिते स्वयं कुलविनाशः ॥ मानाधिक्येन भयं व्यसनदेभि-
 तिर्न्योचे ॥ १५० ॥ द्वारद्वारस्यो परियत्नं न शिवाय शोकदाय च ॥ अग्निस्त्रिभुवः सुभ्र-
 यं कुब्जाः कुलनाशनाय भवति ॥ १५१ ॥ पीडाकस्मति विततं अग्निं न्यूनं भवेदभवाय
 ॥ वाहे विततप्रवाशो दिव्यास्ये द्रस्युभिः पीडा ॥ १५२ ॥ दृष्टानादिवु कोणेषु संस्थि-
 ता वाह्यतो गृहस्थेताः ॥ चरको विदारिनामाय पूतना पापराक्षसी चेति ॥ १५३ ॥ प्रजि-
 ता भूषणानि दादे व्योमस्त्यमांसाश्च वादिभिः ॥ अन्यदा विप्रकारिण्यो वासिनातु विना-
 वत्तिम् ॥ १५४ ॥ अष्टांगणज्ञानम् ॥ अष्टांगणायाम विस्तारवैकी कृत्य गृहे भोजनम् ॥ अ-
 गी १ विचक्षुरागोऽभिरुः ३ कलहो ४ दान ५ चान्द्रपुः ६ ॥ १५५ ॥ लीव प्रयोरो ७ धनी
 ८ चेति क्रमान्नवफलं तिदि ॥ अथ हव विचारः ॥ उद्गगादिलवसिष्ठ विप्रो दीना इक्षिणो नै-

३१९
श्री व ॥ २५६ ॥ अथ षोडशमद्व निर्माणम् ॥ प्राचीतः क्रमतस्त्वनवाकः शय्या च प्रस्तम्भः ॥
भोजनस्या न्नभांडार देवता नां महं स्मृतम् ॥ २५७ ॥ मधनाज्यपुरीषाख्य विद्याभ्या-
सं ध्रुवांक्रमान् ॥ रतिभेषज्ययोः सर्वथास्तन्मध्यगग्रहाः ॥ २५८ ॥ अल्पत्वे वा भु-
वोऽप्रक्तैरनादीश्च ग्रहान्बुधः ॥ प्रक्ते भुवोऽनुसारेण प्रकुर्वीत यथारुचि ॥ २५९ ॥ उ-
त्तरालवटाद्यं तु स्थानं तुल्लादि कंततः ॥ क्षालनं पिल पादानां गेहा दाक्षिणातस्सदा ॥
२६० ॥ अथ चित्रारम्भः ॥ हस्तत्रयेऽनुराधान्त्ये सरोऽष्टिवन्यां प्रवत्रये ॥ पुनर्भेरौहिणी
पुष्यपूर्वायादाभिधेतथा ॥ २६१ ॥ नंदयांच ध्रुवर्ध्वरे प्रकुर्व्याद्भ्राज वेदमनि ॥ चित्रं
नानाविधं रस्यं खिलमी रामाप्रणं विना ॥ २६२ ॥ अथ गेहोपस्कणानुल्ही कल्पम् ॥ पूवाद्भि-
रौहिणीपुष्यउत्तरा त्रितये द्विमे ॥ स्थितिर्मज्ञानसस्येयागेहोपस्कणोत्सह ॥ २६३ ॥
सूर्याक्षाद्रसमैर्वधी नृपसुरवं वेद दर्श संख्यो मुखवम् ॥ तादात्राय मितारमाप्तिरुभयोश्चु-
ल्हसो महाप्राखयोः ॥ मध्ये पंच भवेद्गृहे प्रअणिनाप्रोऽग्नि के चाख्यस्तप्तं स्थात्सतत

३१९

विचार्यमतिमान्नुल्ही गृहे स्थापयेत् ॥ २६४ ॥ अथ गृहसमीप कलम् ॥ मन्त्रिचालयेत् ॥

धनार्थो धूर्तगृहे सुत वधः समीपस्थे ॥ उद्देशे देवकुले चतुःपथे भवति चाकीर्तिः ॥

२६५ ॥ चैत्यं भयं गृहं कृतं चल्मीके स्वकुले विपदम् ॥ गतिं यातुं पिपासा कुम्भीकारे

धनविनाशः ॥ २६६ ॥ अथ गृहं गणेशमवस्थाः ॥ पुंनागभ्यं पकोऽग्रोकः पियली दाहिमीष्ट

मी ॥ चकुलात्तिलको द्राक्षापि चुमंदोऽमराजपाः ॥ २६७ ॥ नारिकेलं तथा ज्ञाती पाट-

लागेद मक्षिका ॥ मक्षिका दूरा वंधकाः पनसः सरसी रुहम् ॥ २६८ ॥ एते गृहं गच्छे-

क्षाः आरोप्या मंगल प्रदाः ॥ अथ गृहं प्रवेशात् नतिदिशं वक्षारोपणम् ॥ न्ययोधं रोपयेत्मा च्या-

गे हाद्याभ्यामुदं चरम् ॥ उदक् स्त्र चंच कर्कशुः प्रतीच्यां कुंच राप्रानम् ॥ २६९ ॥ अथ

गृहं गणेशमवस्थाः ॥ मातुलुंगं रुहीरं भा हरिद्रा च वमहुम्भः ॥ एते हस्तप्रदाने हे संजा-

नारोपिता अपि ॥ २७० ॥ अथ केषां चिन्मते सर्वेऽपि वक्षा न्यमणे निविष्टाः ॥ केचिद् चतुर्न चारोप्यो-

निजवास गृहं गणेशो ॥ कोऽपि वक्षो यतः स्वर्णं हुमोपि न शुभो यतो ॥ २७१ ॥ अथ गृहं प्रवेश-

प्राकारदीनां निर्मोणे स्रज साधनम् ॥ प्राकारपुत्तन ग्रामनिर्मितो स्रज साधनम् ॥ प्रप्रास्तः
 स्याच्छुभे कालेने हारस्मोक्तभादिषु ॥ १७१ ॥ अथ देवालये मठाधारम् ॥ गृहारम्भोक्त
 नस्त्रैर्मठं कुर्यात्तु साधिवैः ॥ सर्वदेवालयन्ते स्तु पुनर्मन्त्रवराणान्वितैः ॥ १७२ ॥
 अथ जैन्यालय प्रपादरीणा मारम्भः ॥ पूर्वादिभरणीधिहिरो हिरयां च स्थिरो हये ॥ शुभाहेजो
 न्य गेहस्य प्रपादयोः कतिष्ठुभा ॥ १७३ ॥ अथ कृपलवनन प्रदेशः ॥ ऐश्वर्यं पुन्रहानि-
 ष्य रत्नीनाम्नो निधनं भवेत् ॥ संपच्छुभयं सौरव्यपुष्टिः प्रागादितः क्रमात् ॥ १७४ ॥
 कौपेकाने मध्य देशे धनहानिर्हिवास्तुनि ॥ अथ जलाशयारम्भः ॥ अनुशया मया हस्तेरे-
 वनीयूजरात्रये ॥ रोहिणी युगलि पुष्ये धनिया द्वितये तथा ॥ १७५ ॥ पूर्वावाढादि
 धेयेन च शुभे नासि शुभे दिने ॥ वापी कृप तद्वारा ना मारम्भः काचित्ती क्षुधेः ॥ १७६ ॥
 अथ कृपारम्भे वार फलम् ॥ रवि वारे जलं नास्ति सोमे पूर्णजलरत्नवेत् ॥ वालुका भोगे वारे दु-
 वृधे वहु जलं भवेत् ॥ १७७ ॥ गुरौ च मधुरं लोपं ह्युक्ते क्षारं प्रजायते ॥ शनौ च रेजलं ना- ३३३

संक्षिप्ति कीर्तितं वारजं फलम् ॥ १७८ ॥ रोहिण्यस्य भिन्ने मभात्सूर्य्यभाच्च राहो ऋषाङ्ग राय
ते कूप चक्रम् ॥ यस्मिन्काले सर्वमेतत्प्रशस्तं तस्मिन्मौ निर्जले सज्जलं त्वम् ॥
१७९ ॥ अथ रोहिण्यश्चात्कूपचक्रम् ॥ रोहिण्यादिलिखेच्चक्रं यावन्निधति चंद्रमाः ॥ एकं म

थे द्वयं पूर्वततयं चानि कोणके ॥ १८० ॥ याम्येव वाणसंज्ञं स्थान्ने ऋत्ये रस येव च
॥ पश्चिमे शुभलं वायो युगमं च त्रय मुन्ने ॥ १८१ ॥ ईशाने त्रिणि हातव्यं ब्रह्म ऋषाङ्ग राहो

क्रमात् ॥ त्र्यंशं प्रीतिं जलं स्वादु पूर्वं भूः सो च खंडजम् ॥ १८२ ॥ आग्ने यो सज्जलं प्रीतिं
यास्ये च निर्जले भवेत् ॥ नैऋत्ये सज्जलं प्रीतिं पश्चिमे क्षारमेव च ॥ १८३ ॥ वायव्ये चै

व प्राणायामे मुन्ने च तत्सुद्वत् ॥ ईशाने कादुकं वारिकूप चक्रं विचारयेत् ॥ १८४ ॥ अथ भौ-
मभात्कूपचक्रम् ॥ प्राग्निश्रेयुः त्रिधा धिगुणाद्वयः वयजलं च सुस्तिष्ठिरभंग दम ॥ रु-
जमस्तिष्ठि यशोऽर्थं प्रसिद्धिदं जलविभंग करः कुंजभादिति ॥ १८५ ॥ अथ सूर्य्यभात्कूपच-

क्रमं ॥ सज्जलं खंडजले सज्जला जले शुभजलं लवणं च त्रिलो जलम् ॥ लवणं शुभक-

संस्मिन्मन्त्रितम् ॥ चतुर्भिस्तु हरेश्चाङ्गं भेदां के फलमादिशेत् ॥ १८१ ॥ सदेजान्मर्यादं विद्या-
 ३३६ तद्विदे पातालमेव च ॥ त्रिभिः क्षारं विजानीयाच्च न्ये प्रान्यं विनिर्दिशेत् ॥ १८२ ॥ अथ
 नेवारिचक्रम् ॥ निवारिहर्वतस्त्रीणित्रीणिच सव्यतः ॥ मध्ये च त्र्यारिषिस्त्राणि राहुर्वाङ्ग
 एयेधुधः ॥ १८३ ॥ मध्ये पूर्वजलं सौरव्यस्तरे धनवर्द्धनम् ॥ धाम्य नैऋत्ययोर्दुर्द्वयं अप-
 मरनौ परे कक्षम् ॥ १८४ ॥ अथेयकारमाः शुभालेपश्च ॥ उत्तराश्विश्च भवे पुष्ये ज्येष्ठा न्ये रो-
 हिणी कोरे ॥ स्थिरेऽङ्के गुरो मन्त्रे द्वाद्विकारं भूरा चरेत् ॥ १८५ ॥ तथा गोहे सुधास्त्रे
 पः द्वाद्विकारं भूरा द्वाद्वि ॥ १८६ ॥ अथ द्वाद्विकाचक्रम् ॥ द्वाद्विचक्रं प्रवक्ष्यामि भौषधं नृपक्यात्
 प्रयत्नतः ॥ पंचत्रीणि त्रिकं पंच सप्त पंचावन्ती जभात् ॥ १८७ ॥ शुभाशुभं क्रमेणो
 व द्वाद्विका स्थापने मतम् ॥ अथाग्निदानम् ॥ सप्त पञ्च मुनिर्देद पंचभिः प्रोक्तं जामरु-
 जभीति सुखादिः ॥ स्थापनेऽन्विकिल द्वाद्विका गृहे भौषधमादिति बुधाः प्रवदन्ति ॥
 १८८ ॥ अथ तद्भागचक्रम् ॥ सूर्यभा चन्द्रभंया वरुणादे त्सर्वदाबुधः ॥ दिक्षु दिक्षु द्वाद्वं ३९६

संवि- न्यस्य मध्ये पच निया जयत् ॥ १२४ ॥ पट्ट च वारवाह च फल तस्य वचनम् ॥ इव स्यात्

३१७

वारि शोष स्यात् प्राप्ते यामां सलिल वद् ॥ २०० ॥ दहिणस्यां वारि नाशो नैर्ऋत्यां मृत

ज्जलम् ॥ पश्चिमायां जलं स्वादु वायव्या वारि शोषणं ॥ २०१ ॥ उत्तरस्यां स्थितं तो-

य मे शान्या कुस्मिन् जलम् ॥ मध्ये पूर्णं जलं दुग्धं वारि चामृत मेव च ॥ २०२ ॥ तडा-

मेयु सर्वे शुचक्रमे तद्दि चारयेत् ॥ द्विषेदि कुल संभूत सारम् कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ

समाहेया प्रमेयं विशति प्रशुभा ॥ २०३ ॥ द्वाविन्धी संग्रह शिरो मणौ वारत्तु कुलं

नाशु विशतिः शुभा ॥ २०४ ॥ ग्रह ग्रह प्रवेश प्रकरणम् ॥ प्रवेशे नव गेहस्य कुर्व्या न्योम्या-

यने नृपः ॥ ग्रहयोगो दि त म्नासेऽपि कृत्वा प्राग्वात्तु हजनम् ॥ १ ॥ माघ फाल्गुण वैशाख

ख ज्येष्ठा शस्ता नवे गृहे ॥ प्रवेशो आचरणे भार्गो कार्तिकेऽपि प्रशस्यते ॥ २ ॥ पुनर्विनि-

र्मिने जीर्ण गृहे युक्त स्तथैव हि ॥ प्रवेश प्रज्ञान गेहस्य प्रस्तादि प्रवि चारणात् ॥ ३ ॥

शुक्ले चास्तु तथाप्यरेवत्यां रोहिणी द्वये ॥ चित्रायां प्रवि शे गृहे द्वार भेतु वि शेषतः ॥

॥

४ ॥ हारं भेति ॥ यस्मिन्नाहे प्रवेशः कर्तुं शक्यते तस्य यस्यान्दिशि पुरातनं दिङ्मन्त्रैः

पूर्वादिषु चतुर्दिक्षु सप्त सप्ता नल क्षीत दत्ताष्टौक्तैः सप्तध्रुव नक्षत्रैः प्रवेशं नं स्यात् ॥

यदि गृहं मंदिरं ताह गृहं रक्तं धैः स्यात्स प्रवेशो न सर्वे रिति वक्ष्यते ॥ अर्कानिला-

यदिति दत्तं विष्णु नक्षत्रं प्रविष्टं नव मंदिरं यत् ॥ अथ नया तत्परा हस्त यातं शेषेष्टु धि-

क्षेष्टु च सप्तदं स्यात् ॥ ५ ॥ अथ जीर्णं गृहं प्रवेशः ॥ धनिष्ठा हितये पुष्ये अश्लेषे रोहिणी दू-

॥ चित्रा स्वात्या नृ राधा न्ये प्रवेशो जीर्णं मन्दिरे ॥ ६ ॥ अथ प्रवेशे अन्य नक्षत्र फलम् ॥ अथ रा-

दित्रये ऽश्विन्यां स्वाती पुष्ये तथा कोरे ॥ पुनर्वसुः पुनर्व्याजो राजा नाशो प्राताभिधे ॥

७ ॥ पूर्वात्रये भरण्यां च विशाखायां मघाक्षयः ॥ ज्येष्ठा श्लेषा रव्य मूलार्द्र कुमारे ना-

श माजुयात् ॥ ८ ॥ कृत्तिका या नन्दे देहे प्रवेशे नव मन्दिरे ॥ तथा यात्रा निवृत्तौ च भूयानां

फलमीदृशम् ॥ ९ ॥ अथ वार फलम् ॥ गुरु शुक्र बुध राव्ये शु वासरे शु सु राव्ये दम् ॥ प्रवेशे

तु भर्तौ स्थैर्यं किञ्चि चौर भयम् भवेत् ॥ १० ॥ वशिष्ठः ॥ नव प्रवेशे ह्यथ काल शुद्धिर्न द्वन्द्व

३७

॥ इत्यत्राभाः फादः ॥ चतः ॥ अथशः प्रचः ॥ ॥ दनसुलमवास्तवेन पूर्ववदेव कुप्यति ॥
 ११ ॥ नित्ययाने गृहे जीर्णे प्राशने परिधानके ॥ वधूप्रवेशे मांगल्ये नमोऽथ गुरुशुक्र-
 योः ॥ १२ ॥ अथप्रवेशे त्याज्यः ॥ चैत्रोमासः कुजाकोचः अह्नादरथातिथिस्त्वमा ॥ दुष्टच-
 न्नादग्नेवज्ज्वानिवगेहप्रवेशे ॥ १३ ॥ अथलग्नवलम् ॥ चैत्रमेचरांशे च प्रवेशे न शु-
 भानहः ॥ शुभश्रेण द्युते चोपचयस्थेऽपि चरेऽपि सत् ॥ १४ ॥ शुभैः केंद्रत्रिकोणाद्यदि
 गेरायन्निपद्येः ॥ पौषेऽशुद्धेऽद्यमेतुर्थ्ये राविर्जन्माष्टमेगके ॥ १५ ॥ शुभे मकूटके मे-
 हे विधायाद्ये हि जन्मनः ॥ जलपूर्णाघटं दीपं वेदयोद्यैर्गृहं विशेत् ॥ १६ ॥ रश्मास्तुजा-
 दनादायात्तंच स्वर्के स्थिते क्रमात् ॥ पूर्वाश्रादिभुरवं गेहं विशेद्वाभो भवेद्यदि ॥ १७ ॥
 अष्टमपंचमद्वितीये कादशस्थानिभ्यः पंचसु स्थानिषु स्थिते रवौ सति प्राग्वदनादिभिर-
 प्रवेशे कर्तव्यो मोरविर्द्वयः ॥ यथा ॥ यस्मिन् लग्ने गृहं प्रवेशः कर्तुं विद्यते तस्मादष्टमं
 तत्स्थानं ततः पंचसु स्थाने क्वर्के सति पूर्वाभिमुखे गृहे प्रवेशः कर्तुः ताम्रसूच्यः स्यात् ॥

५२ तथा लग्नात्पंचमस्थानं ततः पंचसु स्थानेषु रवौ स्थिते दक्षिणाभिमुखे वा मोऽर्कः ॥
 ५३ तथैव लग्नाद्यद्वितीयस्थानं ततः पंचसु स्थानेषु रवौ स्थितः पश्चिमाभिमुखे वा मोऽर्कः
 तथैव लग्नाद्यतृतीयास्थानं ततः पंचसु स्थानेषु सूर्यो स्थिते उत्तराभिमुखे यदे प्रवे-
 श्य कर्तुं चाग्निः सूर्यः ॥ अथ गृहद्वारवर्णानि धर्मः ॥ प्रवेशे प्राङ्मुखे पूर्णानि द्वायाभ्यां मुखे
 शुभा ॥ अद्यापत्यङ्गु रवोऽधो दङ्गु रवे गेहे तथा जया ॥ १८ ॥ अथ गेहे तत्प्रवेशे च विशेषः ॥
 वेप्रसृत्वं दिवा शतं प्रवेशे रजनी क्वचित् ॥ सती नृहर्कवले यात्रा हादश्यां नभुगो नि-
 श्चि ॥ १९ ॥ अथ गृहप्रवेशे कलशचक्रम् ॥ अर्कभाङ्गमिति १ चक्रे च निहाहः प्रवेशने ॥ उहा-
 सोऽधिभित्तैः ४ प्राच्यां याभ्यां लाभोऽधि ८ संभितैः ॥ २० ॥ पश्चिमेऽधिभित्तैः १३ स्वर्क्षीर-
 द्मंद भित्तैः १७ कलिः ॥ नाशो युगमिति २१ र्मध्योऽधः कोटि चि २४ त्रिभैः २७ शुभम् २१ ॥
 ण्यतदेव स एवति ॥ भान्यदोऽसूर्यभात्यया द्द्वविंशच्चैव भानि पदद ॥ कुम्भचक्रे च विष्टा
 निगेहं प्रविशतां नृणां ॥ २२ ॥ अथ प्रवेशविधिः ॥ यद्योक्तसमये प्राच्या विताने स्तोत्रोच्यु-

तम् ॥ वेदमंगलनिर्घोषे स्संप्रविष्टम् गृहं शुभम् ॥ २३ ॥ शिखितं गणतन्त्रम् ॥
 धिविजृम्भुरोधसम् ॥ पूजयेच्च यथा देवं हेम रत्ने स्तथां वृष्टेः ॥ २४ ॥ कृत्वा गतो द्वि-
 जवान्मथ पूर्णकुंभं दध्यक्षताम् दत्तमुष्य फलोपप्रोभम् ॥ दत्त्वा हिरण्यवस-
 नान्नि तथा द्विजेभ्यो मंगल्य प्रान्ते नित्यं स्वर्गं देवि श्रेष्ठ ॥ २५ ॥ गेहोक्त होम-
 विधिना बालि कर्म कुर्यात् प्राणद वास्तु श्रमने च विधिर्युजक्तः ॥ सत्तर्पयेद्विज-
 वान्मथ मध्यमो ज्यैः शुक्लान् वरः स्वभवनं प्राविशे त्व रूपम् ॥ २६ ॥ अथ प्रवेशे लि-
 विधः ॥ अपूर्वसंज्ञः प्रथम प्रवेशो यात्रा वशानेन स पूर्वसंज्ञः ॥ दत्त्वाभयस्त्वमि-
 भयो हि जातस्त्वेवं प्रवेशस्त्रिविधः प्रदिष्टः ॥ २७ ॥ आत्मोदितभैर्भूयैः कार्यो पूर्वप्रवे-
 शकः ॥ पूर्वा पूर्वो भविनी मूलश्रवो यैतैः कार्स्थितैः ॥ २८ ॥ स पूर्वस्त्वज्ञे रात्रिनाऽनु-
 राधारेवती मृगे ॥ रोहिण्यां कथितः प्राज्ञैः प्रवेशस्त्रिविधो गृह ॥ २९ ॥ अथ वास्तु पूजादि-
 कं विना प्रवेशे निषेधः ॥ यद्वास्तु पूजा रहितं त्वदज्ञे चलिं त्वनाच्छन्नं गृहं विरूपं ॥ कथादही-

समि नं नविश्रोद्य नस्तत्सर्वा पदालापमेव तत्स्थानम् ॥ ३० ॥ अथ चातुःपञ्चनम् ॥ अथान्य-
३५ वे मृगो मूलोऽनुराधान्त्ये करत्रये ॥ पुनर्भेऽभुनोः पुव्ये रोहिण्या मध्वमे तथा ॥ ३१

॥ कास्तो रभ्यर्च्चनं शस्तं वलिदानपुरस्सरम् ॥ अथ नवदुर्गप्रवेष्टः ॥ रोहिणी रेवती ह-
स्तत्रये पुव्ये श्रवत्रये ॥ अनुराधोत्तरे नव्ये पुरे दुर्गे प्रवेष्टानम् ॥ ३२ ॥ अथ जितस्य प्रजोः
पुरे प्रवेष्टः ॥ विषाखा कान्तिका हस्ती तारा षाढेभिधे तथा ॥ श्रानो ज्यार्क्के जितस्थारे वि-
जयी नयारं विश्रोत् ॥ ३३ ॥ द्विवेदि कुल संभूत सरयू कृत संग्रहे ॥ द्विरो मरौ सभा-
होद्या प्रभेयं चैक विंशतिः ॥ ३४ ॥ क्षति श्री संग्रह द्विरो मरौ गृह प्रवेश कथनं ना-
प्रसक विंशतिः प्रभा ३५ ॥ अथ देवालयप्रतिष्ठाप्रकरणम् आश्रा दामरयोः काय्या प्रतिष्ठा
चोत्तरायणे ॥ तथा जला शंखा रामोत्सर्ग प्रणस्तो विचैत्रके ॥ १ ॥ चैत्रो मासः प्रति
ष्टायां चतुर्धैः केचिच्च दितीरितः ॥ शुक्ल पक्षे अनुराधान्त्ये पुनर्भे रोहिणी मृगे ॥ ३ ॥ अ-
वत्रयो तारा हस्तत्रये पुव्ये विधीं पुरी ॥ स्ववाक्ष्णानक्षत्रनिधिषु स्थापनं स्मृतम् ॥ ३

१॥ विस्वादि देव सुराद्यानां विलम्बे शुभ लोकेते ॥ अथ देवता विशेषेण नक्षत्र विशेषः ॥ चि-
 ३ स्तोः पूर्वोदिते भेत्ता नुराधा शिवयोः शिवम् ॥ ऐहिकं भवतो व्येष्टा पुष्ट्ये चाभिजि-
 दीरितम् ॥ ४॥ विधिवासवयोस्तस्य क्यतिष्ठापनमायुर्केः ॥ ५॥ भाजोर्हस्तेऽनु-
 राधायां कुबेरस्तन्द्योरपि ॥ मूलेऽनुगदि कानां च भवतो सुगतस्य हि ॥ ६॥ देवत्यां ध-
 र्महेतव फणि प्रथम राक्षसान् ॥ यक्ष भूता सुराणाञ्च वारदेव्याः स्थापनं स्मृतम् ॥ ७
 व्यासागुरुयश्चाणाञ्च वाल्मीकेः पुष्ट्येतथा ॥ यत्र सप्तर्षयो यान्ति धिहिते वा अत्र तत्र
 च ॥ ८॥ सर्वेया भेवरो हिरण्या मुत्तरा जितये तथा ॥ धनिष्ठाया हि गोपानां प्रतिष्ठाप-
 नमौरितम् ॥ ९॥ अथ देवविशेषे लयविशेषः ॥ सिंह सूर्यः शिवो हनुमत् स्याद्वरिष्ठा-
 या हरिः ॥ कुम्भे वेधाश्चरेऽनुदाः द्यौर्देव्यस्त्रिपुरेऽरिवलाः ॥ १०॥ गणा परिचूढरक्षो-
 यक्ष भूता सुराणां प्रथम फणि सरस्वत्यादि कानां च पीप्सो ॥ भवसि सुगत नाभ्योक्ता-
 सर्वे लोकपानां निगदित मरिवलानां स्थापनं हिस्त्रिपुरे ॥ ११॥ अथ चार फलम् ॥ प्रति-

न ह्येता तथा क्षेमा वन्ति दा वरदा ददा ॥ ज्ञानन्द दायिनी कल्प स्था धिन्य कर्तिरिवा सो
 २४ ॥ १२ ॥ अथ देव विशेषेण माकमनम् ॥ याम्या यने ऽपि चाराह मात भेरव वा ममान् ॥ महि
 पासु हन्त्री च नृसिंहं स्थापयेद्बुधः ॥ १३ ॥ विशेषः ॥ आवरणे स्थापयेद्विंशमा भिदने
 जगदं विकास् ॥ मार्ग प्रीये द्दहि वैव यौये सर्वास्तु केचन ॥ १४ ॥ अथ प्रतिष्ठायां लघु
 लम् ॥ केन्द्र कोण द्विजा मस्थेः शुभैः पापे ध्व सेन्नुभिः ॥ आचारिणोऽसुते प्रवर्त्य प्रदा
 देवाः प्रतिष्ठिताः ॥ १५ ॥ द्वि वेदि कुल संभूत सरयू कृत संग्रहे ॥ शिरो सरणो समाहे
 वा प्रमेयं च द्वि विं प्रतिः ॥ १६ ॥ द्वि श्री संग्रह शिरो मणौ प्रतिष्ठा कथनं नाम
 द्वा विं प्रतिः प्रभा २२ ॥ अथ मिश्र प्रकारम् ॥ तत्रादावंग सुखा फलम् ॥ १ ॥ दृष्टी
 लं वक्ष्ये दक्षिणांग समुद्रवं ॥ पुरुषाणाम्नु तद्देयं चाम भागे मयी दृष्टम् ॥ २ ॥ दृष्टी
 लाभ शिखरस्थाने धन लाभो ललाटके ॥ प्रियाङ्गिः स्याद्बुवोर्म्ये च्चुवोर्म्ये सुखा
 वहा ॥ ३ ॥ शुभा चार्ता शुभो कर्णे लोचने प्रिय दर्शनम् ॥ हर्कोणा भागयोर्हस्मीर

धः पश्मरिण सज्जार्थः ॥ ३ ॥ गणद्वेष्टे किन्वासाँख्यं नाष्टायां गंधजं सुखम् ॥ उन्नरो-
 हेतुवान्वाद ध्रुवचनं चाधरे किन्वासाः ॥ ४ ॥ हनुदेशे भयञ्ज्येयं सुरले मधुरभोजनम् ॥ भू-
 वाहिः कंठदेशे स्यात्प्रीवायां रिपुजं भयम् ॥ ५ ॥ क्षीयः पराजयः दृष्टे स्तन्ये सिन्धु-
 सभायाम् ॥ भिषासिर्दंष्ट्रदेशे स्वान्मध्यो वाहोर्दनायाम् ॥ ६ ॥ दक्षिणाग्निः कोविद्याहि-
 जयवक्षसि भूवम् ॥ प्रमोदं च वलं कटांषा पृथे प्रीति मनुक्षमम् ॥ ७ ॥ स्थानात्प्रवल-
 नं नाभौ कोष्ठाद्विष्टाब्जके ॥ कोष्ठाग्निरुदरे नाभ्यां जघने पति सं गमः ॥ ८ ॥ स्फिरगु-
 दं वाहनाहिं स्यात्तुलिंगे योयित्समायाम् ॥ तृणेषु प्रजलाभप्याभ्युदयो वसिष्ठेष्टा-
 के ॥ ९ ॥ ऊरौ सट्टाससं प्राप्तिरिषु संधिस्तु जाग्रुनि ॥ क्वचिद्भानिरुजं चायां स्थाना-
 नि पश्यतोपरि ॥ १० ॥ पादाभौ लाभदं ध्यानमङ्गः स्फूर्तिफलं त्विदम् ॥ वामभ्युत्तां-
 फलं चैतद्बुधैर्ज्ञेयं विपर्ययात् ॥ ११ ॥ नाशेराणां दक्षिणांगे स्यादङ्गः स्वस्फुरती नयः ॥
 अंगस्फूर्तिः समाक्षेपा लक्षणां मध्यं कास्तिरलाः ॥ १२ ॥ कटाद्वृत्तिर्दक्षिणो पाणी-

नृपाणां नृपदां रज्जुता ॥ अन्येषां स्ताभूदाधाद तस्ते भक्त्यकारिणो ॥ १३ ॥ अथ प्रह्नीप-
 तनमलम् ॥ तत्राशुभाशुभतिथिवारनक्षत्राणि ॥ भू१ नेत्रा २ श्मि ३ शरां ४ गा ५ द्या १० विद्या
 १३ दित्ते १२ अ ११ संसिताः ॥ तिथयप्रशुभदा प्रह्नीयति ॥ न्यास्त्यशुभामताः ॥ १४
 ॥ सौम्या वारप्रशुभा प्रोक्ताः पापादुह कलप्रदाः ॥ पुष्याश्वि रोहिणी वृश्चिकं पुन र्भार-
 कश्चयम् ॥ १५ ॥ अनिष्टान्त्यानुराधा रक्षं प्रतभंच शुभमप्रदम् ॥ वृत्तो ५ न्यङ्गं निधिद्विष्टा-
 त्प्रह्नीयाते नृपां सदा ॥ १६ ॥ हस्तिणां मेऽरविर्ले पुंसां वा मां च नृणां दृष्टाम् ॥ नाभौ ह-
 द्युर्दौ चैव मस्तके हनु वाज्जिने ॥ १७ ॥ प्रह्नीयात प्रशुभो द्वेयस्ततो न्यङ्गं च प्रीतिभनम् ॥
 यत्फलं भवतने प्रह्नीयाः शरदारो हरोऽपि तत् ॥ १८ ॥ शरदस्य प्रपदौ च चक्रा रोहिं हृष्या फ-
 लम् ॥ स्नातव्यं स्वर्धने प्रह्नीयाः शरदस्य सवाससा ॥ १९ ॥ जन्म हर्षं मृत्यु योगे च द-
 रये विद्यादि हृषिते ॥ लाभे पाप युगे चन्द्रेऽद्य मे रितुं प्रजायते ॥ २० ॥ तत्र प्राणि-
 पंक्षेभं रुद्रं मृत्यु रज्जुयादिकम् ॥ पंच गव्यं पुनं रज्जुना नं दुःख्या द्रव्या वलोकनम् ॥ २१ ॥

अथ खञ्जन दृष्टिफलम् ॥ विर्तनं त्रस्यणि कार्य्य सिद्धिं रतुला प्राक्ते हुताद्यो भयं याम्ये रेगाभ
 यं सुगिरिकल हो विहं समुद्रालये ॥ वायव्ये वरवरुथान प्रयनं दिव्यांगना चोत्तरे
 दृष्टाने मरणं न्धुनं निगदित न्दिग्नलक्षणं खञ्जने ॥ २२ ॥ अथासमीपे गजमस्तके वा
 सूर्यो द्यौ वारणा सन्निधौ वा ॥ आकाशा मार्गे गहने वर्ने वा धन्यो नरः पश्यति खञ्जरीद
 म् ॥ २३ ॥ अथ खंजन प्राकुने वशंत राजः ॥ अथ देवेषु गोषु गजवाजि महो रगेषु राज्य प्रदः
 कुप्यालदः शुचि प्रादुर्लेषु ॥ अस्मास्थिकाव न विवदन्ति जल्लूकेषु सद्यो हृदाति-
 जराणं खलु खंजरीदः ॥ २४ ॥ यः कंधणेदः शिरसा समंतात् विभर्ति कायञ्च समंत
 भद्रः ॥ आकाशवद्यो गलमान्न रुक्षः श्रिताननो यः खलु कार्य्यनाशः ॥ २५ ॥ सा-
 र्थो हरिद्रा रससन्निभो यो गोमूत्रभाभः खलु खंजनो धमः ॥ सर्वत्र कार्य्य विपुलां च ल-
 द्दंसी समंत भद्रः प्रददाति भद्रम् ॥ २६ ॥ खरोष्ठके व्येव च पृष्ठयातः छिदं-
 स पक्षो विदधाति मृत्युं ॥ पक्षे विपुलं च न्दिव संस्थ चान्ते लुहो मृतो चान शुभः कदा-

किञ्चित् ॥ २७ ॥ यादृशवस्थाशक्नुनेरमुषाशुभावाप्रत्ययेति ह्यहं ॥ स्वस्था-
 ३८ धितादृश्युपलक्षणायातद्विस्तरेणालम्बित्वापरेण ॥ २८ ॥ अथ क्षुत्तम् ॥ श्रीषष्ठ्याभ्य-
 यनंवादेवाहनेशयनेऽशने ॥ वीजवर्षवृषेऽशोक्तंशोभनं सप्तसुक्षुत्तम् ॥ २९ ॥
 मृत्सुर्वन्निभयंहानिस्तुतिर्देव्यागमस्सुखम् ॥ तैशोऽर्थागमनंशोक्तंदिक्षुशि-
 धाफलंक्रममात् ॥ ३० ॥ अत्रोहाहणम् ॥ यामार्द्धेसञ्चकाद्यातोविज्ञेयुंचष्ट्यङ्कपुष्प-
 क्र ॥ शोषेऽर्द्धेप्रहरेभ्राज्याद्वितीयेऽग्निदिशिक्रमात् ॥ ३१ ॥ तृतीयेयाम्यतश्चैव
 फलमुक्तंविचक्षतैः ॥ वामेचष्टहेषुमहंफलंचस्यार्द्धेक्षिणोऽग्नेफलमत्रचितम् ॥
 ३२ ॥ स्थानोपविष्टस्यदृष्टाक्षुरांस्याद्धरात्क्षतंश्लेष्मभवाच्चदृष्टात् ॥ स्याद्भोजने-
 चाशयनेतथादौस्थानंलेहोभनमन्नान्यत् ॥ ३३ ॥ अत्यर्थनिघ्नंक्षुत्तमत्रवाच्यं-
 तद्वर्धवत्याश्चक्षुमारिक्तयाः ॥ मद्यस्यकर्तुःप्रमदाजनानांस्याच्चर्मिकायाश्चयं-
 शक्त्याः ॥ ३४ ॥ मद्योजनेयत्रक्षतेऽपिजातंक्षुत्तंक्षणात्तद्विनिहन्त्यावश्यम् ॥

ॐ कार्योत्सुकेनापि मनागपीत्यंतस्मादुपेक्ष्यंनविचक्षणेन ॥ ३५ ॥ होमर्षजाग्रत-
 ३३ ३३६ होमधर्मान्तेच भवेत्सुतम् ॥ सविशेषं तदा कार्यं पुनर्थावृत्य जायते ॥ ३६ ॥ अथ

खानफलम् ॥ वामान्दिशं दक्षिणभूमिभागा इच्छन्प्रयाणे शुनकः प्रशस्तिः ॥ वाम-
 प्रदेशात्सपुनः प्रवेशे प्रशस्यते दक्षिणभागा मी ॥ ३७ ॥ मूत्रं च कृत्वा भिमुखं प्र-
 याति योजगारुहकः शुभदस्स पुंसाम् ॥ कार्येद्युसर्वेष्वपि सर्वकालं न मूत्रयन्ती शु-
 नको प्रशस्ता ॥ ३८ ॥ वजे त्पुस्तदा यदि मूत्रयित्वा सर्वैव न त्तिथ्यति कार्यं निष्ठम् ॥
 मिथ्यानभोज्यं यदि गो मयेतु षुकेन शस्ते सज्जले प्रशस्तम् ॥ ३९ ॥ ज्ञायाति रुष्टो
 ऽभिमुखो यदि प्रवाक्रीडा म्रकुर्वन्त्वि लुब्धिरिज्याम् ॥ शीघ्रं न दानीं भुवमध्वगानां-
 भुवं प्रभूतो भुन धान्य लाभः ॥ ४० ॥ नृणां प्रयाणे भवनागमे वा प्रवानो रमन्ते यदि स
 प्रमोदाः ॥ तदेष्ट कार्यं ऽपि भवेत्प्रमोदः समा गमश्च स्वजनैः स समं स्यात् ॥ ४१ ॥
 प्रवाधे पुरस्तादवनीं विलिख्य यातुर्मुखं पश्यति चेत्तदानीम् ॥ तत्रैव दे शे इ विना ३३

संक्षिप्तं लामं जनि कार्ये न हि संशयोऽत्र ॥ ४२ ॥ फलं गृहीत्वा सहसा निवासं-
 ३० प्रवाचे विशेषेज्जल्यति पुन्रलामम् ॥ योऽभ्येति दृष्ट्वा भिसुखं प्रयातुः प्रीतिं प्रकु-
 र्याद्विना भान्यलामम् ॥ ४३ ॥ अथ काकप्रकुनानि ॥ वामेन गत्वा विनिवृत्य मार्गे-
 काको यदा दक्षिणा भागगस्स्यात् ॥ यातुः प्रकुप्याद्वितकाव्यसिद्धिं क्षेमंचसि-
 द्धिं पुनरागमंच ॥ ४४ ॥ कृत्वा रवंयः पुरतः प्रयाति पुरस्त्वितोऽधो गृहमादधाति
 ॥ कण्डवते यद्यद्विहोऽञ्जिनाः प्रणः पुंसां तदा भीष्टफलान् ददाति ॥ ४५ ॥ केके सि-
 हस्यो धाते दोषिदास्ये दोषो नायं कोको भिति प्राप्तिं तं स्यात् ॥ अपत्यलामः कुकु-
 हेत्यनेन गन्तं फलं केक कद्रत्यनेन ॥ ४६ ॥ कोको भितीदंसुखलामकासी कुंकु-
 निनादः त्रियसंगमाय ॥ मैत्र्या जये स्यात्कद्रवीव प्राप्दं कञ्चैव वारणी भनहानि
 कर्त्री ॥ ४७ ॥ अथ काकसर्पफलम् ॥ मस्तके वायुसस्य धेदिद्विभ्रं मरणं कालीः ॥ क-
 र्णां स्वान्धे महाभीतिरिष्टो यो गौ केवधि ॥ ४८ ॥ यो धितं मस्तके भर्त्ति ॥ १ ॥

धृतस्य च ॥ तत्र काकस्य र्धे दोषा भवन् ॥ लुप्ता धो वाप्यसिद्धन्तभक्ष्यद्वयादिषो गतः
 ॥ ४८ ॥ काकस्य र्धो निदोषा यत्न कस्माद्वपणन्तदा ॥ यणमासाभ्यन्तरे मुत्सुः काक
 मेधुन दग्नेने ॥ ४९ ॥ दिवा वाप्यदिवा रात्रौ यः पश्येत्काकमेधुनम् ॥ संनरो मुत्सु
 प्राप्नोति ह्यथवा स्थान नाशानम् ॥ ५० ॥ काक धातव्रतं यद्वा विदधीता यवत्स
 रम् ॥ पितृ न्देवा न्द्विजान्भक्ष्या भक्ष्यं वा भिवा दयेत् ॥ ५१ ॥ जिनेन्द्रियो जितक्रो
 धस्तत्त्वधर्मपरा दणः ॥ तद्दोषप्रमना र्था यशान्ति कर्म समा रभेत् ॥ ५२ ॥
 कर्मो तो वायसः पक्षी प्रारतो मूर्द्धि चेत्येतत् ॥ यणमासाभ्यन्तरे तस्य स्वाभिने वा
 मृतिस्तदा ॥ ५३ ॥ अयपिंगला ॥ एहो परि एह हारि पिंगला यस्य रोदिति ॥ हानि
 स्तस्य गृहस्यैव न शुभा तस्य सा स्मृता ॥ ५४ ॥ शान्नायां दिशि वृक्षेषु शुभे
 दु यदि पिंगला ॥ रौते भव्यं तु तत्रेति नाशुभं तत्र भाषितम् ॥ ५५ ॥ एधिव्यां
 कीचि कीचां तिचि लिचीति जलोद्भवम् ॥ शब्दितं शुभकृद्द्वयं पिंगलाया वृथा

संक्षिप्तं विदुः ॥ ५७ ॥ अथाख्युक्तः ॥

गृहस्थोपरिभाषमाणोऽहःस्वायसस्थात्ववत्तु

विदुः ॥ ५७ ॥ अथासूक्तः ॥

मृदुः। धारिणी ॥ ५८ ॥ अ

三

मृत्युर्वेव ॥ मरुस्य नो शोध च सत्तरात्रा ॥ स्नातव ॥ इति ॥ ३ ॥
 विंशं नाम्ना ॥ ३ ॥ इति ॥ ३ ॥

हं गृहं द्वारि चरत्युत्तमो हस्तो न चामः श्रवणं प्रसक्तं ॥ गच्छन्तं न चामः ॥
सद्युक्तं सद्योष नाशाय वलिः प्रदेयः ॥ ५२ ॥ दूषु प्राक् सत्यात्सदा प्राप्ता रूपः
गदु गत् प्राक् सदा द्वा प्रश्नैव वेद्यः ॥ अन्ये प्राक् निर्दिता एव वेद्याः पूर्वाचार्यैः सु-
यस्मिन् तस्य चोक्ताः ॥ ६० ॥ प्राप्ता यान्ति शिष्टाक्षेयु गामादौ च प्रादितः ॥ दूक-
स्यात्सर्वं लोकानां गृहि द्वि द्वि सुखा र्थं कृतं ॥ ६१ ॥ अथ सत्यास्यं ज्ञानम् ॥ यस्य स-
यस्य स्वरोऽजस्रं धोडप्राहं वे तदा ॥ सद्यो गदु लततो न्यूनं न्यूनं हं मिति मासके ॥
६२ ॥ एवं वामं स्वो सौख्यं तयो न्यो शो मतिः क्षणात् ॥ यस्य चन्द्रायते सूर्य्यं अ-
न्यं सूर्य्यायते तदा ॥ ६३ ॥ अहो ह्यं त्रयं तस्य परमा साध्यं तो मतिः ॥ निष्प्र-
भा स्कारं पश्ये न्नुयते द्वाभि दिनेः ॥ ६४ ॥ जा गत्य प्रयति यः स्वयं सोऽपि वर्धं न

जीवति ॥ नहिन्देत्कार्यं धैर्यं वा नाश्रयं रसो भुवम् ॥ ६३ ॥ मेद्रं चामनपथ्यं च
 रामासात्स न जीवति ॥ मणिबंधं ललाटस्थं यदि हृत्स्थं न पथ्यति ॥ ६६ ॥ यो दुर्गंधि वि
 नाहेनुर्यः को वा हति दीप्तिमान् ॥ कृष्णं गस्थूलं देहः स्थान् सरक्तस्सन रवोऽपि वा
 ६७ ॥ ततद्वा मे क्षणो वापि मास षट् न जीवति ॥ भुवं विक्षोः पदं चैवा रुन्धती मातृ सं-
 हलम् ॥ ६८ ॥ भमालां चंद्रगंचिन्ह मपथ्य नैव जीवति ॥ कफो मज्जनि यस्य शु-
 पं कार्दो खंडितं पदं ॥ ६९ ॥ स्नातस्य प्रागुरु शुष्यं चूनालि स्याच्च मूर्द्धनि ॥ नो सुभुक्तो
 धनिं धत्ते स्थूल देह कश्चन सथा ॥ ७० ॥ अथ संयमं युभ चिन्हं ॥ जिह्वा शीघ्रः प्रकं पथ्य तं-
 दूले राग हीनता ॥ वाणी मग्न हायस्य तस्य सृष्टू रणे भवेत् ॥ ७१ ॥ अथ बृहज्जल-
 क्षणम् ॥ प्र फुल्लित वपुः कायो रोमांश्ची स्थिर दृग्गदः ॥ धैर्यो येन स्व मुत्साही विजयो
 सरणे भवेत् ॥ ७२ ॥ अथ कृपा पुरुष दर्शन प्रकारं ललकं च ॥ प्रातः पृथु गते सूर्ये रत्ना-
 त्यामन्यु इव रत्नो नरः ॥ तिष्ठ न्याना विधे रक्षे पथ्ये च्छायां निजां ततः ॥ ७३ ॥ इत्कंद

विदुः ॥ ५७ ॥

ततो द्वागन्तरे परस्मै च्छायापुरुषमात्मनः ॥ ५८ ॥
मृत्युवेत्तव्यं वतं चेत्संमुखे प्रवेतमीक्षिते ॥ यावद्वदंसुखं क्षेमं विजायमानुयातदा ॥
॥ हरे तस्मिन्मिश्रे हीने मासघट्टेन जीवति ॥ विकले ह्यायनं चैकं व्यंसे वै सवन्मा-
सकम् ॥ ७६ ॥ संप्रहृदयं सप्तदशमासान्विहत्तके ॥ विपथिर्वीनृत्पुर्स्कैर्द्वौ व्यास्ये-
मासं हि जीवति ॥ ७७ ॥ द्विद्वेहदशने मृत्युः सद्य एव न संशयः ॥ मित्रनाशो विपादे च
बंधुनाशो विहत्तके ॥ ७८ ॥ आत्मनाशो विपथिर्धे स्यात्सर्वाभावे कुलं क्षयः ॥ दुर्भिक्षं
क्षारुणं देशे कर्तुरेव पण्ड्युरवे ॥ ७९ ॥ विदरे भृशके रुक्षे मित्रे छिन्ने विघात नमः ॥
पीते रज्जोऽरुणे हानिः कृक्षे मृत्युः प्रजायते ॥ ८० ॥ अथ सप्तदशने फलम् ॥ आद्ये पाप्मेनि-
श्विस्वन्नो वर्धेण फलदो भवेत् ॥ द्वितीये मास पट्टेन त्रिभिर्मर्मासैस्तृतीयके ॥ ८१ ॥ आ-
तस्सद्यफलः स्वन्नः श्वात्वा सुप्यान्नचेन्नरः ॥ शेषं चिंतोद्भवा व्यर्थं लब्धा चैव दिवे स्वि-
ता ॥ ८२ ॥ अथ शुभफलदास्तथाः ॥ सद्भजा ब्राह्मणा देवाः सिद्धिर्गंधर्वा किं नराः ॥ गुरुः प्रेयसां

संवि स्वरागरी तेषां चेह धर्मनं शुभम् ॥ ८३ ॥ प्रासाद गुरु धौलानां भवेतोऽस्य भज वाचि नाम् ॥ दर्शनं रोह
 ३३ एं लाभः रसिहं स्या रोहणं तथा ॥ ८४ ॥ ध्वजं क्षत्रं सुवर्णं क्षिरं लघौ ध्व दधी निव ॥ यव गो धू
 मसिंक्षार्था फलं दीपश्च कान्यका ॥ ८५ ॥ श्री धंडा क्षत दूर्वा प्रत्न दूर्ध्वाः पुष्पि तो द्रुमः ॥ ला-
 भेदा दर्शने त्रैकां लाभ रसौ रत्नं भवेत्तु शः ॥ ८६ ॥ भोजनं रोदनं वीणा वादनं नौ भरो हराम्
 ॥ भगवत्या गमनं विद्या लेपनं प्रालम्बी रितम् ॥ ८७ ॥ आरुढो व्योहि जागर्ति सपुष्पं फलितं
 द्रुमम् ॥ दंष्ट्रः ध्वेताहि नादं क्षे करे स्या त्स महोपनः ॥ ८८ ॥ रुधिर रत्नान पाति च सप्यं दंष्ट्रो मृ-
 ति निर्जः ॥ प्रव्या हर्म्य प्रानं गानं ज्वलनं स्वधिर पिच्छदा ॥ ८९ ॥ रक्तं भ्रावी जलैः रत्नानं मरणं
 मांस भक्षणम् ॥ मुरायाः पयसः पानं प्रशस्तं पायसाशनम् ॥ ९० ॥ कदली कल्प वृक्षाश्च नी-
 र्धं मां गादिकं स रित् ॥ तोराणं भूषणं राज्यं स्वां नै प्रत्न ग्राम वेद्यनम् ॥ ९१ ॥ वैदवाद्यादि निर्वोषा
 ज्ञी नि सख्यं तथा ॥ दंष्ट्रे वृश्चिक कीटानां तडा गो दान दर्शनम् ॥ ९२ ॥ पीतं रक्तं फलं पुष्पं स्वप्ने प्राप्नोति यो
 नरः ॥ लभते सोऽचिरात् स्वर्गं पदराग मणिं तथा ॥ ९३ ॥ जयो द्यूते रणो वादे पुरु हृत ध्वजे क्षणात् ॥ आत्मनो वं ॥ ३३

नं प्रीर्य वक्ष्यं रावमनुजमम् ॥ ८४ ॥ अभिविचकरो विभो देवो वास्तनधारणम् ॥ कुरुते म-
हिषी व्याघ्री गोसिंही स्तन्यपानकम् ॥ ८५ ॥ स्वनाभौ तृणा वृक्षांश्च पुण्याणां मुह्यवसां-
षा ॥ भुवोऽभिवारस्यापि क्रमेणोक्षेपयोऽभुः ॥ ८६ ॥ मरिासौ चरिरीष्याण पात्रेयो
भोजिनीदले ॥ योऽयनातिपाय संस्वने स राज्यमधिगच्छति ॥ ८७ ॥ गोलिङ्गीजास्त-
यो राज्ञा गिताभिन्नं च देवता ॥ यद्भूते सदसत्स्वने तत्तथैव प्रजायते ॥ ८८ ॥ दूजितं द्विव-
लिंगं च देवता वा तथा दिधा ॥ खने हृष्टा प्रयच्छन्ति नराणां विपुलं धनम् ॥ ८९ ॥ त्व-
क्ता तक्ता स्थिकर्षा संश्वेतं सर्वभुभं मतम् ॥ सर्वं कृत्वा असद्वित्ता गो देवाः खगजद्विजान् ॥
॥ ९० ॥ अथास्तु न स्वप्नाः ॥ तैलाभ्यक्तोऽद्यदि म्वासा आरुढं महिषं रवश्च ॥ उद्धं लल्लं व-
धं चास्य याभ्यां गच्छन् जीवति ॥ ९० ॥ पाकस्थाने वने उक्तपुष्पो द्वैस्मृति कानुहे ॥
विकलां गोविश्रेत्स्वने सोऽभुभिर्विप्रयुज्यते ॥ ९० ॥ उपद्रवं त्रिदं स्वने श्रुतिनो द्वै-
षोऽपि वा ॥ वानरो वा वराहो वा भवेद्वा ज्यकुलांतकः ॥ ९० ॥ जतुकोऽकुमसिंहर-
व

सति तवोयस्य मन्दिर ॥ यतान्तरत्तत्तस्य गति ॥
 गात्रेद्युत्तरा पुष्ट्या हुमोद्गमः ॥ इवरोद्धकपि सूर्याद्यैर्ध्यानं स्नेहस्य भक्षणम् ॥ १०५ ॥
 कञ्जुधेरापुष्ट्या मय्या कर्दुभैर्गोभयेन च ॥ स्नेहेन वपुषो लोपः कर्दुभैर्विविजमज्जन-
 म् ॥ १०६ ॥ प्रातो हृदंत हस्तानां जिह्वायाभ्यां त्रयोस्तथा ॥ एते प्रोक्तप्रदास्वन्ना-
 दृष्ट्या हानि कणभ्रमपि ॥ १०७ ॥ स्वप्ने सान्देशं लज्जं भीतं क्रीडितं स्कोटितं तथा ॥ हृदितं
 भूयितं स्तोतो वहन्मोहं रथो गतम् ॥ १०८ ॥ सूर्येन्दुभ्यश्च ताण्ड्याणां प्रातस्त्वस्य चित्ता-
 पिषा ॥ रज्ज्वा छेदः शिरोभागे कांस्यचूर्णस्य धारणं ॥ १०९ ॥ प्रवेष्टो जननी गर्भं हु-
 द्धमेतदस्ति हृदम् ॥ करवीरमग्रो कंच लताप्राप्तेन वंधनम् ॥ ११० ॥ कृत्वा वरधरा-
 योषा लिंगानं मृदु कारणम् ॥ भारुह्य सुषिप्यतान्दृष्ट्वा न्योर्विचिंत्य निजं वपुः ॥ १११ ॥
 भूषयत्यरुणैः पुष्पैस्सोऽपि प्राणैर्विपुञ्ज्यते ॥ धृतरक्षां वराश्लक्ष्यं हृत्प्यामात्रोतिमान-
 वः ॥ ११२ ॥ द्रुस्तु भूमितं मात्मानं व्याप्तं धूमेन वेक्षते ॥ भस्माज्यलोहलाभं च सव-

संक्षिप्तस्याविद्युज्यते ॥ ११३ ॥ ओह्रु कुक्कुट आङ्गिर गोधावभुभुजंगमाः ॥ जम्बुका वृश्चि-

३१८ दंशाभ्यहृद्यास्त्वन्नेनशोभनाः ॥ ११४ ॥ रत्न इत्याधुधोपानतशय्याभूषाभ्यशोधि-

ताम् ॥ सवस्त्रादिप्रियवस्त्वनामहारेऽर्घ्यनाशकः ॥ ११५ ॥ विवाहोत्सवयोऽशो-

केभ्रंशोवानखकेऽशयोः ॥ कशद्यवयवानांतुक्षेदनेस्त्वन्नाशकः ॥ ११६ ॥ वृषजं-

प्रमश्रुकेऽणानां नैर्नरकस्त्वज्जंतया ॥ कूपगर्तदरिध्यांतविवरेद्युनशोभनम् ॥

११७ ॥ कपोतश्वेनगृध्राद्याऽमृक्षकोशिकवायशाः ॥ प्रदगालशशकस्वानोदृष्टाः

स्वन्नेनशोभनाः ॥ ११८ ॥ प्राक्युलीकशरान्तानां गुडदूपादिभक्षणम् ॥ गोमयं-

चोसपानीयंस्वन्नेपीतंनशोभनम् ॥ ११९ ॥ रत्नेपुरुषमन्त्रेवाश्रवन्मृत्युमवाप्नुयात्

रत्नहृत्पानिवासोसिपुण्याणिचविभर्तियः ॥ १२० ॥ पितृकार्यं प्रकुर्वीणो मृचते स

नसंशयः ॥ भूतप्रेतपिशाचाद्यैः प्रवपचैस्सहसंगतः ॥ १२१ ॥ आहूतोवाद्यतै-

र्वाभ्यास्वल्पाहैर्विप्रैतेषुसः ॥ असूर्य्यं दिवसें रात्रिंविचंज्ञंगततारकाम् ॥ १२२ ॥ व्यं-

३१९

संशि योकोलजां पश्येत्स्वनेसोऽपि विनश्यति ॥ सीसपित्तलकसीरं कांसताम्बाय सेवपुः ॥

शर्द

१२३ ॥ प्रुक्क दृक्षीषथं शिलपी दृष्टा स्वेतेन शोभनाः ॥ प्रासा दक्षुन्नभूर्मीद्र शिरव
शरणं ध्वजस्य च ॥ १२४ ॥ पतनं प्राक्का चापस्य नरायस्य विनाशो कृत ॥ तारकोला
हलाहो ननिंदा ओषादि संभवः ॥ १२५ ॥ विद्या द्वाज्य भयं दृष्टि प्रदं गी के शगदि वि-
द्वात् ॥ अथ तन्न फलद्वयवत्त्वा ॥ ये दृष्टा स्वप्नति स्वप्नाः स्वस्यैव फलदाभ्यर्ते ॥ १२६ ॥
परं प्रति च ते तस्य फलदा किंचिदात्मनि ॥ अथ दृष्ट तन्न दर्शन दोष शान्तिः ॥ दृष्टे त्वा लोकि-
ते स्वप्ने निवेद्यो ब्राह्मणा यतत् ॥ आप्रीभिर्मस्तोयितो विवैः पुनः सुय्यान्नेर प्रवरः ॥ १२७ ॥
न द्रव्याच्च पुन स्वप्नं संत्ता याम्पुण्य वारिभिः ॥ मृत्युञ्जय जपो होमः प्रांतिस्त्व सत्ययना-
दिकम् ॥ १२८ ॥ सेवास्वत्य भवां प्रातर्दानं स्वर्गादि शक्ति च ॥ अवरणम्भारतादीनां स्व-
न्न दोष श्रान्तये ॥ १२९ ॥ अथोत्पत्ताः ॥ उत्पत्तास्त्रि विधा द्वेयादि विभो मां तरिक्ष जाः ॥ भेषु
दिव्या स्तथा दृक्षुध्वजा दावन्तरिक्ष जाः ॥ १३० ॥ भूर्भो भौमाः क्रमादुग्र मय्य मात्व फ-

संदि लप्रदाः ॥ अथोत्पातानां वंग्रहः ॥ भूमिकंपोदिष्टादाहोनिघातो धूलिवर्षाणि ॥ उत्क्रापा-

तस्तरुच्छेदोनभसो हृष्टिरस्यनाम् ॥ १३३ ॥ ग्रंथकरोदिवा विद्युत्प्रातोऽथर्तुविपर्य-

यः ॥ प्रकृतिप्रसवोजन्तो रक्षीन्पोरुच विपर्ययः ॥ १३३ ॥ ग्रहाणां वायुतिर्युद्धं स्वका-

लेयत्रेजायते ॥ वर्षाकालं दिवा विवोरक्षीन्दोः परिसंहतम् ॥ १३४ ॥ स्याकस्मिन्नुस्य

लाईत्वं खगसं ग्रहाणां ह्ययम् ॥ क्षालक्षी हिजवर्षाणां वधः पीडाजनस्य च ॥ १३५ ॥ प्रा-

हादस्य च देवस्य ध्वंसः पातोऽथ जस्य च ॥ ग्रहाः वक्रातिचारस्थाः सर्वे वास्वर्षिणा खगाः

१३६ ॥ सर्वेऽप्येकैर्ष्याः खेताः एकैर्षिः क्विद्वहसती ॥ शुक्लपक्षे भुगो रक्तो दयो वा

केतुदर्शने ॥ १३७ ॥ सुप्रालं रवगंधर्हिस्थं द्यादिचंद्रार्द्धे दर्शनम् ॥ चंद्राभ्यामन्यु-

द्भवोऽकस्मात् जले धूमादिकं भवेत् ॥ १३८ ॥ उल्लखत्वा घट्यादिचलनं स्फोटनं तथा

॥ प्रतिमायाः प्रकंपो वा हसनं रोदनं तथा ॥ १३९ ॥ भुवो विवरद्वयाद्या उत्पानास्तत्प-

रेऽपि च ॥ ग्रंथानराच्चेते ज्ञेयाः फलमेवांक्षवीम्यथ ॥ १४० ॥ अथोत्पातज्ञानाय चतुर्विध-

नाड्यानि ॥ कृत्तिकाभरणीपुष्यमघाश्रमाविश्रावि का ॥ पूर्वाफाल्गुणिके तानि भानि
 सहाशि मंडलम् ॥ मूलाश्लेषाश्रतार्द्रा न्योत्राभाद्रपदस्याघा ॥ पूर्वाषाढाशिधैतानि
 सप्त चारुण मंडलम् ॥ १४१ ॥ पुनर्भोगाभिवनी हस्तं जितयं चतुः प्रीर्वाकं ॥ चतुः मंडल
 सञ्ज्ञानि भानि सप्त स्थिता निच ॥ १४२ ॥ अभिजिच्चोत्रास्वादाचुराघा भवणा ह
 यम् ॥ ज्येष्ठा च रोहिणी भानि सप्त चैन्द्रस्य मंडलम् ॥ १४३ ॥ भूकपादि महिस्तांता
 यंते भगमंडले ॥ ततस्त्वभावजद्रव्यं जतुर्दश च पीडयेत् ॥ १४४ ॥ हिनिमण्डलके नव
 ततस्थाननिवासि नाम ॥ छिन्ने एवं फलं सति दूरे नास्ति फलं त्विदम् ॥ १४५ ॥ इवे
 ते भव्यचपीते तु दृष्टिनील गुरो रजः ॥ कसे भूष क्षयो धूम्र नीहारः परित् भवेत् ॥ १४६
 प्रावट् कालं विना न्यत्र परिधि श्वे तदा त्विदम् ॥ तस्मिन् काले तु दृष्टिः स्यात् परिधौ
 रसताडिते ॥ १४७ ॥ अफले फल पुष्याणा मुदये धान्य नाशान् ॥ जलाद्देवे स्थले क
 र्तिर्महती परि कीर्तिता ॥ १४८ ॥ स्त्रीवये चाति दुर्भिक्षं विप्र काल वधेऽपि नत् ॥ देवधं

संक्षेपे च देशस्य राजध्वंसः प्रजायते ॥ १४३ ॥ सर्वग्रासे ग्रहे सर्ववस्तूनां च महर्षिता ॥ इ-
 ३४३ भिर्भिर्क्षं कुलते खेटा भोमा घावङ्गा गमिनः ॥ १४० ॥ जती चार गता स्सर्वे खर्द खोच्च ग-
 ता भति ॥ ज्ञेया भव्य फला प्रैव क एषि स्या देशे प्रा नाशकाः ॥ १४१ ॥ स्याता मस्तो द्यो
 प्रुल्ले पक्षे वेङ्गा र्वि स्य च ॥ राज युद्धं तथा घोरं हृदिः स्यात् नु निरंतरा ॥ १४२ ॥ जीवा र्क
 पुत्रयो यो मे दुर्भिर्क्षं विग्रहस्तथा ॥ संग्राम प्र्याति दुर्भिर्क्षं जायते मुशालो द्ये ॥ १४३
 ॥ जयकेतवः ॥ मुशाला हन्ति धूस्मा भा दीर्घ पुच्छ नि भा प्रव्ये ॥ तथा प्र्येत शिरवा कारा
 विग्रहो तो निभा प्रव्ये ॥ १४४ ॥ द्रव्या धाः केतव सर्वे राष्ट्र भंगं कर मताः ॥ धू-
 म के दूदये मृत्यु र्जायते हृदि वी पतेः ॥ १४५ ॥ शिरवाः श्रोतो निभाः केचि च्छेभ-
 नाः परि कीर्तिताः ॥ श्रितः खिन्ना ॥ इत्य को दीर्घः प्रीद्यो ॥ तीव प्रुभ प्रदः ॥ १४६
 ॥ वह्नि भी रभि रक्ता भो हस्त वणो मिमति प्रदः ॥ प्राक् भवज समो नेष्टः धूम्र वणो ॥ पि-
 तद्विधः ॥ १४७ ॥ नेष्टो द्वित्रि चतुः प्रुला द्युत्यन्तिः कथिता वुधैः ॥ रक्त पंक्ति निभे ख-

लोर्वर्णे प्रागपरोदये ॥ १५८ ॥ नृपनाशस्तथैशान्याने लालापीमहर्षता ॥ नाशकल्पाधि-
 तस्य ग्रन्थस्योऽद्योतारकाप्रभः ॥ १५९ ॥ कावंधसहश्रोयाम्याहुः रजदोभूमिचारिणाम् ॥
 यावद्विषसमुत्पातः समुदेति नृभः स्थले ॥ १६० ॥ तावन्मासं फलन्त्यन्ति मासैर्वर्षाणि संव-
 दन्त ॥ अग्रान्योत्पातफलानि ॥ आरण्यपशवो ग्रामे चेद्विश्रान्तिं जच्छ्रया ॥ कुर्वन्ति च मृ-
 दं धूल्यमुल्लूकी च गृहं विश्रान् ॥ १६१ ॥ वल्मीकं क्षौद्रजालं वा यस्य सद्य निजायते
 ॥ तदा गेहपतेर्नृपिणः कपोते वा गृहं गते ॥ १६२ ॥ द्यादिचंद्रार्कविंवे स्याद्देवाभी-
 तीत्यो मृतिः ॥ गृहाभावे फलं नेष्टं द्यादिजीवे तु श्रेयमनम् ॥ १६३ ॥ धरणी विवरोदे-
 शे नृपनाशो रियो भयम् ॥ त्रयोदशदिनः पक्षो यस्य म्रवे मवेनदा ॥ १६४ ॥ प्रजाना-
 शोऽथ दुर्भिक्षं तथा भूमिभुजां क्षयः ॥ अथ निर्घातस्त्रयस्तत्फलं च ॥ प्रचण्डवातसंज्ञातनिर्घा-
 तपतनं भुवि ॥ पक्षिदीप्तेऽरुणे नेष्टं नृपहाभारकोरोदये ॥ १६५ ॥ निर्घातप्रचंडशब्दोऽ-
 धगच्छन्तो नाशयेद्विशम् ॥ यैरचोर्विज्ञानैश्चान्न न्यायार्थैः क्रमाद्विदा ॥ १६८ ॥

संक्षिप्तं वा त्वज्जानयान्नहरेष्वथवा क्रमात् ॥ यातिन्यां धान्यपेषाच्च स्तम्भैरमतु

१४४

रंगान् ॥ १६८ ॥ अथोत्तमलक्षणं तत्फलं च ॥ धरणीं प्राणसंचारधोरणवासनिर्भरता ॥

तत्तद्वद्विविक्तत्वं तीक्ष्णवक्षणा ॥ १७० ॥ अत्युच्चमिमांसातद्विहस्ताच्च

सपत्रगा ॥ तिर्यग्गूर्ध्वगता येता रक्ततन्वी तु तारका ॥ १७१ ॥ ऊकातुविविधाका

राकृत्तुच्छतिदाहणा ॥ अथद्विषाहफलम् ॥ विरहाहः पीतचर्माश्वेदूमिपालंनिहं

तितः ॥ अथवर्णोनिजं देशं वर्णानुरतः क्रमात् ॥ १७२ ॥ भूयोऽल्पप्रमतांकृत्या

दहसो देशांतु निर्देनुम् ॥ प्राच्यां भूमिभुजान्हन्या देशान्यां विदिषाः क्रमात् ॥

१७३ ॥ वैश्यान् शिल्पविदश्वेरात्तुरगान् क्रमत्स्त्वथा ॥ निमिशस्वर्सानिभः सव्य-

वायो रवेदिभस्ते शुभः ॥ १७४ ॥ अथ शकंपफलम् ॥ भूकंपोयाश्च तीव्रान् क्रमाद्वन्यादि-

वानिभिः ॥ चाद्यमंडलजो भूप्रयास्यां तु मयाधंतथा ॥ १७५ ॥ यामान् क्रमद्वकं वह्निमंडल

स्थो निहंति यै ॥ चन्द्रमण्डलयोर्भूयोऽथवा गुर्जरदेशकान् ॥ १७६ ॥ भूपालोऽथीन-

३

३४५ नन्दप्रभीस्तथा ॥ भयंतद्विशिभन्नामेनस्मिन्कक्षेकजांभयम् ॥ १७८ ॥ राजस्वर्गोत्तर
मण्डपेयीयान्नचैतांमाहलाज्ञवः ॥ १७९ ॥ नन्दप्रभावात् ॥ १८० ॥

ननुपभीस्तथा ॥ भयंतदिशिभूत्रामेतस्मिन्कृत्तेरुजांभयम् ॥ १७८ ॥ रजंस्सूर्योद-
येव्योमच्छादयेद्विज्यहंयदा ॥ तदायोगाःश्रमूतास्थुर्निष्प्रायामेतुभूयहन् ॥ १७९ ॥
॥ नित्यंरात्रिद्वयंनेत्रंशुक्लयंत्रिचतुर्दिनम् ॥ पञ्चाहंचैत्रयंघोरमृतेकालंचशेधिर-
म् ॥ १८० ॥ अथगंधर्वनगरंतत्फलंच ॥ गंधर्वनगरंहंतिवरात्र्येतादिवराकिम् ॥ क-
मात्सुर्विद्विज्ञोभूषामात्यसैन्यपुरोहिताम् ॥ १८१ ॥ सध्वजंनिर्द्दिनंकुर्व्यादायुधानि-
निभंभयम् ॥ अथेषामुत्पत्तानांफलपाकसमयः ॥ षड्विम्बासिर्भुवःकंपोजायतेफ-
लमुक्त्वत् ॥ १८२ ॥ दिग्दाहेविकृतौसूतौकेतुनिघतियोस्त्रिभिः ॥ रजोऽभिवर्षणे
सद्यउत्तानेऽन्यत्रह्रायनात् ॥ १८३ ॥ अथदृष्टिविकृतिस्तत्फलम् ॥ अकालेरुक्त्वपा-
तिश्रसन्नाहंव्यभक्तेऽपिच ॥ वर्धणेवाजोवृद्धौनेत्रंमासादिभिर्मृतिः ॥ १८४ ॥
भयमंगारकैर्हान्यैःफलाद्यैस्स्यान्नसंप्रयः ॥ देशनाशःसुकोरुजांवृत्तवृद्धौ-

प्रजायते ॥ १८५ ॥ दीर्घे सूर्ये प्रतीपं स्यात् तच्छादिने भीति रीति तः ॥ चंद्र चोपेऽति वृष्टि स्यात्
 द्यो भिन्न चण्डां शुदीपिते ॥ १८६ ॥ अथ पश्चिम गार्ह विहति स्तत्फल मपि ॥ ग्रामा राया रतया नी-
 रस्थल जायु निष्पा चक्षः ॥ प्राणिनो व्यत्ययं जानां स्तव चक्रं पीडयं त्यमी ॥ १८७ ॥ खेमा
 कालेऽथ दीक्षा यादिष्टो मार्गे पतत्रिणाः ॥ क्रोशंति जंबु का दीनो संघादारे चत दिष्टि
 ॥ १८८ ॥ विहंगा विधिति व्यस्त चक्रायां तद्धत स्ततः ॥ कुङ्कुटोऽस्ते च गोर्नृत्तं हंसान्ते
 रेतिको किलः ॥ १८९ ॥ रवरा ऋष्या नोऽथवा स्वैरं प्रकीर्तितं परस्परम् ॥ द्रव्यादि विहृतो
 ध्वने पीडा भवति भूयसी ॥ १९० ॥ मार्गे वुर्धतु महिषी भ्रा वणे वडवा दिवा ॥ सिंह गान्नः
 प्रसूयंते स्वाभि नो मृत्यु दायिकाः ॥ १९१ ॥ अथान्येऽप्यशुभोत्पत्ताः ॥ अस्थि क्षिपति गेहे भ्या
 सन्मुरवोऽस्ते चोदिति ॥ यस्य तद्देह नाशः स्यात् तदरमासा भ्यन्ते तदा ॥ १९२ ॥ ऐति-
 मूर्यो द्ये श्वाचे द्गामांते सूर्य दिङ्मुखः ॥ भूष नाश स्तदा चास्ते कपी शानाश माञ्जुः
 ॥ १९३ ॥ संभट्टार निपात भेद्वृत्तोत्पति विनाशिनः ॥ युद्धाने वाल का स्वैरं कायलो-

वः परस्परम् ॥ १८६४ ॥ तदाभूय भयङ्गुरं विज्ञेयं दीर्घदक्षिणिः ॥ अंगना वालका मन्ना-
 द्रुपते यन्त्वभावतः ॥ १८६५ ॥ सत्वं तज्जायते तस्माद्गुढा चैवं सरस्वती ॥ अथोत्पन्नदोषापाका-
 रः ॥ स्वस्व प्रान्त्या महोत्पन्ना विनश्यति च सर्वप्रः ॥ सहाहाभ्यन्तरे वृक्ष्यां शुभायै
 वनहुः ३४ दः ॥ १८६६ ॥ अथोत्पन्नानामुपहारः प्रान्तिभ्यः ॥ धूम्रकेतुर्मही कपोदिन्द्राहो धूलि
 वयर्णम् ॥ भुवो गर्वाश्व निघातजलापातादयोऽपरे ॥ १८६७ ॥ यस्मिन्देशे प्रजायन्ते म-
 होत्पन्ना महाभयाः ॥ प्रजापीडाभवेन त्रविनाशः पृथिवी पते ॥ १८६८ ॥ तदा प्रान्ति
 विधातव्या देशे प्राप्ते पुरेऽदिवलैः ॥ प्रान्त्या दोषा विनश्यति त्वन्यथा दोषमङ्गुतम् ॥
 इत्युत्पन्नाः ॥ अथ महर्षकाण्डम् ॥ तत्राहोर्वयराजादिविचारः ॥ चैत्रमासि श्रिते पक्षेऽर्द्धे द्ये प्र-
 तिपत्तिद्यौ ॥ यो वासरस्स राजा स्यात् तस्मिन् वर्षे ततः फलम् ॥ १८६९ ॥ मेवेऽर्के स्वप्न-
 वे शोयो चारो मन्त्री सकथ्यते ॥ चापे धान्यपतिर्द्वेयः ॥ आर्द्रायां जलदाधिपः ॥ १८७० ॥
 रसाधिपः सुलायां स्यात्कर्केषास्य पतिस्तथा ॥ मकरे स्वर्षरत्नादिनी रसे शो वृषेऽस्तुतः

मि ॥ २०१ ॥ अथ विशेषकायनयनम् ॥ प्रागेति धे हते श्रोत्रे लब्धं स्थाप्यं प्रथक् क्वचित् ॥ श्रो-
 त्रं हिंसां श्रोत्रे व्युत्पन्नं चर्यास्याच्च ततः पुनः ॥ २०२ ॥ लब्धं ॥ प्राकं प्रकल्प्यैव कर्तव्या श्रोत्रं वद्वि-
 या ॥ तस्मान्निद्रा तथा लस्य सुषुप्तः प्रातिरेव च ॥ २०३ ॥ क्रोधो दम्भोऽद्यादिभ्यस्त्वभुत्सवः
 पापप्रणयकैः ॥ अथ प्रकाशान्तरेण धुधाद्यानयनम् ॥ प्रागे वेदैर्हते श्रोत्रे भर्तौ लब्धं च पूर्वव-
 त् ॥ श्रोत्रे च द्विगुणे सैकं क्षुधा तस्मात्सुषुप्ति का ॥ २०४ ॥ आलस्य सुषुप्तः प्रातिः क्रोधो-
 लोभोऽथ वेदकः ॥ दंडोऽथ भेषुनं चोर्व्य रसनिःपतिरेव च ॥ २०५ ॥ फलनिःपतिरुत्सा-
 हः पुण्यं पापं तथैव च ॥ सर्वनिःपतिरित्येवं संपत्तिश्च यथा क्रमात् ॥ २०६ ॥ अथोपलानय-
 नम् ॥ प्राकं श्वाद्यगुणः स्वैर्देभर्तौ लब्धं च पूर्ववत् ॥ द्विज श्रोत्रं त्रिभिर्व्युत्पन्नं मुग्नत्वं च र-
 सोद्भवः ॥ २०७ ॥ कलोलपति स्तथा लघाधिरोगनाश स्तथैव च ॥ आचारश्चाप्यनाचारोऽपि
 ति र्जन्म ततः परम् ॥ २०८ ॥ चोरो पशुमनं वन्दे भीति रग्नि शम्भुक्रमात् ॥ अथ प्रालम्भाद्यानय-
 नम् ॥ प्रागेति धे हते नंदैर्ह्यर्त्थं स्थाप्यं तदुक्तवत् ॥ द्विधे श्रोत्रं त्रिभिर्व्युत्पन्नं प्रालम्भो मूलक

७ किं स्तथा ॥ दैविकं पीतं ताम्रं च खचक्रं परचक्रं कम ॥ २०८ ॥ अथ प्रकारांतराण्यलंभान्नयनम् ॥

३४६ शैलमोनवहृच्छाकः श्रेष्ठद्विभंयुतं त्रिभिः ॥ शालभोसृषकोदैवं पीतं ताम्रं खचक्रं क-

म् ॥ २०९ ॥ परचक्रागमश्चैव क्रमादैवं च पूर्ववत् ॥ अथोद्दिष्टादिप्राप्त्या नयनम् ॥ प्राक्केवारी-

नगैरंधैरीशैर्निम्ने पृथक् पृथक् ॥ सप्तभक्तावश्रेष्ठयत्तद्विभंयुतं च युतं क्रमात् ॥ उद्दि-

जः ष्वेदजश्चैव ज्ञायुप्रभवोऽहुजः ॥ २१० ॥ अथ युगानां प्रमाणम् ॥ द्वात्रिंशति सहस्रेष्व-

युक्तं लक्षचतुष्टयं ॥ प्रमाणं कलिर्वर्षाणां प्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभिः ॥ २११ ॥ युगानां कृत-

मुख्यानां क्रमान्मानं प्रजायते ॥ कलिर्मनं क्रमान्निभं चतुस्त्रिंशतिस्त्रिंशतिस्तथा ॥ २१२

कृतमात्रं १२२००० त्रेतायाः १२२६६०० द्वापरमानं ८६४००० कलिमानं ४३२००० ॥

अथ गतकलिमानम् ॥ खगशैलेन्दुरामादौ प्राक् ५ व्यास्ते कलैर्मताः ॥ तैर्विहीनैर्क-

लिर्मनं श्रेष्ठे श्रेष्ठ कलिर्मितिः ॥ २१३ ॥ अथ भर्मानयनम् ॥ स्वाभ्याभ्यां कैश्च वेदैश्च-

कलि श्रेष्ठस्समायुतः ४ कलिमानेन संभक्ताद्यास्त्रिभ्यं भर्मायवसः ॥ २१४ ॥ प्राक्कादैश्च

श्री युतं जीव राशिभिस्तद्दत्तैः ५ प्रके ॥ लब्धं पुरा यत्नत न्यूनं विप्रतिः पापमुच्यते ॥ २१५ ॥

१० जाय व्ययान्नपनार्थं भुवांकाः ॥ स्वर्द्धस्तिव्यो १५ गजा ८ प्रश्नेल चंद्रा १७ नंदेदव १८ स्तथा ॥

स्वर्गा २१ दिशः १० क्रमात् द्वेयारव्यादीनां भुवाद्भे ॥ २१६ ॥ निज राशि युगे वर्ष स्वामिनो-

भवयोग के ॥ निमि वरा युते भक्ते तिथिभिः शेष संमिने ॥ २१७ ॥ आया स्सुखि गुणै लब्धे

परायेतिथिभिर्हते ॥ शेषे व्ययोः क्रमात्स्व स्व राशेनां कथिता वृषैः ॥ २१८ ॥ अथ प्रकात्स-

मिज्ञानम् ॥ एके नि मेहते वारोः शैले भक्तेऽथ शेष के ॥ क्रमान्मध्यं सुभिष्टं च दुर्भि-

ष्टं च सुभिष्टकम् ॥ २१९ ॥ महर्धं समता द्वेयार्थैक तो शेर वं नुरे ॥ अथ मंत्रात्सुभिष्टादि-

ज्ञानम् ॥ निमि संवत्सरे वृत्ते शरैर्भक्तेऽथ सप्तभिः ॥ चतुर्द्वि नि मिने शेषे सुभिष्टं विपुलं

भवेत् ॥ २२० ॥ निमि व के च दुर्भिष्टं षट्भू संख्ये च मध्यमम् ॥ धूम्ये नुरे र वं द्वेयं फलं

वर्षे वृषैः सदा ॥ २२१ ॥ अथा पः प्रकारः ॥ द्विप्र संवत्सरे राभैर्ह तो भक्तो न गौ स्तथा ॥ शेषे-

वाराभिने युगे सुभिष्टं हयनं भवेत् ॥ २२२ ॥ वेद चंद्र मिने द्वेयं दुर्भिष्टं खेतु शेर वम् ॥ २२३ ॥

सक्रि सा नलमिने मध्यमै तदर्ध फलं बुधैः ॥ २२४ ॥ अथ राजा दीनां वर्धे संक्षे पा फलम् ॥ राजा मात्य-

३५५ नृपसीनां वञ्चिसंक्षे पतः फलम् ॥ गुरु शुक्रादयोऽधीष्टाः संति चे ज्ञान सौख्य दाः ॥ २२५ ॥

सुमिक्षं प्रोभना दृष्टिर्देष्टास्वयं प्रकुर्वते ॥ यानि श्रेमो प्रकुर्वते दुमिक्षं विग्रहं भयम् ॥

२२६ ॥ अल्प सौख्य प्रदः सौम्य सत्त्व त्पदुःख प्रदो रविः ॥ फलं स विस्तरं चैषां विज्ञेयं संहि-

नादिषु ॥ २२७ ॥ अथ दीप मालायां नद्यो ग फलम् ॥ यदि भवति नद्या चित्कार्तिके नष्ट चंद्रे यानि-

रवि कुज वारे स्वाति चायुष्म योगे ॥ रागान चर पशूनां जंगम स्या वराणां नृपति जनवि-

नाशो राज्य भंगस्तु चोक्तः ॥ २२८ ॥ अथा प्लेगपि ॥ दर्पे चायुष्म तो स्वातो पापा हेमासि का-

क्षिके ॥ प्रदेशे चैत्रजा पीडा राजबुद्धाद्युपद्रवाः ॥ २२९ ॥ अथ ज्येष्ठ प्रति पदादि योगः ॥ ज्ये-

ष्ठे शुक्ल तिथा वाधे चन्द्रे ज्येष्ठगु वासरे ॥ सुमिक्षं प्रोभना दृष्टिर्दुर्मिक्षं पाप वासरे ॥

२३० ॥ अथा षाढ द्वितीया नवमी योगः ॥ आषाढे शुक्ल पक्षे च द्वितीया नवमी दिने ॥ चन्द्रे

ज्येष्ठगु वारे स्यात्सु दृष्टिश्च समर्चना ॥ २३१ ॥ बुधे साम्यं रवौ तापः कुजे दृष्टिर्न जायते ॥

॥ अथ प्राणिचारफलम् ॥ गुरुर्जरेऽमे प्राणि-
 ॥ प्राणिचारप्रजापीडादुन्मिषं रौखं तदा ॥ २३२ ॥ अथ प्राणिचारफलम् ॥ गुरुर्जरेऽमे प्राणि-
 ॥ पीडाप्रभासावुदयोदये ॥ मरुस्थले च युग्मेर्क्षं कर्कं काशमीरमंडले ॥ २३३ ॥ प्राक-
 ॥ स्थे च सिंहेर्क्षं कन्यायां भालवे तथा ॥ तुलादित्रिषु धिर्क्षं जनपीडनम् ॥
 ॥ २३४ ॥ सुभिर्क्षं च मृगे कुंभे मीने सर्वं प्रजास्थयः ॥ अथ कूर्मचक्रम् ॥ कूर्मचक्रे प्राणिर्म-
 ॥ ध्येततः प्राच्यादिषु क्रमात् ॥ २३५ ॥ नाप्रायेक्ष्य मतो देशान् कृत्तिकाद्यैस्त्रिभिस्त्रिभिः ॥
 ॥ निजाधिष्ठितभेर्हं प्रानं तर्वेदिशुखाः स्वतः ॥ २३६ ॥ मागधाद्यान् कलिं गादीनां धंति कमु-
 ॥ खां तथा ॥ ततो कोकनपीडादीन् सिंधुसौराष्ट्रकादिकान् ॥ २३७ ॥ पौलिंदचीनका-
 ॥ द्यांश्च कुरुकाशमीरभतस्य कान् ॥ खलवाल्हीकपातंश्च नवखंडानि भौस्तथा ॥ २३८ ॥
 ॥ दद्यान् प्राधिष्ठितादेशादीशान्यां यमदिगातान् ॥ अथ ग्रहचारवशान्महर्षादिः ॥ मेवे गुरो-
 ॥ सुभिर्क्षं च सुवृष्टिश्च सुवृष्टीनरः ॥ दधे गुरोस्त्वल्पदृष्टिः प्रजापीडा च विग्रहः ॥ २३९ ॥ अना-
 ॥ दृष्टिः प्रजानाशो रौखं मिथुने गुरो ॥ कर्के गुरो महादृष्टिः प्लुत्रभंगो महर्षिता ॥ २४० ॥

कसि सिंहे गुरौ सुभिषं च सुहृदिश्च प्रजा सुखं ॥ कन्या गुरौ रोग पीडा दुर्भिषं स्वल्प जन्म च ॥

३५३

२४२ ॥ तुले गुरौ स्वल्प प्राख्यं बहु क्षीरं प्रजायते ॥ अलो जीवे च दुर्भिषं राजं चौर रणा

ज्ञयम् ॥ २४३ ॥ चापे गुरौ सुधा दृष्टिः शुभं प्राख्यं सुखी जनः ॥ दुर्भिषं भकरं जीवे राजा दु-

हं पशु क्षयम् ॥ २४३ ॥ कुंभे गुरौ सुभिषं च धातु मूलं महर्षता ॥ दुर्भिषं दक्षिणे दे-

शे नान्य देशे भवे गुरौ ॥ २४४ ॥ अथाषाढी पूर्णिमा विचारः ॥ अथाषाढी पूर्णिमायां च वाय-

व्ये यदि मारुतः ॥ मशका मूषका कीटा जायन्ते शूलभा स्तथा ॥ २४५ ॥ अथाषाढी पूर्णि-

मायां च दक्षिणे वांति नेत्रयते ॥ अना दृष्टि र्धान्य नाशो जलं कूपेन दृश्यते ॥ २४६ ॥ अ-

षाढी पूर्णिमायां स्यादुत्तरे यदि मारुतः ॥ धर्मं प्रीलास्तथा लोका धनं धान्यं ग्रहे ग्रहे ॥

२४७ ॥ अथाषाढी पूर्णिमायां च दीपाने यदि मारुतः ॥ सुखिनो हि नदा लोका गीतं वाद्यम-

होत्सवैः ॥ २४८ ॥ अस्मिन् कोणे वान्ति भीतिः पाश्र्वमे च जला ज्ञयम् ॥ अन्यत्र यदि वायुः स

सुभिषं जायते सदा ॥ २४९ ॥ अथाषाढी भास्करास्ते सुरपति ककुभो चाति वाने सुहृदिः ३५

संकीर्णं प्रास्य ध्वंसं प्रकृत्या दृढिदृह नदिप्रो मन्दे दृष्टिर्भवेत् ॥ नैऋत्या मन्त्रनाशो वरुणा व-
 ३५६ द्रुजलं वायुना वायुकोपः को वेद्यो च भवति वसुमती तद्दीपणन कोरो ॥ २५७ ॥ सर्वमा-
 सेष्टिर्मिमाया मृमिकंपो यदा भवेत् ॥ उक्ता तारा वज्रपातः परिधिः राशि सूर्ययोः ॥
 २५८ ॥ ध्रुवकेतुः शक्रचापं ग्रहणं बहुधा तथा ॥ तदा सकल वस्तुना ज्ञायते च महर्षि-
 ता ॥ २५९ ॥ अथ प्रतिमासे दर्शकलम् ॥ शुभवारान्विते दर्शे सुभिस्सं च प्रजा सुखम् ॥ पापवा-
 रान्विते शुःखं तदा भान्य महर्षिता ॥ २६० ॥ राविवारेण संयुक्ता यदा स्या त्योष ज्येष्ठयोः ॥
 अमा वा स्या तदा षड्यो रंडमुंहा च जायते ॥ २६१ ॥ चैत्रस्य शुक्लपंचम्यां पूर्ववायुर्दना गमः ॥
 भाद्रे गुणत्रयं मोल्यं प्रास्या ना ज्ञायते तदा ॥ २६२ ॥ ज्येष्ठस्य शुक्लपंचम्यां दृष्टिः पश्चिमं सार-
 तः ॥ तदा चतुर्गुणं मोल्यं भान्यानां कार्त्तिके भवेत् ॥ २६३ ॥ आवणे शुक्लपंचम्यां दृष्टिर्वि-
 तो दिनद्वयम् ॥ दक्षिणे पश्चिमे ज्येष्ठं दुर्भिस्सं भान्यसंख्यः २६४ ॥ अथ ग्रहचारवसात्सर्ववस्तुनां म-
 हर्षता ज्ञानम् ॥ यदि तिथिर्भौमस्य क्षेत्रे कोऽपि ग्रहस्तदा ॥ २६५ ॥ परमासं तु य भान्यानां

जायते च महर्धता ॥ २४२ ॥ शुक्रक्षेत्रे कुजे मासं द्रव्यं सर्वमहर्धता ॥ चंद्रे नदिना धेनु च स-
 ३५५ वरेणोऽशुभं तदा ॥ २४३ ॥ प्रानौ राहो सर्वधान्यमहर्धं राजविग्रहः ॥ शुक्रक्षेत्रे च चंद्रे च-
 चंद्रे क्षेत्रे भूगोऽस्मृते ॥ २४४ ॥ पायंडानां भवेद्द्विर्धान्यानां च महर्धता । सविक्षेत्रे भूगोऽशुने प-
 शूनां च महर्धता ॥ २४५ ॥ बुधक्षेत्रे प्रानौ चन्द्रे सर्वधान्यमहर्धता ॥ शुक्रक्षेत्रे गुरो भौमे कर्प-
 सादिमहर्धता ॥ २४६ ॥ भौमक्षेत्रे प्रानौ राहो ताभ्यादीनां महर्धता ॥ शनिक्षेत्रे प्रानौ रा-
 हो शुभिक्षेत्रं चंद्रे भास्को ॥ २४७ ॥ पशुनाशे धान्यच्छिर्मुडादीनां महर्धता ॥ गुरुक्षेत्रे ग्रानौ
 राहो पशुनाशस्तथा क्षयात् ॥ २४८ ॥ भौमे राजविरोधश्च बुधे च छिन्नभूयसी ॥ भौमक्षे-
 त्रे यदा संति राहु भौमार्क भार्गवाः ॥ २४९ ॥ वरा मासं शुद्धकर्प्यं स दत्तस्त्रि महर्धता ॥ मंद-
 क्षेत्रे यदा संति मन्दराहु बुधास्तथा ॥ २५० ॥ चतुःपदानां नाशश्च द्विपदानां च जायते ॥
 भौमक्षेत्रे यदा संति शुक्र भौम निष्ठा कराः ॥ २५१ ॥ तदा मुक्ता पशूनां च श्रेयस्य च महर्ध-
 ता ॥ शुक्र भौमो गुरु क्षेत्रे प्रजापीडा च जायते ॥ २५२ ॥ ग्रह राशि समायोगे फलमेतत् ॥

कीर्तिर्वत् ॥ अथ एषां परत्वेन गृहोदयफलम् ॥ चंद्रोदये कुजक्षेत्रे नृषधान्यस्य चंद्रयः
 चंद्रोदयो भृगुक्षेत्रे स्वल्पदृष्टिः क्रियादिके ॥ २७१ ॥ मृगापीडा बुधक्षेत्रे सोमभृगोदये
 भवेत् ॥ एवं क्षेत्रे तुला दृष्टिः शनि सोमभृगुदये ॥ २७२ ॥ चंद्रक्षेत्रे राहुचंद्रबुधा-
 ना सुदयो यदि ॥ एषां संध्या चंद्राभिहितमतिदृष्टिश्च जायते ॥ २७३ ॥ अदितौ बुधक्षे-
 त्रे च यदि राहुशने श्वरो ॥ पशुक्षयः मृजापीडा धान्यानां च महर्षिता ॥ २७४ ॥ बृ-
 ऋक्षेत्रे सोमसूर्यसूर्यपुत्रोदयो भवेत् ॥ उदयास्तमनं पीडा जायते च महर्षिता ॥
 यदोदयः शनिक्षेत्रे भोमभास्कार्यो भवेत् ॥ दूतानां च तदा दृष्टिर्गुह्यानां रक्तवा-
 सताम् ॥ २७५ ॥ यदा समुदयं याति शनिक्षेत्रे शने प्रचर ॥ तदा तदृगानां काष्ठानां लो-
 हानां च महर्षिता ॥ २७६ ॥ अथ नक्षत्रस्थितग्रहवसन्तमहर्षिताज्ञानं ॥ मुरुर्गुह्याविश्रां-
 यो तदा धान्यमहर्षिता ॥ मंगलस्य च कालस्य शनो सर्वत्र मंगलम् ॥ २७७ ॥ अग्नि-
 वणो यदा र्द्रायां शनि रश्मेस्तदा भयम् ॥ बुधभाद्रे च दृभिस्तं मुधिसुभृगुनंदने ॥

संक्षि ॥ २७६ ॥ सुनिष्ठं चानुराधायां यदि श्रेयग्रहाः स्थिताः ॥ कल्याणं चैव सौभाग्यमस्
 २७७ पा संस्थिते गुरौ ॥ २८० ॥ कर्पासा वहवो मंदे भौमे कटकपीडनम् ॥ दुर्येति लाघवमा
 धाश्वमहर्ध्वकालतः ॥ २८१ ॥ सूर्ये सर्वाणि धान्यानि महर्ध्वारिण भवंति च ॥ प्रु-
 क्रेच महती वर्षा प्रस्थानि सकलानि च ॥ २८२ ॥ मूले गुरौ कुलत्थानां मुद्गानां व-
 हुधा भवेत् ॥ भौमे मूलस्य चापस्य दुर्येच सर्वसंपदः ॥ २८३ ॥ पूर्वाषाढा गते भौ-
 मे पीडा स्यात्पशुपक्षिणाम् ॥ केतो महर्ध्वताधान्ये पूर्वाषाढ गते भवेत् ॥ २८४ ॥
 उत्तराषाढ के जीवे गुहानां च महर्ध्वता ॥ भौमे च प्रुष्यजातीनां जायते च महर्ध्वता
 ॥ २८५ ॥ अभिजिन्ना कि नक्षत्रे दक्षच्छाया सुतो भवेत् ॥ सर्वप्रस्थानि जायते सुधि-
 र्धं च कुजे तथा ॥ २८६ ॥ श्रवणे च यज्ञजीवं स्तहास्युः सर्वसंपदः ॥ दुर्येनाश्वश्च भू-
 पानां प्रानो भूरि उत्तीरकः ॥ २८७ ॥ कृत्तिकायां च रोहिण्यां यदा जीवो हि तिष्ठति ॥
 मध्यमा द्विच प्रस्थानि तदा वहिष्ठ मध्यमा ॥ २८८ ॥ आर्द्रायां मृगश्रिषे च यदा च च-

स्थितिः स्थितिः ॥ सुभि ह्मं च सुवृष्टिश्च प्रजानां च महा प्रिवम् ॥ २८ ॥ पूर्वाल्पाणि
 ह्येहस्ते मघायां च यदा गुरुः ॥ सुभि ह्मं च सुवृष्टिश्च प्रजानां स्यादरेजाता ॥ २९ ॥
 चित्रा स्वात्यो र्धदा जीवस्तदा चित्राः प्रयोधराः ॥ विचित्राणि भवन्त्येव प्रस्य निच
 क्वाचित् क्वचित् ॥ ३० ॥ विप्ररावा मैत्रयो र्जीवे धान्यं वर्षा च मध्यमं ॥ ज्येष्ठा मूले मास
 युगं विष्टि म्मांस ह्येन च ॥ ३१ ॥ पूर्वाषाढा ज्ञाया विष्टि यो यदि दृष्ट्यतिः ॥ तदा रेणं
 सुभि ह्मं च सुवृष्टिश्च प्रजायते ॥ ३२ ॥ अनाष्टिश्च दुर्भिक्षं रेवत्यां संस्थिते गुरो ॥
 धनिष्टायां च शुक्रे च पीडा भवति हस्तिनाम् ॥ ३३ ॥ कूरा कक्र गताः रेवटा स्सौम्याः प्र
 दानि चारणाः ॥ तदा भूप्रसूयो युद्धं जगद्गोरभयादि तम् ॥ ३४ ॥ अथैकमासे पंच वार फल
 म् ॥ शुक्लाद्ये मास के पंच पाप रेवटस्य वासराः ॥ प्रजा पीडा भवेत्तत्र धान्यस्यापि म-
 हर्षता ॥ ३५ ॥ मासे पंच शुभा वारा यद्ये कस्मिन् प्रजायते ॥ सुभि ह्मं सर्व प्रस्यानां तदा
 च सुखिनो जनाः ॥ ३६ ॥ मेषे पंच प्राणि श्वेव माद्ये पंच रवि स्तथा ॥ फाल्गुने पंच भोम-

अथ महोनाशाय कौवलम् ॥ २८ ॥ अथ चंद्रस्यष्टगोत्रातिस्तत्फलम् ॥ चंद्रायामान्वतां भो-
 नमेयगोऽभ्युदितो मतः ॥ समष्टुगोवृषे कुंभे शेषभेषूत्तरेन्नतः ॥ २८ ॥ याम्योन्नते
 चतुर्भिस्तं विरुद्धस्यात्मने विधौ ॥ सुभिस्तंसौम्यदिग्भागे चोन्नते मृगालां छने ॥ ३०० ॥ पृ-
 लाकारे विधौ भीतिः शोदितो महतां रुजः ॥ अथ प्रति मास संक्रातिवसात्समर्घमहर्षज्ञानम् ॥
 सुभिस्तंसंक्रमे सौम्ये चारेऽधिक शुद्धर्षके महर्षं पापचारे वामुहर्षं चाक्षुर्भूति ॥ ३०१ ॥
 पूर्वसंक्रममाद्विनिमिते च संक्रमे रवेः ॥ सुभिस्तं स्याच्चतुःपंचमितीभेतु महर्षिता ॥ ३०२ ॥
 पक्षेभे संक्रमे चाति दुर्भिक्षं रौरवं भवेत् ॥ अथ ग्रैष्मणारदधान्यानिःपतिज्ञानम् ॥ वृषे संक्रम
 रोगान्नोः केन्द्रस्वांत्यगतैः प्रष्टुभैः शारदीधान्यानि व्यतिरुजमाहायने मता ॥ ३०३ ॥ पापे
 रैवं स्थितैः स्वल्यामिष्टैर्मिष्टाप्रकीर्तिता ॥ पापाधूनगतेन प्रष्टे ह्यमन्नमपि प्रास्यक्रम ॥
 धूनप्राप्तुगते पापे निष्पतिस्वल्पिका भवेत् ॥ द्रव्यं वृष्टिक संक्रातो विज्ञेयं ग्रीष्म
 धान्यकम् ॥ ३०५ ॥ चापादित्रितये सूर्ये सौम्यैर्युक्ते क्षिते ग्रहेः ॥ सरहान्यं

संक्षिप्तमर्षस्यात् प्रसृतं तद्धान्यजीविभिः ॥ ३०६ ॥ पार्थय्युक्ते क्षिते धान्यं महर्षि जायते रिव-
 र्धं लम् ॥ एवं मेपाद्विगे श्रेयमे धान्यं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ३०७ ॥ अथ संक्रातिवप्राद्वर्षयोर्ल-
 मास्योरुत्पातदिवसात् धान्यादीनां समर्षमहर्षि ज्ञानम् ॥ श्रेयमे प्रसृतं रततो मूलं रसधा-
 न्यं प्रसृतादिकं ४ हेमाद्यं ५ तुरगो दं वस्त्रं ७ मणिरु काचं ८ वु १० धान्यं के ११ ॥
 ३०८ ॥ मूलं च १२ क्रमो ज्ञेयं मेपाद्यं के पाले क्षिते ॥ दं प्रेका योर्षि मायां चेदु पर-
 गोः ति वर्धयाम् ॥ ३०९ ॥ परिवेषस्तथा दंड उल्का पाता ह्युदकाः ॥ जायतेऽत्र तदति-
 या वस्तूनां च महर्षिता ॥ ३१० ॥ रक्षो सोम्ये क्षिते ज्ञेया उत्पतिऽत्र महर्षिता ॥ अथ वृक्षादि-
 पत्रं पुष्पफलाद्ये धान्यादिनि ध्याति ज्ञानम् ॥ वृक्षादौ वहुभिः पुर्व्वे स्मृता वृष्टिः प्रजायते ॥ पत्रे-
 रत्त्वल्पतरु वृष्टिः र्व्वर्षा भिश्चे त्स्य योऽधिकः ॥ ३११ ॥ मधुके वहु गोधूमाज्जवाऽस्युर्ध्वजैः
 फलेः ॥ सुभिर्क्षं नागनिर्व्वैः स्था च्छालं वृक्षे श्यालयः ॥ ३१२ ॥ अथ रत्यादधिकं धा-
 न्यमर्चुनादधिकं जलम् ॥ क्षेमसा श्रेष्ठं प्रालाप्रैः बोद्धं वाजं वृतं स्ति लाः ॥ ३१३ ॥ दुर्ध-

सन्निहोः खदि रै रोगः कुटजैः परिकीर्तितः ॥ दूतिसमर्पकाङ्गसमाप्त ॥ अथ दृष्टि ज्ञानार्थमेव गार्भज्ञानम्
 ३११ मार्गे शुक्लादितो द्वेयो मेघगार्भसमुद्भवः ॥ फाल्गुणे ताम्रवर्मा कौत्सि तथा आच्च ख-
 रानिलात् ॥ ३१४ ॥ चैत्रे तु परिधे दृष्ट्या वायुनावाग्नेरिवया ॥ अथ केयांचिन्मतातरे
 केचिन्मार्गादि मासेषु श्रोचुर्गर्भस्य लक्षणम् ॥ गर्ज्जनात्पवनान्तोपवर्षस्मादिषु-
 तोऽथवा ॥ ३१५ ॥ अथ शुभगर्भलक्षणानि ॥ ध्वेतनीलाङ्गजा आच्च जन्वाति विगल-
 ज्जलाः ॥ यास्त गार्भश्चिते मेघा उदगीशान पूर्वजाः ॥ ३१६ ॥ पुष्टिं त्रयांति ते ग-
 र्भाः विद्युद्वाताभिर्वर्ज्जितैः ॥ भाद्रपदे द्वायोत्पन्नाविप्राखोत्था वह्दकाः ॥
 ३१७ ॥ अथ गार्भधारणादिना दृष्टि ज्ञानम् ॥ दृष्टि गार्भाहमास्य पक्षे विष्व १३ विनै-
 र्भवत् ॥ रात्रि गर्भे दिवा दृष्टिर्दिवा गर्भे निशि स्मृता ॥ ३१८ ॥ अथ प्रकारेण गर्भाह्व-
 ष्टि ज्ञानम् ॥ आस्यै कादशी कृष्णां कृष्णादोभाधमासके ॥ द्वादश स्वपि घट्टेषु विद्युद्वाता
 र्भे गज्जितैः ॥ ३२० ॥ रोहिण्यादिषु सूर्यस्य भेषु दृष्टि र्भवेत्कमात् ॥ अथ पुनरन्यत्र-

मन्त्रिकोऽपि मेषगर्भज्ञानं हृदि ज्ञानं च ॥ मूलक्षेत्रे भास्करे याते तदा रम्यदृशा हकम् ॥ ३२० ॥
 ३३ विद्युदभादिना गर्भे यत्र तत्र दिने भवेत् ॥ क्रमादाद्दिनि क्षत्रे भानो हृदिः प्रजा-
 यते ॥ ३२१ ॥ अथ प्रकारेण ॥ मूलभाद्रपदी यावद्देव्युक्ते कार्दमस्वपि । पीपमास-
 दिनक्षेत्रेषु गर्भस्त्वभादिना भवेत् ॥ ३२२ ॥ तत आर्द्रादिके सूर्ये क्रमाद् हृदिः प्रजायते ॥
 पुनः प्रकाशं तस्मै ॥ अग्निन्यादिद्विष्विहोर्ध्वेने दृश सुवेदनेत् ॥ अभादिके तदा गर्भः
 जगद्भिर्हृदि दत्तमात् ॥ ३२३ ॥ मेषाऽर्कदिन नारम्य द्वेयमेव मन्त्रादिना ॥ अथ ज्ञाना-
 न्यतो हृदि ज्ञानम् ॥ यदि साभ्रं नभो मध्यं सुभिष्वाचापि मेऽवके ॥ यद्यभ्रं दृश्यते व्यो-
 म्नि चेका दृशं तत्तु का निर्के ॥ ३२४ ॥ आयादे मासि हृदि दृशं तदा भवति भूयसी ॥ आ-
 गायस्यां यदा विद्युद्वर्षां प्रावणे तदा ॥ ३२५ ॥ पीपे काले दृशं स्यां चेद् हृदि भिद्भवे-
 तथा ॥ सप्तम्यां माघ शुक्लस्य भवेद्भादिके यदा ॥ ३२६ ॥ ज्येष्ठे काले न चेद् हृदिः सुहृ-
 दिर्बहुला मता ॥ अथ ज्येष्ठ शुक्लाष्टम्यादिदिनं चतुष्टये चायुफलम् ॥ ज्येष्ठेऽष्टम्या तु

शि शुक्लायाश्च तुर्युदिवसेषु च ॥ आवणादोऽक्रमाद्वृष्टिर्मेघेऽप्राप्तेः संमीरणेः ॥ ३३७ ॥
 ३३६ अथ स्वात्यादिषु वृष्टौ आवणादावनायतिः ॥ ज्येष्ठे च तुर्युधिसिषु स्वातीमारभ्य वर्षणे ॥ क्रमा-
 च्छ्रावणे के वृष्टिर्नर्भव न तत्र तत्र ॥ ३३८ ॥ अथाषाढ शुक्ल द्वितीयादिदिन चतुष्टय फलम् ॥
 आषाढे आसि शुक्लायां द्वितीयायां प्रवर्षणम् ॥ तृतीयायां पुरोवायुर्मेघः पूर्वेच्च दिशातः
 ॥ ३३९ ॥ चतुर्थ्यां जलदः प्राच्यां दक्षिणे यदि मारुतः ॥ पंचम्यां पूर्वदिक्ज्येष्ठादा
 वणा मा सतः ॥ ३३९ ॥ ध्रुवं वृष्टिः शुभाक्षया नमान्मास चतुष्टये ॥ चतुर्थ्यदिने ज्येष्ठे
 यदि वृष्टिर्निर्गतम् ॥ ३३९ ॥ तदा स्यादति वृष्टिश्च धान्यनाशः प्रजायते ॥ व्याख्य-
 प्रत्यभवे द्वायो द्य हेतुभिस्समीरितम् ॥ ३३९ ॥ तृतीया पंचमीषस्त्रेयश्चुदक् पूर्वजो मरु-
 त् ॥ तदास्य धान्यनिष्पत्तिर्वहुला वृष्टि रुक्ममा ॥ ३३३ ॥ अथ आवणा शुक्ल पंचमी फल-
 म् ॥ पञ्चम्यां आवणे शुक्ले द्वाहं वृष्टिर्भवेद्यदि ॥ व्याख्य फलप्रभव वेदाद्युर्दुर्भिस्त्रिं जायते
 तदा ॥ ३३४ ॥ अथ सूर्यस्मरेवत्यादि भेषु वृष्टि फलम् ॥ रेवत्यां वर्षणे तोयं न प्रयेद्धान्यम्

संक्रिं वं ३३४

माधियने ॥ भरायां तद्वयं वृष्टिः कृत्तिकायां न चैव वेत् ॥ ३३५ ॥ रोहितायां गर्जने वृष्टि
 इत्येवास ह्येतानाम् ॥ मृगशीर्षे यदा न स्याद्वृष्टिर्भूयो बह्वदका ॥ ३३६ ॥ अथ संक्रांतिदिने
 वृष्टिफलम् ॥ संक्रांति दिवसे वृष्टौ मार्गकार्तिकयोर्द्वेहा ॥ वर्षान्तमभ्यसं क्षेप्ये पौषे
 माघेऽति चोत्तमम् ॥ ३३७ ॥ शुभिसंघसुभा वृष्टिः फल्गुणादि चतुष्टये ॥ रोगस्त्वार्था
 दमासं स्याच्छूवणे वृष्टि रत्तमा ॥ ३३८ ॥ आद्रे रोगस्तदा सौख्यमाभिवने वर्षयो भवे
 त् ॥ ३३९ ॥ अथ काकर्नाडफलम् ॥ सवृक्षे काकनी हे स्यात्त्रनीच्या वृष्टि रत्तमा ॥ उद-
 रयास्ये भवेन्मध्ये नैऋता वांति मास्मृता ॥ ३४० ॥ अल्पवृष्टि रथो ज्ञेया सद्व्यं स्या-
 च्छिवेऽनिले ॥ मध्ये मध्याऽथ वृक्षा मे बहुला वृष्टि रीरता ॥ ३४१ ॥ इति भीतिर्महा-
 घोरा नोडे सर्वदिशां गते ॥ नोडे संकट के भीति रसानां जायते भुवम् ॥ ३४२ ॥ प्रागुद-
 कपश्चिमा ईस्ये सुवृष्टिः कैश्चि दीरिता ॥ अथ हि हि मांडफलम् ॥ स्थिते दूच्च प्रदेशे वृष्टि-
 दिभां देष्टु चोत्तमा ॥ वृष्टिः संजायते मासैरथो वक्रांड संख्य कैः ॥ ३४३ ॥ निम्न प्रदेशे सस्ये

॥ अथ ध्रुवस्वल्पा वृत्तिः प्रजायते ॥ वृत्तिर्नैव भवेन्मासैश्चोर्द्ध्वक्रांढ संख्यकैः ॥ ३४४ ॥

अथ रोहिणी चक्रम् ॥ द्वादशरात्रिखेच्चक्रं मेघ संक्रान्ति भादिनः ॥ चतुर्द्विष्टुसमुद्राश्व-

पर्वत	तट	संधि	मध्याह्न	संधि	तट	तट	पर्वत	प
प	५	४	३	२१९	२८	२७	२६	प
त	६						२५	त
स	७						२४	सं
सं	८						२३	सं
सं	९						२२	सं
त	१०						२१	त
प	११						२०	प
प	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	प

चतुःकोणो ध्रुवपर्वताः ॥ ३४५ ॥ समुद्रपाथ्व्यो-
र्यो र्यो तटस्तच्छैल्योस्तथा ॥ मध्यो र्यो
संध्योः स्तन्नसाभिजिह्वा गणान्यसेत् ॥
३४६ ॥ द्वादशसमुद्रेषु तथैकैकं तटादिषु ॥ रो-
हिणी संस्थिता यत्र क्षेपं वृत्तिफलं तथा
॥ ३४७ ॥ तटेषु शोभना वृत्तिर्महावृत्ति-
स्तु सागरं ॥ अना वृत्तिर्गिरी देशे खंडे वृत्ति-
स्तु संधिषु ॥ ३४८ ॥ अथ सप्तनाडी चक्रम्

एकविंशतिखेच्चक्रं साभित्सप्तनाडिकम् ॥ चंडावायुस्तथा चन्द्रः सौम्यानीराज-

३४९

मं लि ला मृता ॥ ३४८ ॥ नाडीनां सप्त नामानि ज्ञेयान्येतानि पंडितैः ॥ क्रमानुसार्क भोमे
 ३४९ ज्य सुक्र ज्ञा ज्ञा स्त दी प्रदाः ॥ ३५० ॥ अथैतदेव सद्ययति ॥ चंडारव्याभरणी हूह

अथ सप्त नाडी चक्रम्					
च	रा	वा	व	नि	मो
नी	रा	नी	रा	ज	ल
रु	रे	ख	गा	शु	प
वि	खा	चि	ह	उ	म
भा	ज्ये	मू	घ	उ	मि
म	ज	रे	ज	प्र	ध
प्रा	ख	म	व	ख	चं

नाडीरूवेः स्मृता ॥ ३५१ ॥ चिन्नामूलं मृगात्यच दहना
 रव्या कुजस्य च ॥ धर्वाबाढा करे भार्गो सौम्या नाडी वृह
 स्पतेः ॥ ३५२ ॥ पूभोपाच्च पुन धिर्लज्जफानी रा भुगो
 ता ॥ पूफा प्राता भिजि तुल्य जलानाडी बुधस्य सा ॥
 ॥ ३५३ ॥ प्रव हयं मघा प्रलेवा दंदोर मृत नाडिका ॥ अ
 चेतसु ग्रह संस्थिते फलम् ॥ अहोरात्रिक नाडी स्थानः सौम्याः
 चानान् चाननाड्या तेषां निजम् ॥ चानि नाड्यां स्थिता दाहं सौम्य नाड्या महाभुक् ॥

तानि ॥ ३५५ ॥ नीरनाड्यां पयां दृष्टिं जलनाड्यां च वक्ष्यामः ॥ कुर्वन्त्याहतनाड्यां च महो-

दृष्टिं न भक्ष्याः ॥ ३५६ ॥ एकोऽयं निजनाडी स्थो हस्ते ततः तलं ग्रहः ॥ कुजस्त्वसर्वना-

डी यस्त्वितो नाडी समुद्भवम् ॥ ३५७ ॥ आर्द्राद्वर्द्धा गते सूर्ये नाड्ये को फलमुच्यते ॥ च-

यने के च नाडी स्थीः प्रायासो म्याश्च खेचराः ॥ ३५८ ॥ मिश्राश्चंद्रसमा युक्तास्तदिने

दृष्टिरुत्तमा ॥ तोयराशि गता मिश्रास्ता व दृष्टिं प्रकुर्वते ॥ ३५९ ॥ पावनीयां प्रागध्वं

केवलः स्वल्पदृष्टिदः ॥ शशिश्रेः खेचरैः सौम्यपापैर्विहो यदा प्राणी ॥ ३६० ॥ पावनी

यंच तदा तुच्छं भान्या दीनां च नाशानम् ॥ यस्य देवस्य नाडी स्थी विद्युस्ते न गृहे ण च

॥ ३६१ ॥ युक्तश्रे दृष्टिदो क्षेपो यदि क्षीणतरो न हि ॥ चंद्रः पीयूषनाडी स्थः शिश्रेः

खेदेऽथ संयुतः ॥ ३६२ ॥ त्रिचतुःपंच सप्ताहं शुभदृष्टि प्रदो मतः ॥ जलनाडी स्थिते

चंद्रे मिश्रखेचरसंयुते ॥ रिगार्द्रभ्रतत्पदमदृष्टिः पञ्चाहं ज्ञापयते शुभा ॥ नीरना-

ड्यां गते चंद्रे शिश्रेः खेदेऽथ संयुते ॥ ३६३ ॥ पावो न तदिदं दृष्टिं वृंहतो या भवेद्दृष्टा ॥

॥ निराख्ये जलार्थं यथेनाडी स्याः खंचराः क्रमान् ॥ ३६४ ॥ भुल्य १८ के १२२ स ६ सखा
 ३६८ कान्वासा न्वहु दृष्टिदाः ॥ सौम्या नाडी स्थिताः सर्वत्र्यहं दृष्टि प्रदाः खगाः ॥
 ॥ ३६५ ॥ चंद्रवाद्याग्रि नाडी स्याः महावाता तप प्रदाः ॥ योगे शुभाधिके नाडी नि
 र्जला सजल प्रदाः ॥ ३६६ ॥ योगे कुराधिके ज्ञेया सजलानि र्जला बुधैः ॥ सौम्य नाड्यो
 स्थिता पापा भ्राना दृष्टि कार मताः ॥ ३६७ ॥ शुभां स्तोयां प्राकाशे स्युः स्वल्प दृष्टि प्र
 दास्तदा ॥ एक नाडी स्थिता भौमजीव चंद्र मसौ यदा ॥ ३६८ ॥ वारिष्णां भवे तृथीव
 हु दृष्ट्या तदा खिला ॥ भुगु सौम्यौ परैकत्र स्यातां जीवां चित्तो तदा ॥ ३६९ ॥ दृष्टि-
 स्याद्देहुला कस्मा चंद्र योगे विप्रो वतः ॥ भुगु चंद्र मसौ पापेः खे चरे र्यादि संयुतो ॥
 ॥ ३७० ॥ तदा खल्येद का दृष्टिः जल योगे मह त्यपि ॥ इति सप्त नाडी फलम् ॥ अथ
 शुक्र स्थिति वशा इह धेना वना च दृष्टि ज्ञानम् ॥ मयादि पंच चिह्न स्थः शुक्रः प्रागुदितो नि-
 षाम् ॥ दृष्टि कृत्य श्रिमा प्रास्थः स्वत्यादि त्रितये स्थितः ॥ ३७१ ॥ वैपरीत्य भितो-

संनि जातो भृगुः कुर्यादवर्षणम् ॥ कुर्यातां बहुलं वृष्टिं वृष शुक्रौ च संयुतो ॥ ३७२ ॥
 १६६ समुद्रं प्रोषितुं प्रकृतस्तयो र्तगो र्गो रविः ॥ शुक्रात्सप्तमगश्रुद्रो वृष्टिदस्त्याच्छुभोक्षितः
 ॥ ३७३ ॥ मंदादिद्वन्द्वन कोणस्य श्रुद्रमा वृष्टि कृतदा ॥ ग्रहाणां मुदये चास्ते राश्य
 नार्गतेऽयने ॥ ३७४ ॥ संयोगे वापि पक्षांते प्रायो वृष्टिः प्रजायते ॥ उदयास्तमनं शु-
 क्रौ वृषश्च वृष्टि कारकः ॥ ३७५ ॥ चलत्यंगारके वृष्टि र्त्रिधा वृष्टि प्रशन्नैश्चरे ॥ वारि-
 ष्णां नदी कृत्वा पश्चात्संचलते गुरुः ॥ ३७६ ॥ शुक्रे चास्तमि ते मंदे त्रिविधः पृथग्जा-
 यते ॥ भीमा र्क्षी एक राशौ चेद न्योन्यं सम सप्तगो ॥ ३७७ ॥ अथास्मिन् रवि नक्षत्र प्रवेष्टे-
 र्त्वीपुंयोगो दोषो दृष्टि क्षान्तम् ॥ त्वीसंज्ञानि दृष्टार्द्रो तो भानि प्रोक्तानि कोविदैः ॥ विष्टा-
 र्वादित्रयं त्वीपुं संज्ञानीतराणि च ॥ ३७८ ॥ रवे र्द्विस्त्रिप्रवेष्टस्य काले चंद्रार्कयो र-
 मे ॥ त्रिस्त्रिच च यादृशे स्यातां विज्ञेयं तद्वृष्टात्कालम् ॥ ३७९ ॥ त्वीपुंसोस्तु महा वृष्टि-
 रल्यार्षी ह्नीवयोः कारित ॥ अत्र भ्रष्टाया र्त्रिप्रयोः पुंसोः त्वीवयो र्वा न किंचन ॥

३०० ॥ ३८० ॥ तीयवारविलम्बेचवृष्टिद्योगेयद्वारेवेः ॥ नक्षत्रं च प्रवेष्टास्त्वा तदा वृ-
 ३०० ष्टिसुप्रोभना ॥ ३८१ ॥ निशायामर्द्धरात्रे चारवे नक्षत्रं प्रवेष्टाने ॥ बहुतोयासु वृ-
 ष्टिस्त्वादित्यथानैवजायते ॥ ३८२ ॥ अथसूर्यर्क्षे चंद्रक्षीतौ वृष्टिज्ञानम् ॥ आर्द्रादिपंचभ-
 प्रभारवत्यादिचतुष्टयम् ॥ पूर्वाषाढाचतुःकंच चंद्रक्षीणि चतुर्दश ॥ ३८३ ॥ प्रेक्षा-
 णिरविधिस्तानिविज्ञेयानिमनीषिभिः ॥ सूर्ये चंद्रक्षीणौ वृष्टिप्रचंद्रे सूर्यर्क्षे गोस-
 ति ॥ ३८४ ॥ पूर्वादिपंचके सूर्ये चंद्रे चंद्रक्षीणेऽपि च ॥ उभौ चंद्रक्षीणौ स्यातां स्वत्या-
 वृष्टिस्तदाभवेत् ॥ ३८५ ॥ तावेव यदि सूर्यर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते ॥ अथादकप्रमाणम्
 युग्मा ३ ज १ गो २ मत्स्य १२ गते प्राप्तांके भानुर्यदा कर्कटके प्रयाति तदा प्रातादु-
 १०० हरि ५ काश्र्मुके ८ ३ ५० तुले १७ पाकन्यादीभुग १० यो रप्ति तिः ८० ॥ ॥
 कुलीर ४ कुंभालि ११ ८ गते यदा स्यात्पक्षिप्राकादं २६ भुवि वारिप्रातः ॥ ३८६ ॥ अर्द्ध-
 पर्वतभागेयुतद्वर्द्धं मास्ते गतम् ॥ तद्वर्द्धं याति मेदिन्यां चारुहेरा च भाषितम् ॥

शि श्रात योजनमुत्तुंगं सहस्रं विसृतं ततः ॥ आदकस्य प्रमाणेऽयं चारुहेरा च आयितम्
 ॥ ३८८ ॥ अथ रविनक्षत्र वाहनम् ॥ दिनेषा आत्सूर्य भवं हि घसं विगणय सप्तोदुतमर्क
 वाहनम् ॥ भवेत्तुंगः प्राक्कश्च श्रुक् रः प्राक्वान को गो म्महिषश्च रदुर्दः ॥ ३८९ ॥
 अथ वर्षाकाले सद्योदधि लक्षणानि ॥ नभः काकोड भंगो दृक् निभंति तिरसन्ति भम् ॥ प्रां-
 त्यो जला वामे घास्यु गिरि कज्जल सन्निभाः ॥ ३९० ॥ जलजंतु समा कार मूलाभ्या
 सव्यगाभ्यापि ॥ गिरयोऽज्जन संकाशा सवाय्या प्रिरिव नर्तनम् ॥ ३९१ ॥ शुभ्रनेत्र
 निभः क्षीद सन्निभः स लिलह्लुतः ॥ सन्निधौ परि वेषा क्य भ्यंद् माशो घट्टिद्विद्वत् ॥
 ॥ ३९२ ॥ विक्रतिर्ध्वगो वाला स्तेतु वंधोद्यभाः पथि ॥ जले मीनो रक्तवो रावो भे कानो
 नीरसं जलम् ॥ ३९३ ॥ व्यालानो मेधुनं ह्रसा दारो हः पशवस्तथा ॥ मसिकान् लम्पतां
 याति सांडा स्यात्सुपि पीलिकाः ॥ ३९४ ॥ उत्सृष्टाश्च गृह्णाद्रावोने क्खंति गन्ननं वहिः ॥
 खनंति भूतलं प्वानो माज्जाराः पशवः रवुरैः ॥ ३९५ ॥ स्तेरायान्त्यं कुराभ्योर्द्विप्रारदारो

१
 ५ ह्य । तरो ॥ तृणाग्ने वृश्चिका रोहो गवा मूर्द्धनि रीक्षणाम् ॥ ३८६ ॥ पक्षिणां धूलिभिः
 २ रत्नान्प्रदीप्ते मेघ गार्ज्जनम् ॥ अग्नि दण्डा वृत्तिर्मघः रीतिः प्राची भवो मरुत् ॥ ३८७ ॥
 ३ नृत्यमिदं धनुः संध्या रागो ऽधो मेघ गार्ज्जनम् ॥ प्रागुदक् सैव दिक् कृपा तारका सौ
 ४ दामिनी तथा ॥ ३८८ ॥ मध्ये तीव्रात पश्चा न्हिनरा निह्रातवो भृशम् ॥ विक्षेपा ल
 ५ क्षणैरेभिस्सद्यो वृष्टि र्धना गमे ॥ ३८९ ॥ नो माघे हिमवर्षाणं न मरुत भ्रंङ्गा स्तथा फा
 ६ ल्युने चैत्रे वृष्टि विवर्जितं नृगगनं मेघेन दूणैरिविः ॥ वैष्णवे नवर्गो पलस्य पत
 ७ नं ज्येष्ठे न च राद्वोरवि र्वृष्टि स्स्वल्पतरा सदैव कथिना वर्षा सुनित्यं बुधैः ॥ ३९० ॥
 ८ इति र्द्युका एडाः ॥ अथोपश्रुतिप्रकुनाः ॥ गणाधीशं प्रपूज्या दौकार्यं तस्मै निवेद्य च ॥
 ९ साक्षतं सफलं तोयं पात्रमादाय संव्रजेत् ॥ ४०१ ॥ उपश्रुते श्रुत्वा याद्य चण्डालादि
 १० महेवहिः ॥ निग्रासुहजने तत्र स्थित्वा सुत्वा क्षतान् क्षिपेत् ॥ ४०२ ॥ अथोपश्रुति
 ११ मन्त्राः ॥ उ० उपश्रुतिर्महा लक्ष्मी ध्या एडाल महे वाशिनी ॥ यन्मया चिंतितं कार्यं सत्यं ॥ ३९२

वदसुरेष्वरि ॥ ४०३ ॥ ब्राह्मणानां प्रातं दत्त्वा कर्पिलानां प्रतत्रयम् ॥ तेन कर्पेन लिङ्गा-
 सियदि सत्यं न भावसे ॥ ४०४ ॥ पंचानां पांडुपुत्राणां ज्येष्ठो भ्राता युधिष्ठिरः ॥ ते-
 न सत्येन धर्मेन सत्यं ब्रूहि नमोऽस्तुते ॥ ४०५ ॥ भवत्या विदितं सर्वं सर्वकार्यं वि-
 शेषतः ॥ द्रुपुकाश्रुणुयाद्वाणीं प्रह्लावाकात्रया च्चिताम् ॥ ४०६ ॥ प्राक्षिप्य च ज-
 लंतत्र समागच्छेत्स्वमालयम् ॥ तद्वाकस्यानुसारेण फलं क्षेप्यं प्रयार्थितः ॥ ४०७
 ॥ वारविशेषे नोपश्रुतिनिवासः ॥ चंडाली भवने मुख्यं चन्द्रे नाधित मन्दिरे ॥ रजकया
 मन्दिरे भौमे बोधने वैश्य मन्दिरे ॥ ४०८ ॥ ब्राह्मणी मन्दिरे जीवे भार्गवे प्राय्य द्यो-
 धितः ॥ दाश्या द्वारि शनो याया च्छेतुं चोपश्रुतिं प्रुभाम् ॥ ४०९ ॥ अथ खुवंश
 दिशकुनाः ॥ खुवंशस्य दुर्गायाः पाठस्य निवासस्तत्र ॥ पूजितं पुस्तकं पुष्पैरक्षि-
 तैश्च फलादिभिः ॥ ४१० ॥ शनो संस्थाप्य सपूज्य प्रातरेव तिलो कथेत् ॥ कुमा-
 र्युक्तं प्रमाणेन निःकास्य श्लोकं मुत्तमम् ॥ ४११ ॥ विज्ञेया प्रशकुनां तस्माद्यथार्थं

३९४ वचनाहिते ॥ अविस्मर्गनि पूर्वार्द्धस्तवर्गेतरपंचमः ॥ स्तुति लिङ्गज्जितश्रुत्यो क
 ३९५ प्रफुल्ले च शुभावहः ॥ ४१२ ॥ अथागविद्या प्रवृत्तः ॥ श्रितो मुखं कर्णेनेत्रं स्पृष्टा पृच्छ
 तिवे ज्ञानः ॥ सुवर्णधनधान्यान्ना लाभस्तस्य न संशयः ॥ ४१३ ॥ स्कंधग्रीवाकण्ठ
 दस्तस्य शोलाभो हिङ्गः खतः ॥ कुक्षिनाभिसमालंभे भक्षयानादि सिध्यति ॥
 ॥ ४१४ ॥ जंघा लिंगा कटि स्य शो कन्या लाभस्तुतोद्भवः ॥ जानुशुल्कपदस्य शो महान्
 लेशः प्रजायते ॥ ४१५ ॥ केशस्य शो भवेन्मृग्युः फलादि स्य शो ने शुभम् ॥ तृणां गार
 कसंस्थ शो काप्यं सिद्धिर्नै जायते ॥ ४१६ ॥ काष्ठपंकपदस्य शो ग्रहपीडामनो भयम्
 ॥ भृगा सामान्ना भङ्गादि स्य शो सिद्धिः प्रजायते ॥ ४१७ ॥ शून्या लये स्मरणे वा शु
 र्ककाये क्षते तरो ॥ गुल्मवन्नाथमस्थाने न शो लेशः प्रजायते ॥ ४१८ ॥ देवगेहे
 नदी तीरे दिव्यस्थानेषु भवेत् ॥ शुभदिक्षु स्थिते सिद्धिर्विदिक्षु न प्रजायते ॥ ४१९ ॥
 वस्त्रगविद्या ॥ अथ सर्वप्रवृत्तिर्णयः ॥ प्रवृत्ताह काले फलनाम वर्णान्मस्तत्र निष्पन्ननिधिचार

शिः चक्षेः ॥ योगेश्वर युक्ता नव नीश २६ भक्तान्क्षेपलं प्राह प्रथा तन्जः ॥ ४२६ ॥ एकावशे
 ३७५ ये इविलास्य धान्यराशेस्तथा स्यात्सदनस्य लाभः ॥ नेत्रावशेषे सुजनस्य संगो भ्रातु-
 स्सुतस्यैव विनाशनं च ॥ ४२७ ॥ त्रिशेषकेनेत्रक्षिणे देवदुर्गेणोद्भवो वस्त्रविनाशनं च
 ॥ वेदावशेषे नृपदर्शनं स्यादश्वस्य लाभो नृपतेः सकासात् ॥ ४२८ ॥ प्रागवशेषे
 निजवस्तुहानिः त्रियावियोगस्सुतबंधुनाशः ॥ रसावशेषे रथवाजिलाभोरिषो भयं
 चौरभयं तथा स्यात् ॥ ४२९ ॥ स्यावशेषे रिपुभिश्च युद्धे जयो भवेद्दासजनस्य ला-
 भः ॥ वस्त्रस्य लाभः क्रयतश्च लाभो मातंगे शेषे च कलत्रलाभः ॥ ४३० ॥ नवावशेषे
 मरस्य लाभः स्वस्य हानिः पुराजमुजा ॥ दणावशेषे नृपतेः सकाशाद्दण्डश्च वा-
 च्यः स्वसुतस्यानाशः ॥ ४३१ ॥ भवावशेषे कृषितीक्ष्णलाभो लाभभ्रियायाः पृथिवीप्रलाभः
 ॥ सूर्यावशेषे राजशेखरास्याद्भुत्स्य लाभस्तु विदेशगस्य ॥ ४३२ ॥ विद्यावशेषे बह-
 द्रादेशे यानं तथा क्षेपयुतं च प्राप्तम् ॥ दंडावशेषे बहुराज्यं प्रज्यस्तथा धनार्थिः स्वजनेन

वसिष्ठाः ॥ ४३३ ॥ एवं ह्येतेषु त्वप्रानस्य लाभो धनस्य लाभश्च महस्य लाभः ॥ भूषा-
 ३०६ वशेषे वपुनेन मेवं लाभस्तु तस्मात्त्वजने प्रतिया ॥ ४३४ ॥ यथा तद्वत्तस्य मतविशेषा
 त्वपथकैस्सम्यगादः प्रतियम् ॥ विचार्यवाच्यं गणकेन साधुवासाधुद्वन सुतराच प्र-
 सत ॥ ४३५ ॥ अथ नक्षत्रप्रज्ञा ॥ मघादि अय्यमातं च समीपे वस्तु दृश्यते ॥ हस्तादि-
 वसु पर्यन्तं मन्वहस्ते च दृश्यते ॥ ४३६ ॥ श्रुतता एव मातं तु स्वगृहे वस्तु दृश्यते ॥ अग्रा-
 दि प्रार्थ्य पर्यन्तं महदृष्टां तथा ॥ ४३७ ॥ तिथिचारं च नक्षत्रं ग्रहेणा समन्वितम् ॥ दिक्
 संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजे त्वनः ॥ ४३८ ॥ एकेन भूतले द्रव्यं द्वयं चेद्भांडं संस्थितम् ॥
 तृतीये जलं मध्यस्थं मन्तरि ह्ये चतुर्थके ॥ ४३९ ॥ तुल्यस्थं पंचमेतत्स्थानं षष्ठे गोमय-
 मध्यगम् ॥ सप्तमे भस्म मध्यस्थं मिलितं लघुस्तद्वारम् ॥ ४४० ॥ अथ गुणप्रज्ञा ॥ म ति-
 थिप्रहरं सपुलं तास्काचारं मिश्रितम् ॥ अग्निभिस्तु हरेद्भागं शेषं सत्वं राजस्तमः ॥ ४४१ ॥
 फलं ॥ सिद्धिस्तार्कालिकी सत्वे राजसानुं विलं वतः ॥ तमसा निःफलं कार्यं क्षातव्यं प्रश्न-

किं कोविदेः ॥ ४४२ ॥ अथायत्तकप्रश्नः । तिथिप्रहरसंयुक्ता तारका चारमिथित्वा ॥ सप्तभि-
 स्सुहरेज्ञायं श्रेयंतु कलमादिशेत् ॥ ४४३ ॥ फलं ॥ एकश्रेयंतथा स्थाने द्वितीयेप-
 थिवर्तते ॥ तृतीयेऽर्थद्विमागेतु चतुर्थे ग्रामनादिशेत् ॥ ४४४ ॥ पंचमे पुनरावृत्तिः
 यथे व्याधिमुतं चरेत् ॥ अयं क्षेत्रं सप्तमे वै चैतत्प्रश्नस्य लक्षणात् ॥ ४४५ ॥ अथ
 गर्भ्याप्रश्नम् ॥ तिथिनयानवधूः शुभसाक्षरं मुनियुतं त्रिगुणं मुनिभाजितम् ॥ स-
 कलप्रास्त्रविचारविचक्षणे विधिममुन्नसमे खलु कान्यका ॥ ४४६ ॥ अथनष्टप्रशुल-
 भप्रश्नः ॥ पुमणिभान्नवभेद्युवने स्थितं तदनु यद् सुचकारि पथे स्थितम् ॥ अचल-
 भेद्युगतं गृहयागतं ह्यगतं गतमेव हृतं त्रिद्व ॥ ४४७ ॥ अथ सामुद्रिकमीक्षा ॥ वि-
 शालमालवक्ष्णाक्षिवक्षो बह्वक्षकरो विद्वत् ॥ सुहृत्तमस्तके नाभिर्मभिरानादिको-
 न्ता ॥ ४४८ ॥ शिष्यदंतत्वच्छः केषाः प्रयासाः स्तिग्धाश्च कुंचिताः ॥ नेत्रमांतेऽरुणो-
 स्तिग्धं निषालं कृष्णतारकम् ॥ ४४९ ॥ दक्षावताधिपूरो वा शीघ्रगंभीरनिःश्वनः ॥

संकेतमूत्रको धन्यो नरो नोत्पलपार्श्विकः ॥ ४४० ॥ नरो मालमुखो धन्यो नारी पितृमुखी त
 या ॥ रक्तमोटमुखं पाणीपादयुग्मं तलं तथा ॥ ४४१ ॥ श्रोत्रार्थधैर्यं गांभीर्यं महारंभ
 यशः प्रियः ॥ प्रसन्नचंदनो वंशं विमानो प्रियस्तत्पवाक् ॥ ४४२ ॥ नीतिमान् गुरुवाक् च
 स्थः शुचिर्दक्षोऽप्यपापधीः ॥ इत्यादिगुणस्त्वन्योन्ये भजति भाग्यवान् ॥ ४४३ ॥ रेखा
 यातर्जनीयातातिर्यक्सापुष्पसंज्ञका ॥ तर्जन्यं गुरुयो र्मध्वेतिर्यक्से भवत्यंतज्ञका
 ॥ ४४४ ॥ मणिवं धतरे भवत्यरेखा मूलं हि याति या ॥ सारेखा पितृवंशं रेखा बृहन्नागो ह
 से रेखा दा ॥ ४४५ ॥ समाधो गवती चैवाथित्वं राविर्वर्हिणी ॥ अशुः कनिष्ठयो र्मध्वे रेखा
 कांतकला क्रिया ॥ ४४६ ॥ कर्मांत्ये गतरेखा सा तु मातुलवर्तिका ॥ सूर्याभाव्य वसुः सूर्य
 लाभा तुल्यो वमन्यतः ॥ अंशुमुखं रेखा शिर्विज्ञेया सन्निवृद्धेः ॥ दक्षिणाभिः कल्पका पु
 न्नस्थूलाभिश्च तथा विधा ॥ ४४७ ॥ अश्विनाभिर्नरेखा भिस्सन्ननिर्हिंसजीविनी ॥ रेखा या
 नाभि का मूलं यशः पुण्या गिधा तु सा ॥ ४४८ ॥ धनरेखा तु सा या ता अष्टौ वं धानु संध्य -

३०६ ना ॥ स्याच्चेदस्वीडिता पूर्णा सोदरेखा तु राज्यदो ॥ ४५८ ॥ मांभीरास्तुं दशः सिग्धाः प्रु-
 भदा मनु पिंगलाः ॥ दक्षिणे तु करे पुंसां वामा द्शीणां तु वामके ॥ ४५९ ॥ अग्रमुष्टस्तज-
 ची यस्य स भवेद्भज्य भाग्यरः ॥ श्रीवत्साध्वर्यादर्शो ध्वजस्तंभगिरिस्त्रजः ॥ ४६० ॥
 हस्तिच्छत्रो वुजः कुंभः श्रीहस्तः झूलिग्रंहुग्रम् ॥ अंगारो व्यजनं वीणा जवो मत्स्या-
 दिकं तथा ॥ ४६१ ॥ कारपादतले यस्य स भवेद्भरणी पतिः ॥ खल्वादस्तु धनी विद्वान् दं-
 दुरस्सं हतांगुलिः ॥ ४६२ ॥ धनाढ्यो ल्यवयः प्रोक्त उदारो विरलांगुलिः ॥ तिलः धाव-
 तले हस्ते नाश्यायां दृष्टि गोचरः ॥ ४६३ ॥ हृदि प्रजनने भाले धनभाग्यप्रदो नृणां सु-
 रेखाः कारतले चेत्यु रक्ताभ्यस्तथि का तथा ॥ ४६४ ॥ रक्तास्रश्मासिताः क्षिन्ना लक्ष्म-
 न्च दरिद्राः ॥ स्थूलं प्रजं न नदीर्घं के प्रो वाने कथारका ॥ ४६५ ॥ यस्य चैतसदरिद्रः ॥
 तं शुभलक्षणं वानपि ॥ दरिद्रः कारयुग्मेन कंडयति शिरस्तु यः ॥ ४६६ ॥ अथ स्त्रीणां-
 विशेषः ॥ शुभानि यानि चिह्नानि पुंसां प्रोक्तानि स्त्रिभिः ॥ तान्येव यो यि तां योत्र विशेषः प्रो-

चतुर्दशः ॥ ४६८ ॥ ननु द्विविदं भालं विप्रालं श्रीनरतं तथा ॥ यादं तु लिङ्गं चालं ग-
 न मनो न स प्रोक्तं च ॥ ४६९ ॥ अस्यान्ताविभवा नारी क्षत्राहा मदितादिभः ॥ दीर्घलिङ्ग-
 इति अग्निरिदीर्घभाला नृदेवरम् ॥ ४७० ॥ तुष्टा दीर्घादरी नारी अक्षरं हंसिनिश्चितम्
 लस्य गुह्यतया मूढकानितं वापति याति नारी ॥ ४७१ ॥ कुलं दीर्घभाला हंसिनिःस्थानिङ्ग-
 स नाशिका ॥ दृष्टुनाशा नवे च्छेदी नृविता कमठीदरी ॥ ४७२ ॥ हसिने गर्तगंढाया-
 दुःश्रीलासाप्रकीर्तिता ॥ मिलद्भूयगलावर्तके प्रभालाल्य नाशिका ॥ ४७३ ॥ दीर्घ-
 शेषान्वितां गा वालं वोढी विकरालिका ॥ दृष्टाधैरश्रुभेच्चिह्ने र्युक्तां नारी परिहृजेत् ॥
 ॥ ४७४ ॥ अथ र्क्षाणं शुभचिह्नानि ॥ विशाल लोचनान्तन्वी प्रयासा मधुर आदिणी ॥ कृष्ण-
 लं वकचा गौरी प्रलम्पणा नाना मनो हरा ॥ ४७५ ॥ हंसे भगमना मृही चंद्रवक्त्रा नितं विनी ॥
 सुचित्राल्य हरा च मूढगुल्फा कशरीदरी ॥ ४७६ ॥ जघुहस्तां प्रिकाकं वृषी वा वृत्तान्यत-
 स्तनी ॥ दृष्ट्यादि लक्षणे पीता सुभगा सुत्रिणी वृत्ता ॥ ४७७ ॥ अथ सामान्यत प्रभुभलक्षणानि

अभिः अभिर्चितवचनं चेत क्रोन्वतं सुभगं वपुः ॥ पापभीरुमति श्वेत्किं चिन्हे रन्ध्रे श्वयोबिताम

३८ ॥ ४७८ ॥ अथापरचिन्हानिर्त्ता प्रसोरशुभानि ॥ हस्तद्वेदी भिणानां सुविजलवलिखनं पादयो

रल्पपूजा ॥ दंता नामूल्यशैव्यां वसन्मलिनता रुक्षता मूर्ध्नि जानाश्लेहे सम्यगेचापि नि
द्राविवसनप्रायनं ग्रासहस्तावलोकं स्वांगे पीठे च वा द्यं विलसति हरे ते के प्रावस्थापि
लक्ष्मीम् ॥ ४७९ ॥ द्विवेदि कुल संभूतसख्यकृतसंग्रहे ॥ शिरोमणौ समाक्षेपं त्रयोविं
प्रातिका प्रभा ॥ ४८० ॥ इति श्री संग्रह शिरोमणौ मिश्रकायनं नाम त्रयोविं

प्रातिः प्रभा २३ अथ तिथ्यो विधुक्तकर्मा नृयानफल सिद्ध्यर्थं तदंगतया निर्णीयते ॥ अत्यंता
प्राप्तप्रापणं विधिः ॥ तदुक्तं ममांसायां ॥ विधिरत्यं तम प्राज्ञो नियमं पाक्षि के सति ॥ तत्र
चात्यज च प्राज्ञो परिसंख्येति गीयते ॥ १ ॥ सच विधिर्वेद वाक्यं स्वति पुराणादि वाक्यं
च ॥ वेद वाक्य प्रामाण्यं सिद्धमेव ॥ तन्मूलत्वात् स्वति पुराणादीनामपि प्रामाण्यम् ॥
२ ॥ तत्रयर्गः ॥ सविधि विधिः प्रवर्तको निवर्तकश्च ॥ प्रवर्तकस्तु ॥ दर्शेत्तात्वापिल

संश्रित्यो दद्यात्कृत्स्नतिलोदकं ॥ अर्ज्यं च विधिवद् दद्यात्ततति स्तेनवर्द्धने ॥ ३ ॥ निवर्त-

३८३

कस्तु ॥ अमायां च न गच्छेत् प्राप्तिं कालमपि शिष्यम् ॥ अमां वा स्याद्यं नाधीयीत नाध-
पयेदिति ॥ ४ ॥ तिष्ठि नक्षत्राणादि साधनं पुण्य पापयोः ॥ प्रधानं गुणं भावेन
त्वा तन्त्रेण तेस्तमाः ॥ ५ ॥ अतश्च तिथयो विध्यं गत्वेन निश्चितव्याः ॥ तत्र कालिध-
यः ॥ अति पदाद्याः षोडशा एव तत्रा होरात्रेण सूर्य मंडला चंद्रस्य प्रथम कला नि-
र्गमे षष्ठ्यति पद्मवति ॥ एवं द्वितीया होरात्रेण द्वितीया कला निर्गमे द्वितीया भव-
ति ॥ एवं तृतीया द्यो इन्द्रयाः ॥ एवं पंचदशे ना होरात्रेण पंचदश्याः कलायाः
निर्गमे सूर्या चन्द्रमसो रत्यं तद्ग्राह्यमिति ॥ एवं अस्यां पूर्णिमायां संपूर्णमंडलस्य
न्दोः षोडशे ना होरात्रेण एक कलाया रवि मंडल प्रवेशे कृत्स्नमिति पत्र भवति ॥
एवं अत्रेण द्वितीयाद्याः ॥ एवं त्रिंशत्तमे ना होरात्रेण पंचदश्याः कलायाः प्रवेशा
त्सूर्या चंद्रमसो रत्यं तस्य नि कर्षादमावा स्या भवति ॥ नन्वेवंति षीनां विध्यं गत्वे-

३३ निविधि नैव सिद्धत्वात् तन्मिथ्या प्रयोजनम् ॥ सत्यं ॥ षष्ठिर्घातकालमर्ककालावधि-
 नानां सित्थानां संपूर्णा त्वेनातिर्यक्त्येऽपि यत्र तिसृषु द्विद्विहस्तौ भवन्तस्तत्रैकस्यास्तिथि-
 र्द्विनह्व व्यापि त्वेन त तिस्रो विहितं कर्मर्कत्र कर्तव्यमिति संप्रति ॥ भवष्यंतिर्य-
 क्तव्यः ॥ सानिधिजिभा ॥ पूर्वो ह्यर्थः हिंसा चेति पूर्वः समातिथिः ह्यर्थः तद्विद्विः हिंसा-
 सप्तः ॥ यदाह दौष्यः ॥ पूर्वो ह्यर्थस्तथा हिंसा त्रिविधिं तिथि लक्षणं ॥ पूर्वो ह्यर्थो परो
 पश्यौ हिंसा स्यात्पूर्व कालिकी ॥ तत्र तिस्रानां वेधनिर्णयमाह ॥ सर्वोस्तिथयः पक्षद्वयेऽ-
 पि सामान्येन पूर्वया परया च तिथ्या त्रिभिर्मर्तुहर्तैर्विज्ञास्युः ॥ यदाह प्रथेनसि ॥ पक्ष-
 द्वयेऽपि तिथयः स्तिथिं पूर्वास्योत्तरास्य ॥ त्रिभिर्मर्तुहर्तैर्विधंति सामान्योऽयं वि-
 धिः स्तः ॥ न त्वयं वेधतिथिस्त्यामान्यविषये न भवति ॥ तथा च ज्ञाते ॥ नागो ह्यद-
 शनादीभिर्द्विषेच दशभिस्तथा ॥ भूतोऽष्टादशनादीभिर्द्वेष्यत्तुल्यं तिथिम् ॥
 सत्यम् ॥ अयं विप्रोऽयं वेधज्जलतिथि विषयः ॥ सामान्यवेधस्तु त्रिमुहूर्त एव पूर्वति-

कथं विधिविषयः ॥ तद्वृत्तं कोर्म्यं ॥ चतुर्दशी पंचमी च तथा च दशमी तिथिः पूर्वोत्तिथिं द्-
 ३५ जयंति विभिरेव सुहृत्तं वैः ॥ अयं च त्रिसुहृत्तादि वैधः उदयादूर्ध्वं पूर्वोत्तिथ्या अस्त
 मस्यात्पादं प्रति ध्या चेत्यव गम्यते ॥ कृतः वचन वलादेव ॥ देवलः ॥ उदय चोव सु-
 वितायां तिथिं प्राति पद्यते ॥ मातिथि स्सकला द्येया दाना ध्ययन कर्मसु ॥ साति
 थि स्तद होरा नं यत्रास्तं याति आस्करः ॥ उदिते देवतं भानोपैत्र्यं चास्तं मनिरवौ ॥
 त्रिसुहृत्तं महोपासातिथिर्वैद्व्य कव्ययोः ॥ अतः उदयात्त्रिसुहृत्तं व्यापिन्यां देवतं
 कर्म ॥ अस्तमया त्रिसुहृत्तं व्यापिन्यां पितृ कर्मका व्ययम् एकभक्तं जलादिषु भिनोपैध
 स्य विचारः ॥ एकादशी जलादिषु च तिथयोऽवश्यं हास्य वद्व्यापि निर्णयोः ॥ अथ तिथ्या
 नां पटिकात्मकत्वात् पटी निर्णयते ॥ सख्यैः सद्गते ॥ दाद्विः प्राणोर्विनाडी स्यात् तत्पद्यमा भावा
 उच्यते ॥ आस्यार्थः ॥ दशगुर्वद्वारे ज्ञाया कालः प्राणाः ॥ कंकं कंकं कंकं कंकं कंकं
 इति ॥ विनाडी कला तस्याः साधकः ॥ स्तोको यथा ॥ लोक क्षेमायासीन्मत्स्यः कु-

मः कालः सुसिं ह्ये इत्याकारे रामो रामः हृषीकेशः कल्कीवेत् ॥ सर्वानाकारं
 नाना रूपं नानानामानं योगिभ्यो देवानां देवं वंदे तं गोविंदम् ॥ षष्टि कलाभि
 र्भागो षटी अन्योऽपि प्रकारः ग्रन्थान्ते ॥ तावत्स्य षड्विः पलैर्भोजनम् ॥ त्रिंशद्गुल
 विस्तारमुच्छ्रितं चतुरंगुलम् ॥ स्वर्गमावेन हत्वा च चतुरंगुल कंटिकां ॥ मध्यभागे
 तथा विहं षटिका तु प्रजायते ॥ तद्भ्रंशं भसा प्राञ्जया वत्कालेन पूर्यते ॥ सकालोष
 टिकायास्तु पूर्वाचार्यै रदाहृतः ॥ एकभक्तादि व्रतां गत्वा देकभक्तादि व्रतानां स्व
 रूपं कालश्च निरूप्यते ॥ तत्र तानि ॥ व्रतान्येकभक्तनक्तायाचितोपवासभेदेन चतु
 र्दश भवन्ति ॥ तत्रैकभक्तं नाम दिनाह्नं रूपं मध्याह्नादुपरि नियमेन भोजनम् ॥ दि
 नाह्नं समयेऽतीते शुज्यते नियमेन यत् ॥ एकभक्तमिति त्र्योक्तं मतस्तस्मादिदं व
 द् ॥ तच्चैकभक्तस्तु मध्याह्नव्यापि न्यासेव ॥ तदाहौषधयनः ॥ उदये तु यदा सस्य
 इ नक्तस्यास्तमयेति धिः ॥ मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या एकभक्तव्रतेति धिरिति ॥

संज्ञिकाः त्रयं व विधिः ॥ प्रातः संगवमभ्यान्हा परान्हा सायान्हा भेदान् ॥ पुराह व्यासः ॥ सुह
र्षे तं त्रितयं प्रातस्तावानेवतु संगवः ॥ मध्याह्न रित्र सुहर्षे स्याद परान्हा शताह्नः ॥

सायान्हा रित्र सुहर्षे श्व सर्व कर्म सुगर्हितः ॥ एवं त्रयोदशं घटिका भारभ्यासाद्याद-
शी घटिका यावत्सुषुप्त्वा घटिका धिकी मभ्यान्हाः ॥ तत्राष्टौ त्रिंशद्विंशति घटिका त्रये-
एक भक्तं कर्तव्यं ततः सूर्यास्तपर्यन्तं शीतः ॥ तत्र पूर्वेषु ध्यातिरपरेषु ध्यातिस्तत्राष्टौ ध्या-
तिस्तत्रापि सान्ध्यं वैषम्यमिति षट्पक्षाः ॥ तत्राष्टौ रसं देहस्य ॥ तृतीये तु पूर्वोद्भि-
र्गोणसूर्या व्यासैः सत्त्वात्पूर्वेति ॥ माधवः ॥ युग्मवाक्यान्त्रिंशतिः ॥ इति हेमादिः ॥ च-
तुर्थपक्षे परे दसं कल्प काले सत्त्वादिति चोचितं ॥ गोण काल व्यासैश्च तुर्थ पक्षे स-
त्वात् ॥ वैषम्येणं प्राच्याहो याधिका साग्रह्यास्तम्यै पूर्वा ॥ अयं च स्वतंत्रे कभक्त निर्ययः
॥ अस्यांगो उपवास प्रतिनिधी तदनुसारेण निर्ययः ॥ तथा चोक्तं ॥ कर्मणो यस्य यः
कालः तत्काल व्यापिनीति विधिः ॥ तदा कर्मणि तु वीतज्ञासहृद्दीन कारणात् ॥ अथ

संक्षिप्तं ॥ योयस्य विहितः कालः कर्मणस्तदुपक्रमे ॥ विद्यमानो भवेदंगो नो जितः

३२७

प्रक्रमणे तु दूत्येकमङ्गनिर्णयः ॥ अथ नक्तं तिथि निर्णयः ॥ नक्तं नाम दिवा शानवर्ज्यपि
त्वारंशौ भोक्तव्यमिति ॥ दिवा एति व्यापिन्यामेव तिथौ कार्य्यः कोऽर्थः प्रदेशव्या-
पिन्यामेव ॥ तथा च स्कंदे ॥ दिवा एति द्रवतं यच्च एकमेव तिथौ स्मृतम् ॥ ताभ्यामुभय-
व्यापिन्यां कुर्यादेवं द्रवतं द्रवती ॥ अत्रोभयव्यापिन्यामेव ॥ तथा च कैर्म ॥ प्रदेशव्या-
पिनी यत्र त्रिमुहूर्ता यदा भवेत् ॥ तदा नक्तं द्रवतं कुर्यात्स्याध्यायस्य निषेधवत् ॥ वस्तु-
क्लिष्टं ॥ प्रदेशव्यापिनी गृह्यातिथिर्नक्तं द्रवते सदा ॥ प्रदेशस्तु ॥ उदयात्माकृतनी-
संध्या घटिका त्रयमिष्यते ॥ सायं संध्या त्रिघटिका अस्ताहुपरि भास्वतः ॥ त्रिमुह-
ूर्तं प्रदेशस्य स्याद्भाना वस्तं गते सति ॥ नक्तं तत्र तु कर्तव्यमिति शास्त्रस्य निश्चयः ॥
इति महर्षेण व्यासोक्तिः ॥ ननु यद्घटिकात्मके प्रदेशे अर्धघटी त्रयं संध्या कालः ॥ त-
दति अम्यत्र तस्मिन् घटिका त्रये नक्तं द्रवतं निमित्तं भोजनं प्राप्तमिति ॥ तस्मिन्का-

स्वे भोजनाभावादिति निविद्धम् ॥ तथा च स्वतावपि ॥ चत्वारो मासि कार्त्तमणिः संख्यायां
 परि वर्जयेत् ॥ आहारं भेषुनं निद्रां स्वाध्यायं च चतुर्थकम् ॥ संख्या काले भोजन
 नियमे नैव विघटिकात्मक संख्या प्रयणे संख्या नाम दिन एभ्योः संधौ च प्राप्तादि
 क्रियैव श्रेया ॥ संधिश्च खंडमार्तण्डोपलक्षितः कालस्तस्याख्यत्वाल्लिङ्गाद्या-
 श्ववितत्वेन स्वल्पकाले कर्तुं मशक्यत्वात् ॥ मुख्यार्थवाधे सति संख्या शब्देन सं-
 धि शब्दः ॥ पूर्वपरो वा क्रिया पर्याप्तः कालो लक्ष्यते ॥ यतः लक्ष्यते ॥ प्रातः संख्या स-
 नस्तत्रा मध्याह्ने मध्यभास्करा ॥ सूर्य्यापश्चिमा संख्या संख्या त्रयमिति ता ॥ श-
 तो मुराख्य काले संख्या वंदनं देवान् कृतं तत्र गोण काले घटी त्रयात्मके कर्तव्यता-
 मभ्यनुज्ञापनार्थं संख्या गार्जितादिना विहिता नध्ययनादि परश्च नक्तज्ञात विहि-
 त भोजनं न क्षत्र दर्शने एव कर्तव्यम् ॥ तथा च भविष्ये ॥ शुद्धर्त्तानं दिनं नक्तं प्रवदन्ति
 मनीषिणः ॥ नक्षत्र दर्शना नक्तं महं मन्ये गणाधिप ॥ नक्षत्र दर्शनादिति त्यप-

संक्षिप्तोपे पंचमी ॥ अतश्च नक्षत्र दर्शनं प्राप्य नक्तं विहितभोजनं विधेयमित्यर्थः ॥ सुहृ-
 ३२४ तीर्नंदिनंतुयति परम् ॥ यदाहदेवलः ॥ नक्षत्र दर्शनात् नक्तं गृहस्थानां स्मृतं बुधैः ॥
 यते हिनायमेभागो तस्य राज्ञो निधिष्यते ॥ सौरक्तं विषयेतु ॥ आत्मनो हि गुणां छा-
 यां यदा संतिष्ठते रविः ॥ सौरं नक्तं विजानीयात् नक्तं निशि भोजनम् ॥ इति दृशिं-
 हश्रुणे ज्ञातस्सुमंतुक्तिरपि ॥ निमुहुर्न स्पृगे वाहिनिश्चैतावतीति धिः ॥ तस्यां सौ-
 रं भवेन्नक्तमहं न्येवतु भोजनम् ॥ तथा च स्कंदे ॥ नक्तं निशायां कुर्वीत गृहस्थो वि-
 धि संयुतः ॥ यतिश्च विधवा चैव कुर्वीत तत्स हिवा कश्चिति ॥ शुभर्वास्तु राजा वे-
 व ॥ हरिनक्षेत्रेऽप्येकः ॥ कालादर्शे स्कंदे ॥ उदयस्था सदा पूज्या हरिनक्तं ज्ञेयं ति धिः ॥ अ-
 न्यनक्तं तु संक्रांत्या दौ राजा देव ॥ निषेधस्य रागं प्राप्तं भोजनं गोचरत्वेन वाप कल्पा-
 त् ॥ दिनद्वय व्याहो परा ॥ उभयोर्द्वयं हि वा ति ध्योः प्रदोष व्यापिनी ति धिः ॥ तत्रोत्तरं तु
 नक्तं स्याद्गुभयं चापि सायतः ॥ इति कालादर्शे जावालि वाक्यम् ॥ अल्पपक्षे तु एकं नक्तं च निर्णयो

॥ अथ ॥

१। अथ दिशेभ्यो मन्त्र रत्ने गारुडे

॥ इतिव्य भोजनं

लोयात्सत्यभागा नाधवम् ॥ इति

५५

१६० यः मयः प्राधान्यं भोजीषदा चरेत् ॥ अग्निं वा निसर्गः ॥ प्रसंगान्नक्षत्रकालः ॥ तत्र सूर्यास्समयव्यापिनि नक्षत्रं नक्षत्रं नक्षत्रं कार्यं अथवा त्यंतं क्षयगामि नक्षत्रं दिनद्वये प्यस्तकालव्यापिन भवति ॥ तदार्द्राद्वर्षाद्वर्षा चन्द्रशुक्लेन सत्रे कार्यम् ॥ तदुक्तं विष्णुधर्म ॥ उपोषितव्यं नक्षत्रं यस्मिन्नस्तमिवाग्निः ॥ द्युज्यते यत्र वातागनिशब्धिप्राशिनोसह ॥ माधवीये संवेच ॥ तत्रैवोपयसे हस्ते यन्निशब्धिं चरो भवेत् ॥ उपवासये हस्तं स्यात्तद्विना नैक भक्तयोः ॥ इति नक्षत्रनिर्ययः अथवा चित्रं तत्र निर्ययः ॥ न विद्यते यो चिह्नं यस्मिन्नभ्यवहरेण तदयचित्तम् ॥ अथ वहारथ ॥ मध्यमोज्य लेहये यद्यो यभेदेन पंच विधः ॥ तत्र ॥ दंतैरेव खंडयित्वा यन्निमीयते तद्गक्ष्यम् ॥ यदंतं खंडयति रेकेण मुखव्यापारेण निमीयते तद्गोच्यम् ॥ लेहं न्नासजिह्वाग्रहीत्वा यदंतं गिरिष्यते ततः येयं प्रसिद्धी ॥

159

भिदि ॥ चोषं नाम द्रव्यो तर्गतं सारं ॥ हंतेन मुख व्यापारेण वा गृहीत्वा वा द्रव्यत असा-
 रमन्यत्यज्यते ॥ यथा म्रफले क्षुरंडादिः ॥ अस्य च सामान्यत एक भक्ष्य रूपत्वात् ॥
 एक भक्त वर्देव मध्याह्न व्यापिन्या मेव तिथौ सति संभवे विधेयं ॥ परमार्थनया दिने-
 भोजनासंभवे सति ॥ एतौ वा मरमार्थनयार्थोक्तं व्यम् ॥ अन्यथा ॥ भोक्षेह मेवेति सं-
 कल्प भंगः स्यात् ॥ एतेषां मेकं भक्तादि व्रतानां खंड तिथिं विहाया खंड तिथावेवोप-
 क्रम समो सीकुर्यति ॥ यातिथीरुदयारभ्य दिनाद्द्व्याधिनो भवेत् ॥ सारखंड तिथिः ॥
 तस्यां व्रतानां भारं समाहिं च न लुप्यति ॥ पक्षह सत्यं व्रतः ॥ उदय स्थार विध्या-
 दिनभवेदिनमभ्यगा ॥ साखंडान व्रतानां सा तत्रां रंभं समाप न भित्ति ॥ अथ व्रत परिभा-
 वा व्रताधिकारिणो मदन रत्ने भविष्ये ॥ अनप्रय स्तुये विप्रास्तेषां श्रेया विधीयते ॥ व्रतोप-
 वास निवर्धये न्मो नादाने स्तथा नृप ॥ उपवासं तु भक्षयिज्ञा स्थापयत् ॥ अत एव देवलः ॥
 अहि तामिरनज्जुं प्र वक्षन्वारी बुते त्रयः ॥ अक्षंत एव सिञ्चन्ति तेषां सिद्धिरन प्र-

ताम् ॥ एका रश्मिरावधितुष्टा च्छूद्रस्याप्यधिकारः ॥ यथा ॥ भूद्वीवर्यभ्रनुर्यदि-
 वर्यत्वाद्भ्रममहेति ॥ वेदमंत्रस्वधा स्वाहा वयहारादिभिर्विनेति ॥ व्यासः ॥ आद्यास्तु ॥
 वैश्यभूद्रयोर्द्विरप्यधिको पवास निषेधः ॥ यत् ॥ वैश्याः भूद्राभ्रयै मोहादुपावासं
 प्रकुर्वते ॥ निरात्रं पंचरात्रं वातेषां सुद्विर्न विद्यते ॥ इति हेमादिः ॥ एवं स्त्रीणामपि तु स्कांदे
 नास्ति स्त्रीणां धृषक्यज्ञो न व्रतं नाप्युपायणम् ॥ भर्तुभ्युभूषयैवेता लोका निष्ठान्
 व्रजंति हि ॥ अन्यथापि ॥ यदेवैभ्यो यच्च पित्रादिकैभ्यः कुर्याद्भर्ता भ्यर्चनं सत्क्रियां
 च ॥ तस्य सार्द्धं साफलं नान्यचित्ता नारी भुंक्ते भर्तुभ्युभूषयैव ॥ आदित्यपुराणे ॥ नारी
 खल्वननुज्ञाता भर्त्ता वापि सुतेन वा ॥ विकलं तद्वेत्तस्यायत्करो त्थोर्द्धैहि कम् ॥
 शोर्द्धैहि कं पारलोकि कं तद्वर्तुननुज्ञा विषयं ॥ अत्र विशेषो हरिवंशे ॥ ज्ञानं च कायं प्रि-
 रसस्ततः फलमवाप्नुयात् ॥ ज्ञाता स्त्री प्रातरुत्थाय पतिं बिद्धापयेत्सती ॥ तथा च ॥
 यस्मिं त्वैहिवरं पात्रं सकुशं साधुतं तथा ॥ गोभृगं दक्षिणं सिन्धुं प्रगृहीयाच्च तज्जलम् ॥

श्रीदुवर्ताप्रभय ॥ ततोभर्तुस्सती दद्यात्स्नातस्य प्रयत्नस्य च ॥ आत्मनश्चाभिधेयं कुरु
 ॥ अथ तव प्रियारसित ज्ञातम् ॥ उपवासेषु कर्तव्यमेतद्वि व्रतकेषु च ॥ सर्वव्रतेषु संकल्प
 विधिश्च ॥ भारते ॥ गृहीत्वा दुर्वर्तमानं चारिष्यतीं मुदं ह्युत्तमः ॥ उपवासं तु गृहीत्वा द्वा सं-
 लये दुग्धः ॥ हस्तेनैवेत्यर्थः एवं यथाविहित काले व्रतारंभः ॥ व्रतारंभे च विशेषो न द्या-
 रत्ने ॥ सत्यव्रतं देवलो ॥ अभुक्त्वा प्रातराहारं स्नात्वा च मय्यसमाहितः ॥ सूर्याय देवताभ्यश्च
 निवेद्य व्रतमाचरेत् ॥ भविष्ये व्रतकर्तुर्निधमाः ॥ क्षमा सत्यं दया दानं शौचं भिक्षा निग्रहः ॥
 देव प्रजापतिं हवनं संतोष स्तेय वर्ज्यं नमः ॥ सर्वव्रतेषु धर्म्यं धर्म्यं स्नामान्यो दशधा स्थितः ॥
 ॥ अग्निहोमस्तदैवत्यो व्याहृतिश्चेत्यो वा ॥ विष्णुधर्मः ऽपि ॥ तज्जप्य जपन ध्यानं तत्क-
 या प्रवणादिकम् ॥ तदपर्यणं च तन्नाम कीर्तनं प्रवणादयः ॥ उपवासं कृत्वा भेते
 गुणाः प्रोक्त्वा मनोयिभिः ॥ कौर्म ॥ वहिर्गोमांस्त्यज्जावृक्षतिं पतितं चरजं खलाम् ॥
 न स्पृशे न्याभिभाषे तने क्षेत व्रत वासरे ॥ पृथ्वी चंद्रे देवे ऽग्निपुराणे ॥ स्नात्वा व्रत वता-

सर्वं सर्वं यत्तु ब्रतमूर्तयः ॥ पूज्याः सुवर्षं मय्याद्या प्रशक्त्या वैभूमि प्रापिना ॥ उपो होम
 रं असामान्यं ब्रतानां दानमं वच ॥ चतुर्विंशद्वाह्येण वापंच वा एक एव वा ॥ विप्राह-
 ज्या यथा प्रगत्या तेभ्यो दद्याच्च दक्षिणाम् ॥ अन्नविप्रा द्दति शुक्लिंगनिर्देषा त्पुमां सर-
 वभोज्या नतृस्त्रियः ॥ ब्रतमूर्तयो ब्रतदेवता प्रतिमाः ॥ प्रतिमा स्वरूपं मदनखे ॥ अनुक्त-
 इव्य तत्संख्या देवता प्रतिमा नृप ॥ सौवर्णी राजती तात्री दृष्टजा मतिर्की तथा ॥ चि-
 त्तजा पिटलेखोत्था निजकितानुरूपतः ॥ आमाद्यात्पलपर्यंतं कर्तव्या श्राद्धवर्जि-
 तैः ॥ तत्रैव भासे ॥ आज्यं इव्यमनादेशे जुहोतिषु विधीयते ॥ मंत्रस्य देवतायाश्च भजा-
 पतिरिति स्थितिः ॥ मंत्रानुक्तौ समस्तव्या हतिरूपो मंत्रः ॥ भजापतिश्च देवतेति ॥ कल्प-
 तः ॥ अनुक्त संख्याय तस्याच्छेदयद्योत्रं भवेत् ॥ उपवासं द्विजः छत्वा ब्राह्मणानां
 च भोजनम् ॥ ह्युपार्तेनास्य सगुणा उपवासो विधीयते ॥ ब्रतोद्यापनानुक्तौ प्रथमी चंशे द्येनादि-
 पुण्ये ॥ कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तो दहृदिरिति च ॥ उद्यापनं विना यत्तु तद्व्रतं निःफलं-

संधि भवेत् ॥ यदि चोर्धा पनं नोक्तं व्रतानुगुणतश्चरेत् ॥ किंता नुसारतो दद्यादनुकोद्या-
 ३६५ पने व्रते ॥ गाधैव कांचनं दद्याद्व्रतस्य परिपूर्तये ॥ अथ को नादीये ॥ सर्वेद्यामप्यन्ता-
 भेतु यथोक्तं कर्णे विना ॥ विप्रवाकां स्थितं शुद्धं व्रतस्य परिपूर्तये ॥ दद्या विप्र वचो
 यस्तु गृह्णाति मनुजः शुभम् ॥ अदत्त्वा दद्विणां पापः स याति नरकं भुवम् ॥ भारते वोदर
 नंदे दीपराणे ॥ व्रते च तीर्थेऽध्ययने आर्द्धेऽपि च विशेषतः ॥ यान्न भोजनाद्विषया
 नंतस्य तत्कलम् ॥ आर्ये ॥ नित्यस्नायी मिता हारे गुरुदेव द्विजा च्चैकः ॥ क्षारं-
 क्षौद्रं च ज्वराणं मधुमांसानि वज्जीयेत् ॥ क्षारस्तु तत्रैवोक्ताः ॥ तिल मुद्गा हते शिभ्यं प्रा-
 स्ये गोधूम को द्वौ ॥ धान्यं कदेव धान्यं च प्रामी धान्यं तथैव च ॥ स्विन्न धान्यं तथा
 पण्यं मूलं क्षारं गणाः स्थिताः ॥ गोधूमा न्ननु तत्रैव प्रशस्तम् ॥ इीहि पट्टिक-
 मुद्गाश्च कपालाः सतिलं पयः ॥ प्रयासाकाः प्रालिनी चारः गोधूमाद्या व्रते हिताः ॥
 कृष्णां ह्या लावहंता कपालं कीज्यो त्ति काः त्यजेत् ॥ चरु रैक्ष्यं प्रक्तं कणाः प्राक्तं दधि-

विद्यतं मधु ॥ प्रथमा काः शालिनी चारः पावकं मूलं तदुल्लम् ॥ हविष्यं जलं नक्का दावमि
 १६६ कार्यादि के हितम् ॥ मधुभासं विहायान्यद्वते च हितमीरितम् ॥ प्रामी धान्यं भावादिः
 पालं की मध्यक्षे पोद् इति प्रसिद्धा ॥ ज्योतिषका को प्रातकी ॥ मिताक्षरायां गो तमः
 चरभे इय प्रकु कए था वक शाक पयोदधि ॥ धृत मूल फलोद कानि हंवी व्युत्तरे सर प्र-
 शस्तानि ॥ पयोदधि द्यतं च गव्य मिमि ॥ यहीन जलस्योतु मदन रत्ने तु व्रज लेपः ॥ पूर्व ज्ञतं
 शही त्वा योना चरे त्काम शो हितः ॥ जीवन् भवति चोडा लो मृतः श्वा चाभि जायते
 ॥ प्रायश्चित्तं तु दध्वा चंद्रे दधे ॥ ओ धात्प्रमादा स्त्रोभा द्वा जल भंगो भवे
 दधि ॥ दिन त्रयं नक्षुं जीत मुंडनं शिर सो ऽथवा ॥ यत्तु ॥ प्रायश्चित्तं ततः कृत्वा पुनरे
 व व्रती भवेदिति वचनं ॥ शति क्रान्तमपि ज्ञतं कार्यं नेवेति ॥ शूल पाणिः ॥ तन्मभ्येतु
 ज्ञत श्रेय सत्वे क्रैयम् ॥ एतच्च शक्तं विषयं ॥ अष्टौ तु काल हेमाक्षे पुराणां तरे ॥ उ-
 पवासा समर्था श्वेदे कं विषं तु भीजयेत् ॥ तावद्नादि वा दद्याद्भुक्तश्चेद्दिश्रयं तथा ॥

भुक्तः कृत भोजनः ब्राह्मण भोजनं विनोति श्रेयः ॥ सहस्र समितां देवीं ज्येष्ठा आरा-
 संयमान् ॥ कुर्याद्वा दशसंख्या कान् यथा शक्तवान् यो नरः ॥ इति षुद्धि तत्वे मात्से ॥ उप-
 वासे च शक्तानां नक्त भोजन मिष्यते ॥ मदन त्ने वायवीये ॥ इत्यादातो पवास स्थ फलं-
 प्राप्नोत्य संशयम् ॥ अणर्कैरेव लः ॥ ब्रह्म चर्यं तथा श्रेष्ठं सत्य मामिष वर्जितं ॥ इति
 ध्वेतानि चत्वारो द्यानीति विनिश्चयः ॥ मात्से ॥ तस्मात्कृतो पवासेन स्नान मभ्यंगा-
 र्चनम् ॥ वर्जनीयं शयनेन व्रतं तत्परं नृप ॥ नियमस्तु तत्र स्यान्दिवा रात्रिः ॥ अथ
 स्त्री व्रतेषु विशेषा उच्यन्ते ॥ तत्र हेमाद्रौ व्रतकाण्डे गारुडे ॥ यो धालं कार तां वृत्तिं शुभ्य भालानु
 लेपनम् ॥ उपवासेन दुष्ट्यातिहत धावन मज्जन मिति ॥ इदं च स भर्तृ को पवास विषयम् ॥
 भोजनं च सतां वृत्तं कुंकुमं रक्त वाससी ॥ भार्ये स्नोप वासापि भवे धव्य कारं यतः ॥ वि-
 धवायति भार्येण कुमारी वाय दक्ष येति ॥ विषुधेः सति ॥ सर्वेषूपवासे शुभ मात्साय-
 सुवासिनी ॥ भार्ये इत्त वराणि कुशुमानि सिता निच ॥ विधवा शुक्ल वसन मेकं मे-

१ वरिधारयेत् ॥ मनुष्य ॥ पुष्पा लंकारवर्याणि गंधधूपान्जलेपनम् ॥ उपवासं न द्रव्यंती
 १५६ त्यादि ॥ गदनस्तेज्यासोः वि ॥ दंतधावनपुष्पादि व्रतेषु स्थानुद्ध्यति ॥ यद्यपीदं सर्वोप-
 वास विषयं प्रतीयते ॥ तथापि शिष्टाचारानुभूतात् ॥ सौभारया व्यर्थं क्रियमाणा नवरत्न
 त्रिरात्राद्युपवासविषयमेव ॥ नत्वेकादश्यादिविषयम् ॥ असकृज्जलपानाच्च सहस्रतो
 वृत्तभक्षणात् ॥ उपवासः प्राणश्रेयतदिवास्वापाच्च भेषुनात् ॥ इत्यपराहैवेत्यनेन ॥ तत्र नि-
 वेधात् ॥ न चास्य पुंविषये सावकाशत्वात् ॥ स्त्रीणां तां दूलादिशयं प्राप्तत्वात् ॥ तां दूला-
 दिप्रापकास्यैवेकादशी तद्विषयत्वेनैव परीत्यस्यापि सुवचत्वात् ॥ हरिवंशे ॥ अंजनं-
 रोचनां चैव गंधाः सुमनसस्तथा ॥ ज्ञते चैवोपवासे च नित्यमेव विस्मर्जयेत् ॥ शिरसोऽ-
 भ्यंजनं सौम्यं नैव भेत तत्रास्यते ॥ न पादयोर्न नात्रास्यते हेनेति स्थिति स्मृता ॥ तत्रैव ॥
 अशुभप्राप्तौ रोषश्च कलहस्य कृतिस्तथा ॥ उपवासाद्भताद्वापि सद्यो भ्रंशयति चित्रयम् ॥
 तद्विषयमित्युपलक्षणम् ॥ शिवधर्म ॥ दानं ज्ञतानि त्रियमं ज्ञानं ध्यानं हुतं जपः ॥ यत्ने-

नापि कृतं सर्वं कर्माधि तस्य दृष्ट्या भवेत् ॥ अथ सतकादौ निर्णयः ॥ तत्र श्रावस्त्या श्रोच-
 योः सर्वस्मार्तकर्म निवृत्ति निर्वधेषु स्य श्रेयः ॥ गोडास्तु क्षता श्रोचाद पिता मातुः ॥
 जानद्वृक्षतज्जिजाति नित्य कर्मज चाचरेत् ॥ नैमिति कंच तद धश्च वदत्तो न चाच-
 रेत् ॥ लूनकोच समुत्पन्ने ज्वर कर्मणि मेधुने ॥ धूमो हारे तथा वातो नित्य कर्मणि सं-
 त्यजेत् ॥ द्रव्ये भुक्ते लज्जिणे च नैव भुक्तापि किंचन ॥ कर्म कुर्व्यान्नरो नित्यं सूतके स्मृत-
 के तथेति ॥ कालिका पुराणात् वस्तुतः ॥ पूर्व देवी पूज्योप क्रमांति न्मान विषय त्व मस्येति
 युक्तं भर्तृभिः ॥ तथा हेमाद्रौ पाद्ये ॥ गार्भिणि स्तुति कादिश्च कुमारी वाथ रोगिणी ॥ यदा श्रु-
 द्वा तदा न्येन कारयेत्नयता स्वयमिति ॥ तेन यस्मिन् भर्तृपूजायुक्तं तद न्येन कारये-
 त् ॥ प्रायश्चित्त नियमान्स्वयं कुर्यात् ॥ पृष्टित्वे विष्णुः ॥ बहु कालिक संकल्पो गृहीतश्च चुराद्य-
 दि ॥ सूतके स्मृतके चैव भर्तृपूजायुक्तं तद न्येन कारये-
 काव्यमिति ॥ गोडाः ॥ मंदनले ॥ पूर्व संकल्पितं यच्च भर्तृपूजायुक्तं सुनि यत इति ॥ तत्करीष्यं भर्तृः

सर्वधारायत् ॥ मनुर्मप ॥ पुष्पा लंकारवत्त्राणि गंधधूपाज्जलेपनम् ॥ उपवासन इव्यती-
 त्यादि ॥ गहनस्ते व्यासोऽपि ॥ दंतधावन पुष्पादि ज्ञते य्य स्थान इव्यति ॥ यत्तपीदं सर्वोप-
 वास विषयं प्रतीयते ॥ तथापि श्रिया चारानुभतात् ॥ सौभाग्या चार्थं क्रियमाणं नवरात्र-
 त्रिरात्राद्युपवासविषयमेव ॥ नत्वेकादश्यादिविषयम् ॥ असहजलपानाच्च सहजतो
 ब्रूवभक्षणात् ॥ उपवासः प्रणश्येत दिवा स्वायाच्च भेषुनात् ॥ इत्यपार्ह्वेक्षत्वेन ॥ तन्ननि-
 धेधात् ॥ न चास्य पुंविषये सावकाशत्वात् ॥ स्त्रीणां तां ब्रूणादि रागप्राप्तत्वात् ॥ तां ब्रूणा-
 दि प्रापकस्यैवैकादशी तर् विषयत्वेनैव परीत्यस्यापि सुवचत्वात् ॥ हरिवंशे ॥ अंजनं-
 रोचनां चैव गंधाः सुमनसस्तथा ॥ ज्ञते चैवोपवासे च नित्यमेव विस्मर्जयेत् ॥ शिरसोऽ-
 भ्यंजनं सौम्यं नैव भेत तत्प्रस्यते ॥ न पादयोर्न श्चात्रस्य स्नेहे नीति स्थिति स्मृता ॥ तत्रैव ॥
 अशुभप्राप्तो रोषश्च कलहस्य कृतिस्तथा ॥ उपवासाद्वाता ह्यापि सद्यो भ्रंशयति श्लिष्यम् ॥
 तत्रियमित्युपलक्षणात् ॥ शिवधर्मे ॥ दानं ज्ञतानि नित्यं सं ज्ञानं ध्यानं हुतं जपः ॥ यत्ने-

संश्रुतेन ॥ तत्रैव ॥ त्वयं कर्तुं मया कृतं कारयेत्तु मे ॥ इदं सर्वं वर्तमानं साधारणं भावं प्रेषा

६०९

तत् ॥ जपस्तपस्तीर्थं सेवाप्रव्रज्याजपसाधनम् ॥ विधेस्संपादितं यस्य सपन्नं तस्य तत्फलम् ॥ अत्र विप्रेयमाह त्रिकांडभट्टः ॥ काम्ये प्रतिनिधिर्नास्ति नित्येनेमिति केचनः ॥ काम्येषु प्रकमादृष्टं केचित्प्रतिनिधिं विदुः ॥ न स्यात्प्रतिनिधिर्मेव स्वामिदैवादि-
कर्मसु ॥ सदैव कालयो न्यस्ति नासौ रश्मिरवसा ॥ नापि प्रतिनिधानं व्यतिथिद्वं
स्तु कुत्रचित् ॥ हिरण्यकेशिस्तैः ॥ न स्वामि त्वस्य भार्यायाः देशस्य कालस्याग्नेर्दे-
वतायाः कर्मणाः प्राक्स्य च प्रतिनिधि विद्यत इति ॥ अथ ब्रह्मादि सन्निप्रतिनिधयः ॥ तत्र
तिथिद्वयसन्निपति ॥ तत्रोक्तं दानहेमादि क्रमेणानुद्वेयमविरोधतः ॥ इदं पूर्वार्थं
द्वेव ॥ एकमध्येऽन्यकामः कर्मैरभस्तु न भवत्येव गुणफलादने ॥ यद्ब्रूवतामि क-
र्ममात्रमनं गेन व्यदधानं दोषस्तर्वात्र साम्यतः ॥ श्रियास्तु ॥ कार्तिक रत्नानादिभ-
षोलक्षणे मनुजाभारत श्रवणादिश्रावयन्ति तन्नित्यमध्ये काम्यमध्ये तु चित्तमायन्नैके

६०९

६०९

१० शुद्धं सानाच्च न विवर्जितमिदम् ॥ माधवीये को भवेत् ॥ काम्योपवासे प्रश्रान्ते स्वतः एव न स्व-
 ४० के ॥ तत्र काम्यं व्रतं कुर्याद्दिनाच्च न विवर्जितमिति ॥ एतेन सांगोऽधिकप्राप्त इत्यां गार्ह-
 पूजादि कार्यमिति वर्द्धमानोक्तिः परास्ता ॥ प्रारब्धपूजादि कार्यमेव तत्रैव विद्वेषवक्ष्या-
 मः ॥ एवं जस्तलापि ॥ यत्तु सत्यं जगत् ॥ प्रारब्धदीर्घतः पुंसां नारीणां यद्भर्तृजीर्भवेत् ॥ न तत्रापि
 व्रतस्य स्यादुपरोधः कदाचन ॥ तद्व्रतमिति निधिनोकार्येत् ॥ तदुक्तं नरनरत्वे मात्स्ये ॥ अंशं
 रातुरजो योगो पूजामन्येन कारयेत् ॥ अतिनियमश्च निर्णयामृतं ॥ पेशी नक्षिः ॥ द्वादश्यापल्यु-
 र्ध्वतं कुर्यात् ॥ भाव्यायाश्च प्रतिवर्तितम् ॥ अस्माग्भेदेऽपरस्ताभ्यां जतमंगो न ज्ञायते ॥
 स्वादेऽपि ॥ पुत्रां वा विनयो पुरां भगिनीं भ्रातरं तथा ॥ स्वामभ्याद एवाभ्यं चाहरे वा नियो-
 जयेत् ॥ कात्यायनः ॥ पितृभ्रातृभ्रातृपतिगुरुर्ध्वं च विद्वेषतः ॥ उपवासं प्रकुर्वीत ॥ पु-
 र्यं प्रात गुणमवेत् ॥ मदनरत्ने प्रभासखंडे ॥ अर्वा पुन पुरोऽप्यश्च आता पत्नी सखापि च
 ॥ यात्रायां धर्मकार्येषु जायते प्रतिहस्तकाः ॥ एभिः कृतं महादेव स्वयमेव कृतं भ-

एवं द्वादश्यां मासो पवासश्चाद्धप्रदोयादिदुर्ज्ञेयम् ॥ एवं काम्यनेमिप्रजकाम्बल्यन्वा ॥ ६ ॥
 वलावलस्त्वयद्बृहन्मिति दिक् ॥ इति व्रतपरिभाषा ॥ अथ व्रतोपवासादिद्व्युत्थितयानां साधारणानि-
 रण्यः ॥ अथ शुक्लपक्षे द्वितीया तृतीया युक्ता तृतीया द्वितीया युक्ता ॥ चतुर्थी पंचम्या पंचमी च
 तृथ्या षष्ठ्या सप्तमी सप्तम्या षष्ठी ॥ अष्टमी नवम्या नवम्यष्टम्या ॥ एकादशी द्वादश्या द्वा-
 दशे कादश्या ॥ चतुर्दश्या दोर्णमासी दोर्णमास्या चतुर्दशी ॥ अमावास्या प्रति पदा प्रति प-
 दमावास्त्येत्येति ॥ तद्वक्तृनिगमे ॥ युग्माभियुगभूतानि षण्मुन्यो र्वसु रंधयोः ॥ रुद्रेण द्वादशी
 युक्ता चतुर्दश्या तु पूरणिमा ॥ प्रति पदाप्यमावास्यातिथ्योऽर्घ्यमं महाफलम् ॥ व्यस्तमेतन्
 महादोषं प्रवदंति मनीषिणः ॥ इति ॥ युग्मं द्वितीया अग्निहोत्रादीनां शुभं चतुर्थी भूतं पंचमी
 षट् षष्ठी मुनिः सप्तमी वसुष्टमी रंधं नवमी रुद्रेकादशी नन्वत्र वाक्येषु शुक्लपक्षे एव कथं
 पश्यते तदुच्यते ॥ चतुर्दश्या च पूरणिमिति प्रति पदमावास्त्येत्येति ॥ उभयोः साहचर्या च
 एतयोः कृत्वा पक्षे असंभवात् ॥ देशस्येकादशी युता नवमी युता वा कार्या ॥ संपूर्णदश

भक्तादौ विरुधस्तत्र ग्राथम्यादेक भक्तकार्यम् ॥ नक्तं तु परेषु स्ततिथी गणकार्त्तकार्यम् ॥
 समकाली न विरुद्धतादौ त्वेकम् स्वयं कृत्वा न्यङ्गार्थादिना कारयेदिति माधवः ॥ यत्र तु
 शिवरात्र्यादौ त्रिधिमध्ये पाण्ड्यादि भोजनं प्राप्तं ॥ भूताद्यभ्योर्दिवा भुक्ता रात्रौ भुक्ता च
 पूर्वाणि ॥ एकादश्यां दिवा रात्रौ भुक्ता चांदायणं चरेत् ॥ इति तन्निषेधश्च तत्र परयावेध-
 त्वादि वैव भोजनम् ॥ निषेधस्तु रागप्राप्त भोजन विषयः ॥ एवमष्टम्यादि नक्तं व्रते संक्रा-
 त्यादौ रात्रौ संकष्टचतुर्थ्यां च रात्रौ भोजनम् ॥ यत्र त्वष्टम्यादौ तु दिवा भुजि निषेधः ॥ सं-
 क्रमे च रात्र्या निति निषेधद्वयम् ॥ तत्रोपवास एव कार्यः ॥ यद्यपि पुत्रिणां उपवासोऽ-
 पि निन्दः ॥ तथाप्युपवास निषेधेऽपि किंचिद्भक्ष्यं प्रकल्पयेत् ॥ इति वचनात् ॥ किंचि-
 द्भक्ष्यित्वोपवासः कार्यः ॥ चांदायण मध्ये एकादश्यादौ तु भोजनमेव कार्यम् ॥ चां-
 दायणस्य कान्य त्वेन नित्यवाधकत्वात् ॥ अवाधेन गत्यं तरासं भवाच्च एकादश्यामेका-
 न्तरेपवासादि पाण्ड्या जलपाणं कृत्वोपवसेत् ॥ अपोवा असितमनसितं चेति श्रुतेः ॥

शिष्येधव्यवस्था माह ॥ गर्गः ॥ विधिः पूज्यतिथौ तत्र निर्वधः काल के इति ॥ पूज्यत्वं च क
 र्त्तव्यं नुष्ठानयोग्यत्वम् ॥ एवं च खंडतिथौ पूज्यत्वं निर्णयं यदा तु श्रमा वा स्यादिति य-
 या च प्रति पक्षे र्योगस्तदा मासु कैव ग्राह्या ॥ तदुक्तं निगमे ॥ युग्माग्नि युगभूतानां परासु
 न्योर्वसु रंधयोः ॥ रुद्रेण द्वादशी युक्ता चतुर्दश्या तु पूर्णिमा ॥ प्रति पक्षे पञ्चमास्या
 तिथ्यो र्युगमं महाफलम् ॥ श्रत्रु पूर्वतिथिस्तु उत्तर विद्धे वज्रं न तु पूर्व विद्धे ॥ चैत्र
 कृत्वाति पक्षे वसंत रंभः ॥ तत्र चैत्र कृत्वा प्रति पक्षे पूर्व विद्धायां विभूति वंदनादि कर्त्तव्यं
 कर्त्तव्यं ॥ होलिकानंतरत्वेनैव ॥ होलिका समीपं गत्वा तद्गुह्यं गृहीत्वा ॥ षडनीयोगं सं
 न ॥ ॐ वंदितासि सुरेदेरा ब्रह्मराणा प्रकरेण च ॥ अतस्त्वाभ्यारथि व्यासि चिभूते कृतिदा
 भव ॥ सर्वद्वनमात्रमुकुलं च प्राप्नीयात् ॥ गोमयोपलिप्ते शुचौ देशे कृतस्तस्त्व-
 यनः ॥ आश्विनमंत्रः ॥ आश्विनं वसंतं स्य चाकंदकुसुमं तव ॥ सर्वद्वनं विचाभ्यद्य सर्व
 कामार्थसिद्धये ॥ चैत्रशुक्ल प्रति पक्षे वसंत रंभः ॥ सा चोदय व्यापिनी ॥ यथा चैत्रे मासि जग

सर्वे नी कार्या पूर्वे चा पराया यवा ॥ युक्ता न ह्यथिता यस्माद्यत स्सा सर्वतो मुखीति ॥ पुराण स-

४४ सुचये ॥ संपूर्णा दशानी कार्या भिलिता पूर्वया यवेति ॥ तिथेः क्षयच्छिभ्यां पूज्यतामाह ॥ त्रिमु-

हूर्त्वा विकर्तव्या याति थि च्छि गामिनी ॥ परमुहूर्त्वा विकर्तव्या याति थिः क्षय गामिनी ॥
॥ दृष्टि गामिनी स्त्रत्या क्षय गामिनी महती पूज्यतेति ॥ ब्रह्मैवैवर्हेऽपि ॥ तिथि ह्ना साहिष्ठ-
मानां दृष्टि ह्ना स विधी तथा ॥ ज्ञत धाद्व विभागेन विज्ञा तव्यो व्यवस्थिगी अपि ॥ अत-
श्च तिथि क्षय दृष्टिभ्यां पूज्य तथा ज्ञतादि कं कर्तव्यमिति दिक् ॥ अथ ग्रति पदादि वि श्रेय-
तिथि निर्ययः ॥ विनाति पन्थानां वाक्यानां परस्पर विरोध परिहारे निर्ययः ॥ यदुक्तं ॥ तत्वे-
विप्रति पन्थानां वाक्यानामि तरेतरम् ॥ विरोध परिहारे ज्ञत त्व निर्यय दर्शनम् ॥ अथा-
है प्रति पन्थिणीयते ॥ सा च यदि सूर्यो ह्ये मारभ्य युजरुदयं पश्यन्तं भवति तदा सा संप-
र्णत्वा नि संसेहं कार्या हर्षा ॥ नहुक्तं स्नाने ॥ अति पेल्ले भूतयः सर्वा दु ह्या सोदया इवेः ॥
संपूर्णा इति विख्याता हरि वासर वर्जिताः ॥ हरि वासरः स्यात्परी र्वं ह्यतिथौ नृविधिनि-

शिवे च पूर्वयुतैव कार्या ॥ तत्र देवलः ॥ पूर्वविद्देवकतंव्या प्रावरात्रवलद्विभम् ॥ अथ देव
 केः ॥ देवलैःपि ॥ प्रातिपद्वर्षा संयोगे त्रीडनतु गवां मतम् ॥ परविद्देव्युपःकुर्व्या त्रुन दार

धनदायमिति ॥ पुराणसमुच्चयेऽपि ॥ गवां त्रीडादिने यत्र रात्रौ दृश्यंत चंद्रभाः ॥ सोमो रा
 त्रा पशून्हन्ति सुभी पूजकोस्तथा ॥ तत्रैव वार्षिकजयपराजयहेतुत्वेन द्यूतं कार्यम्
 ॥ स्कादेयथा ॥ प्रातर्गोवर्द्धनः पूज्यो द्यूतं चापि संमाचरेत् ॥ ज्ञात्वा ॥ प्रातिपदि जयो यस्य
 तस्य संवत्सरे जयः ॥ अतो वर्षपरिहाराय द्यूतं चैव सप्ताचरेत् ॥ गोपूजां भक्त्या ॥ गो
 र्द्धनधराधारगोकुलत्राणाकारक ॥ बहुबाहुकतच्छायगवां कोटिप्रदो भव ॥ लक्ष्मी
 र्या लोकापालानां धेनु रूपेण संस्थिता ॥ द्यूतं वहति यज्ञार्थे मम पापं हतु ॥
 अग्रतस्सन्तु मे गावो मे सन्तु पशवः ॥ गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसा अग्रहम्
 ॥ अत्रैवा पराहे ॥ कुशकाशनिर्मितमार्गपाली पूर्वस्यां ग्रामतस्तत्र दृक्षादिषु निव
 द्य सर्वे वरास्तस्यास्तले स्थेयुः ॥ तदुक्तं स्कादे ॥ ततोऽपराह्णसमये पूर्वस्यादि

द्वह्नाससर्ज्जं प्रथमे हनि ॥ शुक्लपक्षे समग्रं तु तदा सूर्यो द्ये सति ॥ दिनद्वये व्याप्ता व्या-
 ३६ शो पूर्वैव ॥ चण्डिकासर्जने तु अमा युक्तैव ॥ तदुक्तं कालिकापुराणे ॥ अमा युक्तै वसं ग्राह्या न-
 ति पञ्चद्विकासर्जने ॥ ज्येष्ठशुक्लश्रुतिपदिदृष्टहरारंभः ॥ भाद्रपुक्लश्रुतिपदिश्रिवन्नतं तदेव भोजनं व्रत-
 म् ॥ यदुक्तं ब्रह्मवैवर्ते ॥ रुद्रव्रतेषु सर्वेषु कर्तव्या समसुखी तिथिः ॥ श्रुतिं न शुक्लश्रुतिपदि न व-
 एत्रारंभः ॥ सा च पूर्वार्धे पूजयेच्छिवाम् ॥ अत्र कर्मकालव्यापिन्येव तिथिर्गृह्यते ॥ क-
 र्माणोपस्ययः कालस्तत्कालव्यापिनी तिथिरित्युक्तेः ॥ अत्र शुक्लश्रुतिपत्पूर्वैवोपो-
 व्या ॥ त्रिशुहर्ती न्यूनत्वेऽपि पूर्वैरेव युगमवावात् ॥ प्रातरावाहयेद्देवी प्रातरेव विस-
 र्जयेत् ॥ अत्र सति संभवे श्रुतिपत् आदिनाडी षोडशकं त्यक्त्वा कलशः स्थाप्यः ॥
 आद्याः षोडश नाड्यस्तु तत्प्रायः पूजयेच्छिवाम् ॥ कलशस्थापनं तत्र हारिष्टं जायते धु-
 वम् ॥ देवीपुराणोक्तेः ॥ एतौ तु तान्त्रिके धौ ॥ मास्ये ॥ न एतौ स्थापनं कार्थ्यं न च हुंभाभि-
 र्वेचनमिति ॥ अथ कार्तिके शुक्लश्रुतिपत् ॥ सा च तिथिदृष्टे तद्व्यपिनी गोत्रीडा होह-

ॐ श्रीः ॥ देवल्लोऽपि ॥ प्रतिपद्वर्षा संयोगे त्रीडनं तु गवां मतम् ॥ पंचविह्वेयः कुर्व्यात्पुनर्दार

ये च पूर्वयुतैव कार्याः ॥ तत्र देवलः ॥ पूर्वविद्देवकतव्या प्रावराजवल ॥ ६१ ॥ अथ
 कैः ॥ देवलैःपि ॥ प्रातिपद्वर्षा संयोगे श्रीङ्गनंतु गवां मतम् ॥ परविद्देवयः कुप्यात्तु न दार
 धनक्षयमिति ॥ पुराणसमुच्चयेऽपि ॥ गवां श्रीङ्गादिने यत्र रात्रौ हस्त्यंत चंद्रमाः ॥ सोमो
 जा पशून्हांति सुरभी पूजकोस्तथा ॥ तत्रैव वार्षिकं जयपराजय हेतुत्वेन द्यूतं कार्यम्
 ॥ त्कां देयथा ॥ प्रातर्गोवर्द्धनः पूज्यो द्यूतं चापि समाचरेत् ॥ ज्ञात्ते ॥ प्रातिपदि जयो यस्य
 तस्य संवत्सरं जयः ॥ अतो वर्षपरीक्षार्थं द्यूतं चैव समाचरेत् ॥ गोपूजां भक्षात् ॥ श्रीगोव
 र्द्धनधारगोकुलत्राणकारक ॥ बहुबाहुकतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव ॥ लक्ष्मी
 र्यां लोकपालानां धेनुर्येण संस्थिता ॥ द्यूतं वहति यद्द्वार्थं मम पापं व्यपोहतु ॥
 अग्रतस्तन्नुमेगावो गावो मे सन्तु पृच्छतः ॥ गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्
 ॥ अत्रैवा परहे ॥ कुशकाशनिर्मितमार्गपाली पूर्वस्यां ग्रामतस्तत हृत्सादिषु निव
 द्य सर्वे वार्णास्तस्यास्तलिस्थेषुः ॥ ततोऽपराह्णसमये पूर्वस्यां दि

सदि भात ॥ मार्गपालीनि वद्मै पात तुर्ये स्तम्भे ऽथ पादपे ॥ कृष्णकाश मयी दिव्या लव-
 के वर्द्धमिर्मुरि ॥ कते हो मे द्विजेन्द्र सुवशीया न्मार्गपालिकाम् ॥ नमस्कारततः कु-
 र्यान्मन्त्रेणा नेन सुव्रतः ॥ ॐ मार्ग पालिनमस्ते स्तु सर्वलोक सुवव्रदे ॥ विधेयैः पु-
 नरायणैः पुनरेहि व्रतस्य मे ॥ इति पूज्यनी राजनमपि कृत्वा ॥ चतुर्वर्णानि स्तां समुत्सं-
 द्वेयुः ॥ स्कंदे ॥ मार्गपाली समुत्संध्यनी रुजःस्युः सुखा न्विताः ॥ अथ तत्रैव यद्विष्णो कर्ष-
 णमपि काव्यम् ॥ तदुक्तमादित्य पुराणे ॥ कृष्णकाश मयी दुर्ध्या कृष्णकाश मयी दृढाम् ॥
 नवांगारोकेनो राजा हीनवर्णा स्तथा न्यतः ॥ गृहीत्वा कर्षयेद्युक्ता यथा सारं मुहुर्मु-
 हुः ॥ जयो ऽत्र हीनजातीनां क्षेयो राज्ञस्तु वत्सरात् ॥ जय चिन्हसिंदराजा वि-
 दधीत प्रयत्नतः ॥ अत्रैव राजा स्वयह स्यांतः ॥ वक्ष्यमाणा लक्षणां वलिपंचरंग के-
 रातिरव्यस परिवारः ॥ योऽप्योपचरै र्वलिं पूजयित्वा तत्कील्यर्थं यथा प्राप्तिरु-
 नं वाट्येष्ट ॥ तद्दानमक्षय फलं भवति ॥ अन्येऽपि स्वस्तु गृहे तं हुतैः प्रायश्चाया-

४३३ ॥ वलिमालित्व पूजयेच्चुः ॥ तथा च स्कादे ॥ यद्स्यां दीयते दानं स्वल्पं वा यो दि वा बहु
 नदस्ययं भवेत्सर्वविशोः प्रीतिः कं परम् ॥ अन्यमासि प्रति पत्सु जनादि विभे-
 दो न प्रसिद्धः ॥ यदि कश्चित्स्यात् तदा पूर्वविज्ञाया भवेत्कार्यं न वेति सिद्धान्तः
 इति प्रतिपन्निरर्थः ॥ अथ द्वितीयानिर्णयते ॥ द्वितीयातिथिरुपवासादिष्वुत्तरीयायु-
 तैव संग्रहा ॥ युग्मवाक्यात् ॥ तत्र चैत्रशुक्लद्वितीयया ॥ यमा पूजा शिवपूजावहिर्द-
 ज्ञा च कार्या ॥ तदुक्तं भाविष्योत्तरे ॥ चैत्रं शुक्लं द्वितीयायामुमा पूज्या फलार्थिभिः ॥ शिव-
 पूजायि पूजा च कर्तव्या मुनि सत्तम ॥ इति चैत्रद्वितीया ज्ञाप्या वणादि कलद्वितीया सु च-
 तुर्व ॥ अथ न्य ज्ञातमस्मा पूर्वा कला कृषी दहन्नस्या सावित्री वदधे त की ॥ कामजयो द-
 शी रं गायो य्या पर्व संयुता ॥ दहन्नस्या अथ न्य प्रावना द्वितीया ॥ कृति संवर्गोक्तिः का-
 तिकं शुक्ल द्वितीया यमद्वितीया ॥ साऽपरा न्त व्याधिनी ॥ अस्यां यमना रजानं कल्पाय
 मं पूजयेत्तर्था ये च ॥ अग्निनी भिर्यतिरेभोजनीयाः ॥ अग्निरन्यथ दत्ता लंकारादिभिः

सत्कार्याः ॥ तथा च खांदे ॥ ऊर्जं शुक्ल द्वितीयाद्या म परान्हे ऽर्चयेद्यमसु ॥ स्नानं कृ-
 त्वा भानुजायो यम लोकं न पश्यति ॥ तर्पणं च ॥ यज्ञोपवीति नाकार्यं प्राचीना वीति
 नाथवा ॥ देवत्वं च पितृत्वं च यमस्यैव द्विरुपता ॥ कान्तिके शुक्ल पक्षस्य द्वितीयाद्यां
 तु नाराद ॥ यमो यस्मिन् यापूर्वं पूजित स्वगृहे ऽर्चितः ॥ अस्यां निज गृहे विप्रनभोक्तव्यं
 ततो वृधैः ॥ स्नेहेन भगिनी हस्ताङ्गोक्तव्यं पुष्टि वर्द्धनम् ॥ दानानि च भद्रयानि भगिनी
 भ्यो विधान विद ॥ सर्वा भगिन्य स्सं पूज्याः अभविमतिपन्नकाः प्रतिपन्नकाः कृत्रिमाः
 ॥ अस्यां च भगिनी भिर्भानु रायुर्द्वये चिरजीविनः पूजकाः ॥ ते च ॥ अथ वत्सा
 मावलिर्व्यासो हनूसांश्च विभीषणाः ॥ कथं परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥ इमा
 न्पूज्यन्नातु राप्रियं प्रार्थयेत् ॥ इति यम द्वितीयाः ॥ पक्षद्वय गता सुचतुर्विंशति संख्या-
 ख पिहितप्राप्तु सर्वोपचारैर्वत्सा पूज्यः ॥ इति द्वितीया निर्णयः ॥ अथ तृतीया निर्णयते
 सर्वास्तृतीया रंभा व्यतिरिक्ता चतुर्थी युते व ग्राह्याः ॥ खांदे ॥ द्वितीययानु संयुक्तानव

तीयाकदाचन ॥ कर्तव्याव्रतिभिस्तानधर्मकामार्थतत्परैः ॥ अस्त्रवैवर्ते ॥ रंभा
 धियत्वा च तृतीयां मुनिसत्तम ॥ अन्येषु सर्वकार्येषु गणयुक्ता प्रशस्यते ॥ अथ चैव शुक्ल
 तृतीया ॥ ओं दोलनाख्या ॥ तत्र ओं कोरे मां सं पूज्य रात्रौ जागरणं दक्षिणा दानमपि का-
 र्यं ॥ तदुक्तं देवीपुराणे ॥ तृतीयायां यजेद्देवीं प्रंकोरेण समन्विताम् ॥ सौवर्गीं च तथा गो-
 रीराजतप्रफोकरस्तथा ॥ चतुर्भुजश्च देवोऽसौ द्विभुजा पार्वती भवेत् ॥ कुंकुमागार
 कर्पूरस्त्रगांधधूपदीपकैः ॥ संपूज्यां दोलयेद्वत्सशिवो मातुष्टये सदा ॥ रात्रौ जागरणं
 कार्यं प्रातर्देया च दक्षिणा ॥ दयं सन्वादि रूषि ॥ इति चैव शुक्ल तृतीया अथ वैशाख शुक्ल
 तीया क्षय तृतीया ॥ सा पूर्वार्द्धा विनी ॥ नादीये ॥ हे शुक्ले ह्येनया कर्त्तव्यं युगादी क्रव-
 यो विदुः ॥ शुक्ले पूर्वार्द्धे कीर्त्तया कर्त्तव्यं चैवा पराह की ॥ देवीपुराणे ॥ तृतीयायां तु
 वैशाखे रोहिण्युक्षे प्रपूज्य च जलकुंभप्रदानेन शिवलोके महीयते ॥ मंत्रस्तु ॥ एष ध-
 र्मवदोदन्नो ब्रह्मविष्णुशिवोत्तमः ॥ अस्य प्रदानं तद्व्यंतुषित रोऽपि पिता महाः ॥ गं ॥

ॐ धोदक तिलैर्मिश्रं सान्नं कुंभं सदसि एणम् ॥ पितृभ्यस्तं प्रदायानि पितृभ्यामुपनि
४४ द्यतु ॥ साचेयं पूर्वान्ह व्यापिनी ॥ विष्टुशरणेऽपि ॥ पानीयमप्यत्र तिलैर्विभिन्नं दद्यात्

तिलभ्यः प्रयतो मनुष्यः ॥ श्राद्धं कृतं तेन समाः सहस्रं रहस्यमेतन्मुनयो वदन्ति
भास्ये ॥ कृतं श्राद्धं विधानेन मन्वादिषु युगादिषु ॥ ह्यायनानि हि सहस्रं पितॄणा
न्यसिदं भवेत् ॥ गोभिलः ॥ वैष्णवस्य तृतीयांशः पूर्वविद्धां करोति वै ॥ हव्यं देवान
पृच्छति कव्यं च पितरस्तथा ॥ पूर्वान्हेतुं सदा कायार्थं शुक्लामनुयुगादयः ॥ परेतु
अपरान्हः पितॄणां भित्त्यादि वचनाच्छ्राद्धविधयः परान्हं व्यापिन्येव ग्राह्या ॥ हि
शुक्ले दत्त्यादि वाक्यतः ॥ पूर्वान्हं प्राक्सुक्तापपूर्वाह्णपरः ॥ गोभिल वचनं तु हि
श्रुद्देशेन क्रियमायानर्थाणादि परतया व्याख्येयमित्याहुः ॥ साचेयं कल्पनान
सतीव भाति ॥ अपरान्हः पितॄणां भित्त्यादि वचनस्याक्षयतृतीयातिरिक्त विषय-
त्वेनापि व्याख्यानसंभवात् ॥ मलमासयति तु भयत्र श्राद्धं श्राद्धचंद्रिकायाम् ॥ यो

गार्दिकं मासिकं च आहं चा पस्याक्षिकं ॥ मन्वादिक् तैथिकं च कुर्यान्मास देवेऽपि
 च ॥ अपर पक्षोऽत्र कृत्स्न पक्षो गृह्यते ॥ महालयस्य मले निषेधात् ॥ नारदीये विप्रो
 वि ॥ वैष्णवे शुक्लपक्षे तु तृतीया रोहिणीयुता ॥ दुर्द्धभा वृषवारेण सोमेने वयुता-
 यवा ॥ रोहिणी वृषयुक्तापि पूर्वविद्धा विवर्जिता ॥ मन्वा कृतापि सां धातः हन्ति पु-
 रायं पुरा कृतम् ॥ इत्यक्षय तृतीया ॥ ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया रंभासा ॥ पूर्वाभां गुरुदा हनस्कंद
 वाक्यात् ॥ तथा च भावित्ये ॥ ज्येष्ठ शुक्ल तृतीयायां पति पुत्र फलार्थिनी ॥ नारि सूर्यो
 दये स्नात्वा सती व्रत पस्याणां ॥ तत्र व्रत नियमं मयहीत्वा ॥ चतस्र्यकुंडेषु स्थंडिले
 ब्रुवाग्नीन्संस्थाप्य यं च भोभास्कार इति पंचाग्नि मध्ये वेदि कायां रंभा स्तंभो पप्रोभि-
 तां पुष्पमंडपिकां कृत्वा तत्र सर्वशक्ति मयी देवी आवाह्य सर्वो पचारैर्नमोऽन्ते न्नामपे
 त्रैर्देवी संदृज्य सूर्यास्तमय पर्यन्त चित्सेत् ॥ ब्राह्मणाश्च प्रणवादि नमोऽन्ते भर्तृ-
 क्षोभाय इत्यादि जुहुयात् ॥ ततो द्विजसं पत्यं च नुष्यां भोजयित्वा यथा प्राज्ञा प्राचा

कर्तव्यार्थदक्षिणां दत्त्वा गृहमाव्रजेत् ॥ इति भाद्रशुक्ल तृतीया हरितालिका ॥ सा मुहूर्तमा-
 ष्च नापि परैव ॥ मुहूर्तमात्रसत्वेऽपि दिने गोरीव्रतं परेति ॥ माधवः ॥ द्वितीयां श्रेष संयु-
 क्तां या करोति विमोहिना ॥ सा वैषय्यमवाप्नोति प्रवहंति मनीषिणाः ॥ इत्यापस्तवः ॥
 प्राद्यामधुप्रावणिका कज्जली हरितालिका ॥ चतुर्थी मिश्रिता रथीभिर्द्विचानर्तं वि-
 धीयते ॥ तृतीयानभसः शुक्लामधुप्रावणिका स्मृता ॥ भाद्रस्य कज्जली कृष्णा शु-
 क्लानुहरी तालिका ॥ इति ह्रिदोदासीये ॥ तस्यां गोरीमूर्तिं विधाय संपूज्य गुडापूपनैवेद्यं
 दद्यात् ॥ भविष्येऽपि ॥ गुडापूपास्तु तातव्या मासि भाद्रपदे तथा ॥ तृतीया शुक्लपक्षस्य
 सर्वपापहरा स्मृता ॥ माघशुक्ल तृतीयायां गुडस्य लवणस्य च ॥ दानं श्रेयस्कारं राजन-
 स्त्रीणां च पुरुषस्य च ॥ गुडेन तु यत्ते देवी लवणेन स्वयं शिवः ॥ इतस्तृतीया चतुर्थी
 युतौ वेतिसिद्धांतः ॥ इति तृतीया निर्णयः ॥ अथ चतुर्थी निर्णयते ॥ सा चोपवासादिषु गणेशे
 चतुर्थी कुंडचतुर्थी बहुला चतुर्थी जनव्यतिरिक्तेषु पंचमी युतौ वद्यमवाक्यान ॥ अथ

चैव शुक्लचतुर्थ्यां ॥ गणेशं लङ्घकादिभिरभ्यर्च्य सर्वान्कामानवाप्नोति ॥ देवीपुण्ये ॥ ग-
 णेशोपाचार्येऽनुज्ञां लङ्घकादिभिरादरात् ॥ चतुर्थ्यां विप्रनाशाय सर्वकामसमृद्धये ॥
 स्त्रीभिर्ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यामुमा पूज्या ॥ ब्रह्मपुण्ये ॥ ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां तु जाता पूर्वमु-
 मासती ॥ तस्मात्सा तत्र संपूज्यास्त्रीभिस्सोभाय दृढये ॥ उपहरैश्च विविधैर्भर्ति नृ-
 त्योत्सवादिभिः ॥ होमैः पर्यामिर्वस्त्रैःश्च पत्रपुष्पैस्सुगंधिभिरिति ॥ आचण कृत्वा चतुर्थी
 संकष्टचतुर्थी सा चंद्रोदयव्यापिनी ॥ स्कंदे ॥ आचणो बहुले पक्षे चतुर्थ्यां च विभूदये-
 ॥ तस्मिन्दिने व्रतं कार्त्तिकसंकष्टारव्यं सुरेश्वरि ॥ इति दिनद्वयेतद्याज्ञावध्यासो पूर्वव-
 द्वात्तद्विज्ञे गणेश इति वाक्यात् ॥ अथ भाद्रशुक्लपदचतुर्थीश्रवाख्या ॥ तत्र स्नानदाना-
 दिकं गणेशपूजनंच ॥ अनंतपुण्यदं सन्निधमविव्ये ॥ श्रियाशां तासुखा एतन् चतु-
 र्धां विविधा स्यतीति ॥ भाद्रशुक्ले श्रितावाभावे श्रांता शुक्लचतुर्थिका ॥ भौमवारदु-
 ता सा चैत्सुखानामप्रकीर्तिता ॥ रविवारदुता सा हि प्रोक्ता महाचतुर्थिका ॥ गणेश-

प्राप्नोतु ॥ पूर्वव चतुर्थी तु लगीयार्था अहो गुण फल प्राप्त ॥ कर्तव्या प्रतिनिधित्वं प्राप्त
 नाथ सुतो विधीयते ॥ गोविंद एव ॥ नाग इते तु मध्याह्न व्यापि न्येव ॥ शुभं मध्याह्ने वन
 तनो पीत्य फली भ्रान् ॥ क्षीरेणा स्नाप्य पञ्चव्यां पूजयेत्प्राप्तो नर हति ॥ देव लोके : भाद्र
 क्क चतुर्थी वहुला सा पूर्वव ॥ भाद्र शुक्ल चतुर्थी मध्याह्न व्यापिनी ॥ पूर्वोत्तर मर्दिने मध्या-
 ह्न व्याप्यो परैव ॥ मध्याह्ने दहस्वति ॥ चतुर्थी गणा नाथ स्व भाल विद्या प्रदा स्यते ॥
 मध्याह्न व्यापिनी चेत्स्वात् परा चेच्च परैरह नि ॥ भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्र दर्शने नि-
 विध्यते ॥ तदाह नार्क एडेयः ॥ भाद्रे मासि धिते पक्षे चतुर्थी स्वाति योगिनी ॥ भिद्यमानि
 द्वापं कुरुते तस्मात्पश्ये नतं तदा ॥ प्रसादा दह्यत दीप प्रांतये विष्णु गुणोक्तं मंत्रं-
 जयेत् ॥ सिंहः प्रसेन भवधी सिंही धाम्य वता हतः ॥ सुकुमारि कि मारो दी स्त वसे प-
 स्स्य भनक्तः ॥ माघ शुक्ल चतुर्थी तिल चतुर्थी ॥ सा प्रदोष व्यापिनी ॥ काशी खंडे ॥ माघ शुक्ल
 चतुर्थी तु नक्त इत परा वणाः ॥ येत्वा दुंदे : र्द्विष्यंति तेऽप्या स्सुर सुर इहाम् ॥

विधाववाभिर्दक्षिणं चतुर्थी प्राप्य तापसी ॥ शुक्लान्नतिलान्गुडैर्वर्ध्यां प्राप्नीयात्स
 दुक्कान्नती ॥ तापसी साधीमः ॥ अत्रैव सदा शिवं कुंदं पुष्पैरभ्यर्च्य लक्ष्मीं प्राप्नोति ॥
 क्षीर्मेधका ॥ कुंभे शुक्लचतुर्थ्यां तु कुंदं पुष्पैः सदा शिवम् ॥ संपूज्य यो हि न तापरीं संप्रा-
 षोति श्रियं नरः ॥ इयमेव कुंडचतुर्थी ॥ साय मासे तु संज्ञाते चतुर्थी कुंड संज्ञका ॥ सात्तु पं-
 चम्या सुरभ्येष्ट ततो राज्यं भविष्यति ॥ इति चतुर्थी निर्णयः ॥ अथ पंचमी निर्णयः ॥ सात्तु पं-
 चमी चतुर्थी युतेव ग्राह्यो पवासादिषु ॥ महाह जावालिः ॥ प्रतिपत्पंचमी चैव उयोध्या
 ध्वसे युता ॥ चैत्र शुक्ल पंचम्यां नागान्युज्य स्त्रीणादि नैवेद्यं देयम् ॥ देवी पुराणे प्रिय ॥ पं-
 चम्या पूजयेन्नागान नं ताद्या नमो रगन् ॥ क्षीरं सर्पिर्धुं नु नैवेद्यं देयं सर्वसुरावह
 भू ॥ नागस्वस्वमास्त्ये ॥ नागा ध्येव तु कर्तव्याः स्वहस्ते क धारिणाः ॥ अथ स्वस्वर्प्या कृति-
 स्तेषां नाभेरुद्धं नु पौरुषी ॥ पृष्ठांश्च स्मृद्धिं कर्तव्या हि जिह्वा वह्नवोऽसभाः ॥ विषमे नि-
 ना चत् ॥ ध्रावणं शुक्ल पंचमी नाग पंचमी ॥ नाग पंचमी सा पर विद्मः ॥ चमत्कारं विंता मरणे ॥

संक्षिपं च मीनायाम् पूजायां कार्या यद्यी समन्विता ॥ इति ॥ तस्या मधि नाम पूजा प्रादुराभू-
 त् ॥ पंचम्यां गोमयेन हारस्यो अयोः पाण्डुर्योः ॥ नाना नूतिलिख्य ॥ हविर्दूर्वा कुण्ड-
 ल्यैः संपूज्य नाम प्रीतये ज्ञास्येण भ्योजयेत् ॥ तस्य सपर्यभयं न भवति ॥ भवित्ये ॥ इति-
 शेष फल मन्त्रे वर्णायम् ॥ भाद्रपुल्ल पंचमी त्रय्ये पंचमी ॥ सा च मध्याह्न व्यापिनी ॥ सा-
 रीतः ॥ पूजा इतेशु सर्वेषु मध्याह्न व्यापिनी सिद्धिः ॥ वेदीं सम्यक्कर्तुं वीत गोमयै चो-
 पलेषिताम् ॥ रंगा बलि समा युक्तां नाना पुष्प समन्विताम् ॥ तत्र सप्त तटवीन् दिव्या-
 भक्तियुक्तः प्रपूजयेत् ॥ अर्घ्यं च दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः कथ्यते ॥ त्रिभुवनाजो मिष्टानि-
 नोऽथ गीतमः ॥ यमदमिन र्वशिष्ट प्रसहेते नृपयः स्मृताः ॥ सप्त नृपयै न्यूज्या कुरु-
 म् स्थुल्यन प्राजा हरेणो पोय्य सप्त वयोरणि नत माचरेत् ॥ सर्व प्राप विनिर्मुक्तः ॥
 तादिभिः स्नापयित्वा संपूज्य नैवेद्यं दद्यात् ॥ यथा च भवित्ये ॥ तथा चाप्येव पूजे मा र्ति-

पञ्चम्यां कुरु नन्दनं कृत्वा कुशासयं नागाभिर्द्राणया सह पूजयेत् ॥ धर्तारिदकेन प्रयसात्
 पयित्वा विशांपते ॥ गोधूमेः पयसा क्षित्तेः भक्षेद्य विविधैस्तथा ॥ पूजयेत्कुरुशर्दूलन
 स्यां प्रेषादयो नृप ॥ नागाः शीता भवंतीह श्रान्तिमाप्नोति वै प्रभो ॥ इति ॥ माघ शुक्ल पंचमी
 श्रीपञ्चमी स्तुच्यते ॥ तत्र च मदन पूजा ॥ वसंतोत्सवश्च ॥ तदेव प्रणालसमुच्चये ॥ माघ मासे नृप
 श्रेष्ठ शुक्लायां पंचमी तिथौ ॥ एति कौमोतु संपूज्य कर्तव्यस्सु महोत्सवः ॥ दानानि च भ्र-
 दयानि तेन तु ध्यानिमाधवः ॥ इति वसंत पंचमी ॥ पक्ष इत्यगता सु सर्वासु पंचमी शु ति-
 थि पति त्वेन नागा एव पूज्याः ॥ इति पंचमी निरुपयः ॥ अथ यक्षी निरुपयते ॥ सा तु स्कंद त्र-
 तादन्यत्र पौर्व युष्म वाक्यात् ॥ अतः सप्तमी विद्मैव ॥ तथा च बृहस्पतिः ॥ नागा विद्वां
 तुयां यक्षी मुपेय्यती ह भानवाः ॥ इति श्रेष्ठ स्स संतानं तेषां नश्यति पूर्वजैः ॥ अतः
 नागा विद्वान कर्तव्या यक्षी चेद कदा चन ॥ अत्र षण्मुहूर्तात्सको वेधः ॥ नागो द्वादश
 नाडीभिर्दृष्यत्युत्तरे तिथिम् ॥ तेन षण्मुहूर्तं न्यून पंचमी योगो दूर्ध्वेव ॥ अथाढ शुक्ल-

सन्निपद्यीमा पूर्वा ॥ लहे ॥ कृत्वा षष्ठी स्तुतं च षष्ठी शिवा रात्रिश्चतुर्दशी ॥ एताः पूर्वयु-

४२० ताः कार्यास्तिथ्यन्ते पारणं भवेदिति ॥ अत्र पंचम्याम्बु पोष्य कुमारः पूज्यः ॥ तथा वाराहे

॥ आद्यादे शुक्ल षष्ठी तु तिथिः कोमारिणा स्मृता ॥ कुमारः सूर्चये तत्रो पोष्य पूर्वतु पं-
चमीम् ॥ इयमेव सूर्य षष्ठी ॥ अत्र ज्ञानात्वा भास्करं पूज्य गव्यं प्राश्य महाफलं प्राप्यते ॥
शुक्ले भार्गवे देवदर्या लानं भास्करं पूजनम् ॥ प्राशनं पंचगव्यं अथ भेष फलं प्रदं भिति

॥ आद प्रद षष्ठी कृत्वा कपिला ॥ भोमे रोहिणी व्यतीपात योग युक्ता ॥ तत्र भास्करं पूज्य वि-

त्वा विप्राय कपिलां दद्यात् ॥ अरण्यमनुचये ॥ आद मासि सिते पक्षे भानो चैव करे स्थिते

॥ पातेयु चैव रोहिण्यां सा षष्ठी कपिला भवेदिति ॥ आद कृत्वा षष्ठी चांद्रमासेनेत्यर्थः

॥ आद कृत्वा षष्ठी चंद्र षष्ठी ॥ सा चांद्रोदय व्यापिनी गार्गा ॥ उभयत्र चांद्रोदय व्यापि-

न्या पूर्व विद्वेत् ॥ यद्वक्तं ॥ नद्वद्भाद्र पदे मासि षष्ठयां पक्षे स्थिते तरे ॥ चांद्र षष्ठी ज्ञातं कुम्भ-

व पूर्व वेधः प्रशस्यते ॥ चांद्रोदये यदा षष्ठी पूर्वाहे चोपरे स्थिति ॥ चांद्र षष्ठ्या श्रिते पक्षे

७
संक्षिप्तैर्वापोऽप्याश्रयन्तत इति ॥ सैव ह्यक्षयः ॥ सा सप्तमी युतेति दिवोदासः ॥ अथाभिधनं शु-
३२५ ल्लपंचम्यां देव्याः स्नापितायाः ॥ सप्तम्यां पूजार्थं षष्ठ्यां । अथेष्टानक्षत्रयुक्ताया नक्ष-
त्रभेदे केवलाद्यां दृष्टानि मंत्राणो कार्येभ्यः ॥ तत्रायं मंत्रः ॥ ॐ रावणस्य वधार्थाय विराट्जातः
त्रुग्रहभ्यश्च ॥ अकाले ब्रह्मणा वेधो देव्यास्त्वयि ततः पुरा ॥ अथौलक्षिरस्वेजातः
श्रीफलश्रीनिर्केतन ॥ तेन व्योमसुभगा गच्छ पूज्यो दुर्गा स्वरूपतः ॥ इति ॥ अथ चार्ति-
कशुक्लषष्ठी ॥ तत्र भौमयुतायां वह्निं संपूज्य वह्निं महो त्सवं कार्याम् ॥ तदेव मात्से
दश्रिकाकोऽशुक्लषष्ठी भौमवारिणा संयुक्ता ॥ महाषष्ठी तु साधोक्ता सर्वपापहरातिथिः
तस्यां स्वपिति वै वह्निः पूर्वन्मोषोऽप्यवैदिने ॥ षष्ठ्यां वह्निं समभ्यर्च्य कुर्याद्वाह्निं
महोत्सवम् ॥ इति दश्रिकाकोर्कैकार्तिर्कोमासीति कालादर्शः ॥ अथ मार्गशिरःशुक्लष-
ष्ठी ॥ तस्यां तारकं स्कंदो हतवान् ॥ अतः स्कंदं संपूज्य दानादि कृतमक्षयं भवति ॥
अथैव्यः ३ पितृ ॥ येयं मार्गशिरिरेजासि दक्षी भगवतः सत्तम ॥ पुण्या पापहराथ न्याशिरिवा-

प्रांता गृह त्रिधा ॥ खान दानादि कं कर्म्म तस्या मक्षय मस्तुने ॥ इति षष्ठी निर्णयः ॥ अथ

सप्तमी निर्णयते ॥ सप्तमी षष्ठी युते चोपवासादिषु ग्रह्या ॥ युग्म चाक्यात् ॥ अथ
समेता कर्त्तव्या सप्तमी नाष्टमी युता ॥ पतंगो पासनाद्येह षष्ठ्या मादुरुषो षण्णम् ॥ पतं
गः सूर्यः ॥ पुराणोत्तरमपि ॥ षष्ठ्या श्वैक कलायन्नतन्न संनिहि तोरविः ॥ मन्त्र क्रतु धातं शु
ण्य मष्टभ्यां पाण्योन च ॥ षष्ठी च सप्तमी चैव एतन्नि श्रेये यदाष्टमी ॥ त्रिष्टया नाम
सा द्वेष्टा त्रिष्ट श्रेका दृष्टी यथा ॥ पूर्व विद्वैव कर्त्तव्या सप्तमी इति सिध्दं रे रि
ति ॥ अतः सप्तमी षष्ठी युते चेति सिद्धांतः ॥ अथ चैत्र शुक्ल सप्तमी सूर्य पूजा ॥ हस्मन कार्दि
भिः कार्या ॥ देवी पुराणे ॥ आस्करस्य तु सप्तम्यां पूजां हस्मन कार्दिभिः ॥ कत्वा प्राप्नो
ति भोगा दीप्तिगता रिर्म्म हानतया ॥ वैशाख शुक्ल सप्तम्यां ॥ गंगा पूजां क्ता ॥ तथा च ब्रह्मे वैशा
खे शुक्ल सप्तम्यां जङ्गना जाल्दी स्वयम् ॥ क्रोधात्पीता पुन स्वयं कर्त्ता रं धात्तुदक्षिणात्
॥ तालन पूजेये देवी गंगा गगन केवला भिमिति ॥ इयं पूर्वोक्तव्या पिनी ॥ अत्रैव निवससुमी

सिद्धं कुर्यात् ॥ भविव्येऽपि ॥ तृतीयां सप्तमीं वीरं तच्छृणुष्या प्रतोमम ॥ निंव पत्रेः स्तुता
 २३ यानु पापघ्नी शोक नाशिनी ॥ अथाषाढ शुक्ल सप्तमी ॥ तत्र सूर्यं वर्तुलं मंडलैरुक्तं गंध धु-
 व्यादिभिः पूज्य नैवेद्या दीनार्थयेत् ॥ बहुकं नमोऽष्टपुराणे ॥ अथाषाढ शुक्ल सप्तम्यां विष स्वाभ्या-
 मभ्यास्कारः ॥ जातः पूर्वा सुतस्मात्तो तन्नो पोष्य यजे तमदा ॥ एष चक्रा कर्तौ रस्ये मंडले तत्र धा-
 मदम् ॥ मरुत्यै र्भोज्ये स्तथा यैः पुष्ट्यै र्द्वैपविलेपेनेरिति ॥ अथाश्विन शुक्ल सप्तमी ॥ देवी पूजा-
 यां परशुता ग्राह्या ॥ तथाच भविव्यं ॥ युगाद्या वर्षाद्विद्विष्य सप्तमी पार्वती प्रिया ॥ एवेत्युक्ता
 क्षन्ते न तासु तिथि शुभं कृता ॥ वर्षाद्विद्विर्जन्म तिथिः ॥ अत्रैव मूल युक्तायां केवलयायां चापं
 चर्यां स्नायितो देवीं विल्वादितिः पूजयेत् ॥ अत्रैव पुस्तकं स्थापनं मुक्तम् ॥ मूलं तद्विद्वे
 सुगंधीया पूजनीया सरस्वती ॥ पूजयेत्सत्यहं देवया वहैस्त्रय मृक्षकम् ॥ नाध्यापयेन्न च
 लिखेन्नाधीयात कदाचन ॥ पुस्तके स्थापिते देवि विद्या कामो द्विजोत्तम ॥ इति ॥ मार्गशु-
 क्ल सप्तमी मित्र सप्तमी ॥ तत्र पूर्व दिने उषोव्य कृत वपनः स्नात्वा ॥ रविं सं पूज्य ॥ पश्चाद्वाह्नी-

४६॥ एतन्मो जयेत् ॥ स्वयं सप्तम्यामष्टम्यां च मधुस्तु तमिष्टान्च भुञ्जीत ॥ अथ नाथ शुक्लं सप्तम्यं

॥ अस्यां रत्नान् प्रत्नं महदिति विवृक्तेः । सैवाचला सप्तमी ॥ जयंती च ॥ तद्वत् भविष्ये ॥ माघ
स्य शुक्ल पक्षे तु सप्तमी या त्रिंशो च न ॥ जयंती नाम सा प्रोक्ता सर्व प्राय ह्यतिथि रिति ॥
स्थिति चंद्रिकायामपि ॥ सूर्यग्रहा तुल्या च शुक्लं माघस्य सप्तमी ॥ अरुणोदय वेलायां
त्रयानं महाफलम् ॥ अस्यामेव सूर्य प्रजा ॥ माघे मासि स्थिते पक्षे सप्तमी कोटि भास्करा
हुर्वा त्रिजाला धी दानाभ्यामायुष्य संपदः ॥ इति अर्घहस्त मन्त्रश्च ॥ यद्यज्जन्म कृतं
प्रापं मया जन्म सुसप्तम् ॥ तन्मे रोगं च प्रोक्तं च भास्करा हंतु सप्तमी ॥ इत्यमेव पुन्य भूतं
स्तोत्रेण यदि चोत्था च युक्ता महती ॥ तत्र सूर्य मर्चयेत् ॥ तस्य हं गर्भः ॥ एविवारेण युक्तायां
सप्तम्या मुत्तरायणे ॥ पुनश्च मध्ये दनक्षत्रे पूजयेच्च दिवा कार्त्तु ॥ पुनश्च नक्षत्राणि गोमणेष्वादि
॥ पुनश्च माघ वराहादि तिथौ हस्त पुनर्वसू ॥ भूलं श्रोतृ पदं चानुराधा मृगशिराश्चिनी ॥
अत्र गंगा रत्नानि फलाधि कथम् ॥ तथा च मात्से ॥ अरुणोदय वेलायां शुक्लं माघस्य सप्तमीम् ॥ ४६७

यदि गंगायां यदि लभ्येत सूर्यो पर्वशताधिका ॥ अन्यत्रापि ॥ सोमवारं त्वमावास्या अनुदीर-
 च सप्तमी शृंगारहदिने प्राज्ञा चतुर्थी वा चतुर्दशी ॥ यदि चतुर्थी सप्तमी तत्काले लभ-
 ते फलम् ॥ षष्ठी च सप्तमी योगे चारभ्येदं शुभालिङ्गः ॥ योगोऽयं पश्य को नाम सहस्रा-
 र्क्षं भवेत्समम् ॥ इति ॥ इति सप्तमी निर्णयः ॥ अथाष्टमी निर्णयते ॥ सा ह्यस्मात्पूर्वा शुक्ला पदा-
 शुक्लपक्षे अष्टमी चैव शुक्लपक्षे चतुर्दशी ॥ पूर्वविज्ञानकर्तव्या भक्तव्या परसंयुतेति ने-
 मत् ॥ अस्तपक्षे ऽष्टमी चैव कृष्णपक्षे चतुर्दशी ॥ पूर्वविज्ञानकर्तव्या परविज्ञानकुञ्जचि-
 त् ॥ इति भविष्ये ॥ उक्तं वनादन्येषु सप्तमी युते वेत्यविरोधः ॥ ब्रह्मपुराणे ॥ अष्टम्या नव-
 मी शुक्ला नवम्या चाष्टमी युता ॥ अर्द्धनारीश्वरशाय्या उमा माहिषवरी त्रिभिः ॥ अष्टम्यां
 प्राप्यते रुद्रानवम्यां शक्तिरुच्यते ॥ इत्यो योगो तु संप्राप्ते पूजायां तु महाफलम् ॥
 अथ चैत्रशुक्लाष्टमी क्षणिकोक्तम् ॥ तस्यां पुनर्वसुयुतायामप्रोक्तो कालिकाः प्राप्स्य-
 ॥ तद्वक्तुं लिङ्गपुराणे ॥ अथोक्तं कालिकाश्रयोद्येपि वति पुनर्वसो ॥ चैत्रे मासि सिताष्ट-

र्ग्यां न ते श्लोक भवाद्युदिरिति ॥ आश्रय मंत्रश्च ॥ त्वा म श्लोक न रा मीष्ट मधु नास समुद्भव ॥
 ४४४ पितृभिः श्लोक संतप्तो माम श्लोकं सदा दूरे ॥ अत्र देव्या महा पूजा पि का र्था ॥ तद्वक्तृभक्त-
 रणे ॥ आत्काले महा पूजा क्रियते या च चार्थिकी ॥ चार्थिकी त्पनेन संवत्सर स्यादो चैत्र
 शुक्ल भति पत् क्रमा दष्टमी पर्वतं त्रीय सा राणा पूजा विधीयते ॥ अतश्च आर द्र संतप्तो ह्यु-
 त्प एव दुर्गोत्सवः कार्याः ॥ अथ ये आर द्र शुक्लादमी ॥ तस्या द्युदये दिनेः आक्षिप फल रसन रजा-
 त्वा अथ आर द्र्या देवी मांसी चालक चारिभि ररजा पथेत् ॥ पुनः आक्षिप क्षीर नैवेद्यं दत्त्वा द्वा-
 राणां न्कुमारी भोजयित्वा पा राणां कुम्यति ॥ देवी पुराणे ॥ सह कार फलैः रजा नं वै आर द्र-
 स्य अमी दिने ॥ आत्मनो देवतां रजा प्य मं रसी चालक चारिभिः ॥ तेषां फल कर्ष्यं द्रव्यं
 चैव प्रदापयेत् ॥ आर्क्ष राक्षीर नैवेद्यं कन्या विप्र सुभोजनम् ॥ आत्मनः पा राणां तद्वद्वि-
 क्षिणां प्राक्तिलो ददेत् ॥ सर्वती र्थाभि वेकं सञ्च नेनाप्नोति भागव ॥ इति अथ अथेष्ट
 शुक्लादमी ॥ तत्र शुक्लां देवीं पूजयेत् ॥ तद्वक्तृभक्तो ॥ शुक्ला दस्यां पुरा जाता शुक्ला दे-

श्री दी महाशाना ॥ चथाय दान वेदाणां शुक्ल पक्षे ततो यजेदिति ॥ अथा पाठ शुक्लायमी ॥ त-
 १ ओषोषितम् ॥ हरिद्रा तोयेन रज्जात्वा महिषघ्नी नाक्षी देवीते नैव स्वापयित्वा ॥ पूजाका-
 र्या ॥ यदुक्तं देवीपुण्ये ॥ अष्टम्या च यदाथादे निशा तोयेन मानवाः ॥ स्वयं स्वात्वा च-
 कथूरैश्चन्दनेस्तां विलेपयेत् ॥ शूषचन्दन कथूरैर्वलि कैः शित सिलह कैः ॥ अर्घ्या
 श्व शर्करा पूर्णान्न दान कानि शुभानि च ॥ साययेत्कन्यका विभ्र भोजनं चात्मन-
 स्तथा ॥ शक्तितोदक्षिणां दद्यात् महिषघ्नीं च कीर्तयेत् ॥ दीपमाला कृते नैव सर्वा-
 न्कामान्नयच्छति ॥ अथ भाद्र कृत्वायमी ॥ साहिधा अष्टमी जयंती च ॥ सा चार्द्ध रात्र-
 व्यापिनी ॥ विबुधस्मोक्ते ॥ रोहिणी सहिता हस्ता मासि भाद्रपदे ऽष्टमी ॥ सप्तम्या भर्द्ध-
 रात्राधः कलया पियदा भवेत् ॥ अत्र जातो जयन्त्याष्टुः कोत्तुभी हरिरी प्रसरः ॥ तमेवो-
 पवसेत्कालं तत्र कुर्याच्च पारणाम् ॥ अर्द्ध रात्रे तु यो वीऽयं तदा पत्युदये सति ॥ वशिष्ठोऽ-
 पि ॥ अष्टमी रोहिणी शुक्ला निष्यद्धे ह प्रयते यदि ॥ मुख्य कालं स्वविद्यैव स्तत्र जातो हरि-

स्वयमिति ॥ एवं च भूयो भूयो धुरेव वा निशीथ व्यासो कर्म काल व्यासा व्यासो सैव ॥ द्विन ह्ये व्या-
 सा व्यासो तु परेव ॥ संकल्प काले सत्त्वाधिकात् ॥ ब्रह्म वेवेर्हः पि ॥ वर्जनीया प्रयत्नेन सद्-
 मी सहिता यमीति ॥ एवं रोहिण्यापि ॥ यदि पूर्व धुरेव निशीथ योगस्तदा सैवो यो व्या ॥ का-
 र्यो विद्यापि सप्तम्या रोहिण्या सहिता यमीति पाद्यात् ॥ इति मयूखादिभ्यः ॥ वयं त्वातो-
 चयामः ॥ सप्तमी विद्या सर्व धैव वर्जनि प्रयोजिका ॥ वर्जनीया प्रयत्नेनैतु क्वा क्वा-
 व्का व्या विद्यापि सप्तम्येति ॥ पाद्यं ॥ यत्र सप्तम्या मेव संपूर्ण रोहिणी योगस्तद्वि-
 पयं यत्र तु अष्टम्यां मुहूर्तं मपि रोहिणी तदा सैव प्राज्ञा ॥ तद्वत्तं वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ वर्जनीया
 प्रयत्नेन सप्तमी सहिता यमीति ॥ सप्तम्यापि न कर्तव्या सप्तमी सहिता यमीति ॥
 ॥ स्तोत्रे ॥ सप्तमी सहिता यम्यां यत्ना अष्टमं द्विजो नमः ॥ प्राज्ञा पत्यं द्वितीये नृ-
 हर्ता हि भवेद्यदि ॥ तदा यथा भिक्त्वा द्वैवं प्रोक्तं व्यासादिभिः पुत्र ॥ पाद्येऽपि ॥ मुहूर्तं व्यापि
 संयुक्ता संपूर्णा साष्टमी भवेत् ॥ किं पुनर्नवमी युक्ता कुल कोटि विमुक्तिदा ॥ न नृ-

र्मा कालस्य प्रावल्यात्पूर्वद्युरेव ॥ निशीथ व्याहो सैव प्राप्ता मैवम् ॥ तस्य प्रातिपदि-
 क प्राप्तेण वाधात् ॥ तथाहि ॥ विष्णुहस्ये प्राज्ञा पत्यर्क्षे शुक्ला ललेन भसिषाद्यमी ॥ शु-
 क्लं नमपि लभ्येत सैवोपोय्या महा फला ॥ वह्निश्रुणो ॥ कृष्णाष्टम्या भवेद्युन्नकले काशे
 हिरणी स्मृता ॥ जयंती नाम सा प्रोक्ता उपोय्या सा प्रयत्नतः ॥ क्वांरे ॥ उदये चाष्टमी किंचि-
 न्नवमी सकला यदि ॥ भवेद्युवुध संयुक्ता प्राज्ञा पत्यर्क्षे संयुता ॥ अपि वर्ष प्रति नापि
 लभ्यते यदि वा न वेति ॥ ननु उदये चाष्टमी किंचिदिदिति र्कंदवाक्याद्दुदय प्राक्चेन्न चं-
 न्द्रोदयो ग्राह्यः ॥ ता ए पत्युदये सतीति मूल काल्यना लाघवादिति चेन्न ॥ उदय प्रा-
 क्तेन सूर्यातिरिक्तोदय परतायाः क्वाप्यदृष्टत्वात् ॥ किंचैवं निप्रीये चाष्टमी किंचिदिदिति
 वाक्यात् ॥ अथ च ॥ उदय प्राक्स्थ चंद्रोदय परत्वे तदानीं मष्टम्याः ॥ कर्म काल व्याप्त
 त्वेन निसंदिग्धतया तस्मिन्नेव वाक्येन वमी सकला यदीत्युक्ते र्वैयर्थ्यापत्तेः ॥ न च शे-
 हिणी योगस्य वुधयोगावत्प्राप्तेरप्यत्र परता ॥ अन्यथा समानवाक्योपासत्त्वात् ॥

किं कदाचिद्गोहिणीयोगाभावेन ॥ चययोगोर्नेवोत्तरादेर्गोहिणापत्तेरिति वाच्यम् ॥ ग्राजापत्यं
 द्वितीयं हि सुहृत्तीर्क्षं भवेद्यदसीति ॥ स्कंदे ॥ वाक्येन ग्रहणप्रयोजकत्वाच्चगमात् ॥ सप्र-
 क्षाधिपनकर्तव्यागोहिणीसहितायमीति ब्रह्मवैवर्तवाक्येन सप्रक्षायीत्युक्ता ॥ अ-
 क्षयोगस्य निर्णयकत्वाच्चगमाच्च ॥ भवेत्तुबुधसंयुक्तेति स्कंदवाक्येन संभावार्थोक्ति-
 लकारेण तु शब्देन च ग्राह्यस्य परतया स्फुटं प्राप्तीति रिति हिक् ॥ ब्रह्मचवतं नित्यम् ॥ जन्मा-
 यमीदिने प्राप्ते येन भुक्तं द्विजोत्तम ॥ त्रैलोक्यसंभवे पापं तेन भुक्तं नशो सय इति स्कंदे
 तदकरणप्रत्यवायप्रवणत् ॥ भाव्ये ॥ प्रावणे बहुले पक्षे कृत्स्नजन्मायमीव तस्य
 नकरोति महाप्राज्ञव्यालो भवति कानने ॥ वत शब्देनापि पूजा गृह्यते ॥ तत्रैव ॥ अह-
 रात्रे तु गोहिरयां पदा कृत्वा यमी भवेत् ॥ तस्याभयश्चैवं शोभते इति पापं त्रिजन्मजन्म ॥
 ब्रह्मवैवर्ते ॥ अहस्यामयगोहिरयां न कुर्यात्प्राणं क्वचित् ॥ हन्यात्पुनरुक्तं कर्म
 उपवासाभिर्जितफलम् ॥ तस्मात्प्रयत्नतः कुर्यात्तिथिभांते च प्राणम् ॥ उभयान्तोऽ-

भक्तिः स्वयः कल्पः ॥ एकतरलु गोणः ॥ वक्ष्ये वर्तते ॥ सर्वेष्वेवापचासमुद्भवा पारंगामयत ॥
 ५३ इति अथ भाद्र शुक्लाष्टमी ॥ दूर्वाष्टमी सा शुक्लापि पूर्वाविष्टे च ॥ अविष्टेऽपि ॥ शुक्लाष्टमी-
 ति धियात्तु मासि भाद्रपदे भवेत् ॥ दूर्वाष्टमी तु साक्षेयानोत्तरासा विधीयते ॥ इदं च न-
 तं भाद्र शुक्ले श्रगस्थोदय संभावनायां भाद्र कृस्ते एष कार्यम् ॥ नयाल्लोदे ॥ शुक्ले भाद्र-
 पदे मासि दूर्वासञ्ज्ञा तथाष्टमी ॥ सिंहार्के सा च कर्तव्या न कन्यार्के कदाचन ॥ सिंहस्थे-
 सोत्तमा सूर्येऽनुदिते मुनि सत्तमे ॥ श्रगस्थ्याभ्युदिते पूजायां दोषश्च तत्रैवाक्तः ॥ श्रग-
 स्थ्युदिते तात पूजयेद्दसुत्तोद्भवाम् ॥ वैधव्यं पुत्रशोकं च दशजन्मनि पंच च ॥ दूर्वाष्टमी
 सदा त्याज्या ज्येष्ठा मूलार्क्षे संयुता ॥ परविहाय या कृष्णा मुनिप्रयाता तयोऽनवीत् ॥
 सेदं र्क्षे पूजिता दूर्वा हंत्य पत्या निनान्यथा ॥ भर्तुराशुर्हरा मूले तस्या तां परि वर्जयेत् ॥
 शत्रु प्रातिवर्षं म पूजने दूर्वाया वैधव्यादि रोगा विहिताः ॥ यदा पुनर्ज्येष्ठादि विरहिणेन
 संभवति ॥ तदा दूर्वा श्रम्यर्क्षे कर्मकं कार्याम् ॥ ननु कर्म ॥ शुद्धे रोगि हि रोगेऽष्टम्या पूर्वावा-

॥ तर्वादिमीतु साकाय्या ज्येष्ठा मूलं तु वर्जयेत् ॥ ऐहिको नवमो मुहूर्तः ॥ पर
 विज्ञानियेधेऽपि यदि वा परेति पर विज्ञा विधानं पूर्वस्यां ज्येष्ठा मूल युक्तायां परस्यां कर्म
 काले व्यापित्यां परापि कार्येति ज्ञापना धर्मः ॥ अतश्चस्यां पूर्व विज्ञायां ज्येष्ठा मूल एहि-
 ता या भया स्त्या नृदये सिंह स्थे सावितरि दूर्वा मभ्यर्च्य अभिपक्षमन्त्रं भोक्तव्यमेवं कृतं
 ॥ नारी सप्त जन्मनि पति पुत्र विरहं नाप्नोतीति दिक् ॥ अथाधिनः कलायमी ॥ तत्र होय
 चतुष्टय एहि तायां महा लक्ष्मी ज्ञतं कार्यम् ॥ तत्र चन्द्रोदय काल व्यापिन्या भवे ॥ चं-
 द्रोदये एव पूजां च्छिदि विधानात् ॥ सप्तमी पूज्य संयुक्ता कर्तव्या चाधिनोदयमी ॥ हो-
 न्तवेऽसितं पक्षे वहुले श्रीवने शुभम् ॥ तत्र सप्तमी संयुक्तेति विशेषणं बहुलादृ स्यात्
 व पूज्य संभवात् ॥ तथा ॥ अर्द्धरात्र भति कृत्य वर्जने योऽतएति धिः ॥ तदा तस्यां तिथौ-
 कार्यं महा लक्ष्मी ज्ञतं शुभम् ॥ अरण्य समुपयेऽपि ॥ पूजनीया प्रयत्नेन अष्टमी प्राह्मणिधि-
 यः ॥ होये अत्र तु भिस्स न्य का सर्व संपत्करोति धिः ॥ होया अत्र नै वोक्ताः ॥ पुत्र सोमाय य-

संक्षिप्त्यायुर्नधिनिनी सा प्रकीर्तिता ॥ तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन त्याज्या कन्या गतिरदो ॥ कन्या
 ४३ स्थरविनिधेयः ॥ आरंभ समये स्वबोधव्यः ॥ तथात्र दिने चावमं चैव अष्टसिंहीप-
 चासयेत् ॥ पुत्रद्वीनवमीविद्वास्वद्वीहस्तार्द्धगेरदो ॥ धर्मश्रीत्रिदिने प्रोक्ता त्याज्या चै-
 नावमे सति ॥ स्वश्रीधनहेति यावत् ॥ त्रिस्थगवमौ पूर्वोक्तावेव ॥ एतद्वोष्ववर्ज्यं नमु-
 पक्रमोद्यापनयोरेव प्रायेण ज्ञातव्यं ॥ अन्यथा षोडशवर्षं साध्यं तस्य अंगदो-
 षसंभवेऽकारणं प्रसज्येत ॥ अन्यदपि सति संभवे दोषवर्जनम् ॥ नतु नियमं न तथा
 चोक्तं शिवाऽर्चनं भाद्रपदे सिताष्टमी प्रारब्धकन्यामगते च सूर्य्य ॥ सत्तापयं च त्रि-
 क्षौचयावत् सूर्य्यश्च पूर्वार्द्धगतो युवत्याः ॥ नवमी वेधनिषेधोऽपि परदिने चंद्रीदृशा
 दर्वार्द्धे द्येया ॥ चंद्रीदृशा हर्द्धं गामिनी त्रिमुहूर्ताष्टमी चेत ॥ त्रिमुहूर्तव्यापित्वे तद्वरे-
 व नवमीविद्वपि कार्या ॥ तदुक्तम् ॥ पूर्वार्द्धापरार्द्धा वाग्राह्या चंद्रीदृशे सति ॥ त्रिमुह-
 र्तापि सा पूज्या परतश्चोर्द्धं गामिनीति ॥ चंद्रीदृशा हर्द्धं गामिनी त्रिमुहूर्ताष्टमी चेत ॥

पात्रार्थान् चेत्युच्येति ॥ इति महात्मनीनिर्यायः ॥ अथापि न श्रुत्वा यमीनिर्यायः ॥ सा च नव-
 मीधुते वदुर्गोपवासादिशुभाला ॥ सहमी विद्वातु न कार्या दीपश्रवणात् ॥ तदुक्तं ॥ पुत्रा-
 न्हंति क्षुत्सुहंति हंति राद्रु स राज कम ॥ हंति जातान जातौ भ्र स तमी सहित्वा यमी
 ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सहमी सत्य संयुता ॥ वर्जनी या यमी चैव भुवो राजभमी प्सुभिः
 अन्यत्रापि ॥ नूतेनापि हि संयुक्ता सदा त्याज्या यमी बुधैः ॥ इत्यादि वाक्यैर्न्यवमी विद्वा-
 यमी कार्येति सिद्धम् ॥ यतुश्रुहं भद्रा च भद्रा हं नावधोरं तरं काचित् ॥ सर्वसिद्धिं नृणां
 स्यामि भद्रा यमी चिन्ता प्यहम् ॥ भद्रा यमी भद्र काल्या प्रथम्ये स्या दर्शने क्रिया ॥ तस्माद्दे-
 सतमी विद्वा कार्या दुर्गा यमी बुधैः ॥ इति ॥ विदित्यक्ता महा यस्यां भम पूजां करोति यः
 तस्या पूजा फलं न स्या तेनाहमवमानिता ॥ इत्यादि सतमी वेधवि धा यिक वाक्यं ॥ ततु-
 यत्र तिष्ठि ह्रासात् विना ॥ यद्दिने अष्टमी विरह तत्र साव काशं ॥ तदुक्तं स्यति संग्रहे ॥ यदासू-
 यो ह्येन स्या न्नवमी चापरे हनि ॥ तदा यमीं प्रकुर्वीत सह स्या सहितां चयेति ॥ दुर्गोत्सव प्रकरणे ४३६

या कायार्थिकयं बुधैः ॥ वर्तिमन्ने ॥ अस्त्योत्तरं ॥ विभवस्य निचये ॥ प्रावसूते समुत्पत्तेन त्रोत्पत्त्यं य
 दाभवेत् ॥ देवी पूजा प्रकर्तव्या पशु यज्ञ विधानतः ॥ देवी पूजा रंभे अंतर्गमूत केयातेऽपि
 पुनादिनव एतं यावद्विधेयं अग्नारक्षेत्तु परहरेव ॥ अग्नि होत्रादिवत्कारयितव्यं ॥ इति अ
 थ कार्तिक शुक्लाष्टमी सा गो द्यादमी ॥ तत्र गो पूजा कार्या ॥ कूर्म पुराणे ॥ शुक्लाष्टमी कार्तिके तु
 रस्तता गो द्यादमी बुधैः ॥ तत्र कुर्व्यां स्नानं पूजां गो यासं गो मर्द हिराणां ॥ गवानु गमनं काव्यं
 सर्वाच्चामान भीक्षतः ॥ इति अथ यौष शुक्लाष्टमी बुध युक्ता महाभद्र ॥ तत्र महेश्वर पूजादिकं का
 र्यं शूलकं भविष्ये ॥ यौषे मासि वदो देवि शुक्लाष्टम्यां बुधो भवेत् ॥ तदा तु साम हा पुराया महाभद्रे
 ति कीर्तिता ॥ तस्यां स्नानं जपो होम स्तर्पणं विप्र भोजनम् ॥ मन्थी तये महा देवि पूज्यो
 ऽयं विधिवद्बुधै रिति ॥ माघ शुक्लाष्टमी व्यादमी ॥ तत्र भीष्म तर्पणं आर्द्रं च कार्याम् ॥ भी
 ष्म तर्पणे तु भीष्मस्य देवा वतारत्वा द्वा स एण स्या व्यधिकारः ॥ तथा च पाथे ॥ माघे मासि
 सिताष्टम्यां सति तं भीष्म तर्पणम् ॥ आर्द्रं च देनराक

५१

३३
-विद्याश्रये वर्णादद्युभीष्माय नो जलम् ॥ संवत्सरं कृतं तेषां पुराये न श्रयति सत्तम ॥ तर्पणं मे-
३३
त्र ह्यु ॥ ॐ भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितीन्द्रियः ॥ आभि रद्भिर्वा द्रोतु पुत्रये नो-

चित्तां क्रियाम् ॥ वैद्या व्यु पद गोत्राय सां ह्यत्य प्रवराय च ॥ अपुत्राय प्रदानं च न जलं भी-
ष्माय वर्मणे ॥ वस्त्रनाम वता राय संतनो रात्म जाय च ॥ अर्घं दद्यामि भीष्माय आवाह
वस्त्र चारिणे ॥ ददं च जीवति त को ऽपि कुर्यात् ॥ अने नैव तर्प्येण मर्घदानं च ॥ इति ॥
अथ फाल्गुन शुक्ल अष्टम्यां ॥ लक्ष्मी सीता च पूज्या ॥ यदेवान्मं ज्ञाह्यो न्यो दत्तं तद वशि-
ष्ट मेव भोज्यं नान्यत् ॥ ब्राह्मे ॥ आस्तमुभिरष्टम्यां सुस्ता तैश्चै त्वलं कृतैः लक्ष्मी सी-
ता च संश्रज्या शंभु मा ल्यादिभि स्सदा ॥ प्रदोष समये दीपाः देया यश्चान सद् तशः ॥ दत्त
शिशु तदा भोज्यं भस्मि त्वयं च वर्धुभिः ॥ तस्यां संपूर्णायां यदा बुधवारो भवति तदैक भक्तं
कार्यम् ॥ तथा च भविष्ये ॥ यदा यदा सिता वृष्ट्यां बुधवारो भविष्यति ॥ तदा तदा हि संग्राह्य
एक भक्ता स नैर्दुर्गः ॥ बुधा वृष्टी तु संपूर्णा यथा क्त फल दायिनी ॥ अथ निषिद्धानाह ॥ द्वादश च

काले तथा चैत्रे प्रसुप्ते च जनार्दने ॥ बुधायमी न कर्तव्या हंति पुराणं पुराणतम् ॥ इति ॥ इ-
 त्यमीनिर्णयः ॥ अथ नवमी निर्णीयते ॥ उपवासादिषु नवमी पूर्वयुतेव ग्राह्या शुभमवाक्या-
 त् ॥ ब्रह्मवेर्वै ॥ अथ स्यां नवमी विद्वा कर्तव्या फलकांक्षिभिः ॥ न कुर्व्यान्नवमी तात-
 दशम्यां तु कदाचन ॥ तथा ॥ नवमीं दशमीं विद्वां ये कुर्वन्ति विमोहिताः ॥ दृष्ट्वा सर्वभ-
 वेनेषां वलिपूजाविधानकमिति ॥ अतो नवमी पूर्वविद्धेवेति सिद्धांतः ॥ अथ चैत्रशुक्लान-
 वमी एव नवमी ॥ सा च मध्याह्नव्यापिनी ॥ दिनद्वये च व्याघ्रा व्याघ्रो च पुनर्वसुयुता तादृ-
 श्यपि च दिनद्वये परा ॥ चैत्रे मासिनवम्यां तु शुक्लपक्षे रघूत्तमः ॥ पुनर्वसावा विराज्यो-
 रा ब्रह्मैव केवलम् ॥ उपोषणं जागरणं पितृनुद्दिश्य तर्पणम् ॥ तस्मिन्दिने तु कर्तव्यं-
 ब्रह्म आर्क्षिमभीष्टुभिः ॥ एतद्वता करणे प्रत्यवायश्रवणात्करो फलश्रवणाच्च नित्यं का-
 र्यं च ॥ पर्वद्वये कुरुक्षेत्रे महादाने कते मुहुः ॥ यत्फलं तदवाप्नोति श्रीराम नवमी व्रते ॥
 कुर्याद्भूमनवम्यां तु उपोषणभतं दितः ॥ मातुर्गोर्भञ्जचाज्ञोति सत्त्वरामो रत्नं द्रुवम् ॥ इत्या-

दीनि वह्नि वाक्यानि भगस्य संहिताया मुक्तानि ॥ निरुच ॥ यो वै राम नवम्यां तु भुक्ते मां
 दं हादि मूढधीः ॥ कुंभी पाके शुषोरेयु पच्यते नात्र संशयः ॥ द्दयं च शुद्धादिभेदात् द्वादशधा ॥
 तथा च ॥ शुद्धा विद्वादिभेदेन नवमी साद्धिधा स्मृता ॥ समा न्यूना धिका चेति शुद्धापि नव-
 मी ति धा ॥ पुनर्नक्षत्र संयोगवियोगाभ्यां च यद्विधा ॥ समादि ऋक्षयोगादिभेदे विद्वापि य-
 द्विधा ॥ एवं द्वादशधा भिन्ना नवमी तत्र निर्णयः ॥ महाफलप्रदा शुद्धा पुनर्वसूक्ष्मयोगतः ॥
 चैत्रे शुद्धा तु नवमी पुनर्वसुयुता यदि ॥ तैव मध्यान्हयोगेन महापुण्यतमा भवेत् ॥ केवला-
 पिसदोषो व्यानवमी सा च संग्रहात् ॥ अस्मिन् च ते सर्वे यामधिकारः ॥ विद्मेव चेदहस्तयुता व्रतं त-
 न्न कथं भवेत् ॥ उत्तरं तत्रैव ॥ नवमी चायमी विद्वात्या ज्या विस्तु प्रायतौः ॥ उपोषणं नवम्यां चै-
 दश्यामेव प्राणाम् ॥ दशम्यां तिथि वृद्धिश्चेत्यरित्या ज्येष्ठे वै स्वर्गैः ॥ तदन्येषां तु सर्वेषां व्र-
 तं तत्रैव निश्चितम् ॥ दशम्यामेव प्राप्ते न दशमी नैवलं घयेत् ॥ निश्चित्यैवं विचारिणा नव-
 मी व्रतमाचरेत् ॥ इति ॥ अथ वैष्णवमासे ॥ उभय नवम्यो रूपवास परश्चाहिकां पूजयेत् ॥

पहुक्तं भविष्ये ॥ वैष्णवे प्राप्तिराजेन्द्रनवम्यां पक्षयोर्द्वयोः ॥ उपवास परोभक्त्या पूजया नस्तु द्रष्टुं
 काम् ॥ हंसकुंदेहं स का प्राप्ते जसा भुव सन्निभः ॥ विमान वरमा रुढो देव लोके महीयते ॥ इ-
 ति ॥ अथ ज्येष्ठ शुक्लानवमी ॥ तस्या सुभां वासराणि नाक्षी पूजयि त्वा वासराणां कुमारीं अर्चयिज-
 येत् ॥ भविष्येऽपि उपवास परोभूत्वा नवम्यां पूजयेद्दुमाम् ॥ वासराणि त्विति वै नाचां येन रूपे
 राक्षयिणी ॥ ज्येष्ठ मासि चतुर्थे अथ कृत्वा नक्तस्यैव विधिम् ॥ प्रात्पुनः पर्युषां पेलं स्वयं भुं-
 जीतवा म्यतः ॥ कुमारी भोजयेच्चापि स्व प्राक्त्या वासराणां स्तथेति ॥ अथापादस्य हेनवम्यो अथ
 म्यां पंच गव्यस्नात उपो विर्तः ॥ हर्षा देवी पूजयित्वा नक्तं कुर्यात् ॥ नहुक्तं भविष्ये ॥ उपवास परो
 भूत्वा नवम्यां पक्षयोर्द्वयोः ॥ आयाते प्राप्तिराजेन्द्र यः कुर्यान्नक्तभोजनम् ॥ पूजयेच्छुद्ध-
 यादुर्गा मैत्री नञ्जीतु नामतः ॥ हेरावत गतां शुभां श्वेत रूपेणा रूपिणीम् ॥ सरोरावत मी-
 नं रुञ्जीत ॥ नहुक्तं भविष्ये ॥ प्रावरो प्राप्तिराजेन्द्र यः कुर्यान्नक्तभोजनं ॥ स्त्री यच्छि कुर्यात्

न सर्वभूतहिते रतः ॥ उपवास परो वीरनवमी पक्षयो द्वयोः ॥ कोमलशिलातद्वनाभा
 रिदकां पूजयेत्सदा ॥ कृत्वा शेष्यमर्थी नक्त्या योगं वै पापनाशिनी ॥ कर्तव्यस्य पुण्ये क
 ग्रंथे श्रावणं चंदनैः ॥ धूपेन च दशमं मेन सोदये श्रापि पूजयेत् ॥ कुमारो भोजयेच्छक्त्या
 रक्षियो विप्रो भव्यशक्तिरतः ॥ भुञ्जीत वा जयतः पश्चादित्थं पञ्चलगाशनः ॥ एवं यः पूजयेत्
 र्थाश्रद्धया परया न्वितः ॥ स याति परमं स्थानमिति ॥ अथ भाद्रपुक्कनवमी ॥ नंदानां वीर
 गां सं पूज्य विष्णुलोकं गच्छति ॥ तदेव भविष्यतीति ॥ मासि भाद्रपदे यस्य स्थानवमी चहुलोनरा ॥
 सातु नंदानां पुराणा कीर्तिता पापनाशिनी ॥ तस्यां यः पूजयेद्भुगां विधिवत्कुरु नंदन ॥
 सोऽथ गोपकलं विद्याद्विष्णुलोकं समाच्छति ॥ अत्रैव कलनवम्यां देवी मुत्थापयेत् ॥ तदे
 व देवीपूरणे ॥ कन्यायां कलपक्षे तु पूजयेत्त्वाद्भिर्ऽपि वा ॥ नवम्यां गोपयेद्देवीं गीतवा
 दित्रनिःपद्यने रिति ॥ श्राद्धिन शुक्लनवमी भवति ॥ कार्तिक शुक्लनवमी युगादिः ॥ अ
 थ मासि श्रृङ्ग नवमी नंदिनी ॥ तस्यां त्रिजोषो धितः पूजयेत्त्वा देवीं वाजिमेधफलं प्राप्नो

ति ॥ तदेव भविष्ये ॥ आसि मार्ग शिरे वीर शुक्ल पक्षे तुषा भवेत् ॥ सानंदिनी महापुण्यानव
 क्षी परिकीर्तिता ॥ यस्तस्यां पूजयेद्देवीं त्रिश्रोत्रोदितौ नरः ॥ सोऽप्यमेधमन्त्राये ह विबुध
 लोके महीयते ॥ अथ माघ शुक्ल नवम्यां महानद्यां स्नान दानादि कृत मक्षयम् ॥ यदुक्तं ॥ मा-
 घ मासे तु या शुक्ल नवमी लोका पूजिता ॥ महानंदेति सन्निता सदानंद कारी नृणां ॥ तस्यां
 स्नानं तपोदानं जपौ होम उषणम् ॥ सर्वं तदक्षयं श्रीकृत्य दस्यां क्रियते नरेदिति ॥ स-
 र्व नवमी बु ति धि प्रति त्वेन सरस्वती दृज्येति दिक् ॥ इति नवमी निर्ययः ॥ अथ दशमी ति सीयते
 दशमी ति धि नर्वर्षीयुते वोष वासादि ब्रू विधेया ॥ शुक्ल पक्षे ति धि प्रार्हाय स्या मभ्युदितो
 रयिः ॥ इक्षपक्षे ति धि प्रार्हाय स्या मभ्युदितो रयिः ॥ इति वचनात् ॥ उषवा सेतु सर्वा पि पूर्व-
 व ॥ दशम्ये वा दशमी विद्वा नोपोष्या साक यंचनेति ॥ शिव रहये ॥ आप संवत् ॥ श्राव्ण मी नव-
 मी विद्वा कर्तव्या फल कांक्षिभिः ॥ दशमी तु भ कर्तव्या श्रद्धया हि जा सतैर ॥ वैदी नक्षिधि ॥
 पंचमी सप्तमी चैव दशमी च त्रयो दशी ॥ शनि पक्ष दमी चैव कर्तव्या सम्पुण्या ति धि रिति ॥

[illegible]

काञ्चित्सारितं प्राप्य दद्याद्देवति लोदक्षम् ॥ मुच्यते दशभिः पापैस्तु महापातको ज्ञेयः ॥
 मंगायाम् त्वति प्राशस्तम् ॥ पशुतत्रैव ॥ स्नानं काले न्यतीर्थे तु जाप्यते जगन्महीजनेः ॥ वि-
 ना विलुपदी नान्यतीर्थे यच्च विशेषजनम् ॥ द्युं च दशहारा यत्रेव योगवाह्यं तत्रैव-
 कार्थम् ॥ तत्र दशयोगास्तदेव क्तः ॥ उच्यते मासि सिंते पक्षे दशभ्यां बुधहस्तयोः ॥ व्यतीपाते
 शरानंदकन्या चन्द्रे दृषेत्वा विनि ॥ वाणहृत्पणे ॥ बुधवारयोगः ॥ स्कंदे ॥ बुधः कल्पयेदेन
 परित्कार्थः ॥ द्युं च योगविशेषां सूर्यापराया ॥ मलभास्यतीते तु तत्रैव ॥ अथ्ययोगोऽपि ॥ द-
 शहरासु तोत्कर्षय्य नुर्व्यापि युगादिषु ॥ उपाकर्ष्य महाधरुणो होतवुक्तं लवाहितः ॥ आस-
 देऽपि भवतीत्यपरः ॥ इति दशहरा अथाभिनश्रुक्तं दशमी विजयदशमी ॥ तस्यां नवमी श्राव-
 णार्थं धुतायामपराजितां पूज्य प्रस्थानं कुर्यात् ॥ स्मृतिचिंतामणौ ॥ अथाभिनश्रुत्या श्रिते पक्षे
 दशम्यां तारको द्यौः ॥ सवाल्लो विजयो ज्ञेयः सर्वकार्यार्थं सिद्धये ॥ स्कन्दिऽपि ॥ यावत्पु-
 नवमी युक्ता तस्यां पूजा पराजिता ॥ इहाति विजयं देवी पूजिता जयवर्द्धिनी ॥ दशमीयस्त-

सुखं च प्रस्थानं कुरुते नरः ॥ तस्य संवत्सरं राज्येन क्वापि विजयो भवेदिति ॥ दिनद्वये तार-
 कोदय काला भावे परदिने एका दश मुहूर्ते यात्रा विधेया ॥ तत्र भृगुः ॥ अथ भिन्न स्थितिं पक्षे
 दशम्यां सर्व राशिषु ॥ सायंकाले शुभायात्रा दिवा वा विजय द्वाणे ॥ विजय द्वाणस्य एका दश
 मुहूर्तः परदिने एका दश मुहूर्तो भावे णिपुत्राया मेव दशम्यां प्रस्थानमपराजिता ॥ पूजा च अपि
 ये ॥ अथ राक्षसं विपुल्यां काकुत्स्थः ॥ स्थितो यतः ॥ तदिह निर्तुमीमांशुसंवेद्युस्त्वतो नरः ॥ अथ रा-
 भावे तु केवल दशम्या मेवेति रिक् ॥ राजचिह्नानां पूजा ॥ अथ राजीता पूजा ॥ अत्र ग्रंथ गौरव भ-
 यान्त्रो ह्निद्विता ॥ इति विजय दशमी ॥ सर्वसु दशमी सुयमः इत्यास्ति थिपति त्वात् इति दश-
 मीति र्थः ॥ अथा शेष दिविषदीश्वरस्य भगवतः श्रीगुरुभ्यो नमः स्मरणं मात्रेण सकलाय निवर्तकस्य वैकुं-
 ठगमन निष्प्रेणी प्रिया च मुनि कंदव कै रूपो यिते कादशे नि र्णीयते ॥ तत्रैकादशस्य पचासो द्वेधा नि-
 षेध प्रतिपालनात्मको वत रूपश्च ॥ तत्राद्यः ॥ न ग्रंस्वेन पिने तोयं न स्वादेन्मास्य धूकोरो एका-
 दश्यां न भुंजीत पक्षयो र्मयो रपीति ॥ कोर्मं देवलाघाभाय दे ५ पि ॥ चटह स्थो दक्ष चादिवाशा

धर्मि हिनाग्रि स्वदीवच ॥ एकादश्यां न भुंजीत पक्षयोऽभयो रधि ॥ न चान्न पच्युदासीनं भवति हिः ॥
 तदेतं वनादिप्रत्याभावात् ॥ जनस्य स्युः सकृदेवमेव ॥ ग्राह्ये हि हिने सम्यग्निवाप्यनिमग्नं
 निधिः ॥ इष्टाया शुप वा सद्यः बहुव्याहैः सवेन्नतम् ॥ इदं हि व भक्त्यादि निरुपि कार्थ्यम् ॥ शेरस्य
 राणे ॥ वेष्टे चोवाषधे वो वासो रोः पोषत्वमाचरेत् ॥ इति सोऽग्निविधानित्यः कात्यायनः नारदः ॥ ए
 से पदे च कर्तव्य मेकादश्याः शुपोऽप्यसिनि ॥ अतो वित्यत्वमेव ॥ यदीह सि हि स्युः ता शुच्यं भिष्यं
 नति का ल्मनः ॥ एकादश्यां न भुंजीतीत्यादि कोऽप्यदिष्टु फलं श्रुते भक्त्याप्यता ॥ उभये कदापि
 नतश्च गृहस्थातिरिक्ताभावेव ॥ गृहस्थाः सुक्ताया भवेन वृक्षाद्याम् ॥ यद्येव लः ॥ एकादश्यां
 न भुंजीत पक्षयोऽभयो रधि ॥ वनस्था अति धर्मोऽप्यशुक्ता भवेत् सदा गृही ॥ तदेव नारदोऽग्निः ॥ सं-
 न्नात्या शुप वा सं च कृत्से कादृशि वा खरे ॥ चंद्रसूर्यग्रहे चैव न कुड्यान्मुत्र वा च गृही ॥ तथा च विद्रे-
 योऽपि ॥ एकादश्यादिष्वे ॥ पात्रे ॥ प्रायनी वो धिनी भिष्ये वा कृत्से कादृशि भवेत् ॥ शैवो यो व्या गृहस्थे
 न नान्या वृक्षा कोदा च न ॥ यन्महान्ने भवेत्ये ॥ यथा शुक्ता सदा कृत्सा ह्यदप्री भो सदा भिष्य ॥

॥ शुक्ला गृहस्थैः कर्तव्याभिरासंतामवर्दिनी ॥ पुनरुत्थितस्तथा कृत्वा न ते तेनोपश्रिता ॥ यत्
 सर्वकृत्वा सर्वगृहिणां संभवत्येव तद्गृहस्य वैलव्यं परं ॥ तथा च नाहः ॥ पुनर्वाप्यसंभार्य
 वं यत्कृत्वा वैवच्य ॥ उभयोः पक्षयोः कास्यं व्रतं कुर्याच्च वैलव्यम् ॥ अनेन कास्यं परस्मैवावता
 स्यते ॥ पुनरपि ॥ विधवाया वनस्य स्थयते प्रेक्षा दृशी हृदये ॥ उपवासी गृहस्थस्तु भूतभया भिषु
 क्षिणः ॥ प्राच्यादिभर्तवैलव्यगृहस्थानाभिर्वा भर्तवैका दृशो व्रतं नित्यम् ॥ उपवास निवेदि प्रे
 वी चावचये ॥ उपवासा निवेदिदु किंचिद्गृहस्थं प्रकल्पयेत् ॥ न बुध्यत्युपवासेन उपवास फलं
 भवेत् ॥ महस्य मथितत्रैव ॥ नक्तं ह विद्यान्मम धोदनं च फलं तिलाः क्षीरसायां वृत्तान्त्रम् ॥ दैन्य
 क्षयाद्यदि च विवाद्युः अशस्तमत्रोत्तरं गृहं त्वं ॥ अतएवैका दृशी व्रतं नित्यम् ॥ तथा च सनत्कु
 मारः ॥ वाकरोति यदा गृहं स्वका दृश्यामुपोषणम् ॥ स नरो नरत्वं याति रौद्रवं तमसा दत्तम् ॥
 नारद्व्येऽपि ॥ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्याशानि च ॥ अन्यानिश्चितिर्द्विदि संप्राप्ति ह
 रित्वा सरे ॥ त्जरे ॥ मालहा विलहा चापि आहृता गृहं तया ॥ एका दृश्यां तु यो भुङ्क्ते पुरुषो र

भयोऽपि ॥ वरं स्वमातृगमनं वरं गोसां सभक्षणम् ॥ वरं हस्त्यासुरापानं नैकादृश्यां च भोज-
 नम् ॥ वशिष्ठः स कादृशी समुत्थेन वहिना पातकैर्धनम् ॥ भस्मतां याति शर्जदं अपि जन्म
 शतोज्ज्वलम् ॥ अथ दृश्यमीव धोहिषा ॥ अरुणो दयवेधः सूर्यो दयवेधश्च ॥ पूर्वः वै स्रवः परः अप-
 रस्मात्तु परः ॥ अथः गारुडः ॥ दृशमीशो वसंतु को यदि स्यादरुणो दयः ॥ नैवो वो व्यं वै स-
 वेन तद्विनेकादृशी ज्ञतम् ॥ अरुणो दय स्वल्पमाधवीयस्कां दे ॥ उदयात्मा कृत्तस्तस्मिन् षटिका
 अरुणो दयः ॥ इति श्रुत्वा सूर्यदयवेधः ॥ हेमाद्रौ माधवीये गारुडः ॥ उदयात्मा कृत्तस्मिन् षटिका
 विन्येकादृशी यदा ॥ संदिग्धैकादृशी नाम वज्ज्येयं धर्मकांक्षिभिः ॥ उदयात्मा इज्जुर्नै-
 व्यापिन्येकादृशी यदा ॥ संसृजौ कादृशी नाम वज्ज्येयं धर्मद्वन्द्वे ॥ चारुदीयेऽपि ॥ लववे-
 धेऽपि विप्रेन्द्रशाल्ये कादृशी त्यजेत् ॥ सुशाल्या विहंजा स्मृष्टं गंगां भद्रवनिर्मलम् ॥ साध-
 दोऽपि ॥ सेवं कलादिबोधेऽरुणो दयवेधेऽसूर्यो दयवेधे सप्तान्तवत् ॥ निगमेऽपि ॥ सर्वप्रका-
 रवेधो यशुप्रवासस्य दूषकः ॥ हेमाद्रौ स्यत्यंतरे ॥ अक्ष्णानाद्यादिवांसोहात्कुर्वन्नेकादृशीं नर-

॥ दशमी शेषसंयुक्तो प्रायश्चित्तमिदं चरेत् ॥ कृष्णदेनरश्रीत्वागाच दद्यात्सवात्सकाभ
 ॥ सुवर्णस्यार्द्धकंदेयं तिलं दोशं समन्वितम् ॥ अथ च ॥ ब्राह्मणभोजयेत्त्रिंशत्तिलं दोश
 मथा चिवा ॥ स्वयंतरेऽपि ॥ दशम्याः प्रांतमाद्याय्यदोदिति दिवा कारः ॥ तेन स्पष्टं हरिदिनं द
 नं जंभासुखयत् ॥ अत्रारुणोदयवेधो वैस्त्वनिषद्यः ॥ वैष्णवस्वस्वमाधवीयेत्कोदे ॥ परमाप
 दसाधने हर्षे वासमुपस्थिते ॥ नैकादशीत्यजेद्यस्तु यस्यादीक्षास्ति वैस्ववी ॥ विस्वर्षि
 तादिवलाचारः साहि वैस्ववच्यते ॥ माधवः ॥ अरुणोदयवेधोऽत्र वेधस्त्वयो द्येतथा ॥
 उक्तो ह्येदशमी वेधो वैस्ववस्मार्तयोः क्रमात् ॥ माधवमते ॥ वैष्णवे ररुणोदयविहृत्याज्या ॥
 एकादशीद्वादशी वाधिका चेत्यज्यतां दिनं ॥ पूर्वाग्रहं तृतरस्यादिति वैस्ववनिर्णयः ॥
 स्मार्तैस्तु सूर्योदयविहृत्याज्या ॥ यदा त्वेकदा शुद्धासती ॥ वर्द्धते ह्यदशी च ॥ समा
 न्युनावा ॥ तदा गृहस्थैः पूर्वायतिभिरुत्तरकाय्या ॥ अथ भेहनि संश्लो व्याप्या होरा
 न संयुता ॥ ह्यदशी च तथा तात दश्यते पुनरेव च ॥ पूर्वाकाय्या भद्रस्ये अथयति भिद्यो

भक्ति ज्ञान तथा च विष्णोर्देहः ॥ चर्द्धमानोऽयं देवस्य ॥ अथ दृष्टेऽयं सुखा विष्णुसर्वेषां परैश्च ॥ नमः
 नाहः ॥ संपूर्णोऽहं दृष्टी यन्न प्रभाते धुनैरेव सा ॥ सर्वैरेवोत्तरा काव्या प्रभाते द्वादशीमदि
 द्वादशीमान्न दृष्टो सुखाया प्रवेत् ॥ तदेव नाहः ॥ न च देकादशी विही द्वादशी परतस्थि-
 ता ॥ उपोष्ये कादशी नन्न यदीच्छे स्मरंश्च भिति ॥ माभलोऽपि ॥ द्वादशी नान्न दृष्टो तुषु-
 च्च विद्मे व्यवस्थिते ॥ शुद्धा पूर्वोत्तरा विष्णुसुखं निरर्थं न दृष्टाः ॥ मदनत्वे ॥ विष्णुसुखं वि-
 द्वा विज्ञेया परतो द्वादशी न च वेत् ॥ अविज्ञापि च विज्ञास्यात्परतो द्वादशी यदि ॥ माधवः
 स कादशी द्वादशी चैतन्मयं न दृष्टे मत्त ॥ न द्वादश्वदिन त्याज्य स्मात्तं गृह्य परदिनम-
 ॥ प्रचेत सोऽपि ॥ यद्वा दृष्टी विदुश्च नैच्छन्ते कस्य विप्रो यतः ॥ उत्तरा तु यतिः कुर्व्यात्
 पूर्वा सुपदशे मही ॥ नयो दृष्ट्यां न लभ्येत द्वादशी यदि किंचन ॥ उपोष्ये कादश्यां न न-
 दशमी मिश्रितापि चेति ॥ अज्ञोऽहो ॥ हेमाद्रिमतव ॥ अहं समाश्रु न्यूना जायिक द्वाद-
 शिका चेत्सर्वेषां पूर्वैरेव न्युक्तं देखाव परम् ॥ स्मार्तानां तु पूर्वैरेव न्यविरोधः ॥ हेमाद्रिणा च

यादृशाधैकादृश्युच्यते ॥ तथा च ॥ शुद्धा विद्वानन्या नंदुत्रे धान्यन समधिके ॥ षट्प्रकारा
 न्न स्त्रिधा द्वादृश्य न समधिके रित्ययादृशे कादृशी भेदाः ॥ तत्र शुद्धाधिक न्यून द्वादृशि
 का शुद्धाधिक समद्वादृशिका च ॥ सकामेः पूर्वा निःकारुत्तरा काय्या ॥ अजन हो दंश्रि
 कायां तु विसृष्टीति को भूरे पुवास ह्य काय्यम् ॥ सपुणे कादृशी यत्र प्रभार्ते पुनरेव सा
 ॥ लुप्यते द्वादृशी ता क्षिन्नु पवासः कथमवेत ॥ चपय्य हति श्री तत्र विस्मयी एतत्पर
 रिति ॥ ब्रह्मवर्षिष्ठः ॥ नारदो ऽपि ॥ सपुणे कादृशी यत्र द्वादृश्या दृष्टि गामिनी ॥ द्वादृश्या
 लेषनं काय्यत्रयो दृश्या तु पाणाम् ॥ शुद्ध न्यून शुद्धाधिका शुद्धसमा ॥ विद्वन्मुना
 विद्वदधिका विद्वत्समा द्वादृशिका चेत ॥ सर्वेषां परे वेति हे मादिः ॥ मदनं लेषु ॥ शुद्धा
 धिका परा ॥ अन्यपूर्वा ॥ शुद्धा यदा समा हीना समा हीना धिको जरा ॥ स्कादृशी सुपु-
 वसे न्य शुद्धो वैष्णवी मयीति ॥ स्कंदे ॥ शुद्धा स्कादृशी उत्तरा यन्नु सपुण्ये कादृशी यन्न
 परतो द्वादृशी यदि ॥ उपो य्या द्वादृशी शुद्धा द्वादृश्या भेद पाणाम् ॥ इति वैसं पत्नम् ॥ स्मा

संज्ञां तु पूर्वैवेति तिङ्मातः ॥ महनत्वेत् ॥ विद्मन्त्यना समहादशिकावु ॥ सुसुक्ष्माणं पुनव-
 तांच परा ॥ अन्वेषां पूर्व ॥ पुनवतोऽपि पूर्वा ॥ विद्मन्समा समहादशिको नहादशिका-
 च सुसुक्ष्मभिः ॥ परान्वेः पूर्वाकार्या ॥ दशमी मिश्रिता पूर्वाहादशी यदि लुब्धते ॥ शु-
 द्धेव हादशी राजन्त्यो यथा मोक्षकांक्षिभिरिति व्यासः ॥ मोक्षकांक्षि ग्रहणा दन्त्येयां प्र-
 वेव ॥ सर्वत्रेकादशी कार्या हादशी मिश्रितानोरैः ॥ प्रातर्भवतु वामा वायव्यो नित्यमु-
 पो पण भित्ति ॥ पाचोक्तैः विद्मन्धिक समहादशिका च पूर्वैव ॥ पाणानि नलभ्ये तद्वा-
 दशी कलयापि चेत् ॥ तदानीं दशमी विद्मन्त्यो यो योकादशी तिथिरिति ऋष्य प्रहो-
 क्तैः ॥ भाष्यमतेत् ॥ ग्रहिणां पूर्वयते रुक्ता ॥ विद्मन्धिक न्यूनहादशिका च मोक्षपाप-
 क्षय विस्तृतीति कार्मेः पराकार्या ॥ गृहस्थे न तु नक्तं विधेयम् ॥ तथा च कौर्म्ये ॥ एकाद-
 शी हादशी च रात्रि प्रोक्षेत्रयो दशी ॥ उपवासं न कुर्वीत पुन योत्र समन्वित ॥ इति ॥ दिन-
 क्षये उपवास निवेधात् ॥ दशम्येकादशी विद्मन्हादशी च क्षयं गता ॥ स्त्रीणां साहाद-

श्रीज्ञेयानकं तु ग्रहिलाः स्मृतमिति ॥ वदश्यातातपः ॥ एकादश्यां शुद्धनृत्वे शुद्धसमत्वे

४५२

द्वादश्यां न्यूनसमत्त्वयोः एकादश्यामुपवासः ॥ संधिविद्युच्चवावयेयुद्वादशीं समुपोषये-

त् ॥ विवादेषु च सर्वेषु द्वादश्यां समुपोषणम् ॥ पारणं च त्रयोदश्यामाज्ञेयं मामकीमु-
नेरिति ॥ पात्रे ॥ वेधसंदेहेभ्योतिर्विदां विप्रतिपत्तौ वा ॥ वैश्वदेः पूर्णपात्रेभ्यश्चित्यल्लभम् ॥

अत्रोपयुक्तं किंचिदपि ॥ तत्र दशस्यामेकादशीयोगे ॥ दशमीमध्ये एव भोजनं कार्यम्
एकादश्याभोजने निषेधः ॥ अतः कारिणे माधवीये काल्यायनः ॥ अष्टवर्षाधिको मर्त्यो द्वादशी

ति न्यूनवत्सरः ॥ एकादश्यामुपवसे तपस्यो रुभयो रपि ॥ ब्रह्मवैवर्ते ॥ ब्रह्मचारी च नारी च
शुक्ला मेव सदा गृही ॥ सुभगाया भर्तुर्नुज्ञा परमन्यया ज्ञतेऽनधिकारः ॥ यत्तु विष्णुः ॥ पत्न्यो

जीवति यानारीस्तु पोष्यज्जतमाचरेत् ॥ अष्टाध्यायं हस्ते भर्तुर्नरकञ्चैव गच्छति ॥ उपवासा-
सामर्थ्यं मार्कण्डेयः ॥ एकभक्तेन नक्तेन तथैवायाचितेन च ॥ उपवासेन दानेन नित्यं द्वा-

दश्रिको भवेत् ॥ अष्टमर्षे प्रातिनिधिना कारयेत् अतः कर्णे प्रायश्चित्तमाह काल्यायनः ॥ अर्धे प्रर्के

द्वये एनो चतुर्दश्यष्टमीदिवः ॥ एकादश्या गहोरात्रमुक्ता चांदायणे चरेत् ॥ अथ कास्यव्रत-
विधिं क्षुब्धनादीये ॥ दशम्यादिमहीपत्रा निदिनपरिवृज्यते ॥ गंधनावलमुध्यादिस्त्रीस-
योगमहायशः ॥ दशम्याविधिः कोसि ॥ काश्यस्मात्समसूराश्च चणकांकोरद्वयकान् ॥
प्राकभयुपरान्नचत्यजेदुपवसन् द्विभुम् ॥ अन्यदपि ॥ अण्काभासमसूराश्च पुनर्भोजन-
मेधुने ॥ दूतसम्यक्पानं च दशम्यावधायत्यजते ॥ विधिरिगहनरत्ने ॥ अश्वात्तनवराणा-
त्सर्वद्वियान्ननिवेदिएः ॥ अघनीतन्यश्रावणाः श्रिया समाक्षवर्जिताः ॥ इतश्चाह देव-
तः ॥ श्रुतं कृज्जलपानाच्च सकृत्तावलभ्यं चणत् ॥ उपवासः प्रणश्येन दिवा स्वापाच्च भू-
धुनात् ॥ अशको देवतः ॥ अत्ययचास्वपाने च नोपवासः प्रणश्यति ॥ अत्यये कटे ॥ विसृ-
हस्ये ॥ गानास्यगधिराश्रया तावत्तचानुलेपुम् ॥ इतस्थो वज्जयेत्सर्वयज्वाज्यं निरा-
हतम् ॥ स्युं प्रायश्चित्तं निर्णयाम् ॥ तेन हि सकयोस्सख्यं कृत्वा वै सत्येन्यहिसने ॥ प्रायश्चि-
तं व्रती कथ्याज्जपन्नाभशानत्रयम् ॥ पुनः ॥ मिथ्यादादिदिवा स्वापे बहुशोष्मनिषेवणे ॥

संवि श्रया त्वं वती जज्ञाश्रय मद्यो त्वं प्रुचिः ॥ अष्टाक्षरः ॥ उ० तानो नारायणायति ॥ येदी नधिरपि ॥

४४३ तावूल चर्वणे छी संभोगे मांस निषेवणे ॥ व्रतलोपेन चेत्कुर्यात्कृत्वा बहु जिबर्ज्जनम् ॥
संभोगो ऋतु कालादन्यत्र ॥ व्यासः पार्लो ॥ वर्ज्ये त्पारणे मांसं व्रता हे यो प्रपुसदा ॥ एकाद-
श्यां प्राद्व्रजो ॥ मातापितोः क्षये प्राप्ते भवेद्देकादशी यदि ॥ अभ्यर्च्य पितृ देवा अभ्यजिघ्रित्ति-
हृसे वितर्ज्जित ॥ अन्य दधि ॥ श्रुता वपः ॥ सकादशी व्रतं प्राप्य पितु स्संवत्सरं भवेत् ॥ आर्या इह न-
सती चेव कथं कर्म प्रवर्तते ॥ तत्रैव ॥ प्राद्व्रजत्वा व्रतं कुर्यात्सा प्राणं पितृ पिण्डयोः ॥ सन्ने श्वर-
ह्यं यागे तु ऋतु दानं प्रवर्तते ॥ एते नैकादशी निमित्तं प्राद्व्रजं हादृश्यां वदंतः परस्ताः ॥ निर्मूलत्वात्
अवत प्रात्याह मदन एवेव लः ॥ सर्वं भूत भयं व्याधिः प्रसादो गुरुश्रासनम् ॥ अन्नं प्राणि प्रकृत्यो-
सकृदेतानि श्राव्यतः ॥ स्वादेऽपि ॥ नृद्यो तान्य व्रतं प्राणि प्रायो ह्यलं फल प्रयः ॥ हविर्वाहा एका-
स्याच्च गुरोर्वचन मोष भय ॥ नारदीये ॥ भूत कृत्यो नृणां शोकाः क्षीणानां वर दधिरिति ॥ मूलं फल-
प्रयं स्तोमं सुप्रभो नयं भवेच्छुभे ॥ अस्याप्रवादेऽपि ॥ प्रयने च महुत्थाने सत्यार्थं परिवर्तने ॥ नरोस-

संस्थितफलं हारीदृष्टिप्रत्ययमर्थयेत् ॥ इदं चाति संकष्टं विवक्ष्यम् ॥ एते चाविशेषिणो निरर्थ्याः
 सर्ववर्तने युज्येयाः ॥ तत्रैकादश्यां संकल्पः ॥ एहीत्वो हुंवरं पानं इत्यादि ॥ मंत्रश्च ॥ एकादश्यां निरा-
 हारः स्थित्वा ह्रस्वपरं हनि ॥ ओं ह्यामि पुंडरीकाक्षप्रारणं मिमवाच्युत ॥ श्रेवादीनां तु हेमाद्रौ
 कौरप्रारणो ॥ सावित्र्या यथवा नात्मा संकल्पं तु समाचरेत् ॥ श्रेवादिमात्रय्यो यजुर्वेदप्रसि-
 द्धाः ॥ वागहे ॥ इत्युच्चार्य ततो विहान्मुष्यांजलिमथार्चयेत् ॥ ततस्तज्जलं पिवेत् ॥ अष्टाक्ष-
 रेण मंत्रेण विज्जिह्वेनाभिर्मंत्रितम् ॥ उपवासफलप्रेसुः पिवेत्यात्रं गतं जलम् ॥ मध्यरात्रे च
 द्येवाद्ग्रामी चोषेरात्रो संकल्पः ॥ इति माधवः ॥ दशम्या रसंगहोषेण अर्द्धरात्रात्परेण तु ॥
 वर्जनाच्चतुरोयासां संकल्प्या चतयो रसहा ॥ विहोपवासोऽनश्वरं खुर्विर्नखक्कासमाहितः
 रात्रौ संपूजयेद्दिक्षु संकल्पं च तदाचरेत् ॥ इति नारदीये ॥ तत्रैव पूजामभिधाप्य ॥ देवस्य पुरः
 क्षुष्यां ज्वागारं नियतो ज्ञानी ॥ द्वादश्यां निवेदनमंत्र उक्ताः कात्यायनेन ॥ अज्ञानतिमिरांधस्य चने-
 नानेन क्रोधाव ॥ प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव ॥ नारदीये ॥ चाक्षुषां नमोजये-

संक्षिप्तं ह्यहं दक्षिणं ततः ॥ कान्ते ॥ कृत्वा चित्रो भवामं तु योऽप्यति दक्षः शीरिने ॥ नंदं यत्तुल-
 ४३ सीमिर्धं हत्या कोटि विना प्रानम् ॥ दक्षः शीरिने ॥ दिवानिद्रा परान्नं च पुनर्भोजनं से-
 धुने ॥ चोद्रं कां प्रयाचिर्बुतेत्तं द्वादश्या भटवर्जयेत् ॥ विषयर्क ॥ असंभाव्या हि संभा-
 ध्या तुल्यस्य तं दिका द्रव्यम् ॥ श्यामलवर्णा फलं चापि पाशेनाश्रयं युज्यति ॥ पाशेणापि फले
 विशेषः ॥ सनत्कुमारीये ॥ मैत्राद्यपदे स्वप्रतिदीद्वि ह्युर्वैलव्यं भूये परित्तैत्तं च ॥ पोष्यस्य-
 जागर्ति तथा वसानेनोपाशानं तत्र वृषः प्रकुर्व्यात् ॥ राजस्वलां च चांडालं भद्रा पात किनंत-
 था ॥ सृति कां पतितं चैव चं चिच्छेत् स्तुकादि कम ॥ त्रुतिदिनाथे प्रदद्यात् याचयेत्तं धनिं सु-
 तैः ॥ अंशे तत्र संदत्तं तु जरे द्वेद्वेद्व्यानाम् ॥ एतद्भूतं सुतकेऽपि काव्यं भू ॥ तथा च विष्णुः
 सुतेकं सुतेकं चैव न त्याज्यं द्वादशी व्रतम् ॥ तत्र व्रतं द्वात्रिंशत् सुतेकं काव्यं च ॥ मातये
 ॥ सुतेकांते नरः स्नात्वा पूजयित्वा जन्मा हनम् ॥ कर्मेन सत्त्वा विधानेन व्रतस्य फलमप्नुते ॥
 राजोदयेनेऽपि कार्यम् ॥ गुलस्तिः ॥ एकादश्यां नभुं जीत हरे स्नात्वा राजस्वपि ॥ यज्ञाद्वादश्यां-

[illegible]

संविद्यविप्रमुखेभ्यस्तापत्रयविवर्जितः ॥ विसुलोकमवाप्येह मोहनी विसुनासह ॥ इति निर्ज-
 षट् लोकादप्री ॥ अथाथादशुक्तेकादप्री हरिप्रयत्नी ॥ तत्र लस्मीनाएयणमूर्तिं सोवार्णीपूज्यरात्रौजा-
 गराद्युत्सवं कुर्यात् ॥ पुण्यसमुच्चये ॥ अथाथादस्य श्रिते पक्षे एकादश्यामुरोपेतः ॥ स्थाप-
 येत्प्रतिमां विही प्रशंखचक्रगदाधराम् ॥ पीतांबरधरं सौम्यापय्यं केवास्त्येतेषु मे ॥ शु-
 क्तवस्त्रसमाकृते सोपधाने दधिधिर ॥ स्नापयित्वा दधिद्वीर्यतक्षोद्वज्रलेखाया ॥ समा-
 लभ्य धुर्यैर्गंधैर्दूयेर्वस्त्रैरलं कृताम् ॥ पूजितां कुंकुमैर्भ्युल्लैर्मंत्रेणानेन पाण्डव ॥ मंत्रश्च सु-
 द्वैत्यभिजगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिति ॥ विबुधे त्वयि बुद्धेः कृत्वा तत्सर्वं चरामिति ॥ एवं स-
 पूज्य देवस्याग्नेचातुर्मास्य ज्ञतं कुर्यात् ॥ तदुक्तं भारते ॥ एकादश्यां तु गृहीत्या तत्क्रांतौ क-
 र्कतस्य च ॥ अथाथादयो वानरो मत्तया चानुन्मस्योदितं ज्ञतमिति ॥ ज्ञतारभे मंत्रस्त्रनक्षत्राणां संहि-
 ताया ॥ दूरं ज्ञतं मया देव गृहीतं पुरतस्तव ॥ निर्विघ्नं सिद्धिमाया तृप्तं सन्ने त्वयि के प्रव ॥ गृ-
 हीतेऽस्मिन् ज्ञते देव यद्यद्गोत्रिषां न्यहस्य ॥ तन्मे भवतु संपूर्णं त्वत्प्रसादात् जन्तानां देव ॥

कर्म दूति प्रायनी ॥ अथ भाद्रपदे कादश्यां ॥ रात्रौ नैका दश्या भिवपूजो त्सवादि कुर्व्यात् वदेव भविये
 धर्मं प्राप्ते भाद्रपदे मास एकादश्यां स्थिते हनि ॥ कद्रु दानं भवे हि ह्योर्मोहा पूजां प्रवर्तयेदिति ॥ क
 ददानं पापं परि वर्तनम् ॥ अथ कार्तिक शुक्ले कादश्यां ॥ तत्र देवपूजा जगरो त्सवादिभिर्भुञ्जेण
 वोभ्य रथयात्रो त्सव कुर्व्यात् ॥ तदेव ब्रह्मपुराणे ॥ सकादश्यां च शुक्लायां कार्तिके मासिके प्राव
 म् ॥ प्रसूतं वोपयेद्वात्रो भद्रा भक्ति समन्वितः ॥ नृत्ये गीते साध्या वाद्यैर्नृत्यभङ्गस्तान्मंगलैः ॥
 स्तोत्रैश्च विविधैस्तुल्या पूजयेद्दहैर्योऽष्टभ्यैः ॥ होमैर्भक्ष्यैश्च फलैश्चैव पाशसैः ॥
 हृद्याभ्यां श्वेतैस्तोत्राभ्यां च दानाभ्यां च सर्वदा ॥ कुंकुमालकज्जाभ्यां च रक्तैश्चैस्सकं करौः ॥ त
 स्यां रात्र्यां व्यतीताभ्यां द्वादश्यामरणो दये ॥ आदौ द्युते नै क्षिणेण मधुना रक्षा पर्येततः ॥ द
 शा क्षीरेण च ततः पंचगव्येन शारत्रा विदत् ॥ उद्वर्तनं माष चूर्णं यस्तु मल कानि च ॥ द्रव्यं प्रा
 ष्याद्विषं गुरु च भ्रातुलुं गागरस्तथा ॥ सर्वोद्यम्य स्सर्वगंधाः सर्ववीजानि कंचनम् ॥ मंगला
 नि यथा काम रत्नानि च कुशोदकम् ॥ सर्वं संशोध्य हेतेशं दद्याद्गोरोचनं शुभात् ॥ न तस्तु क

४६६

लया देया यथा प्राज्ञा लवलेकता ॥ जाती सुल्लव संयुक्ता स्तफलाश्च सकाचनी ॥ पुराणा
ह वेद षट्केन वीणा वेणु रेवेणात् ॥ एवं संलाप्य गोविंदं त्वनुत्तिवं सुल्लं कतम् ॥ सुधास
संयुजयेच्च समतो शिखस कुंकुते ॥ धूये हि मे भर्तु नो दौष्ट पाय सेन च भूरिणा ॥ आसुराः पु
जनी प्राप्सु विस्मो रीक्ष्याश्च मूर्तयः ॥ यत्तु शिष्टा मृतं पश्चाद्भोक्तव्यं चास्मै स्सह ॥ इति
भाव्येऽपि ॥ कर्तव्ये भूक्त पक्षे तु एकादश्यां पुष्पा मृत ॥ भोजेणानेन राजेन्द्र देवमु न्याये
द्विजः ॥ मनुश्च ॥ इदं विदुर्विचक्रसेति ॥ वैदिकाः ॥ पौराणिकासु ॥ ब्रह्मेन्द्र रुद्राणि कुबेरसूर्य
सो मा विभुर्वन्दितवन्दीय ॥ बुध्य स्वदेव प्रजगच्चिवास्तं न प्रभावेन सुखेन देव ॥ इदं
च द्वादशी वंदे ॥ अथ एतत्संनः ॥ अतिथ्योतिष्ठ गोविंदं त्यज निद्रां जगत्पते ॥ त्वयि सुने जग
त्सुप्त मुस्थिते चोत्थितं जगत् ॥ उत्थापनं च दिवेव कार्यम् ॥ तदपि रेव त्वं चरणयो
गो न दभावे केवल तिथौ संभ्या काले ॥ तथा च भविष्ये ॥ श्राभा काशित पक्षे बुभैव भव एत
वती ॥ आदिभ्या वसन्तेषु प्रत्यापवर्तनोत्सवाः ॥ एतच्च संभवाभि प्रयिणा द्वेयम् ॥

४६६

तषाच ॥ निशि स्वापो दिवो स्थानं संध्यायां परिवर्त्तनम् ॥ अन्यत्र पादयोरोऽपि द्वादश्या-
 भवे कारयेदिति ॥ विलुधर्मावरे ॥ विस्रोर्द्धानस्वपि च न च रात्रौ प्रवृत्त्यते ॥ द्वादशी च द-
 क्षसंयोग पादयो गोन कारणमिति ॥ रात्रौ नक्षत्रादयोग लाभेऽपि दिवौ तथापनमि-
 त्यर्थः ॥ पूर्वोक्तमंत्रेण देवसुत्याप्यपुण्यां जसिं दद्यादनेन च ॥ चरणपवित्रमिति चेदिक-
 ॥ गीणिकस्तु ॥ गता मेघा विपश्चैव निर्मलं निर्मलं निश्चिः ॥ प्राह्मनिचपुण्या रि-
 गृहाणाममके प्राद ॥ महावृत्त्यखेणो स्थिते विस्रोतं स्वदेने संस्थाप्य रात्रौ जागरणादि
 विधाय प्रभारते चाक्षणा न्मोज्य चाक्षणा भे पूर्व कृतं चातुर्मीस्य व्रतं प्रोच्य विप्रेभ्यो
 दक्षिणां दत्त्वा श्रीनाथं प्रार्थयेदनेन ॥ मन्त्रः ॥ इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो
 ॥ न्यूनं संपूर्णं तां यातुं त्वत्प्रसादा ज्ञानार्द्धेन ॥ इति प्रार्थ्य स्वयं मपि भुंजीत ॥ इति वो-
 धिन्यै कादशी ॥ अथ फाल्गुन शुक्लैकादशी आमर्द्धकी त्वुच्यते ॥ तत्रासर्द्धकस्थितं विलुं सं-
 पूज्य दक्षिणां दद्यात् ॥ तदेव भविष्ये ॥ फाल्गुने मासि शुक्लायामेकादश्या स्नानार्द्धनः ॥ ४६

संक्षि-
४६३

वसत्यामलकी वृक्षे लक्ष्म्या सह वनस्पतिं ॥ ततस्संपूज्य विधिवन्न तथा कुर्यात्प्रदक्षिणा-
म् ॥ उपोष्य विधिवत्कल्पं विष्णु लोके महीयते ॥ इति वृद्धनिर्ययः ॥ अगमलक मूले वि-
ष्णुं संस्थाप्य प्रदक्षिणाः कुर्यात्स्थोत्तरप्रातम् ॥ रत्नैस्सुवर्णै र्वर्णैर्वा फले रत्नैर्घ्यं वा-
दिभिर्वी ॥ तथा च ॥ यश्चा मलक प्राय्यायां ग्रहे चैवाधिवास्य च ॥ विस्त्रोः प्रदक्षि-
णां कुर्यात्तस्य स्यादधिकं फलमिति ॥ इत्यामर्दकी सर्वास्वेकादश्रीभुतिविधय विवि-
नश्चिवः पूज्येति दिक् ॥ इत्येकादशी निर्ययः ॥ अथ द्वादशी निर्ययते ॥ द्वादश्युपवासो दि-
युस्कादश्रीभुते वशाद्वायुमवाक्यात् ॥ त्रयोदशी चैव सप्तु निवेधः कूर्मपुराणे ॥ न्या-
गाविद्वातुयायश्री रुद्रविद्वादिवाकरः ॥ कामविद्वाभवे द्विष्टुर्न्यागाद्याते तु चामरा-
॥ विष्टुद्वादश्री ॥ कामत्रयोदशी ॥ यद्वाभवे दत्ती वाल्या द्वादशी पाश्यादिने ॥ अ-
थः काले द्वयंकुर्यात्प्रातर्मथ्याह्निकं तदिदि ॥ स्कंदे ॥ चैत्रशुक्ल द्वादश्यां ह्रमन-
कार्यसाम् ॥ अथाह शुक्ल द्वादश्यां तप्तमुद्राधारणम् ॥ तदज्ञाह्मणा विषयमेव

निरपवादः ॥ तथा च पादौ ॥ यथा यस्य शान्तं जगत् ॥ गतिं सर्वकर्म सुखं च को कितो दि-
 ४६ प्रस्वर्गकर्मसु गतिः ॥ विप्रविषये निर्माप्रका निवहूनि वाक्याभ्युपगम्यते विस्तर-
 यान्ति खितानि ॥ अत एव भूद्वारा प्राप्तास्य धर्मसंवेदिति हिक् ॥ प्रावण युक्त द्वादश्यां
 वित्रापणं कार्यम् ॥ पादौ ॥ ऊर्जो जतं मधो होलां प्रावणे तनु भूजन्म ॥ चैत्रे च दम्बा
 रोप मङ्गुर्वाणः पतत्यधः ॥ पवित्रापणं विद्वाच्छ्रावणे न भवेद्यदि ॥ कतिंच दधि शु-
 चार्थं कर्तव्यमिति जारदः ॥ सुल्लोके द्वादशी ॥ भाद्रपद द्वादश्यां मध्याह्ने दावनावता-
 रः ॥ तत्र श्रवणे योगे उपवासः द्वादशतं काव्यम् ॥ विषुधर्मोत्तरे ॥ श्रवण द्वादशी योगे ननु
 धवारो भवेद्यदि ॥ श्रवणमहती नाम द्वादशी सा प्रकीर्तिता ॥ स्नानं ज्ञाप्य नोपासा-
 च होमं श्राद्धं सूरार्चनम् ॥ सर्वं न क्षयमाप्नोति तस्यां भृगु कुलोद्देहेति ॥ नारदीये ऽपि ॥
 द्वादश्यामुपवासोऽत्र त्रयोदश्यां तु पाण्डुरम् ॥ निषिद्धमपि कर्तव्यमिच्छाद्वापारमे-
 श्वरी ॥ श्रवण द्वादशी जतं श्रवणे को द्वादशी जतं कार्यमिति रामकोतुके ॥ भविष्य ॥

संक्षिप्तकादशी मुपेयैव द्वादशी समुपेययेत् ॥ नतत्रविधिलोपः स्यादुभयोर्देवनं हरिः
 ४६ ॥ नारदीये ॥ यदानत्राय वे ऋसं द्वादश्यां प्रवणं कचिन् ॥ एकादशी तदा पोष्या पाप
 प्री प्रवणां चितेति ॥ यदेकादशी प्रवण युक्ता चेत्तदा एकादशी व्रतं प्रवण द्वादशी ज्ञ-
 तं ह्यमेव कृतम्भवति ॥ तदेवमात्म्ये ॥ द्वादश्यां प्रवणं कचिन् चेत्सुश्रेदेकादशी यदि ॥
 स एव वैश्वो योगो विष्णु इदं खल संज्ञकः ॥ तस्मिन्मुपेयविधिवन्तरः प्रदीया
 कल्पमयः ॥ प्राज्ञो त्यनुत्तमो सिद्धिं पुनरावृत्तिवर्जितामिति ॥ व्रतहया प्रज्ञो ॥
 खान्दे ॥ प्रथमे हि फलाहारी निराहारी परे हनि ॥ उपोष्यैकादशी मोहात्पार-
 यां प्रवणो यदि ॥ करोति हंति तत्पुण्यं द्वादश्यां प्रवणं भवमिति ॥ तदा तु द्विती-
 यादिने प्रवणं कर्त्तव्यं तदा ऋक्षां तो नापेक्षणीयः ॥ ऋक्षानो पाणं कुर्या-
 द्विना प्रवण रोहिणी मिति वचनान् ॥ अन्ये तु ॥ अमाकाशितपक्षे बुभुक्षे न प्रव-
 ण रेवती ॥ संगमे नहि नोक्तं द्वादश्यां द्वादशी क्षयादिति ॥ दिनद्वये तत्सत्वे-

मंक्रि उदये तद्युक्ता ग्राह्या ॥ उदय व्यापिनी ग्राह्या अवरा ह्यदृशी ज्ञेयति दृह न्नादृहीयात् ॥

५६ अत्राण्योगं तु दृष्टमी विद्यपि ग्राह्या मिथुराणात् ॥ एतावोरस्युविशेषः ॥ अवरा ह्यदृश्या वामनावरा ॥ कृत्स्नपूजा अवरा ह्यदृश्या जनाई न पूजेयति ॥ अन्न जप होमा-

दिकं कृत्वा सेवणीं हरिप्रतिमां संप्रतिष्ठितां दध्योदनं जलपूणि कुंभं उपानहोक्षत्रं च विप्राय दद्यात् ॥ इति अवरा ह्यदृशी ॥ अस्यामेव दंष्ट्रध्वजो त्याघ्नं कुर्यात् ॥ यदुक्तं गा-

त्स्ये ॥ ह्यदृश्यां च षिणि पक्षे मासि भाद्रपदे तथा ॥ अक्षसुत्या पये द्राजा विष्णु ऋक्षान्न-
ये सतीति ॥ अथ कार्तिक कला ह्यदृश्यां ॥ गोभूतिका काल व्यापिन्यां गोवत्स पूजा कार्या

॥ तस्या स्वत्काल एव विधानात् ॥ दिन हृदये तत्काल व्यापित्वे पूर्वैव ॥ तदुक्तं ॥ वत्स पू-
जा पदश्चैव कर्तव्या प्रथमे हनि ॥ इति वत्स ह्यदृशी ॥ अथ भाष कला ह्यदृशी ॥ तत्र तिलै-

रात्वा विष्णु मभ्यर्च्य तिलैर्दीपं दत्वा तिल तैलेन नैवेद्यं होमदानानि तिल तैलेनै-
व कृत्वा तिलाभ्यर्चयेत् ॥ तदेव मात्स्ये ॥ माघे तु कृत्स्न ह्यदृश्यां यमोहि भगवान्मुरा ॥ ५७

तिलानुत्थादया सा स त प्रः कृत्वा तु दारुणाम् ॥ राजा दृष्ट्वा स्थो भूमी न स्मात्ता न व तार प व
 ॥ तिला नामाधिप त्वे तु विस्तु तत्र कृत स्सुरैः ॥ तस्या भुयो धितः स्नात स्तिलै स्तस्यां पुत्रे
 इरिम् ॥ तिल तैलेन दी पाश्च दया देव गृहे शुच ॥ निवेदये तिला नेव होत व्याघ्र तथा
 तिलाः ॥ तिलान्दत्त्वा च विघ्नेभ्यो भक्षयित्वा तिला निरिति ॥ इति तिल द्वादशी ॥ माघ स्यो भ-
 य द्वादश्यां तैलाभ्यं गोन कार्थ्यः ॥ यहुक्तं मास्ये ॥ उपाय्यै द्वादशी माघे द्वादश्यां तैले सेव-
 शतं कुरुष्व मासवान्देहे पुराणे कः पुरुरवा द्वाति ॥ तर्वा स्वपि द्वादशी शु विल्व फलं दंत-
 फाळं च वर्जयेदित्यलम् ॥ इति द्वादशी निर्णयः ॥ अथ त्रयो दशी निर्णयते ॥ सातु ॥ शुक्ला त्र-
 यो दशी पूर्वा परा कृष्णा त्रयो दशी ति माधवीये ॥ एषा तु प्रसेष व्यापिनी दिन द्वये व्याप्ता व-
 या हो वा पूर्वा ॥ सुमन्तुः ॥ त्रयो दशी तु कर्तव्या द्वादशी सहिता पुनः ॥ ब्रह्मोत्तरा स्वहे ऽपि ॥
 पक्ष द्वये त्रयो दश्यां निराहारे भवे हि वा ॥ घटिका त्रिरस्त भया त्पूर्वे खानं स्वप्नान्वरेत् ॥
 अथ चैत्र शुक्ल त्रयो दशी ॥ अर्चनां त्रयो दशी ॥ सा च पूर्वै चोपो व्या ॥ तथा च संवत्सरे ॥ भविष्येऽपि

॥ अस्यां स्नात्वा त्रयोदश्याभ्यो कारव्यं नमो लिखेत् ॥ सिंहं रजनीं रणे गतिं प्रीतिं सम-
 न्वितम् ॥ कामदेवं वसंतं च वाजिचक्रं दधध्वजम् ॥ मध्याह्ने पूजयेद्भक्त्या भद्रं यो
 धैरस्य गंवैः ॥ मन्त्रेणा नूनं कौंतेय न वनाभ्यां समाच्यतः ॥ मंत्रं ॥ नमो यमाय कामा-
 यदेव देवस्य मूर्तये ॥ तस्य विष्णु श्रितेन्द्राणां नमः क्षेमकराय वै ॥ इति ॥ ततस्तस्यां प्र-
 तोदयामोदकाद्युतपाचिताः ॥ नाना प्रकाराभ्यां स्वकामो मे प्रीयतामिति ॥ स्वप-
 तिं पूजयेन्मारी वरत्रयाख्य विष्णुदण्डोः ॥ कामो यमिति संचित्य प्रहृष्टेनोत्तरात्मना ॥
 राज्ञो जागरणं कुर्यात्सुखरात्रि र्यदा भवेत् ॥ पूजयेद्विप्र हां पत्यं वरत्रा लोकार्चंदनै-
 ॥ एवं यः कुरुते पार्थ वर्यैर्वर्धे महोत्सवम् ॥ वसंत समये श्राप्ते हृष्टः पृष्टस्सदा भवेत् ॥
 कौर्मं विरेधः ॥ मधौ शुक्ता त्रयोदश्यां मदनं चंदनात्मकम् ॥ दत्त्वा संपूज्य यत्नि नवी-
 जयेद्वाजनेन च ॥ ततः संधुहितः कामः पुत्रपौत्रसमृद्धिदहति ॥ अथ मादृक्कल त्रयोदश्या-
 युगादिः ॥ शुक्ल चान्द्रमासाभिप्रायेण ॥ अत्र संधुद्यत सहितेन पायसेन आहुं कुर्यात् ॥

यथा च विलगाथा ॥ अथपि न स्स कुले जायाद्यो नो दद्यात्त्रयो दृष्टीन् ॥ पायसं मधुसध्वीभ्यां
 दैवार्चिमुच भवा सुचेति ॥ अथ कार्तिकशुक्लत्रयोदशी ॥ तत्र यमदीपं शनो वहिर्दद्यात् ॥ तथा
 च स्कान्दे ॥ कार्तिके स्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां निष्ठाशुर्वे ॥ यमदीपं वहिर्दद्यात्पशु-
 र्विनश्यति ॥ दीपदानं मंत्रश्च ॥ मत्स्येना पात्रदद्याद्भ्यां कालस्या मलया सह ॥ त्रयो-
 दश्यां दीपदानात्सूर्य्यः प्रीयतामिति ॥ अत्र हंता कानि न भक्षयेत् ॥ सर्वासु त्रयोद-
 शीसु अन्नं गः पूज्यः तिथिपतित्वात् ॥ इति त्रयोदशी निरुचयः ॥ अथ चतुर्दशी निरुचये ॥ सा
 चक्षुषा पूर्वाशुक्ले तृहस्तपक्षे ऽष्टमी चैव कृत्तपक्षे चतुर्दशी ॥ पूर्वविद्वैव कर्तव्या प-
 रविज्ञानकुत्रचिदित्याप स्तं दीप्तैः ॥ शुक्लपक्षे ऽष्टमी चैव शुक्लपक्षे चतुर्दशी ॥ पूर्ववि-
 ज्ञान कर्तव्या कर्तव्या परसंयुता ॥ इति वहस्पतिः इति चतुर्दशी सामान्य निरुचयः अथ विशेषे-
 यः ॥ अथ चैत्रशुक्लचतुर्दशी ॥ तस्यां कुंकुमागरकर्पूरैर्दिग्भिर्दिग्जनकेन च शिवपूजा ॥
 तदेव देवीपुण्ये ॥ चतुर्दश्यां तु कर्पूरचंदनागरकुंकुमैः ॥ चत्वारिंशदिमणिपूजा च कर्तव्या ॥

३३ महती शिव ॥ वितानध्वजचक्रं च दैव्यं पूज्यास्तु मातरः ॥ महत्पुण्यं भवार्थोतिभ्यश्च मे
 ३० यथा ताधिकमिति ॥ अन्यच्च मधुमासे तु संक्रांते शुक्लपक्षे चतुर्दशी ॥ श्रीकादमनपूजे-
 तिसिद्धिदातुमहोत्सवेति ॥ लिंगपुराणे विशेषः ॥ दमनस्तुत्रयोदश्यां तालवृंता नलेन तु
 हंसयानसमारुद्धकाममंत्रप्रवर्द्धितः ॥ नारीधिविजितश्चेवत्रैलोक्योन्मादमाचर-
 न् ॥ तन्निर्वापयाधार्येन चतुर्दश्यां महासुने ॥ ततोत्सवं भयं श्रीकानार्थं प्रस्थापयन्
 स्रजया ॥ कुर्वन्ति कर्दमेनैव शाल्मनस्त्वनुलेपनं ॥ निर्वोषितानां गपीडा भवत्येव समादा-
 या ॥ एतदर्थं सदा कार्यं कर्दमेन चक्रीडनम् ॥ प्रातःग्रहस्माज्जंच कर्त्तव्यं श्रीडनं नरैः ॥ प्र-
 स्ताल्पांगततः कृत्वा गेधमात्मानुलेपनम् ॥ वस्त्रतां वृत्तगीतादिरथ्या हरेषु चाचरेत् ॥
 चर्चरी घोषिते प्रस्ते व कृत्वा नृत्यं शिवाग्रतः ॥ सर्वकामसमृद्धस्तु वसेच्छिवपुरे नरः ॥ स्वयं
 तुल्यंगमेकं तु दृष्ट्वा तस्मिन् दिने नरः ॥ ज्ञानं लब्धवानरः सम्यक् प्रिव एव न संशयः ॥ द-
 तिर्देव चतुर्दशी ॥ अथ वैशाख शुक्लचतुर्दशी ॥ सा च प्रदोषव्याधिनी ॥ तथा च स्कान्दे ॥ वैशाखे त्व-

चतुर्दश्यासोमवारनेलक्षकं ॥ अथ तारा नक्षत्रस्य प्रदीप्य संसर्ग्ये हिजा दूति ॥ अग्नि-
लक्षः स्वाती ॥ स्वाती योगा प्राधान्यं वैलवा नाथ ॥ अथ ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी ॥ तस्मिन्दिने पं-
चतपाः सायं प्रिय प्रीतये हिरण्यं धेनुं दद्यात् ॥ तदेव मास्ये ॥ ज्येष्ठे पंचतपाः सायं हेम-
धेनुं प्रदीदितम् ॥ यापयामी चतुर्दश्या रुद्र व्रत निर्दंस्तु तस्मिन्दिने ॥ अथ भाद्र शुक्ल चतुर्द-
शी ॥ तस्यामनंतं व्रतं सा चोदय व्यापिनी गार्हा ॥ रक्षते सुहृत्ते मपि चेद्भाद्रे पौर्णमास्यां
चतुर्दशी ॥ तासं पूजां भिदुस्तस्या पूजयेद्विष्णुमव्ययम् ॥ सुहृत्ते मपि त्रिसुहृत्ते प्रशं-
सा परम् ॥ तेन त्रिहृत्तेः सुख्यः कल्पः द्विसुहृत्तेः कल्प इति साधवः ॥ अत्र विधिः ॥ पक्षाप्र-
स्थं द्यते नैव गोधूमान् प्रयत्नतः ॥ अर्द्धं विप्राय दातव्यमर्द्धं मात्मनिभ्यो ज्येदिति ॥ च-
तुर्दश ग्रंथियुक्तं सत्रं चाग्नेरग्नी दक्षिणे पुमान् ॥ कोषाख्ये दिति ॥ अनंत प्रतिमां चन्दनादि-
ना सपर्य मूर्तिरूपेण पूजयेत् ॥ दूर्ध्वं व्रतं काम्यम् फलश्रवणात् ॥ निर्गम्य भारकैः पि ॥ अनंत-
रपेण विभर्धि प्रवृत्ती मनंतलास्मी वरहोऽसि नृदः ॥ अनंत लोका न्नाददासि लोकोभ्योऽन्वं

सं ॥ तत्पि न कुरु मे प्रसादम् ॥ इत्यनंतश्चामंत्रः ॥ अन्नंतं संसारमहासमुद्रे मग्नात्ममभ्युद्ध-
 र^{४३} वासुदेव ॥ अन्नंतस्थे विनिधौ जयस्व अन्नंतस्त्राय नमो नमस्ते ॥ इति नैवेद्यादिदानमंत्रः
 अन्नंतकामददेवं सर्वकामफलप्रदम् ॥ अन्नंतधर्मस्यं डीरं पुत्रपौत्रविवर्द्धनम् ॥ वज्रा-
 भीतिप्रोद्यः ॥ अन्नेन चतुर्दशप्रथिमयं डीरकं चभीयात् ॥ इत्यनंतचतुर्दशी ॥ अथ कार्तिके-
 छसचतुर्दशी ॥ यमचतुर्दशी सैवे नरकेति ॥ ब्राह्मयमुहूर्त्तजातः कालव्यापिनी ग्राह्या ॥ अ-
 नोपस्यभ्यंगस्नानं च कृत्वा ॥ यमस्तज्जतर्क्यमाणपञ्चाशन्नं सैव प्रतिसा पूजनं दीपदा-
 नादिकं कुर्यात् ॥ तदेव भविष्ये ॥ कार्तिके छसपक्षे चतुर्दश्या भिनो दद्ये ॥ अथ प्रथमेव क-
 र्त्तव्यं स्नानं नरकाभीरुमिति ॥ ह्नोऽन्नचंद्रः ॥ यदि ह्रस्वे न्हि पंच घटिका न्नयो दृष्टो दृष्टीः
 पंच पंचाशत् ॥ एवं संभवे त्रयो दृष्टी मध्येऽरुणो द्ये स्मायात् ॥ ततोऽन्यत्र स्नाननिये-
 धात् ॥ तथा च यमः ॥ अरुणो द्योऽन्यत्र च कृत्वां ज्ञातिधो नरः ॥ तस्याष्टिकं योधमग्निं
 प्रत्येव न संशयः ॥ अन्नं पर्वणिति लोलेन स्नानम् ॥ तदेव भविष्ये ॥ आभिवने कृत्वा पक्षे तु च-

किं तु रश्म्या विबुद्धये ॥ तिल तैलेन कर्तव्यं स्नानं नरकभीरुभिरिति ॥ अग्राधिन प्राग्दी ॥ नृचंद्र आ-
 ४०३ सपदः ॥ ब्रह्मपुण्ये ॥ तैले लक्ष्मी जलेशं गा दीप मा ल्याश्चतुर्दशी ॥ प्रातः स्नानं तु यः कुर्या-
 तयमलोकं न पश्यति ॥ प्रातश्चतुर्दशिका ऽरुणोदय काले कृति ॥ संवत्सर प्रदीपे ॥ पाद्ये ॥ अ-
 पा मार्ग मध्ये तुंवी प्रपुन्याट मघा परस् ॥ आ मये त्वजान मध्ये नृनरकस्य क्षयाय वै ॥
 अपा मार्गस्य पक्षिवा न्ना मये चिह्नं सी परि ॥ ततश्च तर्पणं कार्यं भ्रमं राजस्य नाम भिः
 ॥ अपा मार्गं आगण मंत्रस्तु ॥ मीता लो य स मा शुक्लं सकंठक दलान्वित ॥ हर पाप मपा मर्मा
 आस्य माण पुनश्च नृनः ॥ अति यम तर्पणं नृसव्ये न कर्ष्यं ॥ यत स्तस्य देव त्वं पितृ त्वं च ॥
 स्कान्ते ॥ इक्षिणा भि सुखो भू त इति स्तव्यं समाहितः ॥ देव तीर्थे न देव त्वा त इति तैः प्रेता-
 धियो यतः ॥ यमाय धर्म्यं राजयेति चतुर्दश नाम भिस्तर्पणं विधेयम् ॥ ततः प्रदीप सम-
 ये दीपान्दद्यान्मनो रसान् ॥ ब्रह्म विष्णु शिवा दीनां भवने शुभे शुच ॥ प्राकारोद्या-
 नवापी वृक्षतो लीनि ऽद्वुटे शुच ॥ संसारा सुवि विक्ता सुहृत्सि प्राणालासु चैव हि ॥ लेङ्गे ॥

ततः श्वेतचतुर्दश्यां भोजयित्वा हिजोत्तमान् ॥ शौचान् विप्रोस्त्वष्टा पुराणं शिवलोको-

महीयते ॥ द्वात्रिंशत् तैश्च श्वेतयमलोकां न गच्छति ॥ मायपद्मस्य प्राकृत्य भुक्त्वा-

तत्र दिने नरः ॥ श्वेता चतुर्दशी काले सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ नक्तं श्वेतचतुर्दश्यां धनुःपक्षे चि-

वश्रीवत्ये ॥ नतत्कतुश्रतेनापि प्राप्यते पुराय मीहशम ॥ कुसारीर्वटुकान्मुच्यते यथा शौचो-

स्तपोधनान् ॥ राजसहस्रफलतेन प्राप्यते नात्र संशयः ॥ इति ॥ कार्तिकशुक्लचतुर्दश्यां द्वा-

युद्धो विप्रश्चरयात्रा ॥ सैव पायाण चतुर्दशी ॥ देवीपुराणे ॥ कार्तिके शुक्लपक्षे तु या पायाणा चतु-

र्दशी ॥ तस्या मासधनं गोरी नक्तं प्रायाणा सप्तकः ॥ सेषवर्गसौख्यसौभाग्यरूपा-

णि धान्नयान्तरः ॥ इति ॥ मार्गशुक्लचतुर्दश्यां पिशाचमोचनयात्रा ॥ अथ माघशुक्लचतुर्दशी-

शरदृत्याख्या ॥ तत्रानुदिते स्नात्वा यमं संपूज्य सप्तसिन्धुमिश्रितस्सप्ततिलोदकां जालिं ह-

त्वा तिलहोमं च कृत्वा पितृभ्यः श्राद्धं च कृत्वा ब्राह्मणेभ्यः कृत्वा भोजनं च हत्वा हव-

यस्यपि कृत्वा भोजनं कृत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ जालिं हि ॥ माघशुक्लचतुर्दश्यां विष्णोर्द-

शरदृत्याख्या ॥ तत्रानुदिते स्नात्वा यमं संपूज्य सप्तसिन्धुमिश्रितस्सप्ततिलोदकां जालिं ह-

त्वा तिलहोमं च कृत्वा पितृभ्यः श्राद्धं च कृत्वा ब्राह्मणेभ्यः कृत्वा भोजनं च हत्वा हव-

वा नमो चयः ॥ निश्चेरुसिलतकाकारप्रसूतप्रोद्व्यसहस्रः ॥ अन्नकान्मुदतकालस-
 त्सुतारंभुकेभ्यपि ॥ राक्षसचतत्रसंपूज्योयमः प्रलयभाक्करः ॥ निमित्तं पंचतारेयंतनप्रो-
 क्तयतोभुवि ॥ तदासापिनिष्ठाह्वयातारान्निस्सुदहरण ॥ तन्नोपोद्यत्रयोदश्यांसं-
 प्राप्तेतुनिष्ठाक्षये ॥ स्वात्पापूज्योजगद्गताहिरिः पूज्याप्रचताकाः ॥ नैवेद्यैर्विविधा-
 कारैः कृशरेणतुभूरिणा ॥ वह्निः पूज्यश्चभगवान्यताकैतिलतवरुह्यैः ॥ नमः प्रण-
 वसंयुक्तात्सतिलोपचजलाञ्जलिम् ॥ यमायधर्मराजाय मृत्यवे चान्तकायच-
 ॥ देवस्वतायकालाय सर्वप्राणहाराय ॥ सप्तसप्तप्रदेयानिष्टयकृतेषां तिलोदकम् ॥
 कृशरंभोजनीयाश्चजासरा ॥ स्तदंतरम् ॥ आहुंदत्वापितृभ्यश्चभुक्तस्त्वात्सर्वपात-
 कैः ॥ ततोविभज्यदंभुभ्यः कृशरंभक्षये त्वययमीत्यदंगीचतुर्दशी ॥ अथशिवरात्रिर्नि-
 रणीयते ॥ फाल्गुनकृष्णचतुर्दशीशिवरात्रिस्तानिष्ठीष्यव्यापिनी ॥ ईशानसंहितायाम् ॥
 तपस्येकसंभूताचशिवरात्रिः प्रकीर्तिता ॥ महाविषण्वितायांतनकुर्व्यादिदंज्ञत ॥

संस्थिति ॥ दिनद्वये निशीथाव्यासौ तु पूर्वा ॥ हस्तपक्षेऽथमीर्क्षे वेत्यापस्तंबोक्तेः ॥ अथ पर-
४७६ विधायकानि वाक्यानि ॥ स्कान्ते ॥ चतुर्दशी च दर्शे प्रच एकी भूय यदा भवेत् ॥ तद्दोषवा-

संकुर्वीत न च काम द्युते हनि ॥ अपत्वं ॥ माघासिते भूतदिनं हि राजन् उपेतियोयं यद्विपं-
चदप्रथाः ॥ ज्याप्रयुक्ता नहि जातु कुर्व्याच्छिवस्य रात्रिं प्रियक्वच्छिवस्य ॥ अत्र पूर्व वि-
द्वा प्रातिपार्श्वे वाक्ये ॥ पूर्व विद्वाया मर्द्धरात्रिद्युतायां चतुर्दश्या भूयवासः ॥ परविद्वायामर्द्ध-
रात्रिव्यापिन्यां चतुर्दश्या उपवासः ॥ उभय त्रार्द्धरात्रिव्यापिन्यां परविद्वायामेवोपवास-
द्वयसिद्धांतः ॥ यत्तु प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या शिवरात्रिः शिवप्रिये ॥ रात्रौ जागरणं यस्मान्न-
स्मात्तस्या भुपो यथासु ॥ द्दरं वचनं शर्द्धरात्रिचतुर्दश्याभावे वेदितव्यम् ॥ यदुक्तं ॥ यदानस्या-
च्छिवरात्रिर्द्धरात्र्यां तदानघ ॥ प्रदोषे व्यापिनी ग्राह्या तदा शिवतन्मातिथिः ॥ अन्यानि
प्रदोषव्यापिनी विधाधिकानि काक्यानि ॥ शर्द्धरात्राभावे वेदितव्यानि ॥ माघज्येष्ठेऽपि ॥ म-
घेयव्यापित्वे सति शर्द्धरात्रव्यापिनी सोत्तमा ॥ शर्द्धरात्रव्यापिनी मध्यमा प्रदोषव्यापि-

॥ श्री नीचूनेति सिद्धांतः ॥ पात्रपाणाविषये ॥ तिथिमध्ये पाशं श्रेष्ठतरम् ॥ तिथ्यंते पाशां कु-
 १७७ व्यादिनाशिव चतुर्दशी भित्तिस्कान्हेकेः ॥ साचशिवो पास कानां नित्या ॥ परात्परत्वं ना-
 स्ति शिवरात्रिः परात्परम् ॥ नष्टजयति भक्त्येदं रुद्रं त्रिभुवनेश्वरम् ॥ जजुर्जन्म सह वैशु-
 जायते नात्र संप्रपद्यः ॥ शिवभक्तानां नित्यम् कान्यं त्वन्येषां ॥ शिवरात्रिं व्रतं नाम सर्वपाप-
 प्रणाशनम् ॥ आचां डालमनुव्याणं भक्तिशुक्तिप्रदायकम् ॥ अत्र वाक्यानि ग्रंथभूयस्त्वा-
 न्नतिरितानि ॥ दूतिचवर्द्धणीति अर्थः ॥ अथ दूतिमिति लीयते ॥ सावद सावित्री व्यतिरिक्ता व-
 तादिशुपरान्वितैव कार्या ॥ भूतविद्वानकर्तव्या दर्शः पूर्ण कदाचन ॥ वर्जयित्वा मुनिश्रेष्ठ-
 सावित्रीव्रतमुत्तमम् ॥ दूतिं व्रतं वैवर्ही सावित्रीव्रतं भाद्रपदपूर्णिमा ॥ अथ चैत्रशौरी मासी-
 ॥ तत्र चित्रायुक्त्यां चित्रवस्त्रं दद्यात् ॥ तद्वर्द्धयिषु स्थितौ ॥ चैत्री चित्रायुता चैत्स्या न्याहा पुराय-
 तमा स्मृता ॥ चित्रवस्त्रप्रदानेन सोभानय मन्नाभुयान्वरः ॥ व्रतश्रुतौ विशेषः ॥ मंदे चार्कशुभे
 चापि वारे ध्येते शुचैत्रकी ॥ तत्राप्यवमेषिकं पूरणं स्थानेन लभते नरः ॥ दानमदाय तां याति

के भित्तिणां तर्पणं तथा ॥ अत्र हस्मन केन सर्वान् देवान् च येत् ॥ संवत्सर कृत पूजायाः फलं प्रा-
 ३० च्नोति ॥ तदेव वा पुण्ये ॥ संवत्सर कृता चार्थाः सा फलदाया रिव लान्मुखात् हस्मनेनाच्च ये चै-
 न्यां विशेषेण कदा भित्तविति ॥ अथैषा लक्षणं मातृजातिन सनं कुर्यात् ॥ यदा ह विष्णुः
 ॥ कृत्वा जिने तिलान् कृत्वा हिरण्यं मधुसायिभी ॥ ददाति यस्तु विनाय सर्वान् रति ह्रुः क-
 तम् ॥ वैष्णव्यां योगे आस्यान्तु विष्णवास्तु विशेषतः ॥ ससमुद्र मूहा जलस्य शो जवन
 कानना ॥ सहस्रदीपान्विता दत्ताष्टि वी नात्र संप्रदायः ॥ अथ ज्येष्ठ पूर्णिमा ॥ तत्र ह त्रौ पा-
 न हानं तिलदानं च ॥ यदा ह विष्णुः ॥ ज्येष्ठ ज्येष्ठ्या यदा चेतस्या तदह त्रौ पानं तदा हनेन
 नरोत्तम ॥ धिपत्य भाज्ञोति ॥ आदित्य पुण्ये ॥ ज्येष्ठे आसितिलान् दद्यात्पौर्णमास्यां विशेषे-
 यतः ॥ अथ संध्यास्य यस्तु रायं तस्मां पौर्णिमं संप्रदाय इति ॥ अथावा दीपणं ॥ तत्र चतुर्द-
 श्या सुषोष्प विष्णु पूजनम् ॥ यदुक्तं ब्राह्मे ॥ चतुर्दश्या सुषोष्प्या य पौर्णिमा स्यां यजेद्भूमि-
 ति ॥ अस्यामेवापादयुतायां अन्नादि स्नानमस्त्यम् ॥ यदा ह विष्णुः ॥ अथावा दद्यात्माया द-

युतायामन्यपानादि दानमक्षयं भवति ॥ यदा चतुर्दश दश नाडकाधका भवता-
 तत्र सावित्री ज्ञतमपि स्याज्यम् ॥ श्रुतोऽद्या दश नाडी भिर्द्वय यत्युत्तरांति धिमिति ॥
 स्यते ॥ अत्र श्राद्धं नित्यम् ॥ भिलाभः ॥ अमावास्या व्यतीपात पौर्णमास्या दृक्काशु-
 च ॥ अत्र श्राद्धं सकुवाणो नरकं भवति पद्मते ॥ आषाढी तु कौकिल ज्ञतोप क्रसे संभ्या-
 कालव्यापिनी ॥ भविष्ये आषाढ पौर्णमास्यां तु सायं काले शुभं स्थिते ॥ संकटप्रदे-
 न्मास रेकं आवर्णे आत्यहं त्विदं ॥ व्यास पूजायां चोदयि कीर्तिमुहूर्त्ता ॥ विष्णुपूजा-
 तौ ॥ त्रिभुहर्त्ताधिकं श्राद्धं पर्वक्षौर प्रण विनोदिति ॥ अत्र नवरात्रिं हि च द्वादश रात्रि-
 दीर्घवंशे अजावंधनं कृत्वा पूजादिवाद्यु विचारः कर्तव्यः ॥ अथ आवर्णा पौर्णिमा ॥ तत्र
 पौर्णिमास्यां ग्रहणा संक्रांति होष रहितायां च दय काल व्यापि व्यां दोहो व्याधि श्राद्ध-
 भविऽपि यजुः श्रावता व्याविनः ॥ उवा कर्मकुर्व्युः ॥ श्रावणासास स्यध चण नक्षत्र-
 धनिष्टा नक्षत्रे वृहत्याः ॥ सास वेदि नस्तु श्रावणा सास स्यध च वयं हस्तशुक्रायां कु-

अथिः ॥ शेषधिप्राप्तुर्भावग्रहणदिदोषर हितायां च सर्वेषां तुल्यमिति ॥ तदाह यद्वलम्

४८०

॥ अथाद्यानामुपाकर्म्म आचराया अवरो नवा ॥ हस्तेनोषधिनावेवापंचस्थां आचरा-
स्यतु ॥ उपाकर्म्मदोषकर्मः ॥ अत्राथाद्यानामिति श्रुत्वाभिप्रायेण वचनम् ॥ गोभिलः
पर्वण्योदयिके ह्युच्यते आचरायां तैत्तिरीयकाः ॥ वक्तव्याः अवरो ह्येतुहस्तर्क्षिसामवेदि-
नः ॥ निगमेऽपि ॥ आचरायां आचराणि कर्म्मयथाविधिसमाचरेत् ॥ उपाकर्म्मनुकर्त्तव्यं क-
र्त्तव्यं हि वाक्ये ॥ हस्तेन शुक्लपंचम्यां अवरो अवरो भवेदिति ॥ चतुर्दश्यां युक्तस्य पर्व-
ण्ये निषेधाच्च ॥ चतुर्दश्यां समुत्पन्ना वसुरेभ्युर्केदभीवेदान्तो कुर्वतः पच्ययाने सौ-
जद्रुः श्रुतीः ॥ हत्वा तावसुरेदेवः प्रातल नल वासिनो ॥ आहृत्य ताः श्रुती स्वस्मिन् देवो-
कयुः खयम् ॥ सप्ताश्वान् श्रुतीर्वाह्या पर्वण्योदयिके पुनः ॥ अतो भूतयुते तस्मिन् नो-
पाकरणा निष्यते ॥ आचुरं वज्रं च त्कालं वेदाहरणं कथेति ॥ यत्तु आचराणि दूर्यनवमी
दूर्वा चैव हुतासनी ॥ दूर्वा विहातु कर्त्तव्या ॥ शिवरात्रिर्वर्त्तते हि निमित्तं ॥ एतस्य आचराणां ४८०

विधीयमानं पवित्रं ऐयरा विषयम् ॥ उपाकर्मणा भूतमास्त्यक्षप कश्चाद् विषयं
 वा ॥ अत्र तैत्तिरीयकपदमन्येयमपि यजुः शारिवनामुपलक्षकम् ॥ तेषां कालांत
 एव विधानात् ॥ व्यासः ॥ आचरणेन तु यत्कर्म उज्जराषाढसंयुतम् ॥ संवत्सरकृतोऽध्या
 यस्तत्क्षणादेवनश्रयति ॥ धनित्वा संयुतं कुर्याच्छ्रावणं कर्मयज्ञवेत् ॥ तत्कर्म
 सफलं विद्यादुपाकरा संज्ञितमिति ॥ उपाकर्मप्रकुर्वीत क्रमात्सामर्थ्यजुर्विदः
 ग्रहसक्रांत्ययुक्तेषु हस्तश्रवणपर्वसु ॥ अथ चेहोय संयुक्ते पर्वणि स्यादुपक्रिया ॥ दुः
 खप्रोक्तमयग्रस्ता शय्ये तस्मिन्नुजातयः ॥ अथात्र कर्तव्यमुच्यते ॥ यदुक्तं ब्रह्मचेतसा ॥ भवे
 दुपकृतिः पौर्णमास्यां पूर्वाह्ण एव तु ॥ द्वाह्येणान्भोजयेत्तत्र पितृनुदिश्य देवताः ॥ वैश्व
 नः ॥ भोजमादि जटयी न्महाकृत्वा दर्भमया स्युतः ॥ पूजयित्वा यथा शक्ति तर्पयेद्दक्षसुखर
 ततो देवान् पितृंश्चैव तर्पयेत्परमांभसा ॥ उपाकर्मणि गृह्णा वेधदोषाभावः ॥ नित्ये
 नोभितिके जापेय ब्रह्मेमक्रियासुच ॥ उपाकर्मणि चोत्तमं गृह्णेदोषो न विद्यते ॥ स्य-

त्वरे ॥ भद्रायां देन कर्तव्ये श्रावणे ॥ फाल्गुणी ॥ नभः ॥ श्रावणे च प्रति हंति श्रावणं दहति फाल्गुणी
 ॥ विप्रयोऽपि भविष्ये ॥ ततोऽपराह सवधे रक्षा पोतलिका शुभम् ॥ कारयेत्त्वत्तैः शरैः सिद्ध
 र्थं हैम भूषितै रिति ॥ अथोत्तमः ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ यौवमासस्य रोहिण्या मष्ट काया मया पिवा ॥ ज-
 लांते वृहसां कुर्यु र्वत्सर्गो विधिवद्दहिरिति ॥ श्रावाद्या मथवाष्टम्यं च नृदृश्या शुभापतिं ॥ प-
 वित्रे रज्येद्भक्ष्या श्रावण्यं चेत रात्सुरनिति ॥ अथ भाद्रपण ॥ तत्र सा वित्री ज्ञतम् ॥ नरेव गवि-
 ष्ये ॥ अश्वत्थं पांडव श्रेष्ठ सा वित्री ज्ञतया द्यात् ॥ तयोदश्यां भाद्रपदे दंतधावन श्राव्यात्
 निरात्रो निधनं कार्यं उपवास स्य भावत ॥ अथ होतु तयोदश्यां नक्तं कुर्यात्तं हितः ॥ अ-
 द्या चित्तं च वा कुर्यात्सुगवालेन दूरीणि ॥ अथा विन प्रणिमा ॥ दूय मेव को मुदी ॥ नखाभि-
 रं लक्ष्मीं च दृजयेत् ॥ नरेव भाते ॥ दूरीं भाद्रपदे जयासि को मुदी परि कोर्तिता ॥ कुलध्यां
 पूजयेत्सखी ॥ शिंद्रे रावत रिक्षतम् ॥ निश्चिन्ता गरा ॥ हत्वा परेऽन्तु सव मा चरे रिति
 ॥ अथ एतद्वर्ण पात्रं सुवर्णं चित्तं दत्वा दीक्षा निर्वति ॥ यदुक्तं विद्वता ॥ अथ चतुर्ज्या ता-

ह्येति नृपतिना चन्द्रमसा दत्तं पूर्णं पानं सुखं धृतं विभ्राज्य दत्त्वा दीक्षां शिर्भुवति ॥ अथ
 ६३ विद्विषोक्तिर्निग ॥ तन्न काव्यं दृष्ट्वा तस्यैकमुच्यते ॥ काव्यं किं वा सुखं तस्यैव विवाहः सुख
 नंदनः ॥ काव्यः दुःखकुलश्रेष्ठश्चेन्नैराजन्यतया ॥ राजा पश्येत्सुखं दानं च दत्तं चैव
 द्युत्तमा ॥ अथैवाः पुरव कश्चिद्विदुतास्तां हस्ते काव्यं देवता द्युति ॥ गच्छेत् ॥ काव्यं
 तु दृष्ट्वा तस्यैवात्मानं तं सयाच्यते ॥ श्रेयं पश्य ॥ काव्यं तस्यैव शिवं च तस्यैव सुखं ॥ जा
 हे ॥ नालं तुल्यं यं दत्त्वा हृदयं तस्य तस्यैव सुखं ॥ सुखासंज्ञास्तदा विदत्त्वा को नार
 तारणं ॥ द्यावंति तस्य रोगाणि शरीरे संति संख्यया ॥ तावद्दुःखं स हस्त्याणि रवर्गव
 सति तत्प्रदः ॥ पूजयित्वा ततो विष्णुं रक्तपात्मानुलिपनेः ॥ योक्तव्यं गोरसं यत्मा
 त्सुप्तं व्यंशं हले स्थितः ॥ अत्रैव शीरसा गृह्यते ॥ विश्राज्या सुयदा भानुः कलिका सु
 चन्द्रमाः ॥ सयोगः पद्मको नाम पुष्कोरप्यति दुर्लभः ॥ अत्रैव यं च यदा दत्तं तदा वि
 कं भवति कश्चिद् ॥ महती सातिथिर्द्वेयाज्ञानदाने सुचोत्तमा ॥ अजापत्यं तथा

ऋक्षं त्रिव्यो तस्यां नराधिप । सामहा कर्त्तिकी प्रोक्ता देवाना मपि दुर्लभा ॥ अमेयं क-
 त्तिका याम्यं अरणी ॥ ग्राजापत्यं रोहिणी ॥ यदा तु याम्यं भवति ऋक्षं तस्यां त्रिव्यो क-
 त्तित् ॥ त्रिविः साधि ब्रह्मपुण्या मुनिभिः परिकीर्त्तिता ॥ क्षीरसागरस्नने विशेषो ब्राह्मो ॥
 पौर्णमास्यां तु संपूज्यो भक्त्या दामोदरः सदा ॥ ततश्चंद्रोदये पूज्यास्तापसाः कृत्वि-
 का सुषट् ॥ कर्त्तिके यस्त्वद्योऽवज्ञो वरुणश्च हुताग्रजः ॥ धान्यैस्स श्रद्धैर्द्वारैर्द्वीभू-
 धितव्यानि प्रागसि ॥ माल्यैर्द्वये स्नायानंधैर्भक्ष्यै रक्ष्यावर्चैस्तथा ॥ परमानैर्ज्जले रक्षा
 कैर्वर्द्धनास्त्राण तर्प्यैः ॥ एवं द्वादश संपूज्य दीपो देयो गृहादह्निः ॥ दीपो पांते तथा ग-
 र्त्तश्च तुरक्षो मनो हरः ॥ चतुर्विंशं गुलः कार्यः सितै र्भूतै र्नवारिण गवां क्षीरेण संदू-
 र्णैस्संमता त्पारिदक्षितः ॥ तत्र हेमप्रदो मत्स्यो मुक्तानेत्रो मनो हरः ॥ प्रक्षेप्तव्यो-
 विधानेन नमोस्तु हरय धरेत् ॥ ब्राह्मणाया यद्योपयाय दद्यात्तत्क्षीरसागरम् ॥ इति कर्त्तिके
 की ॥ अथ मार्गशीर्षी ॥ तत्रैव न्द्राचार्यो ब्रह्मांडे ॥ चाभनेत्रं हि यद्विज्ञो स्तदेव भुवनत्रयम् ॥ अने-

स्यात्तज्जन्मभ्रंशः स्याद्वर्तनाभ्यर्चिचवयत् ॥ येषामास्यातुयस्मावुतस्मात्तद्व्यप-
 यस्मानुलवणंदेवदस्य प्रापादिभिः सतं ॥ मातास्वमाचदुहितासंपूज्याश्चकुलांगनाः
 ॥ कांतिरूपंभवेत्स्त्रीणांपूर्णेन्दोः पूजनादिति ॥ अस्यांसृगधारेयुक्तायांप्रस्थपरिभि-
 तंचूर्णितंसुवर्णयुक्तं ॥ स्ववर्णचंद्रोदयेदद्यात् ॥ विष्णुनोक्तत्वात् ॥ अथयोषीपूर्णं ॥ तत्र
 यौययुक्तायामलदर्शनाश्रनंगंगास्नानादिकंकार्यंयथाशक्तिसनार्दिकंद्यतव्यंस्व-
 यमपिद्यतपायसंभोक्तव्यमितिदिक् ॥ इति यौगी ॥ अथमायीपूर्णं ॥ तत्रमघायुक्तायांति-
 लेःश्राद्धंन्यातिलपात्रादिदानम् ॥ यद्वक्तुंभविष्ये ॥ माध्यामयासुचतिलैस्संतर्प्यपित्देव-
 ताः ॥ तिलपात्राणिदेयानितिलास्सपल्लोदनम् ॥ केवलानि नरत्नानिभोचर्कोपापभो-
 चर्को ॥ उपानदानमत्रैवतिलदानंचप्रस्यते ॥ यत्रवातत्रवास्नानंदानंविमानुरुत्ततः ॥
 येषामास्यांतुयोमाघेपूजयेद्विधिवत्स्थितम् ॥ सोऽश्वमेधमवाप्येहविष्णुलोकेमही-
 यते ॥ अथफाल्गुणीपूर्णा ॥ सापूर्वविद्धासायाहव्यापिनीग्रहा ॥ यद्वक्तम् ॥ सायान्नेहोति-

तस्यै कां कुर्व्यात्स्वर्गो हे नो हनं गताम् ॥ स्थिं सदा तदा हो धनुषं धर्मं सप्तः सनातनः ॥ निष्ठां मभिः
 ४८६ प्रत्येत हो लिखा सर्वसा वृधैः ॥ न हि का प्रत्ये प्रहं मुञ्जिता हुरुन स भवेत् ॥ त्वं मदीकं हो विः
 कां न दीपयेत् ॥ यदुक्तम् ॥ यद्वायां दीपिता होला गच्छ भवं करोति हि ॥ न गच्छन् न वेति धत्ता
 न्मात्तां परिवर्जयेत् ॥ अद्वायां लेपोर्मात्तां सन्निहोये भुवः पिबा ॥ होलां प्रज्ज्वालय
 कुर्यात् पिशाचानां म होस्तवम् ॥ तथा हि नार्द्धत्वरतोऽपि स्यात्कात्यायन्यां पूर्णिमा यदि
 ॥ सन्नो मद्वाय तानेन होलिकां न न दीपयेदिति ॥ परहिने हि नार्द्धत्वरतोऽपि स्यात्कात्यायन्यां
 न्यां पूर्णिमाया विद्यमानायां ॥ पूर्वे विद्यमानायेदरन्नो भद्रा वसाने होलिकां दीपयेदित्युक्ते
 यदा पुनः परहिने पूर्णिमा सार्द्धं यामत्रय व्यापिनी प्रसिपच्च तद्विगाभिनी नारायणवेव
 होलिका काय्या ॥ तथा च भविष्ये ॥ सार्द्धं यामत्रयं वास्या द्वितीय दिवसे यदा ॥ प्रसिपच्च
 ॥ यामायापि नराया होलिका रक्षता ॥ यत् ॥ च न्हो वन्ति परित्यजेदिति वन्तो होलिका-
 यामानि परित्यजेद्विपदं लिख्यते ॥ स तन्मुखायं काले भद्रा रक्षित परित्यजेदिति

नाकति नम्य प्रति पदिन कनेचम ॥ अन्यथा ॥ भविष्योत्तराकाक्यस्य निर्यकता स्यादि-
 ति ॥ अन्नचञ्चो गरागस्तदाग्रहणादवकि ॥ निशि निविष्टि पूर्णायां होलिका दीपे नम-
 ज्य पूर्वदिने अस्तमना वधि चतुर्दशी द्वितीयदिने प्रदोष समये प्रस्तोदितं तदा पूर्वदि-
 ने वत्पवशिरात्रिचतुर्थयामे विष्टि पुच्छे होलिका काय्य द्वितीयदिने ग्रहणात् नंतरं
 प्रति वत्संभवेत् ॥ ग्रहणात् पूर्व दिवा होला प्रज्ज्वन नियेधा द्विष्टि पुच्छस्य सर्व कर्मणि
 हेल्यदर्शनाच्च ॥ पञ्चालः ॥ दृष्टि व्योधा नि कर्मणि शुभान्यप्यशुभा निन्द ॥ तानि सर्व-
 शिष्टि द्वाति विष्टि पुच्छे न संशयः ॥ संवत्सरस्य साहोय कामदा हो भूता नरे ॥ इति विच-
 ल्य निबंधे ॥ अत्र कथ्यम् ॥ रघुपतिनात् वत्सयम् ॥ अथ पंचदशे शुक्ला पाल्मूनस्य नराधि-
 प ॥ श्रीलकालो विनिःघातः प्रातर्गम्यो भविष्यति ॥ अभीप्रदानलोकात्वा दीयतां पु-
 रश्च नमः ॥ यथास्य प्राकितं लोकार्वाणं च हस्तविच ॥ संवत्सं पुच्छकाद्यानां शुभलाभा-
 न्नकारयेत् ॥ नमामि विधि वद्ध्वा रक्षो द्वे सर्वान् विस्तरे ॥ ततः किल लां प्रादे लालिप्र-

ॐ ह्रीं नमोः ॥ तामभिंनिःपरिक्लप्य गायंतु च हंसंतु च ॥ जल्पन्तस्ते च्छ्या लोका-
 निश्राकायस्य यन्मतम् ॥ तेन शब्देन सा प्राप्ता होमेन च निराकृता ॥ सर्वदुष्टापहो-
 होमस्सर्वयोगोपश्रान्तिदः ॥ अस्यां निश्रागमेराजन्तरक्ष्या शिश्रावो गृहे ॥ गोमये-
 नोपलिहे च सत्तुल्ये यद्गोमये ॥ आकारयेच्छिशुप्रायान्त्वद्भव्यप्रकरणान् ।
 तेकायवद्गैस्संस्पृश्य शब्देर्हस्य करैः शिश्राशून् ॥ रक्षन्ति तेषां दातव्यं-
 शुद्धं पक्वान्नमेव च ॥ एवं दुंदुहं तिथ्या तस्याः सदोषः प्रशमंज्जेत् ॥ चालानां रक्षणां का-
 र्यं तस्मात्तस्मिन्निश्रागमे ॥ इति होलिकानिर्ययः इति धोर्णमासी निर्ययः अथामावा-
 स्या निर्ययते ॥ अमाम्चोपवासादिषु प्रतिपद्युतैव वदसावित्री व्यतिरिक्ते च तेषु प्रा-
 ह्मा युगमवाक्यात् ॥ अमाम्वास्या तृतीयेति सा उपोष्या परान्विता ॥ भवित्ये ३ पि ॥ भू-
 तविद्वाप्यमावास्या न ग्राह्या मुनिपुंगवैरिति ॥ अथ ज्येष्ठामायां पूर्वविद्वायां वदसावित्रीं च
 तं कुर्यात् ॥ तत्रायं विधिः ॥ ज्येष्ठकृत्स्नत्रयोदशी मारस्य निश्रात्रोपोपणम् ॥ अथ-

तया तु तयो दृश्यां नक्तं चतुर्दृश्या मया चितं ॥ अमाया मुपवास कृत्वा सुवराभातमाद-
 द्यात् ॥ स्नान्ते ॥ अमायां च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती ॥ त्रिरात्रोपोषिता नारी वि-
 धिना तेन हजयेत् ॥ अमाया तु त्रयोदश्यां नक्तं कुर्याज्जितेन्द्रियः ॥ अयाचितं चतुर्द-
 श्या ममायां समुपोषणम् ॥ गृहीत्वा बालुकां पान्ते प्रस्थमानं युधिष्ठिर ॥ नतो वं प्र-
 मये पान्ते वल्लयुग्मे न वेष्टितम् ॥ सावित्री प्रतिमां कृत्वा सर्वावयवप्रोभिनीम् ॥ सो-
 वसां मिदमयीं चापि स्वस्य प्राक्त्या विनिर्मिताम् ॥ सार्द्धं सत्यवता साव्धीफलनैवेद्यदे-
 पकैः ॥ वटावलं वितं कृत्वा काष्ठभारं युधिष्ठिर ॥ वितादौ समप्रधान्यैश्च बहुधा संप्रकल्पि-
 तैः ॥ रजन्याः कंठसूत्रैश्च शुभैर्कुंकुमकेशरैः ॥ सावित्र्याख्यानकं चापि वाचयौतद्विजो-
 तसैः ॥ रात्रौ जागरणं कृत्वा नृत्यगीतपुरस्सरं ॥ ततः प्रभाते विधिना पूर्वोक्तेन नरोत्तम ॥
 तामपि ब्राह्मणो दद्यात्त्रिणपत्यसमापयेत् ॥ हनमंत्रश्च ॥ ॐ सावित्री प्रमया दत्ता सहि-
 रया महासती ॥ ब्राह्मणप्रोणनार्थाय ब्राह्मणप्रतिशुश्रूता चिति ॥ एवं दत्त्वा द्विजेन्द्रा-

नमो विनीतां युधिष्ठिर ॥ नैव द्यादि च तत्सर्वं ब्राह्मणस्य गृहं नयेत् ॥ स्वयं दशपुत्रं गच्छे-
 त्त्व वेदशयुज एव जेत ॥ तत्र भुक्ता हविष्यान्नं ब्राह्मणी ब्राह्मणे स्तुत ॥ विश्वं जित्वा नतो वि-
 प्राप्ता विनीतां यत्नतां सिति ॥ जते नानेन शजेद्देवैर्धव्यं नाहु यत्कचिद् ॥ इति हतसा विनीताः ॥
 शयमाश्रमायां कृशग्रहणम् ॥ हेमाद्रौ हारीतः ॥ मासे नृशस्य मावास्या न स्यान्द्भीक्ष्वयो यतः ॥
 शया तथा शास्ते दम्भा विनि योज्याः पुनः पुनः ॥ न भस्यो भादपदः तत्कमः ॥ शुचौ देशे शु-
 चिर्भूत्वा स्थित्वा पूर्वोत्तरा मुरवः ॥ ऊंकारेणा तु मंत्रेण सकृदेव कुशं स्पृशेत् ॥ सकृदेव द्रव्य-
 मत एव ॥ दूर्ध्वं प्रादने मंत्रः ॥ विरञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठिनि सगजि ॥ नृदसवारिणीं पापानि-
 मयस्व स्तिष्ठतु भव ॥ कुशमूले स्थितो ब्रह्मा कुशमय्येतु के प्रावः ॥ कुशाये तु हरे देव-
 रजयो देवाः कुशोऽस्थिताः तस्य क्षणं च ॥ शुचिन्नाश्रान्तव पाणिसि मूला न्तो मूला-
 न्तु भान् ॥ पितृदेव यजार्थं च सभा दद्यात्कुशान् द्विजः ॥ सर्वं परांश्चिन्मादभ्योऽसि लो-
 त्रसमुद्भवाः ते समस्ता नि योक्तव्या देवे पित्र्ये च कर्म्मणि ॥ जातमात्रो भवेद्दर्भः साग्रं भ-

लः कुप्रसस्यतः सप्तपर्णस्तु कुतप विद्वन्नामस्तथा च्यते ॥ अविद्वन्नामा अशुष्काया-
 इत्याभादेशमात्रकान् कुतपा इति विद्वेद्यस्ते तु भाद्रसमाश्चेत् ॥ अथ कार्तिका माघस्या दी-
 पमाला ॥ सा सुरेशानि रित्युच्यते ॥ प्रदोषार्द्धरात्रव्याधिन्येव । तेनास्थाः पूर्वविद्धा त्वं प्र-
 सिद्धम् ॥ उक्तं च ॥ दीपमाला न कर्तव्या भति पन्थि भ्रिता क्वचित् ॥ श्रीणि तत्र विनश्यति
 प्रजा गवो मही पति रिति ॥ अस्यां नववह्नादि धारणं तस्मा पूजां च कुर्यात् ॥ ज्ञाने ॥
 अमायां च तया देवाः कार्तिके मासिके प्राचता ॥ अभयं प्राप्य सुप्तास्तु सुरवंक्षीरेदसा
 शुषु ॥ तस्मादैत्यमयान्मुक्तासुरं सुप्तास्तु जोदरे ॥ अतोऽर्थविधिवत्कार्यमनुव्ये-
 स्तुतसुसिका ॥ दीपान्त्वा प्रदोषे तु तस्मा पूज्यप्रयाविधि ॥ स्वलं कतेन भोक्तव्यमते-
 चाला तु सन्जय ॥ अथ रात्रे प्रकर्तव्यं ब्राह्मणिल पराधर्मेः ॥ प्रदोषसमये राजन् कर्त-
 व्या दीपमालिका ॥ दीपदद्यात्तथा कार्या यथा देव ग्रहेषु च ॥ दीपदानं प्रयायति
 विप्रभिन्नसुरालये । चतुःपथे प्रसजानि तु न दीपवर्तयोगहे । दीपमाला परिस्त्रिंशे प्रदो-

ये तदन्तरं ॥ ब्राह्मण ॥ अथो जयित्वा देवि यज्य चतुर्भुक्षितान् ॥ अलं हतेन भोक्तव्यं
नववरत्रोपशोभिना ॥ अथैव राजकोशुदीमहोत्सवहु-व्यात् ॥ यद्भक्तं ॥ ततो परान्तरसम-
येषोपयेन्मगरेष्टपः ॥ सर्वरज्यं वलं लोकान् यथेष्टं चैव ता मिति ॥ लोकोऽपि पुरे
युय सुधाश्च वलिता चिते ॥ दक्षचंदनमालाढ्ये चर्चिते च ग्रहेष्टहे ॥ दीपया नरतो ह्यु-
क्तनरनारी मनो हरे ॥ दीपमाला कुलिरस्ये विध्यस्तध्यां तसंचये ॥ अदेवि होषरहिते
सस्ते दोषागमेष्टुभे ॥ दैष्ट्या विलाशिर्या सार्धे स्वस्ति मंगलकारिणी ॥ गृहं गृहं भ-
जति च पादाभ्यामेव वा यि शिः ॥ ततोऽर्द्धे राजसमये स्वयं राजा पुरं जेत ॥ अवलोक-
यितुं स्वयं पद्माने वशने प्रशनेः ॥ ततः प्रदोषसमये नारी भिरुहादलक्ष्मीर्निःकाश्य-
ते ॥ तदपि स्कां दे ॥ एवं गते निशीथे नृजने निद्रादं लोचने ॥ तावत्तमरनारीभिः सूर्य-
दिंदिमवाहनेः ॥ निःकाश्यते ग्रहस्थाभिरलक्ष्मीस्त्वग्रहो गणत् ॥ इति कार्तिकी अमावा-
स्या ॥ अथ माघी ॥ तस्यां ब्राह्मणं सा वित्री सहितं संपूज्य नवनीतधेनुं दद्यात् ॥ तदेवम-

संज्ञे विद्ये ॥ अमायां चैव माधस्य पूजयित्वा पितामहम् ॥ गायत्र्या साहवद्वचद्वदमाभू

यितम् ॥ नवनीतमयीभ्ये नुं फले नाना विधे र्युताम् ॥ सहिष्णुस्य दत्तां च आह्वयाम् ॥

यनिवेदयेत् ॥ अन्नमाधधौषयो रमावाख्या रविवारश्रवणं व्यतीपातयो गैर्युक्ता
न्दसावर्द्धोदयारख्यः ॥ कोटिग्रहणसन्निभो दीपः ॥ तथा च स्कारे सेतुमाहात्म्ये ॥ अमा
र्कपातप्रवर्णे र्युक्ता चेन्माधधौषयोः ॥ अर्द्धोदयस्स विद्म्यः कोटि सूर्य्यग्रहे स्समः
॥ दिवे वयोगस्स स्तोयं न तु रात्रौ कदाचने नि ॥ अर्द्धोदये तु संप्राप्ते सर्वे गणा जलं समं
शुद्धात्मानो हि जास्स सर्व भवेयुर्ब्रह्म सन्निभाः ॥ यत्किंचिद्दीयते दानं तद्दानं मे रुसन्ति
ममिति ॥ अन्नदानाद्यै विश्रेयः ॥ चतुःषष्टिपलं भुख्य समभं तत्र कारयेत् ॥ चत्वारिंश
त्यलं चाथ पंच विंशतिमेव च ॥ निषाद्य पाय संतत्र पद्मानय दलं लिखेत् ॥ पद्मस्य
कारिं कायां तु कर्कमात्रं सुवर्णकम् ॥ तदभावे तदूर्ध्वानर्द्धं वाधिकारयेत् ॥ कृत्वा तु तं धूलि
पुद्गैः पद्मानय दलं धुमन् ॥ अमन्नं स्थापयेत्तत्र ब्रह्मविष्णु शिवात्मकं मिति ॥ तेषां

श्रीति कराद्याय प्रवेत मा ल्ये सुभो भनेः ॥ वस्त्रादिभिरलं कृत्य वा स्त्रियाय निवेदयेत् ।
 दानमंत्रः ॥ सुवर्णं पायसाभ्रं त्रयस्माहेत ज्ञायी मयं ॥ भ्रातृकीर्त्तनार्कं यस्मात्तद्गुहाया-
 दिज्योत्तम ॥ समुद्रमेव लोपुष्पी सम्यग्दत्तं स्य यत्फलं क्व ॥ तत्फलं लभते मर्त्यो देवा-
 दानं समन्त्रकम् ॥ इत्यर्क्षेयविधिः ॥ अग्रावास्या तु सोमेन सप्तमी भानुना सह ॥ चतुर्थी-
 भूमिपुत्रेण वृषवारोराचाष्टमी ॥ चतस्रसि ययस्त्वेताः सूर्यग्रहाणां सन्निभाः ॥ स्नानं द-
 नं तथा आहं सर्वं तत्राक्षयं वेदिति ॥ इत्युपवासाद्यमावास्या निर्ययः अथ आहं मावा-
 स्यानिर्णीयते ॥ सा अपराह व्यापिन्येव ॥ एको हि ह्यग्राहे तु अष्टम नवम मृहूर्तं व्यापिन्येव
 ग्राह्या ॥ मात्स्ये ॥ अष्टमे नवमे यस्मान्मं दी भवति आस्त्रा ॥ तस्माद्दत्तं न फलं दत्तत्रा-
 भो विशेषत इति ॥ कुतुपे प्रथमे भारो एको हि ह्यमुपन्नमेदिति व्यासः अष्टम मृहूर्ता
 रव्ये कुतुपे भारं भद्रं तितर्क्यः ॥ अत्र पार्वरां त्वेकादश मृहूर्ते ॥ अपराहः पितृणां मित्यु-
 क्तैः दिनद्वयेऽपराह व्यासो यत्राचिका नद्यापि नीग्राह्या ॥ अपराह दय व्यापिन्यमावा-

स्थापदाभवेत् ॥ तत्रात्यन्तं न ह त्वाभ्यां निषेधः पितृकर्मणि ॥ श्रमा-
 वास्याहिमातुस्यादपरान्हद्वये समा ॥ सवेपूर्वापराह्नौ सास्येऽपि च परास्मृतेति ॥ हि-
 नद्वयेऽप्यपरान्हव्याप्यभवेऽपि परैव ॥ पूर्वधुरेक्षापरान्हव्याप्नो ॥ वो भयनः ॥ घटिकैश्चा-
 प्यमावास्याप्रतिपत्सु न चैतदा ॥ भूतविहैवसाग्राह्यादेवैत्र्ये च कर्मणि ॥ प्रतिप-
 दि घटिकैकापि कर्म कालेनास्ति चेदित्यर्थः ॥ अथ मलमासे वर्ज्यादि निरर्थकः ॥ तत्र-
 काव्यं निधिध्यते ॥ जातलिः ॥ नित्यनैमिति के कुर्याच्चूडं कुर्यान्मालि न्युचे ॥ निधि-
 नक्षत्रकारोक्तं काव्यं नैव कदाचनेति ॥ नित्यनैमित्तिकयोरेपि यदनन्यगानि कंतदेव
 कुर्यात् ॥ अगन्त्यागति कुंकुर्यान्नित्यं नैमिति कंतयोति स्मरणात् ॥ इत्थ परिग्रहे
 अवषट्कारहोमाश्च पूर्वचाग्रयणं तथा ॥ मलमासे तु कर्तव्यं कास्यादि विं विवर्जयेदि-
 ति ॥ अवषट्कारहोमावेष्टवदेवाग्निहोत्रादयः ॥ सर्वदशौघौर्णमास्योः ॥ तत्रैव सोम-
 द्यावादि कर्मणि ॥ नित्यान्यपि अलिख्युचे ॥ व्यष्टी ज्याग्रयणा ध्यान चानुष्मादिका

न्यपि ॥ महालयाष्टकाद्वाहोपाकर्माद्याधिकर्मभ्यत् ॥ अष्टमासविशेषाख्यविहितं व-
 र्ज्ये न्यतेति यमः ॥ चंद्रसूर्यग्रहेस्नानं श्राद्धं स्नानं जपः पितृकर्म ॥ कार्याणि मलमासे तु
 नित्यं नैविति कं तथेति यमः ॥ गर्भे वाभ्युषिते भृत्ये श्राद्धकर्मणि भासिकेः स पिण्डो
 करणे नित्यं नापि मारं विवर्जयेत् ॥ तीर्थस्नानं जपो होमो जवर्द्धी हि तो ज्ञादिभिः ॥
 ज्ञातकर्मन्यकर्मणि नव श्राद्धं तथैव च ॥ मघात्रये दर्शश्राद्धं न्यपि च योऽ-
 ष्ठा ॥ मासिके श्राद्धे श्रमायाः नित्यदानं होमो जपो पापानः ॥ अन्त्यकर्मणि दाहो द-
 कपिंडदानास्थि सं च वनादीनि ॥ गरीचिः ॥ मन्वादे च द्युगादौ च मासयो रुमयोर-
 पीति ॥ मास्ये ॥ वर्ये पापहरं श्राद्धं स्नानं च अति वत्सलम् ॥ गोभूतिलहिण्यनां दा-
 नं मासे मलिम्लुचे ॥ इति भृशुः ॥ दृष्टि श्राद्धं तथा सोममन्वाधानं महालयम् ॥ रा-
 ज्याभिधेकं कार्म्यं च न कुर्व्याद्धानुलंघित इति स्मृत्यन्तरे ॥ नमो वाप्यनभस्यो वा-
 मलमासोपदा भवेत् ॥ श्रापाद्याः समक्षमः पक्षः पितृपक्षस्तदा भवेत् ॥ हारीतः ॥

भस्मि असे क्रोतहि कहैल्यमादि के प्रथमं द्विजेः ॥ तथैव मादिके आद्व सायडा कर
 ति ॥ शुगुः ॥ न मास मृता नांतु पच्छाद्वं प्रति वत्सरम् ॥ मल मासे तु तत्कार्यं
 नान्येषान्तु कदाचन ॥ एवं च शुद्ध मास मृतानां तु प्रथमादिकं मलेऽपि कार्यं
 जिति ॥ द्वादशे मासि सर्वत्र फलंति प्राद्व कालं तु शुद्धे त्रयोदशे ॥ यदा तु मध्ये म
 ल मास भूतस्तदा पित्रयो दशे मासे ॥ यतः ॥ मल मास मृतानां तु मले स्यादादि
 कांतरम् ॥ द्वादशगुः ॥ अस्याध्येयं प्रतिष्ठां च यद्दत्तं दानं व्रतानि च ॥ देव व्रत द्यो
 तस्य चूडा करणा मेखलासु ॥ मांगल्य मभिवेकं च मल मासे विवर्जयेत् ॥ तथा
 वापी कुप तडागादि प्रतिष्ठा यद्दत्त कर्म च ॥ न कुर्व्यां जल मासे तु महा दान
 व्रतानि च ॥ द्यो त्रयोऽत्र कार्त्तव्यः ॥ अथ ग्रहण निर्णयः ॥ द्वादशोत्तमः ॥ सूर्य ग्र
 हे तु नास्तीया पूर्व यास चतुष्टयम् ॥ चंद्र ग्रहे तु या मांस्त्री न्वाले द्वादश
 हे विनिना ॥ वाश्रयः ॥ यस्तो द्ये विधोः पूर्व नाह भोजन मान्चरेत् ॥ अगुः ॥

४२८

प्रला वेवा ल मानं तु रवीन्द्र प्राप्नु तो यदि ॥ परे शु रुदये स्नात्वा शुद्धो अभ्य वह-
रेन्नरः ॥ अत्र भोजने प्राय श्रित्त मृत्त म् ॥ कात्यायनेन ॥ चन्द्र सूर्य ग्रहे
शुक्ला राजा पत्न्येन पृथ्वाति ॥ तस्मि न्नेव दिने शुक्ला त्रि रात्रे णौव पृथ्वाति ॥
भारते ॥ सर्व से नेव कर्त्तव्यं आहं वै राहु दर्शने ॥ अकु र्वाणस्तु ना त्स्विवया-
त्पके गोरि चसी दतीति ॥ साता तपः ॥ आपद्यन गौ तीर्थे च ग्रहणे चंद्र सूर्य-
योः ॥ आस आहं हिजः कुर्या च्छूद्रः कुर्या त्महे चहि ॥ वद्र वशिष्ठः ॥
सूत के सूत के चैव न दोषो राहु दर्शने ॥ ताव देव भवे च्छुद्धि र्याव न्मुक्ति
र्त्त दृश्यते ॥ वृत्ति पट्टिग्रन्मते ॥ सर्वथा भेव चरानां सूत के राहु दर्शने ॥
स्नात्वा कर्म्मणि कुर्वीत सूत मन्त्रं विसर्जये दिति ॥ भेषा तिथिः ॥ आर ना
लं पय सूतं दधि स्नेहा ज्य पाचितम् ॥ मणि कस्थो दकं चैव न दुष्ये द्वाहु
स्तके ॥ मन्वर्ध मुक्ता वल्याम् ॥ अन्नं पक्व मिह त्याज्य स्नानं स वसनं ग्रहे

४२८

॥ वारि तक्रार नाजा दितिल्ल दर्भा चहुय्यति ॥ ग्रहो धितं जलं पीत्वा पाद क-
 च्छं समा चरेत् ॥ योग विशेषो ग्रहणो व्यासः ॥ रवि ग्रहः सूर्य्य वारे शोभे सोम-
 ग्रह साधा ॥ चूडा मणि रिति ख्यात स्तत्र दत्त भनं तकम् ॥ वारेष्व न्येषु यस्तु-
 लयं ग्रहणो चन्द्र सूर्य्ययोः ॥ तत्पुण्यं कीदृि गुणितं योगे चूडा मणौ स्सुतः
 ॥ द्विदिदि कुल संभूत सरध् कृत संग्रहे ॥ शिरो मणौ समाहेया प्रभेयं तत्त्व-
 संज्ञ का ॥ दुर्या नंद पद दन्द ध्याना वस्थित चेतसा ॥ तानि तोयं हि सत्त्वी-
 त्वे संग्रहाख्य शिरो मणिः ॥ भूरा मादू शिरो वर्धे वैक्र मीये पुरुमे पुरुचौ ॥
 समातोयं सदा भूया द्विदुष्यं प्रीति दः प्रुभः ॥ यावद् भूरादले सन्ध्या वेदि-
 कं कर्म सज्जनाः ॥ तावत्स्वस्ति युतो भूया त्संग्रहाख्य शिरो मणिः
 इति श्रीमद्वि वेदि कुल संभव सरध् दत्तविर् चिते ॥ संग्रह शिरो मणौ
 नाभि ग्रंथे तिथि निर्णय कथनं नात्र चतु र्विधति तमा प्रभा समावा समा-

सोऽयं संग्रहश्चिरो भूषणनाम ग्रंथः ॥ सम्पत् १८३१ साधुभासे कृष्ण पदसि
 अष्टम्यां एवि वासरे समाप्तः ॥ शुभमस्तु ॥ लिखितमिदं पुस्तकं वैजनाथेन
 द्विवेदिना ॥

सोऽयं संग्रहः शिरो मणिनाम चंध्यः ॥ सम्बत् १२३५ माघ मासे कृत्तिका पक्षे
 श्रावण्यां शनि चासे समाप्तः ॥ शुभ मस्तु ॥ लिखित मिदं पुस्तकं बीजनाथेन
 द्वि वेदिना ॥